डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर ओपन यूनिवर्सिटी
(गुजरात सरकार द्वारा स्थापित)

बी. ए. (ऑनर्स) हिंदी	बी. ए. (ऑनर्स) हिंदी के
BAHONSHND	अतिरिक्त अन्य विषयों के लिए
हिंदी मेजर	हिंदी माइनर
HNDMJ-202	HNDMN-201

आधुनिक हिंदी कविता

अनुक्रमाणिका

		पृष्ठ संख्या
इकाई 1	हिंदी काव्य का परिचयात्मक इतिहास (आधुनिक काल)	2-8
इकाई 2	भारतेंदु युग एवं द्विवेदी युग – युग परिचय एवं प्रवृत्तियाँ	9-24
इकाई 3	भारतेंदु हरिश्चंद्र – नए ज़माने की मुकरी	25-43
इकाई 4	अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध'	44-57
इकाई 5	मैथलीशरण गुप्त	58-77
इकाई 6	छायावाद – युग परिचय एवं प्रवृत्तियाँ	78-90
इकाई 7	जयशंकर प्रसाद	91-103
इकाई 8	सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'	104-113
इकाई 9	सुमित्रानंदन पंत	114-121
इकाई 10	महादेवी वर्मा	122-132
इकाई 11	छायावादोत्तर काल : युग परिचय और प्रवृत्तियाँ	133-152
इकाई 12	नागार्जुन	153-166
इकाई 13	सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय'	167-181
इकाई 14	डॉ. हरिवंशराय बच्चन	182-193

इकाई 1 हिंदी काव्य का परिचयात्मक इतिहास (आधुनिक काल)

रूपरेखा

1.1 उद्देश्य

1.2 प्रस्तावना

1.3 आधुनिक काल का आरंभ

1.4 भारतेंदु काल : पुनर्जागरण काल

1.5 द्विवेदी काल : जागरण-सुधार काल

1.6 छायावाद काल

1.6.1 राष्ट्रीय-सांस्कृतिक कविता

1.6.2 छायावादी कविता

1.6.3 प्रेम और मस्ती का काव्य

1.6.4 हास्य- व्यंग्यात्मक काव्य

1.6.5 ब्रजभाषा काव्य

1.7. छायावादोत्तर काल

1.7.1 प्रगतिवाद

1.7.2 प्रयोगवाद

1.7.3 नई कविता

1.8 सार-बिंदु

1.9 परीक्षोपयोगी प्रश्नावली

1.10 उपयोगी अध्ययन सामग्री

1.1 उद्देश्य

इस इकाई का उद्देश्य विद्यार्थियों को हिंदी काव्य के आधुनिक काल के विकास, उसकी प्रमुख प्रवृत्तियों, कालखंडों एवं प्रतिनिधि कवियों से परिचित कराना है. इसके माध्यम से हिंदी कविता में आए वैचारिक, शिल्पगत और संवेदनात्मक परिवर्तनों को समझना तथा सामाजिक-ऐतिहासिक पृष्ठभूमि के साथ उनका सम्यक् मूल्यांकन करना अपेक्षित है.

1.2 प्रस्तावना

हिंदी काव्य का आधुनिक काल सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक परिवर्तनों का सशक्त साक्ष्य है. यह काल औपनिवेशिक शासन, राष्ट्रीय आंदोलन, सामाजिक सुधार, नवजागरण तथा स्वतंत्रता के बाद के बदलते जीवनबोध से गहराई से जुड़ा हुआ है. आधुनिक हिंदी कविता में व्यक्ति-चेतना, राष्ट्र-चेतना और मानव-मूल्यों की नई अभिव्यक्ति दिखाई देती है.

1.3 आधुनिक काल का आरंभ

हिंदी साहित्य में आधुनिक काल का आरंभ सामान्यतः उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध से माना जाता है. अंग्रेज़ी शासन के प्रभाव, पश्चिमी शिक्षा, मुद्रण कला के प्रसार और सामाजिक सुधार आंदोलनों ने हिंदी साहित्य को नई दिशा दी. इस काल में साहित्य लोकमंगल, यथार्थबोध और राष्ट्रीय चेतना से अनुप्राणित हुआ.

हिंदी साहित्य के इतिहास में आधुनिक कालीन कविता के विकास का क्रम एक शताब्दी पहले से ही प्रारम्भ हो गया था. बदलाव के स्पष्ट चिन्ह उन्नीसवीं शती के उत्तरार्ध में दिखाई पड़ने लगे थे. संयोग है कि हिंदी साहित्य में आधुनिक जीवन-बोध के प्रवर्तक भारतेन्दु हरिश्चंद्र का जन्म 19वीं शती के ठीक मध्य में सन् 1850 में हुआ था. अतः इतिहास लेखकों ने इस वर्ष को ही आधुनिक हिंदी साहित्य के प्रारम्भ का वर्ष मान लिया.

1.4 भारतेन्दु काल : पुनर्जागरण-काल

इसका समय ईसवी सन् 1857 से 1900 तक माना जा सकता है. भारतेन्दु काल का उदय हिंदी कविता के लिए नवजागरण के संदेशवाहक युग के रूप में हुआ था, इससे पूर्व रीतिकाल में जिस वैयक्तिक श्रृंगारमयी काव्य-धारा पर बल रहा, उसके स्थान पर कविगण समाज और राष्ट्र को उद्बोधन देने वाली लोकमंगलकारी दृष्टि की ओर उन्मुख होने लगे थे. इस काल में तीन प्रवृत्तियाँ लक्षित होती हैं – प्रवृत्ति-मूलक प्रेम काव्य, दास्य भक्ति और माधुर्य भक्ति से ओत-प्रोत रचनाएँ एवं सुधारवादी जीवन-दृष्टि को बिम्बित करनेवाली कविताएँ.

भारतेंदु हरिश्चंद्र (1850-1885) के नेतृत्व में हिंदी साहित्य में नवजागरण का सूत्रपात हुआ. उनकी कविता में राष्ट्रीय चेतना, सामाजिक सुधार, देशभक्ति और आधुनिक दृष्टि का समावेश मिलता है. ब्रजभाषा और खड़ी बोली दोनों का प्रयोग हुआ. भारतेंदु मंडल के कवियों ने हिंदी को जनभाषा के रूप में प्रतिष्ठित किया.

इस युग के प्रमुख कवियों में भारतेन्दु हरिश्चंद्र, बद्रीनारायण चौधरी ’प्रेमधन’, प्रतापनारायण मिश्र, जगनमोहन सिंह, अम्बिकादत्त व्यास और राधाकृष्णदास आदि के नाम उल्लेखनीय हैं.

1.5 द्विवेदी काल : जागरण-सुधार काल

इसका समय ईसवी सन् 1900 से 1918 तक माना जा सकता है. आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी (1864-1938) के संपादन में ‘सरस्वती’ पत्रिका के माध्यम से साहित्य को अनुशासन, नैतिकता और सामाजिक सुधार की दिशा मिली. इस काल की कविता में राष्ट्रप्रेम, सामाजिक कुरीतियों का विरोध, नारी–जागरण और खड़ी बोली का सशक्त प्रयोग दिखाई देता है. भाषा संस्कारित और विषय गंभीर रहे. द्विवेदी युग की कविता राष्ट्रीय-सांस्कृतिक कविता है. इस काल के कवियों ने जातीय जीवन की बड़ी मार्मिक और रचनात्मक आलोचना की . सामान्य मानव के गौरव की प्रतिष्ठा पहली बार इसी युग में हुई . द्विवेदीयुगीन काव्य सांस्कृतिक पुनरुत्थान, उदार राष्ट्रीयता, जागरण-सुधार एवं उच्चादर्शों का काव्य है.

इस युग में विषय की दृष्टि से अपार वैविध्य एवं नवीनता आयी . इस युग में महाकाव्य, खंड काव्य, लघु-पद्य कथा, मुक्तक, प्रबंध-मुक्तक आदि विविध काव्य विधाओं में प्रचुर रचना हुई . इस युग में काव्य-भूमि का अद्भूत विस्तार हुआ . आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदीजी के प्रयत्नों से खड़ीबोली इस काव्य धारा की मुख्य भाषा बन गयी . छंद के क्षेत्र में जो वैविध्य इस युग में मिलता है, वह अन्यत्र दुर्लभ है . भाषा, भाव और छंद में ही नहीं, काव्य रूपों के क्षेत्र में भी एकरूपता मिलती है .

द्विवेदी-युगीन प्रमुख कवियों में अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध', राय देवीप्रसाद 'पूर्ण', रामचरित उपाध्याय, गयाप्रसाद शुक्ल 'सनेही' एवं रामनरेश त्रिपाठी का नाम बड़ा ही प्रसिद्ध हैं .

बोधप्रश्न

(1) भारतेन्दु काल का समय कब से कब तक का माना जाता है .

(1) 1850 – 1900 (2) 1857 – 1900 (3) 1860 – 1950 (4) 1860 – 1900

(2) किस युग की कविता को राष्ट्रीय सांस्कृतिक कविता कहा जाता है .

(1) भारतेन्दु युग (2) द्विवेदी युग (3) प्रगतिवादी युग (4) प्रयोगवादी युग

(3) द्विवेदी के प्रयत्नों से कौन-सी भाषा द्विवेदी काल की मुख्य भाषा बन गई .

(1) ब्रज (2) अवधी (3) राजस्थानी (4) खड़ीबोली

(4) इनमें से द्विवेदी काल के कवि कौन है .

(1) रामनरेश त्रिपाठी (2) बद्रीनारायण चौधरी (3) श्रीधर पाठक (4) बालमुकुन्द गुप्त

1.6 छायावाद काल

छायावाद हिंदी कविता का स्वर्णयुग माना जाता है. इसमें आत्माभिव्यक्ति, प्रकृति-सौंदर्य, रहस्यवाद और व्यक्तिवाद की प्रधानता है. जयशंकर प्रसाद, सुमित्रानंदन पंत, महादेवी वर्मा और सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' छायावाद के चार स्तंभ के रूप में प्रतिष्ठित हैं. छायावाद का समय ईसवी सन् 1918 से 1938 तक माना जा सकता है. इस युग के कवियों ने द्विवेदी युगीन इतिवृतात्मकता के विरुद्ध सूक्ष्म भावनाओं की, तत्कालीन रूढ़ियों और ईसाई धर्म-प्रचारकों के आक्षेपों के विरुद्ध भारत के प्राणवान मूल्यों की तथा आर्थिक-राजनीतिक दासता के विरुद्ध स्वाधीनता के मूल्यों की प्रतिष्ठा की. इस युग में निम्न काव्य धाराएँ प्रचलित हुई – (1) राष्ट्रीय–सांस्कृतिक कविता, (2) छायावादी कविता, (3) प्रेम और मस्ती का काव्य, (4) हास्य-व्यंग्यात्मक काव्य, (5) ब्रजभाषा काव्य.

1.6.1 राष्ट्रीय-सांस्कृतिक कविता

इस धारा की कविता में राष्ट्रीय चेतना और भारतीय सांस्कृतिक गौरव की अभिव्यक्ति मिलती है. ऐतिहासिक गौरव, स्वतंत्रता-भावना और सांस्कृतिक पुनरुत्थान इसके प्रमुख तत्व हैं. इस युग के राष्ट्रीय-सांस्कृतिक काव्य में दो भावनाएँ अत्यंत तीव्रता के साथ उजागर हुई एक तो कवियों ने भारत की आंतरिक विसंगतियों और विषमताओं को दूर करने का आह्वान किया दूसरी ओर जनता को विदेशी शासन से मुक्ति दिलाने के लिए स्वाधीनता-संग्राम में कूद पड़ने की प्रेरणा दी. माखनलाल चतुर्वेदी, रामनरेश त्रिपाठी, बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' और सुभद्राकुमारी चौहान ने केवल राष्ट्र-प्रेम को ही मुखरित करने के साथ-साथ आज़ादी की लड़ाई में भाग भी लिया. फलस्वरूप उनकी देश-प्रेम की कविताओं में अनुभूति की सच्चाई और आवेश दिखाई देता है. माखनलाल चतुर्वेदी की 'कैदी और कोकिल' कविता इसका प्रमुख उदाहरण है.

जनता में आत्मविश्वास का संचार करने का दूसरा उपाय था – अतीत की गरिमा का सजीव चित्रण . राष्ट्रीय कवियों ने भी राम, कृष्ण, भीम, अर्जुन, हरिश्चंद्र आदि प्राचीन युगपुरुषों के चरित्रों के उदाहरण देकर जनता में विश्वास और आस्था पैदा करने का प्रयत्न किया . सियारामशरण गुप्त की 'बापू' कविता में गाँधीजी का एवं निराला की 'दिल्ली' कविता में देश के अतीत गौरव के साथ वर्तमान दुर्दशा का सफल चित्रण है. इस युग की कविता में कहीं-कहीं क्रांति और ध्वंस के स्वर भी सुनाई देते हैं. इस काव्यधारा के

प्रमुख कवियों में माखनलाल चतुर्वेदी, शियारामशरण गुप्त, बालकृष्ण शर्मा 'नवीन', सुभद्राकुमारी चौहान का तथा रामनरेश त्रिपाठी, उदयशंकर भट्ट, जगन्नाथप्रसाद मिलिन्द एवं दिनकर का गौण स्थान है.

1.6.2 छायावादी कविता

छायावादी काव्य व्यक्तिनिष्ठ और कल्पनाप्रधान है. यह काव्य अनुभूति के स्तर पर मानव-मात्र में एकता स्थापित करने में समर्थ हुआ है. अनुभूति की इस प्रधानता के कारण ही उसे स्थूल के प्रति सूक्ष्म का विद्रोह माना गया है. छायावादी काव्य भाव के स्तर पर अन्तःसृष्टि और बाह्य सृष्टि की एकता की स्थापना करता है और फिर आध्यात्मिकता के स्तर पर इसी ऐक्य को मूल सत्य के रूप में प्रतिष्ठित करने का प्रयास करता है. प्रसाद की अनुभूति शैव-दर्शन में परिणत होती चली जाती है, निराला अद्वैत और भक्ति के क्षेत्र में साधना करते दिखाई देते हैं, पन्त की काव्य-दृष्टि सृष्टि में व्याप्त मूल अक्षर सत्य का उद्घाटन करती है और महादेवी निराकार सर्वव्यापक प्रिय की भावना को ही काव्य का प्राण मानती हैं.

छायावादी कविता में कोमल कल्पना, सौंदर्यबोध, रहस्यात्मकता और आत्मिक अनुभूति की प्रधानता है. भाषा संस्कृतनिष्ठ और लाक्षणिक है. काव्य-रूपों की दृष्टि से भी छायावादी काव्य अत्यंत समृद्ध है . गीत, मुक्त छंद, खंडकाव्य, महाकाव्य, लम्बी कविता आदि काव्य-रूप इस काल में देखने को मिलते हैं. अभिव्यंजना की सांकेतिकता और वक्रता भी छायावादी कवियों की उल्लेखनीय उपलब्धि है.

छायावादी कवियों में जयशंकर प्रसाद, सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला', सुमित्रानंदन पन्त और महादेवी वर्मा प्रमुख कवि है. प्रसाद रचित महाकाव्य 'कामायनी' में छायावादी संवेदना अपनी समग्रता में मूर्तिमान दिखाई देती है.

1.6.3 प्रेम और मस्ती का काव्य

इस उपधारा में प्रेम, उल्लास, जीवनानंद और सौंदर्य के विविध रूपों की अभिव्यक्ति होती है. डॉ. हरिवंशराय बच्चन इस धारा के प्रतिनिधि कवि माने जाते हैं और उनके द्वारा रचित 'मधुशाला' प्रतिनिधि रचना.

1.6.4 हास्य-व्यंग्यात्मक कविता

छायावाद काल में हास्य और व्यंग्य का भी विकास हुआ. सामाजिक विसंगतियों पर कोमल व्यंग्य के माध्यम से चोट की गई. समाज, धर्म, राजनीति आदि विभिन्न क्षेत्रों से सम्बद्ध ऐसी अनेक हास-परिहासात्मक रचनाएँ लिखी गयीं जिनमें हास्य की मुखरता और व्यंग्य की तीव्रता स्वाभाविक रूप में विद्यमान हैं.

हरिशंकर शर्मा, पाण्डेय बैचेन शर्मा 'उग्र', कृष्णदेवप्रसाद गौड़ 'बेढब बनारसी' आदि प्रमुख कवि हैं.

1.6.5 ब्रजभाषा कविता

छायावाद काल में यद्यपि खड़ीबोली ने काव्यभाषा के रूप में अपनी प्रतिष्ठा प्राप्त कर ली थी, फिर भी भावात्मकता और लयात्मकता के विशेष गुण के कारण ब्रजभाषा में काव्य-रचना की परंपरा बनी रही और अनेक कवि ब्रजभाषा में भी काव्य-रचना करते रहे. रामनाथ जोतिसी, रामचंद्र शुक्ल, राय कृष्णदास, जगदम्बाप्रसाद मिश्र 'हितैषी', दुलारेलाल भार्गव, वियोगी हरि, बालकृष्ण शर्मा' नवीन', अनूप शर्मा, रामेश्वर, किशोरीलाल वाजपेयी, उमाशंकर वाजपेयी 'उमेश' आदि का उल्लेख मुख्य रूप से अपेक्षित है. रामचंद्र शुक्ल इस युग के मेधावी आलोचक तो थे ही, उन्होंने एडविन आर्नल्ड के आख्यानकाव्य 'लाइट ऑफ़ एशिया' का 'बुद्धचरित' शीर्षक से ब्रजभाषा में अनुवाद भी किया.

बोधप्रश्न

1) 'कैदी और कोकिल' कविता के रचयिता का नाम लिखिए.
2) किस महाकाव्य में छायावादी संवेदना अपनी समग्रता में मूर्तिमान दिखाई देती है.
3) प्रेम और मस्ती काव्यधारा का प्रतिनिधि कवि किसे माना जाता है?

1.7 छायावादोत्तर काल :

छायावाद के बाद कविता में यथार्थ, सामाजिक चेतना और प्रयोगशीलता का विस्तार हुआ. इसे छायावादोत्तर काल कहा जाता है. छायावादोत्तर काल में काव्य साहित्य की अनेक प्रवृत्तियाँ दृष्टिगत होती हैं इन प्रवृत्तियों के आधार पर यदि हम इन रचनाओं का वर्गीकरण करें तो स्पष्ट रूप से जो तीन काव्य-धाराएँ उभरकर आती हैं, उन्हें प्रगतिवादी कविता, प्रयोगवादी कविता और नयी कविता कहा जा सकता है.

1.7.1 प्रगतिवादी कविता :

प्रगतिवाद नाम उस काव्य-धारा का है जो मार्क्सवादी दर्शन के आलोक में सामाजिक चेतना और भावबोध को अपना लक्ष्य बनाकर चली. इसमें वर्गसंघर्ष, शोषण-विरोध और सामाजिक न्याय की भावना प्रमुख है. प्रगतिवाद ने सौंदर्य को नए दृष्टिकोण से देखा. प्रगतिवादी कवि यथार्थ का इस प्रकार चित्रण करता है कि कुरूप, शोषक, सड़ी-गली विसंगतिग्रस्त शक्तियों का पर्दाफाश हो और नयी सामाजिक शक्तियों के संघर्षों और आस्था को बल मिले. पर जैसे-जैसे आन्दोलन का उफान मंद पड़ता गया, वैसे-वैसे प्रगतिवादी काव्य प्रचारात्मक, अभिधात्मक, सपाट रूप को छोड़कर अधिक चित्रात्मक, गहन और सांकेतिक होता गया. उसने काव्य को व्यक्तिवादी यथार्थ के बंद कमरे से निकालकर जनजीवन के बीच प्रवाहित कर दिया, जीवन और साहित्य के मूल्य, सौंदर्य-बोध और लक्ष्य को समाज के यथार्थ और उसकी रचना से जोड़ा, भाषा को कुहरे से निकालकर धरातल पर प्रतिष्ठित किया. केदारनाथ अग्रवाल, रामविलास शर्मा, नागार्जुन, शिवमंगलसिंह 'सुमन', त्रिलोचन और मुक्तिबोध इस धारा के प्रमुख कवि हैं.

1.7.2 प्रयोगवादी कविता

'प्रयोगवाद' नाम उन कविताओं के लिए रूढ़ हो गया है जो कुछ नए बोधों, सम्वेदनाओं तथा उन्हें प्रेषित करने वाले शिल्पगत चमत्कारों को लेकर शुरू-शुरू में 'तारसप्तक' के माध्यम से सन 1943 में प्रकाशन जगत में आयीं और जो प्रगतिशील कविताओं के साथ विकसित होती गयीं तथा जिनका पर्यवसान नयी कविता में हो गया. प्रयोगवाद में काव्य-शिल्प और भाषा के नए प्रयोग हुए. व्यक्तिगत अनुभूति और बौद्धिकता इसका आधार है. अज्ञेय इसके प्रमुख प्रवर्तक माने जाते हैं. प्रयोगवादी कवि यथार्थवादी हैं. वे भावुकता के स्थान पर ठोस बौद्धिकता को स्वीकार करते हैं. ये कवि मध्यवर्गीय व्यक्ति-जीवन की समस्त जड़ता, कुण्ठा, अनास्था, पराजय और मानसिक संघर्ष के सत्य को बड़ी बौद्धिकता के साथ उद्घाटित करते हैं. इन कवियों ने व्यक्ति के अन्तःसंघर्षों, क्षणों की अनुभूतियों और सूक्ष्म से सूक्ष्म, छोटी से छोटी संवेदनाओं और मन की विभिन्न स्थितियों को लेकर छोटी-छोटी तीव्र प्रभावशाली कविताएं लिखीं.

प्रयोगवादी दौर में जो कवि सक्रिय थे वे नयी कविता में भी उतने ही सक्रिय रहे जिनमें प्रमुख हैं – अज्ञेय, गिरिजाकुमार माथुर, भारत भूषण अग्रवाल एवं श्री नरेश मेहता . शमशेर और मुक्तिबोध दोनों का सम्बन्ध प्रगतिवाद, प्रयोगवाद और नयी कविता तीनों से रहा है.

1.7.3 नयी कविता

'नयी कविता' नाम स्वतंत्रता के बाद लिखी गयी उन कविताओं के लिए रूढ़ हो गया, जो अपनी वस्तु-छवि और रूप-छवि दोनों में पूर्ववर्ती प्रगतिवाद और प्रयोगवाद का विकास होकर भी विशिष्ट है. नयी कविता की सबसे पहली विशिष्टता जीवन के प्रति उसकी आस्था में दिखाई पड़ती है. जिसमें जीवन को पूर्ण स्वीकार करके उसे भोगने की लालसा है. नयी कविता में दो तत्व प्रमुख हैं – अनुभूति की सच्चाई और बुद्धिमूलक यथार्थवादी दृष्टि. नयी कविता ने लोक-जीवन की अनुभूति, सौन्दर्य-बोध, प्रकृति और उसके प्रश्नों को एक सहज और उदार मानवीय भूमि पर ग्रहण किया. साथ ही साथ लोक-जीवन के बिम्बों, प्रतीकों, शब्दों और उपमानों को लोक-जीवन के बीच से चुनकर उसने अपने को अत्यधिक संवेदनापूर्ण और सजीव बनाया. नई कविता में आधुनिक जीवन की जटिलताओं, अकेलेपन और अस्तित्वबोध की अभिव्यक्ति मिलती है. इसमें कथ्य और शिल्प दोनों में नवीनता है.

बालकृष्ण राव, शमशेर बहादुरसिंह, गिरिजाकुमार माथुर, कुंवर नारायण, धर्मवीर भारती, प्रभाकर माचवे, विजयदेव नारायण साही, रघुवीर सहाय, भवानी प्रसाद मिश्र, केदारनाथ सिंह, शम्भुनाथ सिंह, ठाकुर प्रसाद सिंह, नागार्जुन, केदारनाथ अग्रवाल आदि प्रमुख कवि हैं.

1.8 सारबिंदु

- आधुनिक हिंदी कविता विविध धाराओं और प्रवृत्तियों का समन्वय है. इसमें राष्ट्रीय चेतना, सामाजिक यथार्थ, आत्मानुभूति और प्रयोगशीलता का क्रमिक विकास दिखाई देता है.
- भारतेन्दु काल का उदय हिंदी कविता के लिए नवजागरण के संदेशवाहक युग के रूप में हुआ था.
- भारतेंदुयुगीन काव्य प्रवृत्ति-मूलक प्रेम काव्य, दास्य भक्ति और माधुर्य भक्ति से ओत-प्रोत रचनाएँ एवं सुधारवादी जीवन-दृष्टि को बिम्बित करने वाना काव्य हैं.
- द्विवेदीयुगीन काव्य सांस्कृतिक पुनरुत्थान, उदार राष्ट्रीयता, जागरण-सुधार एवं उच्चादर्शों का काव्य है.
- छायावाद काल में राष्ट्रीय–सांस्कृतिक कविता, छायावादी कविता, प्रेम और मस्ती का हास्य-व्यंग्यात्मक काव्य ब्रजभाषा काव्य लिखा गया.
- प्रगतिवाद नाम उस काव्य-धारा का है जो मार्क्सवादी दर्शन के आलोक में सामाजिक चेतना और भावबोध को अपना लक्ष्य बनाकर चली.
- प्रयोगवादी कवि मध्यवर्गीय व्यक्ति-जीवन की समस्त जड़ता, कुण्ठा, अनास्था, पराजय और मानसिक संघर्ष के सत्य को बड़ी बौद्धिकता के साथ उद्घाटित करते हैं.
- नयी कविता में दो तत्व प्रमुख हैं – अनुभूति की सच्चाई और बुद्धिमूलक यथार्थवादी दृष्टि.

1.9 परीक्षोपयोगी प्रश्नावली

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. भारतेन्दु एवं द्विवेदी कालीन हिंदी कविता पर प्रकाश डालिए .
2. छायावाद कालीन हिंदी कविता की विभिन्न धाराओं पर प्रकाश डालिए .
3. छायावादोतर कालीन हिंदी कविता को सविस्तार समझाइए .
4. प्रगतिवादी एवं प्रयोगवादी कविता के बीच के अंतर को स्पष्ट कीजिए .

टिप्पणी लिखिए

1. नयी कविता
2. राष्ट्रीय सांस्कृतिक कविता
3. छायावादी कविता
4. प्रगतिवादी कविता
5. प्रयोगवादी कविता

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

सही के सामने ✔ गलत के सामने ✖ का निशान लगाएं.

1. छायावादी काव्य व्यक्तिनिष्ठ और कल्पनाप्रधान काव्य है. ( )
2. मानव के गौरव की प्रतिष्ठा पहली बार भारतेंदु युग के काव्य में हुई. ( )
3. नयी कविता में जीवन के प्रति आस्था की प्रवृत्ति दिखाई पड़ती है. ( )
4. प्रगतिवाद का उदय हिंदी कविता के लिए नव-जागरण के संदेशवाहक युग के रूप में हुआ था. ( )
5. निराला निराकार सर्वव्यापक प्रिय की भावना को ही काव्य का प्राण मानते हैं. ( )

सही विकल्प का चयन कीजिए.

1) किस काव्य-धारा ने सौंदर्य को नये दृष्टिकोण से देखा?

(1) प्रगतिवाद (2) प्रयोगवाद (3) नयी कविता (4) समकालीन कविता

(2) तारसप्तक के माध्यम से प्रयोगवादी कविताएँ कब से प्रकाशन जगत में आयीं?

(1) 1923 (2) 1933 (3) 1943 (4) 1953

(3) प्रयोगवादी कविता के प्रमुख कवि इनमें से कौन है?

(1) केदारनाथ (2) अज्ञेय (3) नागार्जुन (4) निराला

(4) किस दौर में लिखी गयी कविताओं के लिए 'नयी कविता' नाम रूढ़ हो गया?

(1) स्वतंत्रता पूर्व (2) स्वतंत्रता के बाद (3) स्वातंत्रोत्तर दौर में (4) रीतिकाल में

(5) 'नयी कविता' के दौर में ग्रामीण परिवेश को लेकर लिखनेवाले कवि इनमें से कौन हैं?

(1) धर्मवीर भारती (2) बालकृष्ण राव (3) रघुवीर सहाय (4) नागार्जुन

1.10 उपयोगी अध्ययन सामग्री

1. आचार्य रामचंद्र शुक्ल : हिंदी साहित्य का इतिहास
2. डॉ. नगेन्द्र : आधुनिक हिंदी कविता
3. बच्चन सिंह : हिंदी साहित्य का दूसरा इतिहास

इकाई 5 : भारतेंदु युग एवं द्विवेदी युग - युग परिचय एवं प्रवृत्तियाँ

रूपरेखा

5.1 उद्देश्य

5.2 प्रस्तावना

5.3 आधुनिक साहित्य की परिस्थितियाँ

5.3.1 आधुनिक शब्द का अर्थ

5.3.2 राजनीतिक परिस्थितियाँ

5.3.3 सामाजिक-धार्मिक परिस्थितियाँ

5.3.4 आर्थिक परिस्थितियाँ

5.3.5 शिक्षा-यातायात-प्रेस-जनमत

5.3.6 साहित्यिक पृष्ठभूमि

5.4 भारतेंदु युग का परिचय

5.4.1 भारतेंदु युग : समय-सीमा

5.4.2 भारतेंदु युग : प्रमुख कवि और उनका काव्य

5.4.2.1 भारतेंदु हरिश्चंद्र

5.4.2.2 बदरीनारायण चौधरी 'प्रेमघन'

5.4.2.3 प्रतापनारायण मिश्र

5.4.2.4 ठाकुर जगन्मोहन

5.4.2.5 अंबिकादत्त व्यास

5.4.2.6 राधाचरण गोस्वामी

5.4.2.7 राधाकृष्ण दास

5.5 भारतेंदु युग : काव्य प्रवृत्तियाँ

5.5.1 राष्ट्रीय चेतना की अभिव्यक्ति

5.5.2 सामाजिक चेतना की अभिव्यक्ति

5.5.3 श्रृंगार रस वर्णन

5.5.4 भक्ति भावना की अभिव्यक्ति

5.5.5 हास्य-व्यंग्य वर्णन

5.5.6 प्रकृति वर्णन

5.5.7 समस्यापूर्ति

5.5.8 अनुवाद की प्रवृत्ति

5.5.9 पत्रकारिता

5.5.10 कला वैशिष्ट्य

5.6 द्विवेदी युग का परिचय

5.6.1 द्विवेदी युग : प्रमुख कवि और उनका काव्य

5.6.1.1 नाथूराम शर्मा 'शंकर'

5.6.1.2 श्रीधर पाठक
5.6.1.3 महावीर प्रसाद द्विवेदी
5.6.1.4 अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔंध'
5.6.1.5 गयाप्रसाद शुक्ल 'सनेही'
5.6.1.6 मैथिलीशरण गुप्त
5.6.1.7 रामनरेश त्रिपाठी
5.6.1.8 जगन्नाथ दास रत्नाकर
5.6.1.9 सत्यनारायण कविरत्न
5.7 द्विवेदी युग : काव्य प्रवृत्तियाँ
5.7.1 काव्य भाषा : खड़ीबोली
5.7.2 राष्ट्रीयता
5.7.3 नैतिकता व आदर्शों पर बल
5.7.4 इतिवृत्तात्मकता
5.7.5 मानवतावादी दृष्टिकोण
5.7.6 प्रकृति वर्णन
5.7.7 विषयवस्तु विस्तार
5.7.8 कला वैशिष्ट्य
5.8 मुख्य बिंदु
5.9 परीक्षोपयोगी प्रश्न
5.10 संदर्भ सूची

5.1 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के बाद आप –

1. हिंदी साहित्य के इतिहास में आधुनिक काल के प्रथम सोपान भारतेंदु युग की समय-सीमा, नामकरण व कवियों से परिचित हो सकेंगे.
2. भारतेंदु हरिश्चंद्र एवं उनके मंडल के कवियों के योगदान की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे.
3. भारतेन्दुयुगीन काव्य की प्रमुख प्रवृत्तियों से अवगत हो सकेंगे.
4. द्विवेदी युग के नामकरण एवं समय-सीमा के विषय में जान सकेंगे.
5. द्विवेदी युग के हिंदी कवियों के जीवन परिचय तथा रचनाओं के विषय में जान सकेंगे.
6. द्विवेदी युग की कविता की प्रवृत्तियों का अध्ययन कर सकेंगे.

5.2 प्रस्तावना

आधुनिक काल से पूर्व का कालखंड रीतिकाल के नाम से जाना जाता है. इस कालखंड की समय-सीमा अधिकतर विद्वान 1643-1843 ई. मानते हैं और आधुनिक काल की प्रारंभिक सीमा के विषय में अलग-अलग विध्वानों के मत प्रचलित हैं. कुछ

विद्वान 1857 ई. तो कुछ 1868 ई., कुछ 1850 ई. को आधुनिक काल के प्रथम सोपान भारतेंदु युग का आरंभ मानते हैं. इस प्रकार सन् 1843 से 1857 तक की अवधि को आधुनिक काल की पृष्ठभूमि के रूप में स्वीकारना चाहिए. आधुनिक साहित्य को जानने से पूर्व आधुनिक साहित्य की पृष्ठभूमि से अवगत होना जरूरी है. आइये, आगे हम आधुनिक साहित्य की पृष्ठभुमि के बारे में चर्चा करते है.

5.3 आधुनिक साहित्य की पृष्ठभूमि

5.3.1 आधुनिक शब्द का अर्थ

आधुनिककालीन हिंदी साहित्य को जानने व समझने से पहले हमें आधुनिक शब्द को जान लेना जरूरी है. आधुनिक शब्द से यहाँ अभिप्राय दो बातों से हैं– 1 मध्यकालीन साहित्यिक प्रवृत्तियों का त्याग एवं नए तर्कपूर्ण समाज व साहित्य की स्वीकृति 2. पारलौकिकता के स्थान पर इहलौकिकता को महत्व.

साहित्य में आधुनिकता से अभिप्राय उस बदलाव से है, जो मध्यकालीन (भक्ति व रीतिकालीन) साहित्य से अलग होकर कुछ तर्कपूर्ण नवीन व समसामयिक परिस्थितियों के अनुसार नयापन लिए हुए हो. इस काल तक आते–आते रचनाकारों ने परलोक की चिंता त्याग कर, इहलोक जिसमें हम जी रहे हैं, को सुधारने पर बल दिया. यही बदलाव साहित्य और समाज दोनों में दिखाई पड़ा, इसी को आधुनिकता कहा जा सकता है.

5.3.2 राजनीतिक परिस्थितियाँ

1857 ई. की क्रांति भारतीय इतिहास में एक नया मोड़ सिद्ध हुई. इसमें पहले प्लासी का युद्ध, बक्सर का युद्ध, बंगाल पर अंग्रेजी अधिकार, तथा 1857 में लगभग संपूर्ण देश का अंग्रेजों के अधीन होना आदि भारतीय इतिहास की महत्वपूर्ण घटनाएँ हैं. अंग्रेजों की दमनकारी नीतियों का देशी राजाओं ने विद्रोह किया. परिणामस्वरूप ईस्ट इंडिया कंपनी समाप्त कर भारत को ब्रिटिश साम्राज्य का उपनिवेश बना दिया गया. इन राजनीतिक परिस्थितियों को तत्कालीन साहित्यकारों ने बड़ी निकटता व गंभीरता से देखा. वे इन सब बातों को साहित्य में अभिव्यक्ति देने लगे.

5.3.3 सामाजिक-धार्मिक परिस्थितियाँ

19वीं शताब्दी में भारत में राजाराम मोहन राय (ब्रह्म समाज), स्वामी दयानंद सरस्वती (आर्य समाज), ऐनीबीसेन्ट (थियोसोफिकल सोसायटी) आदि ने समाज व धर्म की विसंगतियों को दूर करने में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया. गाँधी, तिलक और विवेकानंद के विचारों ने भी जनमानस को प्रभावित किया. फलस्वरूप समाज व धार्मिक क्षेत्र की संकीर्णताएँ कम हुई. स्त्री की दशा को प्रत्येक सुधारक व चिंतक ने सुधारने का प्रयास किया.

5.3.4 आर्थिक परिस्थितियाँ

अंग्रेजों की शोषणकारी नीतियों के कारण भारत के आमजन की आर्थिक दशा चिंतनीय थी. क्रांति से पूर्व भारतीय गाँव अपने आप में स्वतंत्र इकाई थे. उनके निवासियों की जरूरतें वहीं पूरी हो जाती थीं. उनका शहरों से संपर्क लगभग नहीं के बराबर था. अंग्रेजों की नीतियों ने गाँव के छोटे–छोटे धंधों को नष्ट करना आरंभ किया. अंग्रेजों ने जमीदारों

का एक वर्ग तैयार कर दिया जो उनका आखिर तक सहायक सिद्ध होता रहा. खेती का भी व्यावसायीकरण हुआ. लाभप्रद वस्तुओं का उत्पादन बढ़ा. नई आर्थिक व्यवस्था ने मध्यवर्ग को जन्म दिया। इस वर्ग ने भी क्रांति की दिशा में महती भूमिका निभाई.

5.3.5 शिक्षा-यातायात-प्रेस-जनमत

अंग्रेजों ने ईसाई धर्म का प्रचार करने के लिए जगह-जगह स्कूल खोले. कोलकाता में 1780 में मदरसा खोला गया। बनारस में 1791 में संस्कृत कॉलेज की स्थापना हुई. कोलकाता में फोर्ट विलियम कॉलेज (1801) की स्थापना हुई. यहाँ देशभाषा पर काम प्रारंभ हुआ. इस कॉलेज में पाठ्यपुस्तक लेखन का कार्य आरंभ हुआ. 1854 में 'वुड के घोषणा पत्र' के अनुसार प्राथमिक व माध्यमिक शिक्षा को बल मिला. विश्वविद्यालय खोलने की बातें प्रारंभ हुई. अंग्रेजों ने भले ही शिक्षा का यह कार्य अपने लाभ के लिए किया हो किंतु इसका लाभ भारतीय जनमानस को भी मिला. एक ऐसा बुद्धिजीवी वर्ग तैयार हुआ जिसका दृष्टिकोण धर्मनिरपेक्ष था.

भारत में प्रेस की स्थापना का श्रेय पुर्तगालियों को है. ईस्ट इंडिया कंपनी ने बंबई में 1764 ई. में मुद्रण कार्य शुरू करवाया. कोलकाता, मद्रास और बंबई कई जगह छापेखाने खुले. भारतीय सन्दर्भों में इस दिशा में पहल राजा राममोहन राय ने की. उन्होंने 1821 ई. में 'संवाद कौमुदी' (साप्ताहिक पत्र) का प्रकाशन करवाया. हिंदी का पहला पत्र 'उदंत मार्तण्ड' कोलकाता से 1826 में निकला. इसके बाद 'प्रजामित्र' (1834), 'समाचार सुधावर्षण' (1854) आदि का प्रकाशन प्रारंभ हुआ. इन पत्रों ने एक ओर अंग्रेजों की नीतियों का विरोध करना प्रारंभ किया, दूसरी ओर समाज-सुधार की दिशा में भी अपनी सशक्त भूमिका निभाई.

नई व्यवस्था ने भारतीयों की दशा व सोच को प्रभावित किया. रही-सही कसर यातायात ने पूरी कर दी. आमजन अब अपने गाँव नगर से बाहर निकला और देश के विभिन्न हिस्सों के संपर्क में आया. ज्ञान-विज्ञान व संवाद के नए माध्यम सामने आए. जरूरत की वस्तुओं के साथ-साथ ज्ञान-विज्ञान का साहित्य व पत्र-पत्रिकाओं की पहुँच सुलभ हुई. इन सब बातों ने भारतीय जनजीवन को खासा प्रभावित किया. समाज के नजरिये में बदलाव आया. अंग्रेजों ने भले ही शिक्षा, यातायात और प्रेस आदि की स्थापना अपने हितों के लिए की हो किंतु इसने भारतीय जनमानस में चेतना जगाने में भी अपनी महती भूमिका अदा की.

5.3.6 साहित्यिक पृष्ठभूमि

आधुनिक काल का आगमन हिंदी जगत में नवीनता लेकर आया. इससे पूर्व रीतिकाल का अधिकांश साहित्य राज्याश्रय में रचा गया. आश्रयदाता राजा की प्रशंसा कर यश और धन प्राप्ति रचनाकारों का प्रमुख उद्देश्य रहा था. 1857 की क्रांति ने जनमानस की चेतना में बदलाव किया. अब देश, धर्म, समाज और संस्कृति के विषय में व्यक्ति चिंतन करने लगा. प्रेस, छापेखाने आदि की स्थापना ने नवीन साहित्य के सृजन व प्रसार में महती भूमिका निभाई.

5.4 भारतेंदु युग का परिचय

हिंदी साहित्य के इतिहास में सन् 1857-1900 तक का कालखंड भारतेंदु युग के नाम से जाना जाता है. यह युग आधुनिक काल की हिंदी कविता का प्रथम सोपान है.

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने इस कालखण्ड के लिए 'प्रथम उत्थान' शब्द का प्रयोग किया. इस कालखंड के लिए 'पुनर्जागरण काल' शब्द का भी प्रयोग किया जाता है.

5.4.1 भारतेंदु युग : समय-सीमा

भारतेंदु युग की समय-सीमा को लेकर भी विद्वान एकमत नहीं हैं. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने इस कालखण्ड को 'नई धारा: प्रथम उत्थान' की संज्ञा देते हुए इसकी समय-सीमा संवत् 1925-1950 (1868-1893 ई.) तक स्वीकारी है. मिश्रबंधु इसकी समय-सीमा 1926-1945 वि.सं. (1869-1888 ई.) तक स्वीकारते हैं, वहीं डॉ. रामकुमार वर्मा ने इसे 1927-1957 वि.सं. (1870-1900 ई.) तक माना है. कुछ विद्वान 1857 की क्रांति को आधार मानते हुए इसका आरंभ 1857 ई. से मानते हैं. ठीक भी है कि 1857 की क्रांति ने भारतीय समाज पर गहरी छाप छोड़ी और क्रांति के बाद के भारत की सोच में आधुनिकता द्रष्टव्य होने लगी. इसलिए क्रांति के वर्ष को आधार मानते हुए इस कालखण्ड का आरम्भ 1857 ई. से स्वीकारा जाए तो भी अनुचित न होगा और सरस्वती पत्रिका जो कि द्विवेदी युग के आरंभ का शंखनाद करती है, वहाँ तक की अवधि अर्थात् 1900 ई. तक इस काल की परिसमाप्ति मानना ठीक होगा. इस प्रकार 1857-1900 ई. की अवधि को भारतेंदु युग की संज्ञा दी जानी चाहिए.

5.4.2 भारतेंदु युग : प्रमुख कवि और उनका काव्य

हिंदी के आधुनिक काल के पुरोधा कवि भारतेंदु हरिश्चंद्र है. साथ ही भारतेंदु मंडल के कवियों ने भी हिंदी कविता को अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया. इन कवियों का सामान्य परिचय निम्नवत है-

5.4.2.1 भारतेंदु हरिश्चंद्र (1850-1885)

भारतेंदु हरिश्चन्द का जन्म इतिहास प्रसिद्ध सेठ अमीचंद की वंश परम्परा में काशी में हुआ. इनके पिता का नाम बाबू गोपालचंद गिरिधर दास था. वे स्वयं अपने समय के प्रसिद्ध कवियों में से एक थे. 'निज भाषा उन्नति अहै सब उन्नति को मूल' को जीवन का मूल मंत्र मानने वाले हरिश्चंद्र पर बचपन से ही साहित्यिक संस्कारों ने अपना प्रभाव जमाना आरंभ किया.

भारतेंदु पर वल्लभ संप्रदाय विशेषत: सूर के भक्ति काव्य का प्रभाव पड़ा. भारतेंदु ने मात्र 35 वर्ष की अल्प आयु में ही लगभग 135 ग्रथों की रचना की. इनमें से लगभग 70 काव्य कृतियाँ हैं.

भारतेंदु हरिश्चंद्र ने तीन पत्रिकाएँ भी निकालीं- 'कविवचन सुधा' (1868), 'हरिश्चंद्र मैग्जीन' (1873) और 'बालाबोधिनी' (1874). 'हरिश्चंद्र मैग्जीन' को एक ही वर्ष बाद अर्थात् 1874 ई. में ' हरिश्चंद्रचंद्रिका' नाम दे दिया. स्त्री शिक्षा को ध्यान में रखते हुए उन्होंने 'बालाबोधिनी' का संपादन किया.

हिंदी की आधुनिक काव्यधारा के प्रवर्तक भारतेंदु के काव्य में हमें प्राचीन काव्य प्रवृत्तियों के भी दर्शन होते हैं. रीति काव्य की परम्परा का प्रभाव उनकी श्रृंगार व प्रेमपरक रचनाओं पर देखा जा सकता है. राजभक्ति के भाव उनकी कविता में दिखते हैं तो वहीं राष्ट्र-भक्ति की भी पुरजोर ध्वनि उनके साहित्य में सुनाई पड़ती है.

भीतर-भीतर सब रस चूसे, हँसि हँसि के तन मन धन मूसै।

जाहिर बातन में अति तेज, क्यों सखि सज्जन नहिं अंगरेज॥

5.4.2.2 बदरीनारायण चौधरी 'प्रेमघन' (1855-1923 ई.)

भारतेंदु मंडल के कवियों में 'प्रेमघन' एक चर्चित नाम है. मिर्जापुर (उ.प्र.) के एक श्रेष्ठ व सम्पन्न ब्राह्मण परिवार में प्रेमघन का जन्म 1855 ई. में हुआ. 'जीर्ण जनपद', 'आनंद अरुणोदय', 'मयंक महिमा', 'हार्दिक हर्षादर्श', 'अलौकिक लीला', 'वर्षा बिंदु' आदि उनकी प्रमुख रचनाएँ हैं. भारतेंदु की भाँति ये भी पत्रिका-संपादन से जुड़े रहे. आपने 'नागरी नीरद' साप्ताहिक पत्र और 'आनंदकादंबिनी' मासिक पत्रिका का संपादन किया. भारतेंदु का इन पर गहरा प्रभाव था. अंग्रेजों द्वारा दादा भाई नौरोजी को काला कहकर रंगभेद के आधार पर अपमान करने पर इन्होंने कविता लिखकर अंग्रेजों के इस व्यवहार का करारा जवाब दिया.

5.4.2.3 प्रतापनारायण मिश्र (1856-1894 ई.)

प्रतापनारायण मिश्र का जन्म बैजेगाँव, जिला-उन्नाव (उ.प्र.) में सन् 1856 में हुआ. आप 'ब्राह्मण' पत्रिका के संपादक के रूप में विख्यात रहे. विनोदी स्वभाव के रचनाकार होने के कारण मिश्र की कविताओं में समाजसुधार, देशभक्ति, प्रेमाभिव्यंजना, हास्य-विनोद जैसी प्रवृत्तीयाँ द्रष्टव्य होती हैं. इनकी प्रमुख रचनाएँ 'मन की लहर', 'प्रेम पुष्पावली', 'श्रृंगार विलास', 'संगीत शाकुंतल', 'रसखान शतक' और 'लोकोक्ति-शतक' हैं. आप अलंकारों की अपेक्षा संप्रेषण की सहजता के पक्षधर थे.

5.4.2.4 ठाकुर जगन्मोहन (1857-1899 ई.)

मध्यप्रदेश के विजयराघवगढ़ के राजकुमार ठाकुर जगन्मोहन सिंह के काव्य में श्रृंगार व प्रकृति वर्णन के विषय प्रमुखता से दिखाई देते हैं. 'प्रेमसम्पत्तिलता', 'श्यामालता' और 'श्यामा सरोजिनी' उनकी प्रमुख रचनाएँ हैं. उन्होंने 'ऋतुसंहार' व 'मेघदूत' नामक कृतियों का अनुवाद भी किया. 'श्यामास्वप्न' इनका काव्यमय उपन्यास है.

5.4.2.5 अंबिकादत्त व्यास (1858-1900 ई.)

'पीयूष प्रवाह' के संपादक अंबिकादत्त व्यास का जन्म काशी में हुआ. इनके पिता का नाम दुर्गादत्त व्यास था. 'पावस पचासा', 'सुकवि सतसई', 'कंसवध' (अपूर्ण) इनकी प्रमुख रचनाएँ हैं. बिहारी के दोहों को बिहारी विहार नाम से कुंडलिया छंद में विस्तृत किया.

5.4.2.6 राधाचरण गोस्वामी (1859-1925 ई.)

भक्ति, श्रृंगार और राष्ट्रप्रेम को अपनी कविता का मुख्य विषय बनाने वाले गोस्वामी जी ने 'नवभक्तमाल', 'दामिनी दूतिका', 'शिशिर सुषमा', 'प्रेमबगीची', 'भारत संगीत' और 'विधवा विलाप' आदि काव्य ग्रंथों की रचना की. तत्कालीन देशदशा से दुखी होकर इन्होंने सुधारवादी दृष्टि अपनाई.

मैं हाय हाय दै धाय पुकारे रोई, भारत की डूबी नाव उबारो कोई।

5.4.2.7 राधाकृष्ण दास (1865-1907 ई.)

'भारत बारहमासा', 'देश-दशा', 'रामजानकी', 'रहिमन विलास' और 'विनय' आदि कविताओं की रचना करने वाले राधाकृष्ण दास की कविताओं में विषय वैविध्य दिखाई पड़ता है. ये भारतेंदु के फुफेरे भाई थे अतः उनका भी इनकी कविता पर बहुत प्रभाव पड़ा. इनमें श्रृंगार, प्रेम व समाज-सुधार की भावना भी दिखाई पड़ती है.

5.5 भारतेंदु युग : काव्य प्रवृत्तियाँ

भारतेंदु युग के काव्य की प्रमुख प्रवृत्तीयाँ निम्नलिखित हैं-

5.5.1 राष्ट्रीय चेतना की अभिव्यक्ति

भारतेन्दुयुगीन कवियों की कविताओं में राष्ट्रीय चेतना के भावों की अभिव्यक्ति मिलती है. समकालीन देश-दशा पर चिंता व्यक्त करते हुए इन कवियों ने अंग्रेजों की दमनकारी नीतियों का विरोध किया तथा जनमानस में राष्ट्रीयता के भावों का संचरण किया. भारतेंदु की कविता 'विजयिनीविजयवैजयंती', बदरीनारायण चौधरी 'प्रेमघन' की 'आनंद अरुणोदय' और प्रतापनारायण मिश्र की कविता 'महापर्व' और 'नयासंवत' में हम राष्ट्रीयता के स्वर सुन सकते हैं.

अंग्रेज राज सुख साज सजे सब भारी।
पै धन विदेश चलि जात इहै अति ख्वारी।।

कुछ आलोचकों ने भारतेंदु व उनके मंडल के कवियों पर राजभक्ति का भी आरोप लगाया हैं.

5.5.2 सामाजिक चेतना की अभिव्यक्ति

इस युग के कवियों का ध्यान समाज की विषम व्यवस्था और समाज में व्याप्त बुराइयों की ओर भी गया. उन्होंने समाज सुधार से जुड़े विषयों यथा- नारी शिक्षा, अस्पृश्यता निवारण, विधवा जीवन की पीड़ा, वर्णाश्रम व्यवस्था के प्रभावों आदि को अपनी कविताओं में अभिव्यक्त किया.

बहुत हमने फैलाये धर्म। बढ़ाया छुआछूत का कर्म।।

5.5.3 श्रृंगार रस वर्णन

रीतिकालीन कवियों की भांति इस युग के कवियों ने अपनी कविताओं में श्रृंगार के अद्भुत वर्णन किए. भारतेंदु की 'प्रेम माधुरी' व 'प्रेमतरंग', प्रेमघन की 'युगलमंगल स्तोत्र', ठाकुर जगन्मोहन सिंह की 'प्रेमसम्पत्तिलता', अंबिकादत्त व्यास द्वारा रचित 'पावस पचासा' आदि में हम श्रृंगारिकता के भावों की अभिव्यक्ति देख सकते हैं.

कोमल चरनन हित फूलन के रचि पाँवडे. सँवारे।
हरीचंद मेरो मन फूल्यौ आओ भँवर मतवारे।।

5.5.4 भक्तिभावना की अभिव्यक्ति

भारतेन्दुयुगीन कवियों ने निर्गुण धारा की वैराग्य भावना मिश्रित भक्ति, सगुणोपासकों की वैष्णव भक्ति और राष्ट्रप्रेम समन्वित ईश्वर भक्ति के भावों को अभिव्यक्ति दी-

कहाँ करुणानिधि केशव सोये।

जागत नहीं अनेक जतन करी, भारतवासी रोये॥

5.5.5 हास्य व्यंग्य वर्णन

भारतेंदु मंडल के कवियों ने तत्कालीन सामाजिक दशा, अंग्रेजी शासन प्रणाली की विसंगतियों आदि को अपने व्यंग्य का निशाना बनाते हुए समाज व शासन को दिशा दिखाने का काम किया है-

मुँह जब लागै तब नहिं छूटे, जाति मान धन सब कुछ लूटे।

पागल करि मोहि करे खराब, क्यों सखि सज्जन नहीं सराब॥

5.5.6 प्रकृति वर्णन

भारतेंदु युग के कवियों के काव्य में प्रकृति का आलंबन रूप दिखाई पड़ता है. भारतेंदु की 'वसंत होली', प्रेमघन की 'मयंक महिमा', अंबिकादत्त व्यास की 'पावस पचासा' आदि में प्रकृति का यह रूप दिखाई पडता है. भारतेंदु ने अपने नाटकों में भी प्रकृति के सुंदर काव्यमय वर्णन किए हैं-

नव उज्ज्वल जलधार, हार हीरक सी सोहती।

बीच-बीच छहरती बूँद, मध्य मुक्ता मणि पोहती॥

5.5.7 समस्यापूर्ति

समस्यापूर्ति भारतेंदु काल की प्रमुख प्रवृत्ति है. कवि समाज के समक्ष काव्य पंक्ति के रूप में एक समस्या प्रस्तुत की जाती थी और उपस्थित कवि अपनी प्रतिभा के बल पर अन्य पंक्तियाँ जोड़ते हुए उस समस्या का हल दर्शाते थे. कानपुर के प्रतापनारायण मिश्र द्वारा की गयी एक समस्यापूर्ति का उदाहरण निम्नवत है-

बन बैठी है मान की मूरति-सी ,मुख खोलत बोलै न 'नाहीं' न हाँ।

तुम ही मनुहारि कै जारी परे, सखियान की कौन चलाई तहाँ।

बरषा है 'प्रतापजू' धीर धरौ, अब लौं मन को समझायो जहाँ।

यह ब्यारि तबै बदलेगी कछू, पपीहा जब पूछिहै 'पीव' कहाँ ॥

5.5.8 अनुवाद की प्रवृत्ति

भारतेंदुयुगीन कवियों ने अनुवाद की परम्परा को भी अपनाया. इन्होंने संस्कृत के प्राचीन ग्रंथो का अनुवाद किया. स्वयं भारतेंदु ने 'नारद भक्ति सूत्र' का 'तदीय सर्वस्व', जगन्मोहन सिंह ने 'ऋतुसंहार' व 'मेघदूत' का अनुवाद किया. वहीं श्रीधर पाठक ने गोल्ड स्मिथ द्वारा रचित 'हरमिट' व 'द डेजर्टेड विलेज' नामक ग्रंथो का अनुवाद 'एकांतवासी योगी' (1886), एवं 'उजड़ग्रम' (1889) नाम से किए.

5.5.9 पत्रकारिता

पत्रकारिता के क्षेत्र में भी भारतेंदु युग अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है. भारतेंदुजी स्वयं नए-नए पत्र-पत्रिकाओं को प्रोत्साहित किया करते थे. कवि वचन सुधा, हरिश्चंद्र मैगजीन, हरिश्चंद्र चन्द्रिका, बालाबोधिनी, हिंदी प्रदीप, भारत जीवन, आनन्द कादम्बिनी,

पीयूष- प्रवाह आदि इस युग की महत्वपूर्ण पत्रिकाएँ हैं.

5.5.10 कला वैशिष्ट्य

भारतेंदु युग मुख्यत: मुक्तक काव्य का युग था. उस समय के अमूमन सभी कवियों ने मुक्तक काव्यों की रचना की. इस काल में कजली व लावनियों की रचना हुई. समस्यापूर्ति व मुकरियों का लेखन भी पर्याप्त मात्रा में हुआ. गजल लेखन भी इस काल में हुआ. सरसता, सहजता, और व्यावहारिकता के अलावा प्रसंगानुकूल लोकोक्तियों व मुहावरों का प्रयोग इस काल की कविता को विशिष्ट बनाता हैं. दोहा, सोरठा, चौपाई, रोला, कुंडलिया, गीतिका और हरिगीतिका आदि प्रसिद्ध छंदों का व्यवहार भी द्रष्टव्य होता है.

निष्कर्षत: कहा जा सकता है कि भारतेंदु और उनके मंडल के कवियों ने परम्परा पालन के साथ-साथ हिंदी कविता को नई गति देने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई.

बोध प्रश्न

1. भारतेंदु मंडल के कवियों के नाम लिखिए.
2. बिहारी के दोहों को कुंडलिया छंद में किसने और किस नाम से लिखा?
3. हरिश्चंद्र मैगजीन का नाम बाद में क्या रखा गया?
4. हिंदी का पहला पत्र कौनसा तथा कहाँ से निकलता था?
5. भारतेंदु के पिता का क्या नाम था?

सही के सामने ✓ और गलत के सामने ✗ का निशान लगाएं.

1. 'पीयूष- प्रवाह' के सम्पादक अम्बिकादत्त व्यास थे.
2. हिंदी की आधुनिक काव्यधारा के प्रवर्तक भारतेंदु हैं.
3. 'प्रेमघन' नाम से प्रतापनारायण मिश्र को जाना जाता है.
4. 'कंसवध' अपूर्ण रचना है.
5. 'आनन्द कादम्बिनी' मासिक पत्रिका के सम्पादक 'प्रेमघन' हैं.

5.6 द्विवेदी युग का परिचय

हिंदी साहित्य के इतिहास में सन् 1900-1918 ई. तक का कालखंड द्विवेदी युग के नाम से प्रसिद्ध है. तत्कालीन समय की हिंदी की चर्चित व श्रेष्ठ पत्रिका 'सरस्वती' के प्रकाशन को आधार मानकर इस कालखंड की शुरुआत मानी जाती है, वहीं छायावाद की प्रथम प्रकाशित कृति जयशंकर प्रसाद कृत 'झरना' के प्रकाशन वर्ष 1918 ई. को इस कालखंड की अंतिम सीमा मानी जाती है. इस युग का नामकरण सरस्वती पत्रिका के ख्यातनाम संपादक, कवि, लेखक व समालोचक आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी के नाम पर किया गया. इस कालखंड के लिए आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने अपने इतिहास ग्रंथ में 'द्वितीय सोपान' शब्द का प्रयोग किया, वहीं डॉ. नगेंद्र द्वारा संपादित इतिहास में इसे 'जागरण सुधार काल' कहा गया.

5.6.1 द्विवेदी युग के प्रमुख कवि और उनका काव्य

द्विवेदी युग के प्रमुख कवियों व उनकी रचनाओं का परिचय इस प्रकार है-

5.6.1.1 नाथूराम शर्मा 'शंकर' (1859-1932 ई.)

हिंदी, संस्कृत, उर्दू व फारसी के ज्ञाता नाथूराम शर्मा 'शंकर' का जन्म अलीगढ़ के हरदुआगंज में हुआ. इन्होंने ब्रजभाषा एवं खड़ी बोली हिंदी दोनों में काव्य रचना की. 'शंकर सरोज', 'शंकर सर्वस्व', 'अनुराग रत्न' और 'गर्भरंडा रहस्य' इनकी प्रमुख काव्य कृतियाँ हैं. देशप्रेम, समाज सुधार, स्वदेशी अनुराग, विधवाओं की पीड़ा आदि विषय आपकी कविताओं में प्रमुखता से दिखाई पड़ते हैं.

5.5.1.2 श्रीधर पाठक (1859-1928 ई.)

हिंदी, संस्कृत और अंग्रेजी का अच्छा ज्ञान रखने वाले श्रीधर पाठक का जन्म आगरा जिले के जोधारी गाँव में हुआ. इन्होंने ब्रज भाषा व खड़ी बोली दोनों में ही काव्य रचना की. खड़ी बोली के पहले सशक्त कवि के रूप में ख्यात श्रीधर पाठक की कविताओं में राष्ट्र प्रेम और सुधारवाद के साथ-साथ प्रकृति के सुंदर चित्रण मिलते हैं. 'वनाष्टक', 'कश्मीर सुषमा', 'देहरादून', 'भारतगीत' और 'भारतोत्थान' इनकी प्रसिद्ध मौलिक रचनाएँ हैं. इसके अलावा इन्होंने अनुवाद भी किए. गोल्डस्मिथ की रचनाओं 'डेजर्टेड विलेज', 'द ट्रेवलर' और 'हरमिट' का इन्होंने क्रमशः 'उजड़ा ग्राम', 'श्रांत पथिक' और 'एकांतवासी योगी' शीर्षक से अनुवाद किया. कालिदास के 'ऋतुसंहार' का भी आपने अनुवाद किया.

5.6.1.3 महावीर प्रसाद द्विवेदी (1864-1938 ई.)

हिंदी कविता को नई दिशा देने वाले और काव्य भाषा के रूप में खड़ी बोली को स्थापित करले वाले महावीर प्रसाद द्विवेदी का जन्म रायबरेली के दौलतपुर गाँव में हुआ. वे सन् 1903 में सरस्वती पत्रिका के संपादक बने. आपने लगभग 80 ग्रंथो की रचना की जिनमें 'काव्य मंजूषा', 'सुमन', 'कान्यकुब्ज अबला विलाप' आपकी मौलिक एवं 'गंगालहरी', 'कुमार संभवसार' आपकी अनूदित रचनाएँ हैं. सरल, सहज व उपदेश शैली को कविता में प्रमुखता देने वाले द्विवेदी जी ने सौन्दर्य के स्थान पर नैतिकता और रोमांस की अपेक्षा आदर्शवाद को प्रमुखता दी. तत्कालीन कवियों का मार्गदर्शन करते हुए इन्होंने विषय वैविध्य को कविताओं के लिए अपनाने का संदेश दिया.

5.6.1.4 अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' (1865-1947 ई.)

इनका जन्म आजमगढ़ जिले के निजामाबाद नामक स्थान पर हुआ. 'प्रियप्रवास' (1914) के रूप में हिंदी जगत को खड़ी बोली का प्रथम महाकाव्य भेंट करने करने वाले 'हरिऔध' ने सीता वनवास की घटना पर 'वैदेही वनवास' (1940) भी रचा. इनके अतिरिक्त 'हरिऔध' ने 'पद्य प्रसून', 'चुभते चौपदे', 'चौखे चौपदे', 'बोलचाल' व 'रसकलश' नामक काव्य ग्रंथों की भी रचना की.

5.6.1.5 गयाप्रसाद शुक्ल सनेही (1883-1972 ई.)

उन्नाव जिले के हड़हा ग्रम में जन्म लेने वाले गया प्रसाद शुक्ल ने श्रृंगार जैसे विषयों पर 'सनेही' उपनाम से तथा वीरता व ओज के भावों को अभिव्यक्ति देने वाले काव्य को

'त्रिशूल' उपनाम से लिखा. आपने 'सुकवि' नामक पत्रिका का संपादन भी किया. 'राष्ट्रीय वीणा', 'कृषक क्रंदन', 'त्रिशूल तरंग' और 'करुणा कादंबिनी' आपकी महत्वपूर्ण काव्य रचनाएँ हैं.

5.6.1.6 मैथिलीशरण गुप्त (1886-1964 ई.)

हिंदी जगत में राष्ट्रीय कवि के रूप में ख्यात मैथिलीशरण गुप्त का जन्म चिरगाँव 'झाँसी' में हुआ. आपकी प्रथम पुस्तक 'रंग में भंग' (1909) है. हिंदी जगत को आपने 2 महाकाव्य और 19 खण्डकाव्य भेंट किए. आपकी प्रसिद्धि का आधार 'भारत भारती' (1912) नामक रचना रही है. इस रचना के माध्यम से गुप्त जी ने राष्ट्र प्रेम व गौरव के भावों को जगाने का प्रयास किया. 'रंग में भंग' (1909), 'जयद्रथ वध' (1910), 'भारत भारती' (1912), 'पंचवटी' (1925), 'झंकार' (1929), 'साकेत' (1931), 'यशोधरा' (1933), 'द्वापर' (1936), 'जयभारत' (1952) और 'विष्णुप्रिया' (1957) आपकी महत्वपूर्ण काव्य रचनाएँ हैं.

'साकेत' रामकथा है जिसमें उन्होंने लक्ष्मण की पत्नी उर्मिला का स्मरण किया है. वहीं 'यशोधरा' में गौतम बुद्ध की पत्नी 'यशोधरा' व 'विष्णुप्रिया' में चैतन्य महाप्रभु की पत्नी विष्णुप्रिया के अवदान को रेखांकित किया है.

5.6.1.7 रामनरेश त्रिपाठी (1889-1962 ई.)

रामनरेश त्रिपाठी का जन्म कोइरीपुर ग्राम, जिला-जौनपुर में हुआ. 'मिलन' (1917), 'पथिक' (1920), 'मानसी' (1927) और 'स्वप्न' (1929) आपकी महत्वपूर्ण रचनाएँ हैं. प्रेम, देश भक्ति, नीति एवं प्रकृति वर्णन आपकी रचनाओं में प्रमुखता से द्रष्टव्य होता है.

5.6.1.8 जगन्नाथ दास रत्नाकर (1866-1932 ई.)

द्विवेदी युग में काव्य भाषा खड़ी बोली हो चुकी थी फिर भी कुछ कवि ब्रजभाषा में रचनाकर यश प्राप्त कर रहे थे. बनारस निवासी रत्नाकर जी आधुनिक काल के ब्रजभाषा के श्रेष्ठ कवि हैं. बिहारी को अपना प्रिय कवि मानने वाले रत्नाकर ने 'बिहारी रत्नाकर' नाम से बिहारी सतसई की टीका रची. 'उद्धव शतक', 'गंगावतरण', 'श्रृंगार लहरी' और 'हिंडोला' आदि आपकी महत्वपूर्ण रचनाएँ हैं.

5.6.1.9 सत्यनारायण कवि रत्न (1880-1918 ई.)

आधुनिक काल में ब्रजभाषा कवि के रूप में प्रसिद्ध कविरत्न का जन्म अलीगढ़ के सराय नाम स्थान पर हुआ. आपकी कविताएँ 'हृदय तरंग' नामक ग्रंथ में संगृहीत हैं. भ्रमर गीत परम्परा में आपने 'भ्रमरदूत' नामक काव्य की रचना की. आपकी काव्य भाषा सरल सहज है. भक्ति, विनय व देशप्रेम के भाव आपकी कविताओं के मुख्य विषय रहे हैं.

5.7 द्विवेदी युग : काव्य प्रवृत्तियाँ

द्विवेदी युग की मुख्य प्रवृत्तियाँ इस प्रकार हैं-

5.7.1 काव्य भाषा : खड़ीबोली

भारतेन्दुयुगीन साहित्य में गद्य व पद्य की भाषा अलग-अलग थी. वहाँ कविता की रचना ब्रजभाषा में हो रही थी तो गद्य खड़ीबोली में रचा जा रहा था. महावीर प्रसाद द्विवेदी के योगदान से काव्य व गद्य दोनों की भाषा एक ही 'खड़ीबोली' हो गई. काव्य भाषा का परिर्वतन इस युग की एक महत्वपूर्ण घटना है. 'जयद्रथवध', 'भारत भारती', 'प्रियप्रवास' आदि की रचना व प्रसिद्धि ने सिद्ध कर दिया कि खड़ीबोली काव्य रचना के लिए किसी भी तरह से ब्रजभाषा से कमतर नहीं है.

5.7.2 राष्ट्रीयता

भारतेंदु युग के कवियों ने राष्ट्रीय चेतना के भावों को जो अभिव्यक्ति प्रदान की उसका स्वर इस युग की कविता में और अधिक प्रखर व मुखर हुआ. यहाँ की कविता राजभक्ति से पूरी तरह पृथक हो गई. कवियों ने भारत के गौरवपूर्ण अतीत का स्मरण कर हमारे देश के महापुरुषों व महानायकों के त्याग, बलिदान वीरता व राष्ट्रप्रेम के भावों के माध्यम से देशवासियो में राष्ट्रीयता के भावों के संचरण का प्रयास किया.

संपूर्ण देशों से अधिक किस देश का उत्कर्ष है ?
उसका कि जो ऋषि भूमि है वह कौन भारतवर्ष है।

5.7.3 नैतिकता व आदर्शों पर बल

इस युग में ऐतिहासिक, पौराणिक व काल्पनिक पात्रों के आधार पर ऐसे कई प्रबंध काव्य रचे गए जो तत्कालीन समाज में नैतिकता व आदर्शों का संचार करने में सफल हुए. प्रेम वर्णन में भी इन कवियों ने आदर्श व उदात्त मूल्यों की प्रतिष्ठा को ध्यान में रखा. ये रीतिकालीन परिपाटी में नहीं बहे. महावीर प्रसाद द्विवेदी की प्रेरणा से स्वयं मैथिलीशरण गुप्त ने इस बात का उद्घोष किया कि-

केवल मनोरंजन न कवि का कर्म होना चाहिए।
उसमें उचित उपदेश का भी मर्म होना चाहिए।।

5.7.4 इतिवृत्तात्मकता

द्विवेदीयुगीन कवियों ने किसी ऐतिहासिक, पौराणिक कथा को केंद्र मानकर काव्य रचना की. इतिवृत्त से अभिप्राय कथा से है. हरिऔध, गुप्त आदि सभी कवियों ने इस प्रकार की रचनाएँ है. यहाँ तक आते-आते कविता अधिक समृद्ध हो गइ. अब उसमें छंद, भाव और भाषा के रूपों में बदलाव आया.

5.7.5 मानवतावादी दृष्टिकोण

आधुनिक काल के आगमन ने समाज तथा रचनाकारों के दृष्टिकोण में बदलाव किया. जाति, धर्म, लिंग आदि के आधार पर भेदभाव के बंधन ढीले पड़ने लगे तथा आम मानव की पीड़ा, वेदना, कष्ट कवि की कविता में अभिव्यक्ति पाने लगे. कवियों ने किसान, नारी व अन्य उपेक्षित पीड़ित पात्रों को आधार बनाकर काव्य रचना कर उनके प्रति संवेदना के भाव जगाए.

5.7.6 प्रकृति वर्णन

द्विवेदीयुगीन कवियों ने प्रकृति के सुन्दर वर्णन किए. उन्होंने प्रकृति को आलंबन रूप में देखा. हरिऔध कृत 'प्रियप्रवास' मैथिलीशरण गुप्त 'पुष्पांजलि', रामनरेश त्रिपाठी की 'मिलन', 'पथिक', 'स्वप्न' आदि रचनाओं में प्रकृति के सुंदर वर्णन देखने को मिलते हैं –

दिवस का अवसान समीप था गगन था कुछ लोहित हो चला।
तरु शिखा पर थी अब राजती कमलिनी कुल वल्लभ की प्रभा।

5.7.7 विषय-वस्तु विस्तार

इस युग की कविता परम्परागत प्रेम, श्रृंगार व प्रकृति वर्णन के सीमित विषयों से आगे बढ़ी. महावीर प्रसाद द्विवेदी ने 'सरस्वती' पत्रिका के माध्यम से तत्कालीन साहित्यकारों का मार्गदर्शन किया. 'कवि कर्तव्य' नामक अपने निबंध में स्वयं महावीर प्रसाद द्विवेदी ने लिखा था– ''चींटी से लेकर हाथी पर्यन्त पशु, भिक्षुक से लेकर राजा पर्यन्त मनुष्य, बिंदु से लेकर समुद्र पर्यन्त जल, अनन्त आकाश, अनन्त पृथ्वी, सभी पर कविता हो सकती है.'' इस प्रकार इस काल की कविता में हमें वर्ण्य विषय विस्तार दिखाई पड़ता है.

5.7.8 कला वैशिष्ट्य

काव्यभाषा के रूप में खड़ी बोली का स्वीकृत होना इस काल की सबसे बड़ी उपलब्धि थी. इस कालखंड में कवियों ने लगभग सभी काव्य रूपों में रचना की. प्रबंध काव्य की दृष्टि से तो यह युग प्रधान रहा ही है. 'रंग में भंग', 'जयद्रथ वध', 'किसान', 'मौर्य विजय', 'मिलन' जैसे खंडकाव्य के साथ-साथ 'प्रियप्रवास' व 'साकेत' जैसे महाकाव्यों की भी रचना हुई. प्रगीत एवं मुक्तक काव्य भी यहाँ रचा गया. इस काल के कवियों ने छंद वैविध्य को भी स्वीकारा. परम्परागत रूप से प्रचलित दोहा, कवित्त, सवैया के अतिरिक्त गीतिका, हरिगीतिका, कुडलिया, रोला, छप्पय के साथ-साथ संस्कृत के वर्णिक छंदों व उर्दू छंदों को भी रचना में अपनाया गया.

निष्कर्षतः कहा जा सकता है महावीर प्रसाद द्विवेदी का आगमन हिंदी कविता के लिए महत्त्वपूर्ण रहा. यहाँ आकर कविता केवल मनोरंजन का माध्यम न रही, बल्कि वह समाज के दिशा बोध के दायित्व का भी निर्वहण करने लगी.

निम्नांकित प्रश्नों के उत्तर के लिए सही विकल्प का चयन करें :

1. 'द्विवेदी युग' का नामकरण किसके नाम पर हुआ है?
   (1) महावीर प्रसाद द्विवेदी (2) हजारी प्रसाद द्विवेदी
   (3) शांतिप्रिय द्विवेदी (4) सोहनलाल द्विवेदी
2. हिंदी जगत में 'राष्ट्रकवि' के नाम से कौन जाना जाता है?
   (1) भारतेंदु हरिश्चंद्र (2) मैथिलीशरण गुप्त
   (3) अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' (4) श्रीधर पाठक
3. 'द्विवेदी युग' की कविताओं की सर्वप्रमुख विशेषता क्या है?
   (1) छंद वैविध्य (2) गीति
   (3) इतिवृत्तात्मकता (4) मुक्तक शैली

4. 'द्विवेदी युग' का आरंभ कब से माना जाता है?

(1) 'भारत-भारती' के प्रकाशन से (2) प्रियप्रवास' के प्रकाशन से

(3) 'भारतगीत' के प्रकाशन से (4) 'सरस्वती' के प्रकाशन से

5. 'द्विवेदी युग' में काव्य की सर्वप्रमुख भाषा कौन सी थी?

(1) ब्रज (2) अवधी

(3) खड़ी बोली (4) उर्दू

5.8 सार बिंदु

- आधुनिक शब्द से अभिप्राय दो बातों से है- 1. मध्यकालीन साहित्य प्रवृत्तियों का त्याग व नए तर्कपूर्ण समाज व साहित्य की स्वीकृति 2. पारलौकिकता के स्थान पर इहलौकिकता को महत्व.
- हिंदी साहित्य के इतिहास में सन् 1857-1900 तक का कालखंड भारतेंदु युग के नाम से जाना जाता है.
- भारतेंदु युग में हिंदी के आधुनिक काल के पुरोधा कवि भारतेंदु हरिश्चंद्र और भारतेंदु मंडल के कवियों ने हिंदी कविता को अपना उल्लेखनीय योगदान दिया.
- भारतेंदु युग की कविताओं में राष्ट्रीय चेतना, समाज सुधार, ईश्वरभक्ति के भावों को अभिव्यक्ति मिली. इनकी कविता में प्रकृति का आलंबन रूप दिखाई पड़ता है.
- समस्यापूर्ति भारतेंदु काल की एक प्रमुख प्रवृत्ति के रूप में दिखाई पड़ती है.
- भारतेंदु युग कवियों ने अनुवाद की परम्परा को भी अपनाया। यह युग मुख्यतः मुक्तक काव्य का युग था.
- हिंदी साहित्य के इतिहास में सन् 1900-1918 ई. तक का कालखंड द्विवेदी युग के नाम से प्रसिद्ध है. इस युग का नामकरण 'सरस्वती' पत्रिका के ख्यातनाम संपादक, कवि, लेखक व समालोचक आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी के नाम पर किया गया.
- द्विवेदी युग की कविता नीति व आदर्शों की स्थापना पर बल देती है. इतिवृत्तात्मकता इस युग की कविता की प्रधान विशेषताओं में से एक है.
- द्विवेदी युग की कविता अब परम्परागत प्रेम, श्रृंगार व प्रकृति वर्णन के सीमित विषयों से आगे बढ़ी.
- काव्यभाषा के रूप में खड़ी बोली का स्वीकृत होना इस काल की सबसे बड़ी विशेषता कही जा सकती है.

5.9 परीक्षोपयोगी प्रश्न

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. आधुनिक काल की परिस्थितियों का वर्णन कीजिए.
2. भारतेन्दुयुगीन कविता की प्रवृत्तियों का वर्णन कीजिए.
3. द्विवेदीयुगीन हिंदी कविता की प्रवृत्तियों का सोदाहरण विवेचन करें.
4. भारतेंदु मंडल के किन्हीं पाँच कवियों का परिचय दीजिए.
5. द्विवेदी युग के किन्हीं पाँच कवियों का परिचय दीजिए.

6. भारतेंदु युग और द्विवेदी युग की राष्ट्रीय चेतना की भावना और प्रकृति चित्रण पर प्रकाश डालिए.

टिप्पणी लिखिए

1. आधुनिक शब्द का अर्थ
2. भारतेंदु हरिश्चन्द्र
3. भारतेंदु युग का परिचयात्मक अध्ययन
4. द्विवेदी युग का परिचय

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

सही के सामने ✓ और गलत के सामने ✗ का निशान लगाएं.

1. इतिवृत्तात्मकता भारतेंदु युग की प्रमुख विशेषता है.
2. श्रीधर पाठक भारतेंदु मंडल के प्रमुख कवि है.
3. द्विवेदी युग की कविता में वर्ण्य-विषय में विस्तार दिखाई पड़ता है.
4. 'प्रिय प्रवास' खड़ीबोली हिंदी का प्रथम महाकाव्य है.
5. भारतेंदु युग मुक्तक काव्य का युग था.

रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए.

1. बिहारी रत्नाकर की टीका के रचयिता ------- हैं.
2. 'त्रिशूल' उपनाम से -------कवि ने लिखा है.
3. 'भ्रमरदूत' नामक काव्य की रचना --------की.
4. लक्ष्मण की पत्नी उर्मिला से सम्बन्धित काव्य------ है.
5. गोल्डस्मिथ की -----रचना का एकांतवासी योगी नाम से ------ ने अनुवाद किया.

सही विकल्प का चयन करें.

1. 'पपीहा जब पूछिहै पीव कहाँ' पंक्ति है-

   (1) भारतेंदु (2) प्रतापनारायण मिश्र

   (3) प्रेमघन (4) अम्बिकादत्त व्यास

2. 'विजयिनी विजय वैजयंती' कविता है-

   (1) राधा कृष्ण दास (2) प्रेमघन

   (3) भारतेंदु (4) ठा. जगन्मोहन

3. महावीर प्रसाद द्विवेदी सरस्वती के सम्पादक बने सन.....में

   (1) 1900 (2) 1803

   (3) 1903 (4) 1901

4. 'भारत- भारती' के रचनाकार है-

   (1) भारतेंदु (2)मैथिलीशरण गुप्त

   (3) महावीर प्रसाद द्विवेदी (4) राम नरेश 'त्रिपाठी'

5. 'मिलन' और 'पथिक' रचना है-

   (1) नाथूराम शर्मा 'शंकर' (2) मैथिलीशरण गुप्त

   (3) राम नरेश 'त्रिपाठी' (4) कविरत्न

5.10 संदर्भ ग्रंथ सूची

1. नगेन्द्र, सं. हिंदी साहित्य का इतिहास, मयूर पेपर बैक्स, नोएडा
2. बच्चन सिंह, आधुनिक हिंदी साहित्य का इतिहास लोकभारती प्रकाशन, नई दिल्ली
3. रामचंद्र शुक्ल, हिंदी साहित्य का इतिहास, कमल प्रकाशन, नई दिल्ली
4. रामस्वरूप चतुर्वेदी, हिंदी साहित्य और संवेदना का विकास, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
5. शिवकुमार शर्मा, हिंदी साहित्य : युग और प्रवृत्तियाँ, नवभारत प्रकाशन, जोधपुर

इकाई 6 भारतेंदु हरिश्चंद्र – 'नए जमाने की मुकरी'

रूपरेखा

6.1 उद्देश्य

6.2 प्रस्तावना

6.3 कवि परिचय

6.3.1 व्यक्तित्व

6.3.2 कृतित्व

6.3.3 हिंदी साहित्य को भारतेंदु का योगदान

6.4 भारतेंदु के काव्य की विशेषताएँ

6.5 भारतेंदु रचित मुकरियाँ : पाठ और व्याख्या

6.6 सार-बिंदु

6.7 परीक्षोपयोगी प्रश्नावली

6.8 संदर्भ-सूची

6.1 उद्देश्य

आप बी.ए. के लिए हिंदी मुख्य / गौण विषय के पाठ्यक्रम में द्वितीय प्रश्नपत्र की छठी इकाई, जो खंड 2 में है, का अध्ययन आरंभ करने जा रहे हैं, जिसमें आधुनिक हिंदी की साहित्यिक भाषा के जनक समझे जाने वाले भारतेंदु बाबू हरिश्चंद्र के लेखकीय व्यक्तित्व की एक झलक देखने को मिलेगी. इस इकाई में उनकी दस मुकरियों का संकलन है, जो कवि की ही नहीं, उस युग की भी काव्यभाषा का एक परिचय देते हैं. इस इकाई को पढ़ने के बाद आप

- भारतेंदु के जीवन का संक्षिप्त परिचय प्राप्त कर सकेंगे.
- भारतेंदु की प्रमुख रचनाओं से परिचित हो सकेंगे.
- हिंदी साहित्य में भारतेंदु के योगदान को रेखांकित कर पाएँगे.
- भारतेंदु के काव्य की विशेषताओं को समझ सकेंगे.
- भारतेंदु रचित दस मुकरियों का पठन और व्याख्या कर पाएँगे.

6.2 प्रस्तावना

इसी प्रश्नपत्र, यानी 'हिंदी कविताएँ' के अंतर्गत खंड 1 में आपने हिंदी की आदिकालीन और मध्यकालीन कविता से परिचय प्राप्त किया है. उन कविताओं की भाषा आपको रोजमर्रा की जानी हुई हिंदी से काफी अलग लगी होगी. उन रचनाओं में आधुनिक हिंदी अभी बनने की प्रक्रिया में थी. वह अभी मानकीकृत नहीं होने पायी थी और उस पर स्थानीय बोलियों का अभी भी खासा असर था. विकास के क्रम में ब्रजभाषा धीरे धीरे काव्यभाषा के रूप में प्रतिष्ठित और निर्विवादित रूप से मान्य हो गयी थी. आप अपने पूर्व अध्ययन से यह भी जानते हैं कि रीतिकाल तक साहित्य मुख्यत: पद्य में ही था और साहित्य का प्रधान अर्थ 'काव्य' ही था.

उन्नीसवीं शती में युगीन परिस्थितियों के चलते हिंदी साहित्य लेखन में विषयवस्तु,

भाषा, शैली, विधा आदि सभी स्तरों पर व्यापक बदलाव हुए, जिनके विषय में विस्तार से आप इस खंड की पहली इकाई में पढ़ चुके हैं. प्रभूत मात्रा में गद्य लेखन आरंभ हुआ, जो आधुनिक हिंदी में था. लेकिन काव्य की भाषा अभी भी प्रायः ब्रजभाषा ही बनी रही, हालाँकि नयी विषयवस्तु को कविता में शामिल करने का दबाव भाषा में भी परिवर्तन की माँग कर रहा था. भारतेंदु ने इसके समाधान के लिए दोनों रास्ते अपनाये – एक तरफ उन्होंने लोक प्रचलित ब्रजभाषा में नये विचारों की अभिव्यक्ति की, तो दूसरी तरफ आधुनिक हिंदी में भी काव्य रचने की ईमानदार कोशिशें कीं.

प्रस्तुत इकाई में भारतेंदु रचित 'नये जमाने की मुकरी' को लिया गया है, जो युगीन भाव-विचार को तत्कालीन लोकप्रचलित सहज सरल भाषा में अभिव्यक्त करने के भारतेंदु के प्रयत्नों की एक झलक प्रस्तुत करते हैं.

6.3 कवि परिचय

आइये! कविता पढ़ने से पहले हम कवि से परिचित हो जाएँ!

6.3.1 व्यक्तित्व

'भारतेंदु' बाबू हरिश्चंद्र! आधुनिक हिंदी भाषा और साहित्य के लिए यह नाम युग प्रवर्तक का दर्जा रखता है. यद्यपि आधुनिक हिंदी भाषा और हिंदी गद्य लेखन की शुरुआत भारतेंदु के आने से पहले ही हो चुकी थी, पर उनकी बहुमुखी प्रतिभा और हिंदी के प्रति समर्पण ने सत्रह अठारह वर्ष के उनके छोटे से लेखन काल में हिंदी भाषा और साहित्य के लिए वह कर दिखाया, जो एक युग का काम था. इसीलिए हिंदी साहित्य के इतिहास में यह युग उनके नाम से – 'भारतेंदु युग' के नाम से जाना जाता है.

भाद्रपद शुक्ल पंचमी (ऋषिपंचमी), विक्रम संवत् 1907 तदनुसार 09 सितंबर, 1850 ई. को वाराणसी के सुप्रतिष्ठित वैश्य परिवार में हरिश्चंद्र का जन्म हुआ था. पिता श्री गोपालचंद्र जी साहित्यिक रुचि के व्यक्ति थे और स्वयं 'गिरिधरदास' के नाम से काव्य रचनाएँ करते थे. कवियों और काव्य रसिकों का उनके घर में नित्य जमावड़ा रहता था. अतः बालक हरिश्चंद्र को बचपन से साहित्यिक वातावरण सुलभ हुआ और उनमें सहज स्वाभाविक रूप से काव्य रुचि विकसित हुई. कुशाग्र बुद्धि, तीव्र स्मरणशक्ति और सूक्ष्म अवलोकन क्षमता उनमें जन्मजात थी. कहते हैं, हरिश्चंद्र पाँच-छह वर्ष के रहे होंगे, पिता 'बलराम कथामृत' की रचना कर रहे थे. बाणासुरवध प्रसंग था. बालक हरिश्चंद्र ने भी कविता कहने की इच्छा प्रकट की. पिता की प्रेमपूर्ण आज्ञा मिली तो उन्होंने यह दोहा बना कर सबको चकित कर दिया :

'लै ब्योंड़ा ठाढ़े भए श्री अनिरुद्ध सुजान ।
बानासुर की सैन को हनन लगे भगवान ॥'

{ले ब्योंड़ा (पुराने समय में दरवाजे को अंदर से बंद करने के लिए लगाई जाने वाली बेड़ी भारी लकड़ी) ठाढ़े (खड़े) भए (हुए) श्री अनिरुद्ध सुजान (बुद्धिमान). बाणासुर की सैन (सेना) को हनन (संहार करने) लगे भगवान (श्री अनिरुद्ध).}

हरिश्चंद्र की प्रारंभिक शिक्षा की व्यवस्था उस समय की परंपरा के अनुसार घर पर ही हुई, जिसमें उर्दू और अंग्रेजी की शिक्षा भी शामिल थी. बाद में वे बनारस के क्वींस कॉलेज में पढ़ने जाने लगे. कॉलेज छोड़ने के बाद उन्होंने स्वाध्याय से साहित्य तथा अन्य विषयों का विषद ज्ञान प्राप्त किया साथ ही तब के बनारस में प्रचलित प्रमुख भाषाओं – गुजराती, मराठी, बाँगला, मारवाड़ी, पंजाबी आदि का भी इतना अभ्यास कर लिया कि इन भाषाओं में थोड़ा बहुत साहित्य सृजन भी कर सके.

भारतेंदु चौमुखी प्रतिभा के धनी थे. वे अपने समय के सबसे फैशनेबल व्यक्तियों में से एक थे. हिंदी के प्रसिद्ध कवि अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' ने भारतेंदु का बहुत सुंदर शब्दचित्र खींचा है :

"....इसी बीच संगत के आँगन में एक दिव्य मूर्ति का आविर्भाव हुआ. उसके पाँवों में काली बनात का चूड़ीदार पाजामा, बदन पर मखमली अंगा, शिर पर ऊँची गोल टोपी, और कंधों पर नफीस शाली रूमाल था. वह मुस्कराती हुई, पान चबाती बाबाजी की ओर आ रही थी. उसके घुँघराले बाल कांत कपोलों के दोनों ओर बिखरे हुए थे और मंद वायु लगाने से बड़ी मनोहरता के साथ हिल रहे थे. हाथ में एक पतली छड़ी थी जो उनकी चंचल आँखों से भी अधिक चंचल थी. ..... यह प्रसन्नवदन मूर्ति भारतेंदु जी की थी."

('अंधेर नगरी'; संपादक — श्री कुँवरजी अग्रवाल पृ. 4)

अभिनय की उनमें बेजोड़ प्रतिभा थी, जिसकी चर्चा उनके समकालीनों ने अपनी प्रशस्तियों में बार बार की है. उनकी लेखनशक्ति और आशुकवित्व का जोड़ उनके समय में तो क्या संभवत: आज तक मिलना कठिन है. हास्य और विनोदप्रियता उनके व्यक्तित्व के अभिन्न अंग थे. परोपकार, सहृदयता, सौहार्द और सौजन्य आदि मानवीय गुण उनमें सहज विराजते थे, हालाँकि विलासप्रिय, अपव्ययी होने के कारण उनकी आलोचना भी खूब होती थी. भारतेंदु ने स्वयं अपने गुणों अवगुणों का वर्णन बड़ी बेबाकी और निर्ममता के साथ अपनी रचनाओं में जब-तब किया है. भारतेंदु का व्यक्तित्व स्वतंत्रचेता है. किसी प्रकार का दबाव उसे स्वीकार्य नहीं - न आर्थिक कठिनाइयों का, न अनावश्यक सामाजिक रूढ़ियों का, न औपनिवेशिक सत्ता का.

'भारतेंदु' उपाधि के संबंध में : हरिश्चंद्र को 'भारतेंदु' की उपाधि कैसे मिली, इसका पूरा विवरण हरिश्चंद्र के मित्र और अपने समय में काशी के परम पंडित महामहोपाध्याय सुधाकर द्विवेदी जी ने अपनी पुस्तक 'रामकहानी' की भूमिका में दिया है :

"......... बनारस के बड़े प्रसिद्ध पंडित बालशास्त्री ने जब अपनी व्यवस्था से कायस्थों को क्षत्री बनाया उस समय बाबूसाहब ने अपनी मैगजीन में 'सबै जात गोपाल की' इस शिरनामे से काशी के पंडितों की बड़ी धूर उड़ाई. इस पर पंडित रघुनाथ जी बहुत नाराज होकर बाबू साहब से बोले कि आप को कुछ ध्यान नहीं रहता कि कौन आदमी कैसा है. सभी का अपमान किया करते हो. जैसे आप अपने सुयश से जाहिर हो, उसी तरह भोग-विलास और बड़ों के अपमान करने से आप कलंकी भी हो. इसलिए आज से मैं आपको भारतेंदु के नाम से पुकारा करूँगा. .... मैंने कहा कि पूरे चाँद में कलंक देख पड़ता है, आप दूइज के चाँद हैं, जिसके दर्शन से लोग पुण्य समझते हैं. यह मेरी बात सबके मन में खुशी के साथ समा गयी. धीरे धीरे इनकी पोथियों पर दूइज के चाँद की सूरत छपने लगी. इस तरह अब आज इज्जत के साथ बाबू साहब भारतेंदु कहे जाते हैं."

('अंधेर नगरी'; संपादक — श्री कुँवरजी अग्रवाल पृ. 6-7)

भारतेंदु सही मायनों में पक्के बनारसी थे - बिंदास, बेफिक्र और मस्त! ऊपर से अद्भुत प्रतिभा के धनी! जिसके कारण वे अपने 34 वर्षों के छोटे से जीवनकाल, जिसमें से लेखन काल तो महज 17-18 वर्षों का ही था, में हिंदी भाषा और साहित्य के लिए वो कर गये, जो शायद सौ वर्षों में भी मुश्किल था!

माघ कृष्ण षष्ठी, संवत् 1941 विक्रमी तदनुसार 06 जनवरी, 1885 ई. को दो वर्षों की बीमारी झेलने के बाद उनका देहावसान हो गया.

आइये! आगे बढ़ने से पहले, हमने क्या समझा, यह जाँच लें.

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक वाक्य में दें :

1) भारतेंदु हरिश्चंद्र का जीवनकाल कब से कब तक का है?

2) भारतेंदु हरिश्चंद्र कहाँ के निवासी थे?

3) हिंदी साहित्य के इतिहास के उन्नीसवीं शती के उत्तरार्ध को भारतेंदु युग' क्यों कहा जाता है?

4) हरिश्चंद्र को 'भारतेंदु' किसने कहा था?

5) भारतेंदु हरिश्चंद्र को हिंदी के अतिरिक्त और किन भारतीय भाषाओं का अभ्यास था?

6.3.2 कृतित्व

भारतेंदु का समय साहित्यिक दृष्टि से दो युगों का संधिस्थल कहा जा सकता है. यह वह समय था जब एक ओर रीतिकाल की साहित्यिक प्रवृत्तियाँ अभी भी अपना जोर बनाए हुई थीं और भाषा और विषय दोनों ही रीतिकालीन प्रवृत्तियों के ही अनुगामी थे. दूसरी ओर अंग्रेजों के साथ आयी नयी ढंग की विचारधारा और पश्चिमी साहित्य भी कहीं न कहीं जनमानस में अपनी पैठ बना रहे थे. भारतेंदु की प्रतिभा ने इन दोनों धाराओं का समुचित समन्वय प्रस्तुत किया. भारतेंदु ने न तो पुराने को पूरी तरह नकारा और न ही केवल उससे बंधे रहे, इसी तरह नये का न तो बहिष्कार किया और न ही अंधानुकरण ही. उन्होंने इस संबंध में अपने विवेक को सदा जागृत और सजग रखा और आधुनिक हिंदी साहित्य का वह पथ निर्मित किया जिस पर चलकर हिंदी साहित्य को बहुत आगे तक जाना था.

भारतेंदु का रचनाकर्म विपुल है और विषय क्षेत्र विशाल. भारतेंदु के फुफेरे भाई और उस युग के प्रमुख साहित्यकारों में से एक बाबू राधाकृष्णदास ने भारतेंदु की छोटी-बड़ी, प्रकाशित-अप्रकाशित, पूर्ण-अपूर्ण कुल 238 रचनाओं का उल्लेख कुल 12 वर्गों के अंतर्गत किया है, जिनमें उनके नाटक, काव्य, आख्यायिका या उपन्यास, स्तोत्र, अनुवाद या टीका, परिहास, धर्मसंबंधी इतिहास तथा चिह्नादि वर्णन, महात्म्य, ऐतिहासिक, राजभक्ति सूचक, स्फुट रचनाएँ, लेख तथा व्याख्यान आदि और संपादित, संग्रहित अथवा उत्साह देकर बनवाए ग्रंथ शामिल हैं. इनमें से कई ऐसे हो सकते हैं, जिनकी केवल योजना और शीर्षक ही बने, मूलग्रंथ कभी लिखना शुरू ही नहीं हो पाया; कुछ ऐसे होंगे, जो शुरू तो हुए पर समाप्त नहीं हो पाए.

भारतेंदु उत्साही व्यक्ति थे और हिंदी की उन्नति के लिए कुछ भी करने को तैयार! इसलिए वह एक ग्रंथ लिखना शुरू करते और दूसरा कुछ सामने आता जो अधिक महत्वपूर्ण लगता तो वह पहले को छोड़कर उसे शुरू कर देते. भारतेंदु ने स्वयं ही अपने आपको एक जगह 'आरंभशूर' कहा है, यानी कि जिसमें आरंभ करने का अदम्य साहस हो, इस बात की परवाह के बगैर कि वह समाप्त भी हो सकेगा या नहीं!

भारतेंदु की रचनाओं में सर्वाधिक महत्वशाली उनकी नाट्य रचनाएँ हैं, जिन्होंने आधुनिक हिंदी की सुरुचिपूर्ण नाट्य परंपरा की नींव रखी :

मौलिक नाट्य रचनाएँ

1. वैदिकी हिंसा हिंसा न भवति (1873 ई.)
2. सत्य हरिश्चन्द्र (1875 ई.)
3. श्री चंद्रावली (1876 ई.)

4. विषस्य विषमौषधम् (1876 ई.)
5. भारत दुर्दशा (1880 ई., ब्रजरत्नदास के अनुसार 1876 ई.)
6. नीलदेवी (1881 ई.)
7. अंधेर नगरी (1881 ई.)
8. प्रेमजोगिनी (1875 ई., प्रथम अंक में चार गर्भांक, अपूर्ण)
9. सती प्रताप (1883 ई., केवल चार दृश्य, अपूर्ण, बाबू राधाकृष्णदास ने पूर्ण किया)

अनूदित नाट्य रचनाएँ

10. विद्यासुन्दर (1868 ई., संस्कृत 'चौरपंचाशिका' के यतीन्द्रमोहन ठाकुर कृत बँगला संस्करण का हिंदी अनुवाद)
11. पाखंडविडंबन (1872 ई., कृष्ण मिश्र कृत 'प्रबोधचंद्रोदय' नाटक के तृतीय अंक का अनुवाद)
12. धनंजयविजय (1873 ई., कांचन कवि कृत इसी नाम के संस्कृत व्यायोग का अनुवाद)
13. कर्पूर मंजरी (1875 ई., राजशेखर कवि कृत प्राकृत सट्टक का अनुवाद)
14. भारत जननी (1877 ई.,नाट्यगीत, बंगला की 'भारतमाता' के हिंदी अनुवाद पर आधारित)
15. मुद्राराक्षस (1878 ई., विशाखदत्त के संस्कृत नाटक का अनुवाद)
16. दुर्लभ बंधु (1880 ई., शेक्सपियर के 'मर्चेंट ऑफ वेनिस' का अनुवाद)

काव्यकृतियाँ

भारतेंदु की आरंभिक काव्य रचनाएँ उस समय की प्रचलित परंपरा के अनुरूप श्रृंगारिक और धर्मसंबंधी हैं. वे वल्लभ संप्रदाय के पुष्टिमार्गीय वैष्णव थे और न केवल स्वयं मार्ग का नियमपूर्वक पालन करते थे, अपितु उसके प्रचार-प्रसार को भी अपना पुनीत कर्तव्य समझते थे. अपने संप्रदाय और मार्ग के सिद्धांतों और आचारों के प्रतिपादन के लिए लिखे गये उनके ग्रंथों में प्रमुख हैं :

1. भक्तसर्वस्व (1870 ई.)
2. कार्तिक स्नान (1872 ई.)
3. वैशाखमहात्म्य (1872 ई.)
4. देवी छद्मलीला (1873 ई.)
5. प्रातःस्मरण मंगलपाठ (1873 ई.)

इनके अलावा भी और बहुत सारे छोटे-छोटे ग्रंथ रच कर भारतेंदु ने अपनी धार्मिक आस्था के प्रचार-प्रसार का पूरा प्रयत्न किया है.

भक्ति और दिव्य प्रेम से संबंधी रचनाएँ भारतेंदु के प्रेमाधारित भक्त हृदय को सबसे अच्छी तरह प्रतिबिंबित करती हैं, जिनमें से उल्लेखनीय हैं :

1. प्रेममालिका (1871 ई.)
2. प्रेमसरोवर (1873 ई.)
3. प्रेमाश्रुवर्षण (1873 ई.)

4. प्रेम माधुरी (1875 ई.)
5. प्रेम-तरंग (1877 ई.)
6. प्रेम-प्रलाप (1877 ई.)
7. होली (1879 ई.)
8. वर्षा-विनोद (1880 ई.)
9. विनय प्रेम पचासा (1880 ई.)
10. मधु मुकुल (1881 ई.)
11. फूलों का गुच्छा- खड़ीबोली काव्य (1882 ई.)
12. प्रेम फुलवारी (1883 ई.)
13. कृष्णचरित्र (1883 ई.)
14. राग-संग्रह (1884 ई.)

इनके अलावा कई सारे छोटे ग्रंथ भी हैं.

भारतेंदु की धर्म और भक्ति संबंधी परंपरागत रचनाओं में 'उत्तरार्ध भक्तमाल' (1876-77 ई.); 'गीत गोविंदानंद' (1877-78 ई.) और 'सतसई श्रृंगार' (1875-78 ई.) के नाम भी उल्लेखनीय हैं.

इन परंपरागत रचनाओं के अतिरिक्त समकालीन राजनीतिक और सामाजिक परिस्थितियों को लेकर भी भारतेंदु की बहुत सी रचनाएँ हैं. विविध विषयों पर स्फुट पद भी बड़ी संख्या में उपलब्ध हैं. व्यंग्य और हास्य की दृष्टि से 'उर्दू का स्यापा' (1874 ई.) और 'बंदर सभा' (1879 ई.) उल्लेखनीय हैं. हिंदी वर्धिनी सभा, प्रयाग में जून, 1877 ई. में दिया गया 'हिंदी की उन्नति पर व्याख्यान' जो दोहों में है, बहुत महत्वपूर्ण है. भाषा की बात चलने पर आज तक इससे उद्धरण दिये जाते हैं. 'नये जमाने की मुकरी' (1884 ई.) में पुरानी लोकविधा का सार्थक उपयोग नये विषयों को तीक्ष्णता के साथ अभिव्यक्त करने के लिए किया गया है. भारतेंदु की मुकरियाँ उनकी भाषा के अध्ययन के लिहाज से भी महत्वपूर्ण हैं, जिनमें काव्य की परंपरागत भाषा - ब्रजभाषा से निकल कर आधुनिक हिंदी भाषा में काव्य रचना करने का संघर्ष दिखाई देता है.

भारतेंदु ने 'रसा' उपनाम के साथ गजलें भी लिखीं हैं.

अन्य विधाओं में रचनाएँ

हिंदी साहित्य को समृद्ध बनाने के उद्देश्य से भारतेंदु ने यथासंभव गद्य की सभी विधाओं में रचना करने की कोशिश की, जिनमें से कुछ उल्लेखनीय रचनाएँ हैं :

1. पूर्णप्रकाश चन्द्रप्रभा (उपन्यास)
2. अद्भुत अपूर्व स्वप्न (कहानी)
3. एक कहानी- कुछ आपबीती, कुछ जगबीती (आत्मकथात्मक रचना, केवल आरंभ ही लिखा था)
4. सरयूपार की यात्रा (यात्रा वृत्तांत)
5. लखनऊ (यात्रा वृत्तांत)
6. नाटक (नाट्यशास्त्रीय निबंध)
7. संगीत सार (संगीत संबंधी निबंध)

8. हिंदी भाषा (भाषा संबंधी निबंध)
9. कश्मीर कुसुम (इतिहास संबंधी निबंध)
10. भारतवर्षोन्नति कैसे हो सकती है? (विचारात्मक निबंध)
11. पाँचवे (चूसा) पैगंबर (व्यंग्य)
12. लेवी प्राण लेवी (व्यंग्य)
13. स्वर्ग में विचार सभा का अधिवेशन (व्यंग्य)
14. कालचक्र (जर्नल)

इतना ही नहीं, हिंदी साहित्य के विविध अंगों के संवर्धन के उद्देश्य से उन्होंने पत्र-पत्रिकाएँ भी शुरू कीं. सन् 1868 ई. में 'कविवचनसुधा' का मासिक प्रकाशन आरंभ हुआ जो बाद में पाक्षिक और फिर साप्ताहिक हो गया. सन् 1873 ई. में 'हरिश्चंद्र मैगजीन' मासिक पत्र के रूप में शुरू हुई जिसे अगले वर्ष 'हरिश्चंद्र चंद्रिका' नाम मिला. सन् 1874 ई. में 'बालाबोधिनी' नाम का मासिक पत्र निकला था जो विशेष रूप से स्त्रियों को समर्पित था.

भारतेंदु की रचनाओं के प्रकाशन का सर्वाधिकार उनके जीवनकाल में ही खड्गविलास प्रेस, बाँकीपुर, पटना, बिहार के पास आ गया था, जिसने उनकी मृत्यु के बाद भी कुछ समय तक उनकी रचनाओं का प्रकाशन किया. सन् 1887 ई. से सन् 1901 ई. के बीच इस प्रेस ने 'भारतेंदु कला' नाम से 6 भागों में भारतेंदु की रचनाओं का संग्रह प्रस्तुत किया था. इस समय नागरी प्रचारिणी सभा, काशी द्वारा प्रकाशित और भारतेंदु के नाती (पुत्री के पुत्र) बाबू ब्रजरत्नदास, जो स्वयं भी हिंदी के साहित्यकार थे, द्वारा संपादित 'भारतेंदु ग्रंथावली' में भारतेंदु का समस्त साहित्य संग्रहीत है.

आइये देखें कि आपने क्या जाना!

निम्नलिखित वाक्यों में रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए :

1) भारतेंदु की मौलिक नाट्यकृतियाँ की संख्या____________ और अनूदित नाट्यकृतियों की संख्या____________ हैं.
2) ____________ भारतेंदु की समसामयिक विषय को लेकर लिखी गयी काव्य रचना है.
3) भारतेंदु ने ____________ शीर्षक से अपनी आत्मकथा लिखनी आरंभ की थी.
4) ____________ भारतेंदु द्वारा प्रकाशित पहला पत्र है.
5) स्त्रियों के लिए भारतेंदु ने ____________ नाम का पत्र निकला था.

6.3.3 हिंदी साहित्य को भारतेंदु का योगदान

भारतेंदु आधुनिक हिंदी साहित्य के बीज पुरुष कहे जा सकते हैं. उन्होंने अपने अथक प्रयासों से न केवल हिंदी भाषा का पथ तैयार किया, बल्कि उस पर साहित्य का रथ भी चला दिया. वे आधुनिक हिंदी साहित्य के चक्रप्रवर्तक हैं!

हिंदी भाषा और साहित्य के प्रति उनके योगदान को श्री कुँवरजी अग्रवाल ने अपनी पुस्तक 'अंधेर नगरी' में 'भारतेंदु हरिश्चंद्र : एक परिचय' के अंतर्गत बहुत अच्छी तरह संजोया है. वही उद्धरण यहाँ दिया जा रहा है :

''भारतेंदु की देनों को अत्यंत संक्षेप में, पर स्पष्टता से समझने के लिए तीन बिंदुओं

पर विचार करने की जरूरत है :

''पहला बिंदु भाषा है. आज हिंदी का जो परिनिष्ठित रूप भारत और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर व्यवहार में लाया जा रहा है, उसके विकास का स्वरूप और उसकी दिशा भारतेंदु ने ही निर्धारित की थी.

''यों तो हिंदी का इतिहास लगभग एक हजार साल पुराना है, लेकिन अपने विकास के तमाम रूपों और मंजिलों को लेकर भी अठारहवीं सदी के अंत तक उसका स्वरूप और उसमें व्यक्त विषयवस्तु भी पूरी तरह मध्यकालीन ही बनी रही. लेकिन फिर उन्नीसवीं सदी के आरंभ के साथ औपनिवेशिक शासन की परिस्थितियों के बीच पूरे उत्तरमध्य भारत की प्रतिनिधि इस भाषा को बिलकुल नयी चुनौतियों का सामना करना पड़ा. ये चुनौतियाँ थीं, नवागत प्रेस और उससे पत्र-पत्रिकाओं की छपाई, स्कूलों की शिक्षा, प्रशासन से जनसंपर्क की माध्यम भाषा आदि. इसके लिए आवश्यक था कि हिंदी का वाक्यविन्यास, उसका संपूर्ण व्याकरणिक ढाँचा, उसके शब्द भंडार का स्रोत, उसकी लिपि और विराम चिह्नों में एकरूपता लायी जाय और उनका परिनिष्ठीकरण (स्टैंडर्डाइजेशन) हो. इसके लिए तत्कालीन ब्रिटिश प्रशासक और स्वतंत्र विद्वानों ने अनेक प्रयोग किए और बहुत से नमूने पेश किये गये. लेकिन अंततः भारतेंदु को जिस भाषा समस्या से निपटना पड़ा उसके दो चरम रूप थे - एक राजा शिवप्रसाद सितारे हिंद द्वारा प्रवर्तित वह रूप जिसमें अरबी-फारसी शब्दों की भरमार थी और दूसरे राजा लक्ष्मण सिंह द्वारा प्रस्तुत की गयी वह हिंदी जिसमें इस तरह के शब्दों का पूर्ण बहिष्कार था, यहाँ तक कि आम लोगों द्वारा काम में लायी जाने वाली जनभाषा के रोजमर्रा इस्तेमाल के ऐसे शब्दों का भी.

''भारतेंदु ने इनके बरक्स सहज सरल प्रवाहयुक्त ऐसी हिंदी का प्रयोग शुरू किया जो व्यावहारिक थी और बनावटी आग्रहों से बचते हुए शब्द चयन में कोई परहेज नहीं करती थी. पाँच सालों तक वे अपनी हिंदी को निखारते रहे तब जाकर 1873 ई. में उन्होंने अपनी पत्रिका 'हरिश्चंद्र चंद्रिका' की भाषा से संतुष्ट होकर लिखा, 'हिंदी नयी चाल में ढली'. आज की परिनिष्ठित हिंदी इसी भाषा से निकलकर विकास की मंजिलों पर मंजिलें पार करती हुई यहाँ तक पहुँची है और अभी भी विकसनशील है.''

''भारतेंदु के अवदानों का दूसरा बिंदु साहित्य रचना है. ऐसी नयी हिंदी भाषा की सार्थकता तभी थी, जब उसमें साहित्य रचा जाता, बड़ा पाठक वर्ग तैयार होता, विविध विषयों की ढेर सारी पुस्तकें लिखी जातीं, पत्र-पत्रिकाएँ छपतीं, अखब़ार निकलते, शिक्षित समुदाय वार्तालाप करते, चिट्ठी-पत्री लिखी जाती, आदि आदि. भारतेंदु इसके लिए प्राणपण से लग गये और इसके लिए अपना सर्वस्व न्यौछावर कर दिया. अपनी छोटी सी जिंदगी में उनसे जितना बन पड़ा (और वह कोई कम नहीं), खुद लिखा, छापा, बेचा, बाँटा. साथ ही ऐसा करने के लिए दूर दूर तक फैले बहुत से लोगों को प्रेरित किया, लेखक, पत्रकार बनाये. ऐसे लोगों का अच्छा खासा एक भारतेंदु मंडल बन गया था. भारतेंदु का प्रभाव इतना व्यापक था कि उन्नीसवीं सदी के उत्तरार्ध के हिंदी साहित्य के इतिहास को भारतेंदु युग के नाम से जाना जाता है.''

''भारतेंदु की देनों का तीसरा बिंदु उनका एक ऐसा कार्य है जिसकी ओर हिंदी समीक्षकों और इतिहासकारों ने ध्यान ही नहीं दिया. उनका यह कार्य हिंदी रंगमंच के क्षेत्र में है. भारतेंदु गैरतिजारती अव्यवसायी हिंदी रंगमंच के पुरस्कर्ता हैं. ...... लगभग अठारह साल की उम्र में भारतेंदु ने अपना रंगमंचीय जीवन अभिनय से शुरू किया और रोगग्रस्त होने से पहले तक अक्सर अभिनय करते रहे. उनके मार्मिक अभिनय के एक दो दुर्लभ दस्तावेज भी उपलब्ध हैं. उन्होंने अपनी एक नाटक मंडली बनाई थी, जो बनारस के अलावा आसपास बाहर जाकर भी अभिनय प्रस्तुत करती थी. ...... हिंदी क्षेत्र में आधुनिक रंगमंच

पर किसी प्रतिष्ठित परिवार के व्यक्ति द्वारा शौकिया अभिनय करने वाले प्रथम व्यक्ति भारतेंदु थे. फिर तो बनारस, इलाहबाद, कानपुर आदि नगरों में इसका सिलसिला ही चल पड़ा.''

और आज हिंदी रंगमच जो कुछ भी है, इसी शुरुआत का नतीजा है.

आइये! जरा आप अपने पढ़े हुए को जाँच लें.

निम्नलिखित कथनों के आगे सही या गलत के चिह्न लगाएँ :

1) आधुनिक हिंदी भाषा के मानकीकरण का आरंभिक काम भारतेंदु ने किया.

2) राजा शिवप्रसाद सितारे हिंद की भाषा संस्कृतनिष्ठ थी.

3) हिंदी के साहित्य भंडार को समृद्ध करने के लिए भारतेंदु ने विभिन्न विधाओं में रचनाएँ कीं.

4) भारतेंदु के आने से पहले कोई भी हिंदी में नहीं लिख रहा था.

5) अव्यवसायी हिंदी रंगमंच की परंपरा को आरंभ करने वाले भारतेंदु हैं.

6.4 भारतेंदु के काव्य की विशेषताएँ

भारतेंदु ने जब लिखना शुरू किया, तब कविता की भाषा के रूप में ब्रजभाषा की तीन चार सौ वर्षों की समृद्ध परंपरा उनके सामने थी. ब्रजभाषा में रीतिकालीन भावबोध की कविता का परिवेश बचपन से ही भारतेंदु को उपलब्ध हुआ था. अतः स्वाभाविक ही था कि वे भी इसी भाषा और भावबोध की काव्यरचना में प्रवृत्त हुए. भारतेंदु के काव्यकर्म का एक बड़ा हिस्सा जो धार्मिक उपाचारों का प्रतिपादन करने वाला, भक्तिपरक और श्रृंगारिक है, ब्रजभाषा की चली आ रही परिपाटी के अनुरूप है, हालाँकि उनकी प्रतिभा के स्पर्श ने इसमें भी विशेषता ला दी है. भारतेंदु की ब्रजभाषा संबंधी विशिष्टता को आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने 'हिंदी साहित्य का इतिहास' में रेखांकित किया है : ''भारतेन्दुजी ने जिस प्रकार हिंदी गद्य की भाषा का परिष्कार किया, उस प्रकार काव्य की ब्रजभाषा का भी. उन्होंने देखा कि बहुत से शब्द जिन्हें बोलचाल से उठे कई सौ वर्ष हो गये थे, कवित्तों और सवैयों में बराबर लाये जाते हैं. इस कारण कविता जनसाधारण की भाषा से दूर पड़ती जाती है. ...... दूसरा दोष जो बढ़ते बढ़ते बहुत बुरी हद को पहुँच गया था, वह शब्दों का तोड़ मरोड़ और गढ़ंत के शब्दों का प्रयोग था. उन्होंने ऐसे शब्दों को भरसक अपनी कविता से दूर रखा और अपने रसीले सवैयों में जहाँ तक हो सका, बोलचाल की ब्रजभाषा का व्यवहार किया. इसीसे उनके जीवनकाल में ही उनके सवैये चारों ओर सुनाई देने लगे.''

भारतेंदु अपने समय और परिस्थितियों के प्रति पूर्ण रूप से सजग थे इसलिए श्रृंगार, भक्ति और धर्म संबंधी रचनाओं के अलावा उन्होंने तत्कालीन राजनीतिक और सामाजिक परिस्थितियों, आम जीवन में व्याप्त समस्यों आदि को भी अपने काव्य का विषय बनाया है. और तब समसामयिक जीवन की शब्दावली उनकी काव्यभाषा में अनायास प्रवेश कर जाती है. नये नये विषयों, विचारों और जनाकांक्षाओं को अभिव्यक्त करने के लिए भारतेंदु भाषा संबंधी कई प्रयोग करते हैं – एक ओर वे ब्रजभाषा की रागात्मकता, मुहावरों-लोकोक्तियों के माध्यम से आने वाली प्रभाव क्षमता का उपयोग करते हुए भी, उसके कठिन, अप्रचलित शब्दों को छोड़कर उसे जनसामान्य में समझी जाने वाली ब्रजभाषा के करीब लाने का प्रयत्न करते हैं; वहीं दूसरी ओर संस्कृतनिष्ठ अथवा अरबी-फारसी के शब्दों से लदी हुई भाषा को नकार कर सामान्य लोगों द्वारा बोली जा रही भाषा का इस्तेमाल करते हैं.

हालाँकि भारतेंदु ने स्वयं एक जगह यह माना है कि नवीन विचारों की अभिव्यक्ति के लिए गद्य विधा और आधुनिक भाषा दोनों उपयुक्त और सहज हैं, पर कविता की स्वाभाविकता जितनी ब्रजभाषा में आती है, उतनी आधुनिक भाषा में नहीं. लेकिन, भारतेंदु की संवेदना यह भी महसूस कर रही थी कि समसामयिक नवचेतना की अभिव्यक्ति श्रृंगारिक एवं कोमलकांत पदावली से लदी पारंपरिक ब्रजभाषा में संभव नहीं. साथ ही उनको यह भी ठीक नहीं लगता था कि एक ही समय में गद्य और पद्य की भाषा अलग अलग हो. इसलिए ब्रजभाषा के प्रति अपने ममत्व और आधुनिक हिंदी भाषा में छंद, लय, मधुरता आदि की तमाम कठिनाइयों के बावजूद भारतेंदु आधुनिक हिंदी में कविता करने की बार-बार कोशिशें करते हैं. नाटकों के गीतों में ऐसी भाषा के इस्तेमाल में उन्हें खासी सफलता मिली है. 'अंधेर नगरी' नाटक से एक उदाहरण प्रस्तुत है :

चना बनावै घासीराम। जिनकी झोली में दूकान।
चना चुरमुर बोले। बाबू खाने को मुहँ खोले।
चना खावैं तौकी मैना। बोलैं अच्छा बना चबैना।
चना खाय गफूरन मुन्ना। बोलैं और नहीं कुछ सुन्ना।
चना खाते सब बंगाली। जिनकी धोती ढीली ढाली।
चना खाते मियाँ जुलाहे। दाढ़ी हिलती गाह बगाहे।
चना हाकिम सब जो खाते। सब पर दूना टिकस लगाते।

'फूलों का गुच्छा' शीर्षक कविता में भी आधुनिक भाषा का सफल प्रयोग देखा जा सकता है :

नहीं का बाकी वक्त नहीं है जरा न जी में शरमाओ।
लब पर जाँ है, भला अब तो प्यारे मिलते जाओ॥
कहाँ गईं वह पिछली बातें कहाँ गया वह था जो प्यार।
किधर छिपाया चाँद-सा मुखड़ा दिखलाता जा यार॥
बेहोशी में घबड़ा घबड़ा करके यही कहता हूँ पुकार।
मर्ज बढ़ गया बहुत इससे बचना अब है दुश्वार॥
करो आरजू दिल की मेरे पूरी सूरत दिखलाओ।
लब पर जाँ है, भला अब तो प्यारे मिलते जाओ॥

भारतेंदु सबको साथ लेकर चलना चाहते थे. जनता से सीधे सक्रिय जुड़ाव का लगातार प्रयत्न ही उनके लिए स्वाभाविक था, उस युगचेतना के अनुकूल था. उन्होंने ग्रामगीतों और लोकछंदों की लोकप्रियता देखी और शिष्ट काव्य में उनके प्रयोग तत्काल न केवल स्वयं शुरू किये, बल्कि अन्यों को भी प्रेरित किया. अपने निबंध 'जातीय संगीत' में वे अपील करते हैं कि कजली, ठुमरी, खेमटा, कँहरवा, अद्धा, चैती, होली, साँझी, लंबे, लावनी, जाँते के गीत, बिरहा, चनैनी, गज़ल इत्यादि ग्रामगीतों में स्थानीय समुदायों में समझ में आ सकने वाली भाषा में सुधारवादी काव्य तैयार हों, जिससे जन-जन में सुसंस्कार का प्रचार हो सके.

जिस नवजागरण काल में भारतेंदु काव्य रचना कर रहे थे, उसमें काव्य के सामने विषय और भाषा - दोनों को लेकर दबाव बन रहा था. भारतेंदु ने इन दोनों का निराकरण करने का हरसंभव प्रयत्न किया और काफी हद तक सफलता भी पायी. इसी सफलता में उनके काव्य की विशेषताएँ अंतर्निहित हैं, जिन्हें संक्षेप में निम्नांकित बिंदुओं के रूप में समझा जा सकता है :

- भारतेंदु की कविताओं के मुख्य स्वर हैं :
  - ★ धर्म
  - ★ प्रेमाधारित भक्ति
  - ★ वर्तमान परिस्थितियों पर चिंता
  - ★ व्यंग्य और कटाक्ष
- भारतेंदु ने अपनी परंपरागत धार्मिक, भक्ति और श्रृंगारपरक रचनाओं में सदियों से चली आती पर अब पतनशील हो चुकी परिपाटियों का परिष्कार किया – उन्होंने सामान्य जन से दूर जा पड़ी साहित्यिक ब्रजभाषा से अप्रासंगिक हो चुके शब्दों, मुहावरों को हटा कर उसे पुन: जन जन के करीब ला दिया; साथ ही रीतिकालीन कुरुचिपूर्ण श्रृंगारिक प्रवृत्तियों का परिमार्जन कर उसे दिव्य प्रेम से जोड़कर प्रतिष्ठा प्रदान की.
- उन्होंने अपनी कविताओं के जरिये युग की आवश्यकतानुसार उदित हो रही आधुनिक हिंदी भाषा को काव्यभाषा का दर्जा दिलाने के लिए तरह तरह के काव्यरूपों में प्रयोग किये और कविता को केवल भावानुभूति की अभिव्यक्ति का साधन होने से आगे चिंतनशील विचारों का वाहक बनाया.
- अपनी कविताओं में उन्होंने वर्ग विशेष तक सीमित काव्य साहित्य को जन सामान्य के बीच व्याप्त कर देने के उद्देश्य से काव्यभाषा और काव्यरूपों दोनों को व्यापक लोकरुचि के साथ जोड़ने का सार्थक प्रयास किया.

आइये, अब जाँचें कि हमने भारतेंदु के काव्य की विशेषताओं को कितना समझा!

नीचे दिये गये प्रश्नों के उत्तर सही विकल्प चुन कर दीजिए :

1) भारतेंदु की आरंभिक काव्य रचनाएँ किस भाषा में हैं?

(क) संस्कृत (ख) आधुनिक हिंदी

(ग) अवधी (घ) ब्रज

2) भारतेंदु ने आरंभ में किस विषय पर ज्यादा काव्य लिखे?

(क) देशभक्ति (ख) राजभक्ति

(ग) कृष्णभक्ति (घ) शिवभक्ति

3) काव्य रचना के लिए कौन सी भाषा भारतेंदु को अधिक प्रिय थी?

(क) ब्रज (ख) अवधी

(ग) आधुनिक हिंदी (घ) संस्कृत

4) भारतेंदु की कविताओं के मुख्य स्वर क्या हैं?

(क) धर्म और भक्ति (ख) वर्तमान परिस्थितियों पर चिंता और व्यंग्य

(ग) उपर्युक्त दोनों (घ) दोनों में से कोई नहीं

5) आधुनिक हिंदी में काव्य रचने में भारतेंदु को सर्वाधिक सफलता कहाँ मिली है?

(क) नाटकों में (ख) भक्ति संबंधी कविताओं में

(ग) स्फुट रचनाओं में (घ) कहीं भी नहीं

6.5 भारतेंदु रचित मुकरियाँ : पाठ और व्याख्या

'मुकरी' या 'कहमुकरी' लोक-प्रचलित काव्य विधा है, जो संभवत: महिलाओं के बीच मन-बहलाव के साधन के रूप में सदियों से प्रचलित रही होगी. तुकबंदी के रूप में कही जाने वाली यह कविता प्राय: चार चरणों की होती है इसके पहले तीन चरण ऐसे होते हैं, जिनका आशय दो जगह घट सकता है. इनसे प्रत्यक्ष रूप से जिस पदार्थ का आशय निकलता है (सामान्य रूप से 'साजन' — 'पति / प्रेमी' का), चौथे चरण में वह बताने पर, किसी और पदार्थ का नाम लेकर उससे इनकार कर दिया जाता है. इस प्रकार मानो कही हुई बात से मुकरते हुए (मना करते हुए) कुछ और ही अभिप्राय प्रकट किया जाता है. मुकरने का भाव होने के कारण ही यह 'मुकरी' कही जाती है.

घरेलू लोकविधा होने के कारण इसके कोई ज्यादा दस्तावेजी प्रमाण नहीं मिलते. तेरहवीं शती में अमीर खुसरो ने वहुत सी मुकरियाँ कहीं, वही आज हमारे पास ऐतिहासिक रूप से उपलब्ध हैं. उन्हीं की तर्ज पर भारतेंदु ने 'नये जमाने की मुकरी' शीर्षक अंतर्गत विभिन्न समसामयिक विषयों पर 14 मुकरियाँ सन् 1884 ई. में 'नवोदिता हरिश्चंद्र चंद्रिका' में प्रकाशित कीं. इनमें से चुनी हुई दस मुकरियाँ आपके आनंद और अध्ययन के लिए यहाँ प्रस्तुत हैं. इन मुकरियों की भाषा और विषय दोनों ध्यान देने लायक हैं. ब्रजभाषा की रवानगी का पुट रखते हुए भी भारतेंदु ने इसे यथा संभव आधुनिक हिंदी के करीब लाने का सार्थक यत्न किया है. विषय की दृष्टि से ये केवल समसामयिक विषयों को ही संबोधित करती हैं – कभी प्रशंसात्मक रूप से तो कभी उलाहने के तौर पर.

1. **सब गुरुजन को बुरो बतावै ।**
   अपनी खिचड़ी अलग पकावै ॥
   भीतर तत्व न झूठी तेजी ।
   क्यों सखि साजन नहिं अँगरेजी ॥

संदर्भ : प्रस्तुत पंक्तियाँ आधुनिक हिंदी भाषा-साहित्य के जनक कहे जाने वाले मूर्धन्य साहित्यकार भारतेंदु बाबू हरिश्चंद्र द्वारा 'मुकरी' विधा में कही गयी स्फुट कविता है. भारतेंदु जी द्वारा रचित 14 मुकरियाँ सन् 1884 ई. में 'नये जमाने की मुकरी' नाम से 'नवोदिता हरिश्चंद्र चंद्रिका' में प्रकाशित हुईं थीं. ये मुकरियाँ समसामयिक विषयों पर लिखी गयीं थीं. प्रस्तुत मुकरी इन्हीं में से एक है.

प्रसंग : प्रस्तुत मुकरी में अंग्रेजी भाषा और उसके माध्यम से अंग्रेजों के वर्चस्व की निस्सारता को प्रतिपादित करने का प्रयत्न है. स्वतंत्रचेता भारतेंदु इस मुकरी के माध्यम से भारतीय ज्ञान संपदा को नकारने वाली औपनिवेशिक सत्ता को नकारने का साहस कर रहे हैं.

व्याख्या : सभी गुरुजनों को बुरा कहता है, पसंद नहीं करता क्योंकि वे उसकी स्वच्छंदता पर अंकुश लगाते हैं; अपने ही तरीके से चलता है, किसी की सुनता नहीं; नये जमाने का लड़का – न गुण न ज्ञान, फिर भी अकड़ ऐसी कि इसके सिवा तो और कोई कुछ है ही नहीं. मुकरी की प्रथम तीन पंक्तियों का यह अर्थ दिलफेंक आशिक – 'साजन' के लिए निकलता है. किंतु यही अर्थ कुछेक शब्दों के फेर से 'अंग्रेजी' के लिए भी सटीक बैठता है :

सभी ऋषियों और उनकी रचनाओं को, संपूर्ण संस्कृत ज्ञान भंडार को, पुराणों को, महाकाव्यों को अंग्रेजी ढंग का न होने के कारण अनुपयोगी, अनर्गल और कपोल कल्पना साबित करती है; सारे मानक खुद ही तय करती है; प्राचीन भारतीय विद्या के बराबर ज्ञान की वाहक न होने पर भी केवल सत्ता की भाषा होने के कारण श्रेष्ठ होने का दंभ भरती

है – अंग्रेजी.

यहाँ प्रकट रूप से यूँ तो भारतेंदु अंग्रेजी के झूठे दंभ की बात कर रहे हैं. पर यह समझना बिलकुल मुश्किल नहीं है कि 'अंग्रेजी' सजीव नहीं कि उसमें दंभ हो सके, यह झूठा दंभ तो अंग्रेजी का उपयोग करने वालों में है. और ये अंग्रेजी का उपयोग करने वाले अंग्रेज तो हैं ही, साथ में अंग्रेजी पढ़ लिख कर अंग्रेजियत ओढ़ चुके वे भारतीय भी हैं, जिन्हें अब अपनी किसी भी तरह की प्राचीन परंपराएँ, प्राचीन विरासत — भाषा, पहनावा, रहन-सहन, खान-पान, कुल मिलाकर जीवन शैली बुरी ही लगती है, अंग्रेजी चश्मे से देखने पर सब विद्रूप ही नजर आता है, जबकि सच्चाई तो यह है कि उनमें इतनी क्षमता ही नहीं कि वे सही-गलत, अच्छे-बुरे, उचित-अनुचित का तटस्थ निर्णय कर सकें.

इस तरह भारतेंदु लोकविधा के इस छोटे से काव्यरूप का सार्थक इस्तेमाल एक तीर से कई निशाने साधने के लिए कर रहे हैं. इस मुकरी में अर्थों की कई परतें हैं और हर पाठक अपनी रुचि और क्षमता के अनुसार उन परतों को खोल कर अपने मन मुताबिक अर्थ का आनंद प्राप्त कर सकता है. पहली, सबसे ऊपरी परत मुकरी के पहेलीनुमा काव्यरूप की है, जिसका आनंद मुकरी की अंतिम पंक्ति – "क्यों सखि साजन नहि अंग्रेजी" से ही निकल जाता है. दूसरी परत अंग्रेजी के जरिये अंग्रेजों के झूठे दंभ का पर्दाफाश करने की है. तीसरी परत में अंग्रेजीयत ओढ़े भारतीयों के प्रति उलाहना है, और चौथी परत अपने देशवासियों को ऐसे सारहीन तत्वहीन दिखावे के आतंक में आए बिना अपने स्वत्व को पहचान कर आगे बढ़ने का आह्वान करती है.

विशेष : 'अपनी खिचड़ी अलग पकाना' — बहुप्रचलित मुहावरे का सटीक प्रयोग.

विद्यार्थी मित्रो! इस पहली मुकरी की इतनी विस्तृत व्याख्या संदर्भ प्रसंग सहित इसलिए की गयी है कि आपको चिंतन का मार्ग मिले, आगे के बौद्धिक व्यायाम के लिए आप तैयार हो सकें. बाकी बची मुकरियों का सिर्फ विस्तृत अर्थ बताया जायेगा, संदर्भ प्रसंग समेत व्याख्या करना आपका काम होगा. इस उपइकाई के लिए यही अभ्यास कार्य है. अवश्य कीजियेगा. ध्यान रहे कि सत्रांत परीक्षा में ऊपर दी गयी यह पहली मुकरी व्याख्या के लिए शायद कभी न पूछी जाय. अन्य मुकरियाँ तो व्याख्या के लिए पूछी ही जाएँगीं.

2. **तीन बुलाए तेरह आवैं ।**
निज निज बिपता रोइ सुनावैं ।।
आँखौ फूटे भरा न पेट ।
क्यों सखि साजन नहिं ग्रैजुएट ।।

अर्थ : 'साजन' के पक्ष में **:** दिलफेंक आशिक हर कहीं मिलते हैं. एक ढूँढो हजार मिलते हैं – तीन को बुलाया जाय तो तेरह पहुँच जाएँगे. अपना गमे दिल – इश्क के मारे बेचारे दिल का हाल प्यारी के सामने रो रो कर कहते हैं, जिससे वह पिघल जाय. रूप की चमक से आँखें अंधी हुई जाती हैं, पर पेट नहीं भरता है – मन नहीं भरता है, संतुष्टि नहीं होती है.

'ग्रैजुएट' के पक्ष में : सरकारी कार्यालयों में तीन पदों की रिक्तियाँ विज्ञापित हुई हों, तेरह आवेदन आ जाएँगे (यह तो भारतेंदु जी के समय में, जब ग्रैजुएट ज्यादा होते नहीं थे. आज तो शायद तीन पदों के लिए 13 हजार आवेदन आ जाएँ!). यानी पढ़ लिख कर भी लोग खाली बैठे रहते थे, बेरोजगार थे. बल्कि कहना चाहिए कि पढ़-लिख लेने के कारण ही बेरोजगार रहते थे, क्योंकि अंग्रेजों ने स्कूल-कॉलेजों में जो शिक्षा व्यवस्था खड़ी की थी,

उसका एकमात्र उद्देश्य उनके प्रशासनिक कार्यालयों के लिए लिपिक (क्लर्क) तैयार करना ही था (और वही शिक्षा व्यवस्था कमोबेश आज भी जारी है!). अब, ऐसे स्कूल-कॉलेजों से ग्रेजुएट होकर निकले युवा नौकरी के अलावा दूसरा कुछ कर सकने के लायक ही नहीं रह जाते थे. पढ़े लिखे होने का दंभ उन्हें श्रम से दूर करता था, बुद्धिजीवी होने का अर्थ श्रम के तिरस्कार में था. नौकरियाँ सीमित संख्या में होतीं. हर साल जितने ग्रेजुएट पास होकर निकलते उतनी संख्या में तो नौकरियों का सृजन हर साल संभव था नहीं! नतीजा – अधिकतर बेरोजगार बैठे रहते और जब कोई रिक्ति निकलती तो अननुपातिक संख्या में आवेदन आते (आज भी!).

अपनी अपनी विपत्ति – बेरोजगार रहने की व्यथा, घर चलाने की समस्या, दो वक्त की रोटी के जुगाड़ की समस्या जिस किसी से कहते रहते – शायद कोई कुछ उपाय बता दे!

आखिर इस पढ़ने लिखने का फायदा क्या हुआ? पढ़ने में व्यर्थ की ऊर्जा नष्ट हुई, शरीर का क्षय हुआ – आँखों की ज्योति जाती रही! और पेट भरने का उपाय कर पाने तक में सक्षम न हुए.

3. **सुंदर बानी कहि समुझावै ।**
बिधवागन सों नेह बढ़ावै ॥
दयानिधान परम गुन-आगर ।
क्यों सखि साजन नहिं विद्यासागर ॥

अर्थ : भारतेंदु का युग नवजागरण का युग था. प्रबुद्ध नागरिक देश की जनता को मध्यकालीन रूढ़िवादिता, अंधविश्वास और कुरीतियों से बाहर खींच निकालने के लिए प्रतिबद्ध थे. ऐसे लोगों में बंगाल के ईश्वरचंद विद्यासागर का नाम उस समय सर्वोपरि था. राजा राममोहन राय ने बंगाल में समाज सुधार की जो अलख जगाई थी, उसको विद्यासागर ने और प्रदीप्त कर दिया था. उनके नाम और काम दोनों का असर बंगाल तक ही सीमित न रहकर पूरे भारत, कम से कम उत्तर भारत में फैल रहा था. भारतेंदु ने स्वयं भी बंगाल की कई यात्राएँ की थीं, विद्यासागर के साथ उनका निकट का संबंध था और वे उनके समाज सुधार के कार्यों के समर्थक और सहयोगी थे.

यह मुकरी एक तरह से विद्यासागर के प्रति उनका कृतज्ञता-ज्ञापन है, जिसमें विद्यासागर की विशिष्टताओं का वर्णन है, साथ ही परंपरागत उदात्त (श्रेष्ठ) नायक के लक्षणों से कुछ कुछ मेल खाता है.

"सुंदर बानी कहि समुझावै" – प्रेमपूर्वक बातें करने वाला उदात्त नायक / अच्छी बातों को समझाने वाला विद्यासागर. विद्यासागर संस्कृत और भारतीय दर्शन के प्रकांड पंडित थे. वस्तुतः इसी कारण उन्हें 'विद्यासागर' की उपाधि मिली थी. और कोई आश्चर्य नहीं कि संस्कृत धर्मग्रंथों, उपनिषदों, सुभाषितों की अच्छी बातों का प्रचार वे जन साधारण को समझ में आने वाली सरल भाषा में करते रहे हों.

"बिधवागन सों नेह बढ़ावै" – विधवा पुनर्विवाह के लिए किये गये विद्यासागर के प्रयास उल्लेखनीय हैं. उस समय विधवाओं की स्थिति बेहद दयनीय थी, खासकर बंगाल में छोटी बच्चियों को काफी बड़ी उम्र के पुरुष से ब्याह देने की कुप्रथा के कारण छोटी उम्र में ही बालिकाएँ विधवा हो जाती थीं और फिर सारी उम्र उन्हें नारकीय जीवन जीने के लिए विवश होना पड़ता था. विद्यासागर ने इस कुरीति के विरूद्ध जबरदस्त लड़ाई लड़ी और जनमत तैयार करने के साथ-साथ सन् 1856 ई. में विधवा पुनर्विवाह कानून पारित कराने में भी सफलता प्राप्त की.

''दयानिधान परम गुन आगर'' - दया, करुणा आदि श्रेष्ठ गुणों का स्वामी उदात्त नायक या विद्यासागर. परम विद्वान, अपने देशवासियों की दुरावस्था के प्रति चिंतित, उनकी उन्नति के लिए सतत प्रयत्नशील ईश्वरचंद विद्यासागर सभी मानवीय गुणों के सागर थे.

दयानिधान = दया का आश्रय. आगर = कोष.

4. सीटी देकर पास बुलावै ।
रुपया ले तो निकट बिठावै ॥
ले भागै मोहिं खेलहिं खेल ।
क्यों सखि साजन नहिं सखि रेल ॥

अर्थ : 'साजन' {परंपरागत शठ (निम्न कोटि का) नायक} पक्ष में - सीटी मार कर पास आने का इशारा करता है. प्रेमिका के धन पर ही ऐश करता है और लुभावनी बातों से उसे रिझा कर उसे ऐसा भुलावा देता है कि वह उसी की हर बात को मानती चली जाती है.

'रेल' पक्ष में - रेल की सीटी उसके चलने का इशारा होती है, जो सभी मुसाफिरों को चढ़ जाने के लिए बुला लेती है. रेल पर चढ़ने के लिए टिकट लेने - रुपया खर्च करने की जरूरत होती है. और एक बार चढ़ने पर जैसी तेज गति से वह मंजिल की ओर ले जाती है, वैसी तो उस जमाने में यातायात का दूसरा कोई साधन नहीं ले जा सकता था.

भारतेंदु के समय रेल यातायात यद्यपि भारत में स्थापित हो चुका था, पर जन सामान्य के लिए यह अभी भी कौतूहल, श्रद्धा और कहीं न कहीं भय की चीज थी. शायद इसे ही दूर करने के लिए उन्होंने रेल पर यह हलकी फुलकी मुकरी लिखी हो!

5. रूप दिखावत सरबस लूटै ।
फंदे मैं जो पड़ै न छूटै ॥
कपट कटारी जिय मैं हूलिस ।
क्यों सखि साजन नहिं सखि पूलिस ॥

अर्थ : 'साजन' {परंपरागत शठ (निम्न कोटि का) नायक} पक्ष में - अपने लुभावने रूप से दिल चुरा लेता है. जो इसके प्यार के चक्कर में पड़ता है, निकल नहीं पाता. और यह अपनी धूर्तता का खंजर कलेजे के पार कर देता है, ठगता रहता है.

'पुलिस' पक्ष में - सामना होते ही जेब में जो कुछ है, किसी न किसी बहाने निकलवा ही लेती है (आज भी!). जो इनके चक्करों में पड़ जाता है, फिर उसका छूटना मुश्किल है, चाहे वह अपराधी हो या भुक्त-भोगी (आज भी!). अपराध हो के न हो, किसी को अपराधी साबित करना हो तो पुलिस कपट के सौ रास्ते अपना सकती है.

मैं = में; हूलिस = मूल क्रिया 'हूलना' = मारना, ठेलना.

6. भीतर भीतर सब रस चूसै ।
हँसि हँसि कै तन मन धन मूसै ॥
जाहिर बातन मैं अति तेज ।
क्यों सखि साजन नहिं अँगरेज ॥

अर्थ : 'साजन' {परंपरागत शठ (निम्न कोटि का) नायक} पक्ष में - छुप छुप कर

चुपचाप प्रेमरस पान करता है. हँस हँस कर मनभावन बातें बनाकर सर्वस्व लूट लेता है. ऊपरी शिष्टाचार और दिखावे में सबसे आगे है.

'अंग्रेज' पक्ष में – बिना पता चले, अंदर ही अंदर देश की जड़ काट रहा है, सत्व नष्ट कर रहा है. सुशासन का दिखावा कर और ऊपर से हितैषी बन देश का जनबल, आत्मबल, धनबल सब अपने स्वार्थ के लिए दोहन कर रहा है. सामान्य जनता की संतुष्टि के लिए दिखावे का सुधार कर उसे भी अपने हित के लिए इस्तेमाल करने में होशियार है.

मुसै – मूल क्रिया 'मूसना' = चालाकी से दूसरे को अपनी चीज दे देने के लिए विवश करना.

7. **सतएँ अठएँ मों घर आवै ।**
तरह तरह की बात सुनावै ।।
घर बैठा ही जोड़ै तार ।
क्यों सखि साजन नहिं अखबार ।।

अर्थ : 'साजन' (शिष्ट प्रेमी) पक्ष में – हर सातवें आठवें दिन मेरे घर आता है. दुनिया जहान की बातें बताता है और घर में बैठे बैठे ही मेरा संबंध दुनिया भर से करा देता है.

'अखबार' पक्ष में – भारतेंदु के समय में अखबार साप्ताहिक, पाक्षिक या मासिक हुआ करते थे. संभवत: छापने और बाँटने की कठिनाइयों के कारण दैनिक अखबार प्रकाशित करना संभव नहीं होता होगा. इन अखबारों में विविध सूचनाएँ हुआ करती थीं – साहित्य से लेकर राजनीति तक. आसपास की गतिविधियों से लेकर दूरदराज इलाकों में चल रहे आंदोलनों तक. संचार के किसी भी दूसरे साधन के अभाव में, एक अखबार के जरिये ही पाठक अपने आपको अपने चारों ओर के समाज से, अपने देश से, संसार से जुड़ा हुआ महसूस कर पाता था.

8. **एक गरभ मैं सौ सौ पूत ।**
जनमावै ऐसा मजबूत ।।
करै खटाखट काम सयाना ।
क्यों सखि साजन नहिं छापाखाना ।।

अर्थ : 'साजन' पक्ष में – एक अतिमानव जो ऐसा वीर्यशाली है कि एक बार में सौ पुत्रों को जन्म दे सकने में सक्षम है. एक पूर्ण पुरुष, जो कोई भी काम शीघ्रता और समझदारी के साथ सिद्ध करता है.

'छापाखाना' पक्ष में – एक ऐसा यंत्र जो एक साथ सैकड़ों अक्षरों को छाप देता है. यहाँ यह ध्यान रखने योग्य बात है कि छापाखाना आने से पहले पुस्तकों की प्रतिलिपि हाथ से लिखकर तैयार की जाती थी, जो एक श्रमसाध्य, समयसाध्य कार्य था और इसीलिए बहुमूल्य भी. तब न तो अधिक प्रतियाँ तैयार हो सकती थीं, और न ही आमजन उसका मूल्य चुका सकता था. ऐसे में, पुस्तकें वर्ग विशेष तक सीमित रह जाती थीं – ज्ञान का प्रसार सीमित रह जाता था. छापाखाना इस दिशा में एक बेहद महत्वपूर्ण उपलब्धि था, जिसमें एक पुस्तक की कई प्रतियाँ एक साथ निकल सकती थीं, वह भी अपेक्षाकृत काफी कम लागत में और जन जन के हाथों तक पहुँच सकती थीं. अखबार का प्रकाशन भी इस छापाखाने की ही महिमा से संभव हो सका था. इसीलिए भारतेंदु ने उसे 'सयाना काम' करने वाला कहा है.

'खटाखट' शब्द का प्रयोग यहाँ बहुत सार्थक बन पड़ा है. एक ओर वह छापाखाने की शीघ्रतापूर्वक काम करने की क्षमता को बता रहा है, तो दूसरी ओर छपाई के समय आने वाली 'खट- खटाखट' की ध्वनि को भी संकेतित कर रहा है.

9. **नई नई नित तान सुनावै ।**
अपने जाल मैं जगत फँसावै ॥
नित नित हमैं करै बल-सून ।
क्यों सखि साजन नहिं कानून ॥

अर्थ : 'साजन' पक्ष में - रोज नया गीत गाता है, लुभाने के नये नये तरीकों से दुनिया भर को (हम स्त्रियों को) अपनी चाल में फँसा कर हमारी शक्ति - सामर्थ्य को कम करता है.

'कानून' पक्ष में — रोज एक नया कानून सामने आता है, जो और कुछ नहीं लोगों को फँसाने की नयी नयी चालें हैं. इसी के जरिये अंग्रेज हम भारतियों का नैतिक बल नष्ट कर हम पर शासन कर रहे हैं.

इस मुकरी में भारतेंदु की राष्ट्रीय चेतना की आवाज है, जो औपनिवेशिक सत्ता की चालबाजियों का पर्दाफाश कर रही है.

10. **इनकी उनकी खिदमत करो ।**
रुपया देते देते मरो ॥
तब आवै मोहिं करन खराब ।
क्यों सखि साजन नहिं खिताब ॥

अर्थ : इस मुकरी में 'साजन' पक्ष में अर्थ कुछ खींच तान कर निकलता है. 'साजन' का अर्थ यहाँ 'पति' लेना होगा, जिससे विवाह हुआ है. लड़की के विवाह के लिए, लड़का खोजने के लिए दस लोगों से कहना सुनना पड़ता है, मान-मनौव्वल, विनती-चिरौरी करनी पड़ती है. तब कहीं जाकर लड़का मिलता है. फिर आती है विवाह में लेन देन की बात! थैलियों पर थैलियाँ खाली की जाती हैं, तब जाकर विवाह होता है और अंततोगत्वा विवाह का परिणाम क्या होता है? पति से सारी उम्र तिरस्कार!

'खिताब' पक्ष में - अंग्रेजों के समय में विशिष्ट नागरिकों को 'राजा' 'सर' इत्यादि खिताब (उपाधि) या पुरस्कार दिये जाते थे, पर अक्सर वे गुणों या कामों के आधार पर नहीं दिये जाते थे, बल्कि पैसे देकर खरीदे जाते थे और खुशामद के आधार पर इनायत होते थे. खिताब मिलने का परिणाम होता था कि व्यक्ति अपने आपको और विशिष्ट समझने लगता था, उसे घमंड हो जाता था और दूसरों के प्रति उसका पहले जैसा मित्रवत व्यवहार नहीं रह जाता था. कुल मिलाकर खिताब गुणों में वृद्धि नहीं गुणों का ह्रास ही करता था.

विद्यार्थी मित्रो! यहाँ भारतेंदु की इन दस मुकरियों का अर्थ यथासंभव खोलकर रखा गया है. फिर भी ऐसा नहीं कि उनकी व्याख्या में नये आयाम जोड़ने की कोई गुंजाइश न बची हो. तो उस युग की परिस्थितियों की अपनी समझ के आलोक में अपनी कल्पनाशीलता के पंख फैलाइए और भारतेंदु के रचनाकाश में विचरण का आनंद उठाइए!

6.6 सार-बिन्दु

- भारतेंदु हरिश्चंद्र को आधुनिक हिंदी भाषा और साहित्य का जनक कहा जा सकता

है.

- हिंदी को भारतेंदु का अवदान निम्नांकित तीन प्रमुख बिंदुओं के माध्यम से रेखांकित किया जा सकता है :
  - ✓ आधुनिक हिंदी भाषा का स्वरूप स्थिर करने का काम.
  - ✓ आधुनिक हिंदी साहित्य, विशेष रूप से गद्य साहित्य को यथासंभव समृद्ध करने का काम.
  - ✓ आधुनिक हिंदी के शिष्ट अव्यवसायी रंगमंच की बुनियाद डालने का काम.
- आधुनिक हिंदी गद्य को समुचित दिशा देने का काम भारतेंदु ने किया.
- यद्यपि भारतेंदु की अधिकांश पद्य रचनाएँ ब्रजभाषा में हैं, पर फिर भी आधुनिक हिंदी में भी कविता की ईमानदार कोशिशें दिखाई पड़ती हैं.
- आधुनिक हिंदी साहित्य को समृद्ध करने के लिए भारतेंदु ने गद्य की विविध विधाओं में अपनी लेखनी चलाई, पर नाटक के क्षेत्र में उनका योगदान अतुलनीय है.
- भारतेंदु के काव्य की विशेषताएँ दो स्तरों पर देखी जा सकती हैं, एक भाषा के स्तर पर और दूसरे विषय के स्तर पर.
- काव्य की भाषा के स्तर पर उन्होंने तीन प्रयोग किये :
  - ✓ परंपरागत ब्रजभाषा में चले आ रहे अप्रचलित शब्दों और मुहावरों को हटा कर उसे तत्कालीन जन साधारण को समझने लायक बनाया. उनके धार्मिक और भक्ति के पदों में इसका अच्छा निदर्शन मिलता है.
  - ✓ कविता के लिए ब्रजभाषा की उपयुक्तता को स्वीकारते हुए उसकी लयात्मकता को बरकरार रखा और जो शब्द आधुनिक भाषा में रखने की कोशिश की, मुकरियाँ उनकी इसी कोशिश का नतीजा हैं.
  - ✓ पूरी तरह आधुनिक हिंदी में काव्य रचना का प्रयत्न किया, जो उनकी रचना 'फूलों का गुच्छा' में दिखाई देता है.

6.7 परीक्षोपयोगी प्रश्नावली

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 800 शब्दों में दें :

1. भारतेंदु हरिश्चंद्र के जीवन का परिचय देते हुए हिंदी के प्रति उनके योगदान की चर्चा कीजिए.
2. भारतेंदु हरिश्चंद्र के जीवन और कृतित्व पर प्रकाश डालिए.
3. भारतेंदु को हिंदी का 'बीज पुरुष' क्यों कहा जा सकता है? – स्पष्ट कीजिए.
4. भारतेंदु की काव्यकृतियों की चर्चा करते हुए उनके काव्य की प्रमुख विशेषताएँ बताइए.

निम्नलिखित पर संक्षिप्त टिप्पणियाँ लिखिए :

1. भारतेंदु का व्यक्तित्व
2. 'भारतेंदु' उपाधि मिलने का विवरण
3. भारतेंदु की काव्यकृतियाँ
4. भारतेंदु की काव्यभाषा
5. भारतेंदु काव्य के विषय

6. भारतेंदु की मुकरियाँ

निम्नलिखित वस्तुनिष्ठ प्रश्नों का उत्तर निर्देशानुसार दीजिए :

1. भारतेंदु की निम्नलिखित कृतियों को उनकी विधा के साथ मिलाएँ :

1)	भारत दुर्दशा	क) कहानी
२)	फूलों का गुच्छा	ख) आत्मकथा
3)	होली	ग) निबंध
4)	नाटक	घ) नाटक
5)	एक कहानी-कुछ आपबीती कुछ जगबीती	ङ) उपन्यास
6)	पूर्णप्रकाश – चंद्रप्रभा	च) यात्रा वृतांत
7)	अद्भुत अपूर्व स्वप्न	छ) आधुनिक हिंदी में लिखा गया काव्य
8)	लखनऊ	ज) मासिक पत्र
9)	चूसा पैगंबर	झ) ब्रजभाषा काव्य
10)	बालाबोधिनी	ञ) व्यंग्य

2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :

1) भारतेंदु हरिश्चंद्र ने पहला दोहा ________________ साल की उम्र में बनाया था.

2) भारतेंदु का व्यक्तित्व _________________ था.

3) _____________________________ ने भारतेंदु का सुंदर शब्दचित्र खींचा है.

4) 'भारतेंदु' उपाधि मिलने का विवरण _________________ ने लिखा है.

5) 'प्रेमजोगनी' भारतेंदु लिखित _______________ है.

6) 'दुर्लभ बंधु' _______________ का अनुवाद है.

7) _________________________ भारतेंदु द्वारा आरंभ किया गया पहला पत्र है.

8) उर्दू में भारतेंदु ______________ उपनाम से लिखते थे.

9) भारतेंदु ने कुल ________ मुकरियाँ लिखीं थीं.

10) भारतेंदु की मुकरियाँ सन् 1884 ई. में ______________________ में प्रकाशित हुई थीं.

6.8 संदर्भ-सूची

नीचे कुछ ऐसी पुस्तकों के नाम और कुछ वेबसाइट लिंक हैं, जिनका उपयोग इस इकाई की सामग्री तैयार करने के लिए किया गया है और आपके अध्ययन के लिए भी उपयोगी हो सकते हैं.

1. भारतेंदु हरिश्चंद्र; लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय

2. अंधेर नगरी; संपादक – कुँवरजी अग्रवाल; प्रकाशक – प्रोग्रेसिव बुक सेंटर, वाराणसी.

3. https://hi.wikipedia.org/wiki/ भारतेन्दु हरिश्चंद्र

इकाई 7 अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध'

रूपरेखा

7.1 उद्देश्य

7.2 प्रस्तावना

7.3 कवि अयोध्यासिंह उपाध्याय का जीवन परिचय

7.4 साहित्यिक परिचय

7.5 पुरस्कार और सम्मान

7.6 कवि अयोध्यासिंह उपाध्याय : काव्यगत विशेषताएँ

7.7 एक बूँद कविता का पाठ, विश्लेषण और भावार्थ

7.8 सरिता कविता का पाठ, विश्लेषण और भावार्थ

7.9 सार-बिंदु

7.10 परीक्षोपयोगी प्रश्नावली

7.11 संदर्भ सूची

7.1 उद्देश्य

प्रस्तुत इकाई को पढ़ने के बाद आप खड़ीबोली हिंदी को काव्यभाषा के रूप में पहचान दिलाने वाले अयोध्या सिंह उपाध्याय हरिऔध के —

- जीवन से परिचित हो सकेंगे साथ ही उनकी साहित्यिक यात्रा को जान पायेंगे.
- उनके साहित्य की काव्यगत विशेषताओं को जान पायेंगे.
- उनकी कविता 'एक बूँद' और 'सरिता' का पाठ और विश्लेषण पढ़-समझ सकेंगे.

7.2 प्रस्तावना

'हरिऔध' जी का काव्य - जीवन भारतेंदु काल में शैशवावस्था, द्विवेदी युग में तरुणावस्था तथा छायावाद युग में प्रौढ़ावस्था का युग था. उनके काव्य में तीनों युगों की झलक देखने को मिलती है. उनका साहित्य भाव और भाषा के उतार- चढ़ाव का साहित्य है. प्रत्येक युग में हो रहे बदलावों के साथ- साथ उनके साहित्य में भी बदलाव होते रहे. खड़ीबोली को अपनाने के लिए उन्होंने पहले उर्दु के छन्दों और ठेठ बोली को ही उपयुक्त समझा, इसका बड़ा कारण ये था कि खड़ीबोली उर्दू के छन्दों में मंज चुकी थी। द्विवेदी युग में आकर हरिऔध ने ब्रजभाषा के स्थान पर खड़ीबोली में कविता लिखना प्रारम्भ किया. 'प्रियप्रवास' नामक महाकाव्य उनकी उपलब्धि का सर्वश्रेष्ठ उदाहरण है.

7.3 जीवन परिचय :

अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' का जन्म 15 अप्रैल 1865 को उत्तर प्रदेश के आजमगढ़ जिले के निजामाबाद में हुआ था। उनके पिता का नाम पंडित भोलानाथ उपाध्याय था। उन्होंने सिक्ख धर्म अपनाकर अपना नाम भोलासिंह रख लिया था। वैसे उनके पूर्वज सनाढ्य ब्राह्मण थे। इनके पूर्वजों का मुगल दरबार में बड़ा सम्मान था। इनकी प्रारंभिक शिक्षा निजामाबाद एवं आजमगढ़ में हुई। पाँच वर्ष की अवस्था में इनके चाचा ने इन्हें

फारसी पढ़ाना शुरू कर दिया था ।

हरिऔध जी निजामाबाद से मिडिल परीक्षा पास करने के पश्चात काशी के क्वींस कॉलेज में अंग्रेजी पढ़ने के लिए गये, किन्तु स्वास्थ्य बिगड़ जाने के कारण उन्हें कॉलेज छोड़ना पड़ा। उन्होंने घर में रहकर ही संस्कृत, उर्दू, फारसी और अंग्रेजी का अध्ययन किया और 1884 में निजामाबाद के मिडिल स्कूल में अध्यापक हो गये । इसी पद पर कार्य करते हुए उन्होंने नोर्मल-परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की । हरिऔधजी का विवाह आनंद कुमारी के साथ हुआ था ।

सन् 1889 में हरिऔध जी को सरकारी नौकरी मिल गई । वे कानूनगो हो गये । इस पद से सन् 1923 में अवकाश ग्रहण करने के बाद हरिऔधजी ने काशी हिन्दू विश्व विद्यालय के हिन्दी विभाग में अवैतनिक अध्यापक के रूप में कई वर्षों तक अध्यापन किया । सन् 1941 तक वे इसी पद पर कार्य करते रहे । उसके बाद वे निजामाबाद वापस चले आये । इस अध्यापन कार्य से मुक्त होने के बाद हरिऔध जी अपने गाँव में रहकर ही साहित्य-सेवा का कार्य करते रहे । अपनी साहित्य सेवा के कारण हरिऔध जी ने काफी ख्याति अर्जित की। हिन्दी साहित्य सम्मेलन ने उन्हें दो बार सम्मेलन का सभापति बनाया और विद्यावाचस्पति की उपाधि से सम्मानित किया । सन् 1945 ई. में निजामाबाद में इनका देहावसान हो गया ।

7.4 साहित्यिक परिचय :

खड़ीबोली हिन्दी काव्य में अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' का नाम बड़े आदर से लिया जाता है। हरिऔध जी को ही खड़ीबोली में सरस एवं मधुर रचनाएँ प्रस्तुत करने का श्रेय दिया जाता है। उनकी खड़ीबोली कविता पढ़कर ही लोगों को लगा कि खड़ीबोली काव्यभाषा के लिए पूर्णतः उपयुक्त भाषा है। हरिऔध जी ने गद्य रचना के क्षेत्र में भी पर्याप्त कार्य किया है।

उपन्यास :

ठेठ हिन्दी का ठाठ (1899), अधखिला फूल (1907)

नाटक :

प्रद्युम्न विजय (1893), रुक्मिणी परिणय (1894)

काव्यसंग्रह :

कबीर कुण्डल, श्रीकृष्ण शतक, प्रेमाम्बु प्रवाह, उपदेश कुसुम, प्रेम प्रपंच, प्रेमाम्बुवारिधि, प्रेमाम्बु प्रस्रवण, प्रेम पुष्पोपहार, उद्बोधन, ऋतुकुमार, पुष्पविनोद, विनोद वाटिका, चोखे चौपदे, चुभते चौपदे, परूप्रसून, प्रियप्रवास, बोलचाल, रसकलश, फूल-पत्ते, पारिजात, ग्रामगीत, वैदेही वनवास, हरिऔध सतसई, मर्मस्पर्श आदि ।

इन काव्यग्रंथो में से 'प्रियप्रवास' (1914), 'परूप्रसून' (1925), 'चुभते चौपदे', 'चोखे चौपदे' (1932) 'रसकलश' तथा 'वैदेही वनवास' (1940) प्रसिद्ध हैं। 'प्रियप्रवास' खड़ीबोली हिन्दी में लिखा गया प्रथम महाकाव्य है । इसमें राधा और कृष्ण को सामान्य नायक-नायिका के स्तर से ऊ पर उठाकर विश्वसेवी और विश्वप्रेमी के रूप में चित्रित करने में हरिऔधजी ने अपनी मौलिकता का परिचय दिया है । महाकाव्यत्व की दृष्टि से भी यह एक सफल ग्रंथ है । 'रसकलश' उनकी दूसरी महत्वपूर्ण कृति है । यह एक रीतिग्रंथ है, जिसमें रस-स्वरूप और रस-प्रकारों का सूक्ष्म विवेचन है । उनका 'वैदेही वनवास' भी एक श्रेष्ठ महाकाव्य है । हरिऔधजी ने ब्रजभाषा और खड़ीबोली दोनों भाषाओं में रचनाएँ की हैं । ब्रजभाषा में 'रसकलश' की रचना हुई है, तो 'प्रियप्रवास' और 'वैदेही वनवास' की खड़ीबोली में । इनकी अपूर्व साहित्य सेवा के कारण ही हिन्दी काव्य जगत इन्हें

'कवि-सम्राट' के रूप में स्मरण करता है। इनकी काव्य शैली मार्मिक और भावपूर्ण है।

7.5 पुरस्कार और सम्मान

सन 1922 – हिंदी साहित्य सम्मेलन के सभापति

सन 1934 – हिंदी साहित्य सम्मेलन के 24 वें अधिवेशन के सभापति

सन 1937 – नागरी प्रचारिणी सभा, आरा की ओर से राजेन्द्र प्रसाद द्वारा अभिनन्दन ग्रंथ भेंट

सन 1938– 'प्रियप्रवास' पर मंगला प्रसाद पारितोषिक पुरस्कार

7.6 कवि अयोध्यासिंह उपाध्याय : काव्यगत विशेषताएँ

अयोध्यासिंह उपाध्याय के काव्य की काव्यगत विशेषताएँ निम्नवत हैं-

१. लोक सेवा की भावना –

हरिऔधजी ने प्रियप्रवास में श्री कृष्ण के लोक रंजक रूप की अपेक्षा, लोक रक्षक रूप को चित्रित करके उन्हें एक आदर्श के रूप में प्रस्तुत किया है-

विपत्ति के रक्षण सर्वभूत का,
सहाय होना असहाय जीव का.
उबारना संकट से स्वजाति का
मनुष्य का सर्व प्रधान कृत्य है.

२. कर्त्तव्यपरायणता की भावना –

श्री कृष्ण जब गोकुल से मथुरा जा रहे थे, उस समय उनके सामने प्रेम और कर्त्तव्य पालन का अन्तर्द्वन्द्व साकार हो उठता है। एक ओर व्यक्तिगत ऐश्वर्य और दूसरी ओर कर्तव्यपरायणता की राह। उद्धव उनकी कर्तव्यपरायणता का परिचय देते हुए कहते हैं-

वे जी से हैं जगत-जन के सर्वथा श्रेय कामी।
प्राणों से हैं अधिक उनको विश्व का प्रेम प्यारा।

३. वियोग वर्णन -

जब श्री कृष्ण अपने कर्तव्य को समझते हुए गोकुल छोड़कर मथुरा चले जाते हैं, उसके बाद कृष्ण के वियोग में राधा की विरह व्यथा का सुंदर चित्रण कवि ने प्रस्तुत किया है-

रो-रो चिंता सहित दिन को राधिका थीं बिताती।
आँखों को थी सजल रखती उन्मना थी दिखाती।
शोभा वाले जल्द- वपु की हो रही चातकी थी।
उत्कंठा थी परम प्रबला वेदना वर्धिता थी।

४. वात्सल्य वर्णन -

पुत्र वियोग में माता यशोदा की व्यथा का अत्यंत ही सुंदर और मार्मिक चित्रण कवि ने प्रस्तुत किया है –

प्रिय- पति वह मेरा प्राण प्यारा कहाँ है?
दु:ख- जलधि निमग्न का सहारा कहाँ है।
अब तक जिसको मैं देख के जी सकी हूँ।
वह हृदय हमारा नेत्र- तारा कहाँ है।।

५. **प्रकृति चित्रण –**

हरिऔधजी ने प्रकृति का सजीव चित्रण किया है उनकी प्रकृति प्राणियों के सुख दु:ख की भागीदार हैं. ब्रजवासियों की पीड़ा को देखकर प्रकृति भी रोने लगती है-

फूलों- पत्तों सकल पर हैं वारि बूँदें दिखाती
रोते हैं या विटप सब यों आँसुओं को दिखा के
रोई थी जो रजनी दु:ख से नन्द की कामिनी के
ये बूँदें हैं निपतित हुईं या उसी के दृगों से।।

संध्या का सुंदर चित्रण देखिये-

दिवस का अवसान समीप था
गगन था कुछ लोहित हो चला
तरु शिखा पर थी जब राजती
कमलिनी- कुल- वल्लभ की प्रभा।

६. **रस- योजना**

हरिऔध जी की रचनाओं में रस-योजना भी वर्णनीय है. उनकी रचनाओं में श्रृंगार, वात्सल्य, करुण आदि रसों की सुंदर योजना दिखाई देती हैं। श्रृंगार के अंतर्गत वियोग पक्ष की प्रधानता है .

रो-रो चिंता सहित दिन को राधिका थीं बिताती।
आँखों को थीं सजल रखती उन्मना थीं दिखाती।

(वियोग श्रृंगार)

प्रिय- पति वह मेरा प्राण प्यारा कहाँ है?
दु:ख- जलधि निमग्न का सहारा कहाँ है।

(वात्सल्य रस)

ऐसा रोई सकल –जनता खो बची धीरता को
भू में व्यापी विपुल जिससे शोक उच्छ्वास मात्रा।

(करुण रस)

७. **छंद योजना –**

कवि ने छन्दों का प्रयोग अपने काव्य विषय के अनुरूप किया है। उनकी रचनाओं में प्राचीन तथा नवीन सभी छंदों का सफल प्रयोग मिलता है. उनकी रचनाओं में चार रूपों में छंद योजना देखने को मिलती हैं –

1. ग्रामीण छंद -

विगरल मोर करमवाँ नहिं जानों कौन करनवाँ,
घर गाँव छूटल, दियार देस छूटल छुटि गैलें सिगरे सजनवाँ।

2. उर्दू शैली के छन्द -

इस चमकते हुए दिवाकर से
रस बरसते हुए निसाकर से।

3. रीतिकालीन छंद -

इस प्रकार के छन्दों की भाषा ब्रज भाषा हैं. इसका सर्वश्रेष्ठ उदाहरण 'रस-कलश' हैं।

4. संस्कृत साहित्य के छंद -

सारी बातें अति दुःख भरी नन्द अर्धांगिनी की।

(मंदाक्रांता छंद)

तदुपरांत महा दुःख में पगी
बहुविलोचन वारि विमोचती

(द्रुतविलम्बित छंद)

सब पथ कठिनाई नाथ हैं जानते ही
अब तक न कहीं भी लाडिले हैं पधारे।

(मालिनी छंद)

८. अलंकार योजना -

हरिऔध जी को अलंकार प्रिय थे पर इसका ये अर्थ नहीं था कि वे अपनी रचनाओं में अलंकारों का जबरदस्ती प्रयोग करते थे. उनकी रचनाओं में अलंकार सहज रूप में प्रयुक्त हुए हैं. अनुप्रास, यमक, उत्प्रेक्षा, रूपक, मानवीकरण आदि अलंकार उनकी रचनाओं में अधिक देखने को मिलते हैं-

अनुप्रास अलंकार

1. विवश वृद्ध वृद्धाओं का व्याकुल बन रोदन।
2. सुख स्पर्श सद्गंधा सदन है उसे बताता।

रूपक अलंकार

1. जिसमें मानस-हंस सदा पाता सुख-मोती।

उत्प्रेक्षा अलंकार

1. सुन पडा स्वर ज्यों कल-वेणु का।
2. तृषित चातक ज्यों घन की घटा।

उपमा अलंकार

1. मुख प्रफुल्लित पद्म समान था।

मानवीकरण अलंकार

1. फूलों- पत्तों सकल पर हैं वारि बूँदें दिखाती।
   रोते हैं या विटप सब यों आँसुओं को दिखा के।।

९. शैली योजना –

हरिऔध जी अपनी शैली के खुद जन्म दाता थे. उनकी शैली में अनुप्रास की छटा, लम्बे-लम्बेसमास, मुहावरों की भरमार, तत्सम शब्दों की अधिकता के के साथ-साथ ओज, माधुर्य और प्रसाद गुण की मौजूदगी से शैली प्रवाहमयी और चमत्कारपूर्ण बन पड़ी हैं। काव्य में उनकी शैली के चार रूप देखने को मिलते हैं-

1. उर्दू की मुहावरेदार शैली - चुभते चौपदे और चोखे चौपदे
2. रीतिकालीन शैली - रस कलश
3. संस्कृत काव्य की शैली - प्रिय प्रवास
4. वर्तमान शैली - वैदेही वनवास

१०. भाषा –

भाषा पर उनका अधिकार था। चाहे गद्य हो, चाहे पद्य दोनों ही क्षेत्रों में भाषा उनकी अनुगामिनी थी। कहीं- कहीं उनकी भाषा अत्यंत सरल है, तो कहीं कहीं संस्कृतनिष्ठ।

उदा.

रूपोद्यान प्रफुल्ल प्रायः कलिका राकेन्दु बिम्बानना
तन्वंगी कल- हासिनी सुरसि का क्रीडा-कला पुत्तली।

बोध प्रश्न

1. हरिऔध का कोनसा महाकाव्य रीति ग्रंथ हैं ?
2. 'प्रिय प्रवास' महाकाव्य के लिए कवि को कौनसा पुरस्कार मिला ?
3. उर्दू की मुहावरेदार शैली में कवि ने किस ग्रंथ की रचना की है ?
4. 'दिवस का अवसान समीप था' में किस समय का चित्रण किया गया है ?
5. खडीबोली हिन्दी में लिखा गया प्रथम महाकाव्य कौनसा है ?

7.7 'एक बूँद' कविता का पाठ, विश्लेषण और भावार्थ

एक बूँद

ज्यों निकल कर बादलों की गोद से
थी अभी एक बूँद कुछ आगे बढ़ी
सोचने फिर फिर यही मन में लगी
आह क्यों घर छोड़कर मैं यों बढ़ी।
दैव मेरे भाग्य में है क्या बदा
मैं बचूंगी या मिलूंगी धूल में।
या जलूंगी गिर अंगारे पर किसी

चू पडूंगी या कमल के फूल में।
बह गई उस काल कुछ ऐसी हवा
वह समुंदर ओर आई अनमनी
एक सुंदर सीप का मुँह था खुला
वह उसी में जा पड़ी मोती बनी।
लोग यों ही हैं झिझकते सोचते
जबकि उनको छोड़ना पड़ता है घर
किन्तु घर का छोड़ना अक्सर उन्हें
बूँद लौं कुछ ओर ही देता है कर।

विश्लेषण :

'एक बूँद' अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' की प्रसिद्ध कविताओं में से एक कविता हैं। प्रकृति चित्रण हरिऔध का प्रिय विषय रहा है। आधुनिक काल में प्रकृति हमारे सामने कई रूपों में आती है। कवियों ने कहीं पर प्रकृति के सरल तो कहीं पर भयावह चित्र खींचे हैं। प्रस्तुत कविता में कवि ने प्रकृति के माध्यम से मानव वेदना को चित्रित किया है। बूँद बादलों की गोद से निकल कर अभी कुछ आगे बढ़ी ही थी कि सोच-विचार में डूब जाती है। कवि ने निम्न पंक्तियों में सादृश्य बिंब का अद्भुत चित्र खींचा है —

ज्यों निकल कर बादलों की गोद से
थी अभी एक बूँद कुछ आगे बढ़
सोचने फिर-फिर यही मन में लगी
आह क्यों घर छोड़ कर मैं यो आगे बढ़ी।

कवि ने बूँद की मनःस्थिति का यथार्थ वर्णन किया है। उसके मन में बार-बार यही प्रश्न उठ रहा था कि उसे अपना घर छोड़कर यों आगे नहीं बढ़ना चाहिए था। जिनके साथ हमारा रिश्ता-नाता होता हैं उसका त्याग यों उचित नहीं हैं। पर बूँद की तो बादल से बिछड़ने की नियति है, वह चाहकर भी बादल के साथ नहीं रह सकती। 'आह क्यों घर छोड़ कर मैं यों बढ़ी?' पंक्ति में बूँद की मार्मिक वेदना व्यक्त हुई हैं। किन्तु बूँद का तो कर्तव्य ही है कि वह धरती पर गिरकर धरती को हरा-भरा बनाए। बूँद की सार्थकता इसी में हैं कि वह अपने आपको न्यौछावर करके अपने क्षणभंगुर जीवन को सत्कार्य में जोड़ें।

बूँद का जीवन क्षणिक होता हैं, किन्तु अपने इस अल्पकालिक जीवन में भी वह बहुत बड़ा उपकार, धरती को नंदनवन बनाकर कर जाती है। बादल से विलग होने के बाद उसकी क्या स्थिति होने वाली हैं, उसको लेकर बूँद चिंतित हैं। कवि ने बूँद की वेदना को निम्न पंक्तियों में व्यक्त किया हैं-

दैव मेरे भाग्य में है क्या बदा
मैं बचूंगी या मिलूंगी धूल में
या जलूंगी गिर अंगारे पर किसी
चू पडूंगी या कमल के फूल में।

बूँद कहती है कि हे दैव! मेरे भाग्य में क्या लिखा है, यह मैं नहीं जानती हूँ। मैं जीवित रह पाऊँगी या नहीं, यह भी मैं नहीं जानती हूँ। मैं धूल में मिल जाऊँगी या किसी

सुलगते अँगारे पर गिरूँगी या किसी स्थल पर चू पड़ूँगी, या कमल के फूल पर गिरूँगी यह भी मैं नहीं जानती हूँ। बूँद को खुद पता नहीं है कि उसकी क्या अवदशा होने वाली है। बूँद अपने अस्तित्व को बचाये रखना चाहती है इसलिए वह चिंतित भी हैं।

बादल से बिछुड़ने का दुख बूँद को है, पर बूँद की नियति कुछ ऐसी हैं कि बादल से अलग होने के बाद पुन: उससे चाहकर भी नहीं मिल सकती। बूँद अपने अस्तित्व की रक्षा हेतु चिंता में मग्न थी कि उसी समय कुछ ऐसी हवा बहने लगती हैं कि वह समुद्र की ओर आगे बढ़ जाती है। समुद्र में एक सुंदर सीप पड़ा हुआ था, जिसका मुँह खुला हुआ था। बूँद उस खुले हुए सीप के मुँह में समा जाती हैं। जिससे वह एक मोती का रूप धारण कर लेती हैं —

बह गई उस काल कुछ ऐसी हवा
वह समुंदर ओर आई अनमनी
एक सुंदर सीप का मुँह खुला था
वह उसी में जा पड़ी मोती बनी।

उपर्युक्त पंक्तियों के माध्यम से कवि हमें यह बताना चाहते हैं कि हम भले कितने ही छोटे क्यों न हो, परन्तु किसी अच्छे व्यक्ति की संगति पाकर हमारा भी मूल्य बूँद की भाँति बढ़ जाता है। बूँद सीप के संपर्क में आकर मोती बन जाती हैं और अपने मूल्य को बढ़ा लेती हैं। उसी प्रकार मनुष्य को भी साधु लोगों के संपर्क में रहना चाहिए, जिससे हमारा मूल्य अर्थात् हम में सद्‌गुणों की वृद्धि हो सकें।

कविता की अंतिम पंक्तियों में हरिऔधजी हमें यही संदेश देते हैं कि मनुष्य को भी अपना घर छोड़ते समय यही दुख और वेदना होती हैं जैसी बूँद को हुई हैं। कवि हरिऔधजी को भी अपने जीवन काल में निजामाबाद से काशी जाना पड़ा था। इसलिए वे इस दुख से भलीभाँति परिचित थे। मनुष्य जब अपना घर छोड़ता हैं, तब उसकी कैसी मन:स्थिति होती हैं, इसका चित्रण कवि ने कुछ इस प्रकार किया है —

लोग यों ही हैं झिझकते सोचते
जबकि उनको छोड़ना पड़ता है घर
किन्तु घर का छोड़ना अक्सर उन्हें
बूँद लौं कुछ और ही देता है कर।

आजीविका हेतु मनुष्य को जब अपना घर छोड़ना पड़ता है तो वह चिंताग्रस्त हो जाता है। वह इस सोच में डूब जाता है कि अनजान शहर में कौन उसका अपना होगा? पता नहीं नया शहर कैसै होगा? उस शहर के लोग कैसे होंगे आदि बातों को सोच-विचार कर उदास हो जाते हैं। कवि हमें यह संदेश देते हैं कि जिस प्रकार बूँद बादल से बिछड़कर अंतत: समुद्र की सीप में समाकर मोती बन जाती हैं, उसी प्रकार समय के साथ अनजान शहर मनुष्य के लिए अनजान न रहकर उसे अपना शहर लगने लगता है।

'एक बूँद' कविता में खड़ीबोली हिन्दी का प्रयोग किया गया है। जिसमें सरल, सहज, सरस शब्दावली का प्रयोग देखते ही बनता है। इस कविता की भाषा में प्रवाहमयता हैं, जो कविता को क्लिष्टता से कोशों दूर रखती हैं। इस प्रकार प्रस्तुत कविता के माध्यम से कवि ने संसार की जो गति हैं, प्रकृति की जो नियति हैं उसको स्वीकार करके जीवन में आगे बढ़ते रहने की प्रेरणा दी हैं।

भावार्थ -

'एक बूँद' अयोध्यासिंह उपाध्याय हरिऔध की प्रकृति परक कविताओं में से एक महत्वपूर्ण कविता है। बूँद बादलों की गोद से निकलकर थोड़ी आगे बढ़ी ही थी कि किसी सोच में डूब जाती हैं। बार-बार उसके मन में एक ही प्रश्न उठ रहा था कि आखिर क्यों वह बादल की गोद से निकली? उसके मन में यही विचार प्रक्रिया चल रही थी कि उसे यों घर छोड़कर आगे नहीं बढ़ना चाहिए। बूँद सोचती हैं कि वह कब, कहाँ और किससे मिलने के लिए चल पड़ी हैं। साथ ही वह अपने अस्तित्व के प्रति भी सजग हैं। वह जानती हैं कि बादल से अलग होकर वह अपने अस्तित्व की रक्षा नहीं कर सकती। किन्तु बूँद को बादल से विलग होना ही पड़ता है और यही उसकी नियति हैं। बूँद अपना बादल रूपी घर छोड़कर आगे तो बढ़ जाती हैं, पर जैसे ही उसे अपने अस्तित्व का खयाल आता है, वह दु:खी हो जाती हैं। बादल से विलग होने के बाद उसकी क्या स्थिति होने वाली हैं उसको लेकर बूँद चिंतित हैं। बूँद इस विपत्ति में ईश्वर का स्मरण करती हैं और अपनी वेदना, व्यथा व्यक्त करती हुई कहती हैं कि हे दैव! मेरे भाग्य में क्या लिखा हुआ है, यह मैं नहीं जानती हूँ। मैं जीवित रह पाऊँगी या नहीं, मैं धूल में मिल जाऊँगी या किसी सुलगते अंगारें पर गिरूँगी, या किसी अनजान स्थल पर बरस पडूँगी, या किसी कमल के फूल पर गिरूँगी, मैं नहीं जानती हूँ। बूँद के मन में तरह-तरह के विचार उठ रहे थे। उसी समय ऐसी हवा बहने लगती हैं कि वह समुद्र की ओर आगे बढ़ जाती हैं। समुद्र में एक सुंदर सीप पड़ा हुआ था और उसका मुँह खुला था। बूँद उस खुले हुए सीप के मुँह में समा जाती हैं, जिससे वह एक सुंदर मोती का रूप धारण कर लेती हैं। बूँद की भाँति मनुष्य भी अपना घर छोड़ते समय चिंतित हो उठता है। घर छोड़ने का दुख तो सभी मनुष्यों को होता ही हैं। जीवन में कुछ पाने के लिए मनुष्य को अपना घर छोड़ना ही पड़ता है। मनुष्य घर छोड़कर ही बूँद की भाँति मूल्यवान बन सकता है। 'एक बूँद' कविता के माध्यम से कवि हरिऔधजी हमें यही संदेश देते हैं कि बूँद और मनुष्य दोनों को अपना घर छोड़ना पड़ता है, जो उनके लिए अभिशाप न होकर वरदान सिद्ध होता है। यही इस कविता का संदेश भी हैं।

बोध प्रश्न

1. 'एक बूँद' कविता में कवि ने प्रकृति के माध्यम से किसका चित्रण किया है ?
2. प्रस्तृत कविता में से सादृश्य बिम्ब का उदाहरण लिखिए।
3. 'एक बूँद' कविता की भाषा के बारे में अपने विचार स्पष्ट कीजिए।

7.8 सरिता कविता का पाठ, विश्लेषण और भावार्थ

सरिता

किसे खोजने निकल पड़ी हो।
जाती हो तुम कहाँ चली।
ढली रंगतों में हो किसकी।
तुम्हें छल गयो कौन छली ॥१॥

क्यों दिन-रात अधीर बनी सी।
पड़ी धरा पर रहती हो।
दु:सह आतप शीत-वात सब।

दिनों किसलिये सहती हो ॥२॥

कभी फैलने लगती हो क्यों ।
कृश तन कभी दिखाती हो ।
अंग-भंग कर-कर क्यों आपे ।
से बाहर हो जाती हो ॥३॥

कौन भीतर पीड़ाएँ ।
लहरें बन ऊपर आती हैं ।
क्यों टकराती ही फिरती हैं।
क्यों कांपती दिखाती है ॥४॥

बहुत दूर जाना है तुमको ।
पड़े राह में रोड़े है ।
है सामने खाइयां गहरी ।
नहीं बखेड़े थोड़े हैं ॥ ५॥
पर तुमको अपनी ही धुन है ।
नहीं किसी की सुनती हो ।
काँटों में भी सदा फूल तुम ।
अपने मन के चुनती हो ॥६॥

उषा का अवलोक वदन ।
किसलिये लाल हो जाती हो ।
क्यों टुकड़े-टुकड़े दिनकर की ।
किरणों को कर पाती हो ॥७॥
क्यों प्रभात की प्रभा देखकर ।
उर में उठती है ज्वाला ।
क्यों समीर के लगे तुम्हारे ।
तन पर पड़ता है छाला ॥८॥

विश्लेषण -

'सरिता' उनकी एक प्रकृतिपरक कविता है, जिसमें कवि ने मनुष्य को निरंतर आगे बढ़ते रहने की प्रेरणा दी हैं। सरिता के पथ में अनेक बाधाएँ आती हैं, फिर भी वह संघर्ष करती हुई अंततः समुद्र से मिल जाती है। उसी प्रकार मनुष्य को भी अपने जीवन में कितना भी दुख हो, बाधाएँ हो, समस्याएँ हो, निरंतर संघर्ष करते हुए अपने लक्ष्य को, अपने ध्येय को हासिल करना चाहिए। जीवन में कितनी ही रूकावटें क्यों न आए, मनुष्य को सतत

गतिशील रहना चाहिए। यही इस कविता का उद्देश्य हैं।

'सरिता' हरिऔध जी की एक प्रसिद्ध कविता है। इस कविता में हरिऔधजी ने सरिता (नदी) का वर्णन किया है। जब हम सरिता को देखते हैं तो हमारे मन में कई प्रश्न उठते हैं कि वह क्या खोजने के लिए निकली हैं, वह कहाँ चली जा रही हैं। कवि के मन में भी यही प्रश्न उठता है। कविता का आरंभ हमारे मन में जिज्ञासा का भाव जगाता है —

किसे खोजने निकल पड़ी हो।
जाती हो तुम कहाँ चली।
ढली रंगतों में हो किसकी
तुम्हें छल गया कौन छली ॥

कवि सरिता को संबोधित करते हुए कहते हैं कि तुम किसे खोजने के लिए निकल पड़ी हो और कहाँ चली जा रही हो। मुझे लगता है तुम किसी की बातों में आ गई हो, किसी के बहकावे में आ गई हो। लगता है किसी ने तुम्हारे साथ छल किया है। सरिता के प्रति अपनी सहानुभूति व्यक्त करते हुए कवि कहते हैं —

क्यों दिन-रात अधीर बनी-सी।
पड़ी धरा पर रहती हो।
दु:सह आतप शीत-वात सब
दिनों किसलिये सहती हो।

सरिता दिन-रात बिना रूके अधीर बनकर धरा पर प्रवाहित होती हैं। धरा पर रहकर ही वह दु:सह ताप और जाड़े को सहन करती रहती हैं। मौसम चाहे कैसा भी हो, उसको सहन करना ही उसकी नियति हैं। जब से सरिता का जन्म होता है, तब से वह ताप और जाड़े के मौसम को सहती रहती हैं। सब कुछ सहना उसके नसीब में लिखा हो, ऐसा प्रतीत होता है।

प्रस्तुत कविता में हरिऔध जी ने सरिता का नखशिख वर्णन किया है। सरिता का पूरा बिंब हमारी आँखों में उभरने लगता है। सरिता का आकार सभी जगहों पर एक जैसा नहीं होता। सरिता कहीं पर फैली हुई होती हैं तो कहीं पर सिमटी हुई होती हैं। कभी-कभी हमें लगता है कि वह किसी की याद में कृशकाय हो गई हैं तो कभी-कभी वह अपने नियंत्रण से बाहर हो जाती हैं। जिससे कई जगहों पर तबाही मच जाती हैं। कभी शांत दिखने वाली सरिता रौद्र रूप धारण कर अपने आसपास के इलाकों का विनाश कर देती हैं तो कभी डरी, सहमी और काँपती हुई दिखाई देती है-

कौन भीतरी पीड़ाएँ।
लहरें बन ऊपर आती हैं।
क्यों टकराती फिरती हैं।
क्यों काँपती दिखती हो ॥

सरिता के जल-प्रवाह में हवा के कारण तरंगें उठती हैं, तो ऐसा लगता है कि उसके भीतर की पीड़ा लहरें बनकर ऊपर उठ रही हो। सरिता की लहरें किनारे से टकराकर चूर-चूर हो जाती हैं।

कवि हरिऔधजी सरिता को सम्बोधित करते हुए कहते हैं कि तुमको तो बहुत दूर तक जाना है। तुम्हारी मंजिल बहुत दूर हैं। तुम्हारे पथ में अनेक रोड़े पड़े हुए हैं अर्थात् तुम्हारे पथ में बाधाएँ ही बाधाएँ हैं, अनेक खाईयाँ भी हैं जिसे तुम्हें पार करना है तभी तुम

अपनी मंजिल को प्राप्त कर सकोगी–

बहुत दूर जाना है तुमको ।
पड़े राह में रोड़े हैं ।
हैं सामने खाईयां गहरी ।
नहीं बखेड़े थोड़े हैं ॥

सरिता के पथ में मुसीबतें ही मुसीबतें हैं जिसे पार करते हुए उसे आगे बढ़ना है । सरिता पर मानो कोई धुन सवार हो गई हैं, वह किसी की बात सुनती ही नहीं हैं । सरिता में आत्मविश्वास भरपूर हैं जिसका वर्णन हरिऔधजी ने निम्न पंक्तियों में किया है–

पर तुमको अपनी ही धुन हैं ।
नहीं किसी की सुनती हो ।
काँटों में भी सदा फूल तुम ।
अपने मन के चुनती हो ॥

सरिता के पथ में अनेक काँटे हैं फिर भी वह फूल की तरह खिलती, मुस्कुराती हुई आगे बढ़ती ही जाती हैं । वह अपने मन की ही बात सुनती हैं । सरिता अपने आस–पास के इलाकों को हरा–भरा करती हुई उसे नंदनवन बनाकर निरंतर आगे बढ़ती रहती हैं ।

प्रातः सरिता के जल पर उषा की सुनहरी किरणें पड़ती हैं तो उसका तन लाल हो उठता है, जिससे यह भ्रम होता है कि सरिता सूर्य की किरणों के टुकड़े–टुकड़े कर रही हों । यहाँ कवि ने प्रातः बेला में नदी कैसी सुरम्य दिखती है, उसका मनोरम चित्रण किया है–

उषा का अवलोक वदन ।
किसलिए लाल हो जाती हो ।
क्यों टुकड़े–टुकड़े दिनकर की ।
किरणों को कर पाती हो ॥

आगे कवि सरिता को देखकर कहते हैं कि प्रभात की प्रभा देखकर तुम्हारे उर में ज्वालाएँ क्यों उठती हैं । समीर के स्पर्श से तुम्हारे तन पर छालें क्यों पड़ जाते हैं, जैसे प्रश्न हरिऔधजी सरिता से पूछते हैं । कुल मिलाकर कहा जा सकता है कि कवि ने सरिता का सुंदर चित्रण इस कविता में किया है ।

प्रकृति का वर्णन करना द्विवेदीयुगीन कवियों की प्रमुख विशेषता रही हैं । अयोध्यासिंह उपाध्याय हरिऔधजी ने भी 'सरिता' कविता के माध्यम से एक नया संदेश दिया है । सरिता की भाँति मनुष्य को भी अपने जीवन में संघर्षरत रहकर आगे बढ़ते रहना चाहिए । इस कविता में खड़ीबोली हिन्दी का प्रयोग हुआ है; कवि ने सरल, सहज शब्दों के माध्यम से सरिता का सुंदर चित्र खींचा हैं ।

भावार्थ :

'सरिता' कविता के माध्यम से हरिऔधजी ने सरिता के संघर्ष को स्पष्ट किया है । सरिता के मार्ग में अनेक मुसीबतें, बाधाएँ आती हैं फिर भी वह इन सब की परवाह किये बिना अपने पथ पर आगे बढ़ती ही जाती हैं । वह निरंतर संघर्ष करती हुई अपने प्रियतम समुद्र को मिलने के लिए उत्सुक रहती हैं । सरिता को देखकर मन में कई सवाल खड़े होते हैं कि वह क्या खोजने के लिए निकली हैं? चिंता में डूबी हुई वह कहाँ जा रही हैं? पगली सी किसी बात की परवाह किये बिना वह अपने पथ पर आगे बढ़ने के लिए उत्सुक है । कवि सरिता

को प्रश्न करते हैं कि लगता है तुम किसी की बातों में आ गई हो या किसी के बहकावे में आ गई हो। लगता है तुम्हारे साथ किसी ने छल किया है। मनुष्य को भी अपने पथ पर चलते हुए किसी की बातों में नहीं आ जाना चाहिए क्योंकि इस दुनिया में भाँति-भाँति के लोग रहते हैं। कोई हमारा उत्साह बढ़ाता है, तो कोई कम करता है। मनुष्य को किसी के कटु वचनों को ध्यान में लिए बिना अपने मन की ही बात सुननी चाहिए। सरिता तो एक प्रतीक है जिनका सहारा लेकर कवि हमें आगे बढ़ते रहने की सलाह देते हैं। कवि सरिता के प्रति सहानुभूति प्रकट करते हैं। सरिता दिन-रात अधीर बनकर धरा पर प्रवाहित होती रहती हैं। धरा पर रहकर ही वह दु:सह ताप और जाड़े को सहती हैं। सरिता का आकार सदैव एक जैसा नहीं होता है। कहीं पर वह फैली हुई हैं तो कहीं पर कृशकाय बनी हुई हैं। कभी तो वह अपनी सारी मर्यादाओं को तोड़कर नियंत्रण से बाहर हो जाती हैं जिससे तबाही मच जाती हैं। सरिता के जल प्रवाह में हवा के कारण तरंगे उठती हैं तो ऐसा लगता है कि उसके भीतर की पीड़ा लहरें बनकर उठ रही हैं। यहाँ कवि ने मानवीकरण अलंकार का प्रयोग किया हैं। सरिता को अपने प्रियतम से मिलने के लिए बहुत लम्बी दूरी तय करनी पड़ती है। उसकी मंजिल बहुत दूर हैं तथापि सरिता बिना थके, बिना विश्राम किये अपने पथ पर अग्रसर रहती हैं। मनुष्य को भी अपने जीवन में बिना विश्राम किये आगे बढ़ते रहना चाहिए तभी सफलता प्राप्त हो सकती हैं। संघर्ष ही विकास की जननी हैं, इसलिए मनुष्य का जीवन संघर्षरत होना चाहिए। सरिता के पथ में अनेक बाधाएँ आती हैं, अनेक खाईयाँ आती है फिर भी वह उन सबको पार कर लेती हैं, तभी वह समुद्र से मिल पाती हैं। सरिता के मन में अपने प्रियतम से मिलने की धुन सवार है जिससे उनके पथ में आने वाली बाधाएँ भी उसे बाधाएँ नहीं लगती। जिस प्रकार काँटों मे फूल खिलता है उसी प्रकार सरिता भी धीरे-धीरे कंटकों को पार करती हुई अंततः अपने प्रियतम से मिल जाती हैं। मनुष्य में भी सरिता की भाँति आत्मविश्वास होना चाहिए ताकि वह अपने लक्ष्य तक सरलता से पहुँच सके। मनुष्य को हमेशा अपने मन की बात सुननी चाहिए न की दूसरों की यही इस कविता का मूल-स्वर हैं।

7.9 सार-बिन्दु

1. अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' द्वारा रचित 'प्रियप्रवास' खडीबोली हिन्दी का प्रथम एवं सर्वश्रेष्ठ महाकाव्य हैं।
2. 'रसकलश' की रचना हरिऔध ने ब्रजभाषा में की थी।
3. 'प्रियप्रवास' में राधा कृष्ण के विश्वसेवी और विश्वप्रेमी(लोकरक्षक) रूप का चित्रण किया है।
4. 'एक बूँद' कविता में कवि ने संसार की गति, प्रकृति की नियति आदि को स्वीकार करते हुए जीवन में सदैव आगे बढते रहने की प्रेरणा दी हैं।
5. 'सरिता' कविता के माध्यम से कवि ने सरिता की भाँती आत्मविश्वास के जरिए लक्ष्य तक पहुँचने की बात करते हैं साथ ही हमेंशा अपने मन की बात सुनने का संदेश भी देते हैं।

7.10 परीक्षोपयोगी प्रश्नावली

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. हरिऔध का जीवन परिचय देते हुए उनकी साहित्य —साधना पर प्रकाश डालिए।
2. हरिऔध की काव्यगत विशेषताएँ लिखिए।

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. 'एक बूँद' कविता की व्याख्या कीजिए।
2. 'सरिता' कविता की व्याख्या कीजिए।
3. 'एक बूँद' कविता का मूल भाव अपने शब्दों में लिखिए।
4. 'सरिता' कविता का मूल भाव अपने शब्दों में लिखिए।

टिप्पणी लिखिए

1. हरिऔध का साहित्यिक परिचय
2. हरिऔध के काव्य में रस-छंद- अलंकार
3. 'एक बूँद' कविता में प्रकृति चित्रण
4. 'सरिता' कविता में प्रकृति चित्रण

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

सही के सामने ✓ गलत के सामने ✕ के निशान लगाइए.

1. 'प्रियप्रवास' ब्रजभाषा में लिखा गया प्रथम महाकाव्य है.
2. 'ठेठ हिंदी का ठाठ' हरिऔध का प्रसिद्ध नाटक हैं.
3. 'सरिता' उनकी एक प्रकृति परक रचना है.
4. हरिऔध ने अपनी रचनाओं में जानबूझकर अलंकारों का प्रयोग किया.
5. हरिऔध हिंदी साहित्य सम्मेलन के सभापति रह चुके हैं.

रिक्तस्थानों की पूर्ति कीजिए.

1. 'रस-कलश' एक -----ग्रंथ है.
2. 'दिवस का अवसान समीप था' में---- का चित्रण किया गया है.
3. हरिऔधजी ने श्री कृष्ण के -------रूप को चित्रित किया है.
4. हरिऔंध जी को मंगला प्रसाद पारितोषिक पुरस्कार ---रचना के लिए मिला था.
5. रस कलश की भाषा ------ है.

7.11 संदर्भ सूची

1. हिन्दी साहित्य का इतिहास - आचार्य रामचन्द्र शुक्ल
2. हिन्दी के निर्माता - कुमुद शर्मा
3. हमारे कवि और लेखक : डॉ राजेन्द्र सिंह गौड़

इकाई 8 : मैथिलीशरण गुप्त

रूपरेखा

8.1 उद्देश्य

8.2 प्रस्तावना

8.3 जीवन परिचय

8.4 पुरस्कार एवम् सम्मान

8.5 गुप्त जी की साहित्य साधना

8.6 गुप्त जी की काव्य - संवेदना

8.7 शिल्प विधान

8.8 नर हो न निराश करो मन को - काव्य पाठ, विश्लेषण

8.9 चारु चन्द्र की चंचल किरणें - काव्य पाठ, विश्लेषण

8.10 सार बिंदु

8.11 शब्दावली

8.12 परीक्षोपयोगी प्रश्नावली

8.13 सन्दर्भ सूची

8.1 उद्देश्य

इस इकाई में आप राष्ट्रकवि श्री मैथिलीशरण गुप्त के जीवन परिचय एवं काव्य का अध्ययन करेंगे. इस इकाई को पढने के बाद आप

- गुप्त जी के व्यक्तित्व एवं साहित्य साधना से परिचित हो सकेंगे. साथ ही गुप्त जी के साहित्य की विशेषताएँ एवं काव्य का मूल स्वर बता सकेंगे.
- हिंदी साहित्य जगत तथा राष्ट्रभाषा के विकास में गुप्त जी का योगदान बता सकेंगे.
- 'नर हो न निराश करो मन को', 'चारू चन्द्र की चंचल किरणें' का पाठ एवं व्याख्या कर सकेंगे.

8.2 प्रस्तावना

मैथिलीशरण गुप्त द्विवेदी युग के मुख्य कवि हैं. उन्होंने भारत के अतीत-गौरव का गान करते हुए जनमानस को राष्ट्र की एकता, अखंडता का संदेश दिया. अतीत का गुणगान करते हुए भी वे मात्र अतीतजीवी बनकर कभी नहीं रहे क्योंकि उनकी रचनाधर्मिता में अतीत इस तरह बंधा है मानो वह वर्तमान हो. उनका साहित्य अनेक प्रेरणा स्रोतों से भरा हुआ है, जिसमें प्राचीन भारतीय संस्कृति से प्रेम, वर्तमान में आस्था, कर्म में विश्वास, मानवतावाद, समष्टि भावना, समन्वयतावादी जैसी अनेक प्रवृत्तियाँ उनके साहित्य को विशेष दर्जा दिलाती है. उन्होंने प्राचीन संस्कृति को नये रंग में प्रकाशित किया, चाहे पौराणिक कथानक हो या उपनिषदों के दृष्टान्त हों, चाहे महाभारत, रामायण के प्रसंग हों, सभी को नवीनता के साँचे में ढालने का कार्य किया. भाषा के सन्दर्भ में हिंदी काव्यधारा को एक नई दिशा प्रदान करते हुए (संस्कारित करके) लोगों के बीच रखा तथा खड़ीबोली हिंदी को मुहावरों से अनुप्राणित कर रुचिकर, लोकप्रिय तथा परिपक्व बनाया. उनके भागीरथ

प्रयासों से खड़ीबोली शुद्ध, टकसाली और व्याकरणबद्ध होकर नए कलेवर के साथ सामने आयी.

8.3 जीवन परिचय

सम्मान एवं अपमान के प्रभाव से मुक्त होकर जीने वाले विनम्र, विनोद प्रिय, शालीन, सज्जन, उदार एवं सरल व्यक्तित्व के धनी राष्ट्रकवि श्री मैथिलीशरण गुप्त का जन्म 3 अगस्त,1886 को भांडेर से चिरगांव आकर बसे सेठ रामचरण के यहाँ हुआ था. इनकी माता का नाम काशीबाई था. वे कुल पांच भाई थे. 9 वर्ष की अवस्था में ही उनका पहला विवाह हो गया था. पहली पत्नी की मृत्यु के बाद दूसरा विवाह किया, दूसरी पत्नी भी देवधाम सिधार गयी. 9 संतानों के मरण का वियोग भी गुप्त जी ने झेला. उनका तीसरा विवाह सरयू देवी से हुआ. गुप्त जी की एक मात्र जीवित सन्तान उर्मिलाशरण गुप्त प्रकाशन का कार्य सम्भालते हैं.

एकांत काव्य-साधना का जीवन जीने वाले गुप्त जी संकोची स्वभाव के कारण समारोह आदि से दूर रहना अधिक पसंद करते थे. 12 दिस. 1964 की मध्य रात्रि में उनका देहावसान हो गया. उनकी अंतिम रचना हंस गीत 12 दिस. की मध्य रात्रि में उनके तकिये के नीचे से मिली थी. ''वे धर्म में विशिष्ट द्वैतवादी, विचारों में गांधीवादी और साहित्य में अभिधावादी है।'' राष्ट्रीय आंदोलनों के प्रभाव से उन्होंने धोती, जवाहर कोट, कुर्ता, टोपी, जूते, चप्पल, मोटे फ्रेमवाला चश्मा और जेब-घड़ी आदि पहनावा जीवन के अंतिम काल तक अपनाए रखा.

शिक्षा के लिए गाँव के विधालय के तीसरे दर्जे से हटाकर झाँसी के मैक्डागल स्कूल में भेजा गया, इस उम्मीद से कि अंग्रेजी पढ़ लिखकर डिप्टी कलेक्टर बन जाएगा किन्तु यहाँ उनका मन गेंद-बल्ला, पतंगबाजी, रात में नाटक आदि देखने में लग गया. परिणामस्वरूप छठीं कक्षा के बाद पुनः घर ले जाया गया. उन्होंने एक भाषण में लिखा था —''मैं पढ़ने के लिए नहीं जन्मा हूँ. मैंने इसलिए जन्म लिया है कि लोग ही मुझे पढ़ें.'' उन्होंने अपने इस वक्तव्य को सार्थक भी किया. गुप्त जी ने न केवल संस्कृत और हिंदी साहित्य का अध्ययन किया अपितु बंगाल के साहित्य को भी पढ़ा. साथ ही साथ उन्हें संगीत में भी रूचि रही. वे इन सबका श्रेय अपने बालसखा मुंशी अजमेरीजी को देते हैं. उन्होंने ही गुप्त जी को कविता लिखने की प्रेरणा दी थी.

8.4 पुरस्कार एवं सम्मान

सब के बीच दद्दा के नाम से प्रसिद्ध गुप्त जी को गांधीजी ने मैथिली काव्य मान ग्रंथ भेंट करते हुए राष्ट्रकवि की उपाधि प्रदान की थी.

- 1936 में साकेत पर हिन्दुस्तानी एकेडमी पुरस्कार प्रदान किया गया था.
- 1938 में मंगलाप्रसाद पारितोषिक
- 1946 हिंदी साहित्य सम्मेलन ने उन्हें साहित्य वाचस्पति की उपाधि दी.
- 1948 में आगरा विश्वविद्यालय ने डी. लिट्.की मानद उपाधि से नवाजा गया.
- 1960 में काशी विश्वविद्यालय द्वारा डी. लिट् की मानद उपाधि प्रदान की गयी.
- 1952 में राज्यसभा के सदस्य मनोनीत हुए.
- 1954 में पद्म भूषण अलंकार से विभूषित किया गया.
- 1960 में राष्ट्रपति श्री राजेंद्र प्रसाद ने अभिनन्दन ग्रंथ भेंट किया.

- 1964 में डॉ. राधाकृष्णन ने एक भव्य समारोह में संसद सदस्य के रूप में उनका कार्यकाल समाप्त होने पर भावभीनी विदाई दी.
- मध्य प्रदेश के संस्कृति राज्यमंत्री श्री लक्ष्मीकान्त शर्मा ने 3 अगस्त को प्रतिवर्ष गुप्त जी की जयंती को कवि दिवस के रूप में मनाने की घोषणा की है.

8.5 साहित्य साधना

गुप्त जी 50 वर्षों तक लगातार साहित्य साधना में लगे रहे. उनकी छोटी और बड़ी, मौलिक और अनूदित रचनाओं की संख्या लगभग 40 के उपर पहुँचती है. उनके प्रमुख ग्रंथ निम्नवत है –

- **प्रबंध काव्य**

महाकाव्य अथवा वृहत प्रबंध काव्य

साकेत (1931)- इसमें 12 सर्ग है. डॉ नगेंद्र ने इसे 'जनवादी काव्य' कहा है.

जयभारत (1952)

खण्ड काव्य

रंग में भंग (1909), उर्मिला (1906-09), जयद्रथ वध (1910), शकुंतला (1914), किसान (1916), पंचवटी (1925), सैरंध्री (1926), वक संहार (1927) ,वन वैभव (1927), शक्ति (1927), यशोधरा (1932), द्वापर (1936) सिद्धराज (1936), नहुष (1940), कुणालगीत (1941), कर्बला (1942), अजित (1946), हिडिम्बा (1950), विष्णुप्रिया (1957), रत्नावली (1960)

- **कथाश्रित निबन्ध**

पत्रावली (1916), विकट भट (1928), गुरुकुल (1928), अर्जन और विसर्जन (1942), काबा (1942), प्रदक्षिणा (1950), युद्ध (1950), कवि श्री (1955).

प्रमुख निबन्ध काव्य

भारत भारती (1912)- राष्ट्रीय चेतना का काव्य. इसी के कारण गुप्त जी को राष्ट्रकवि के रूप में प्रसिद्ध हुए.

हिन्दू (1927), राजा-प्रजा (1956), विजय पर्व (1963)

- **प्रमुख मुक्तक एवं विविध कविताएँ**

पद्य-प्रबंध (1912), मंगल घट (1937) आदि.

प्रमुख गीतिकाव्य

वैतालिक (1916), स्वदेश संगीत (1925), झंकार (1927), विश्व वेदना (1942),

अंजलि और अर्घ्य (1942), भूमिभाग (1953), उच्छवास (1960).

- **प्रमुख नाटक**

पद्य नाटक

दिवोदास (1950), पृथ्वी पुत्र (1914), लीला (1960)

छोटे पद्यबद्ध रूपक

तिलोत्तमा(1915), चन्द्रहास (1916), अनध (1925)

- **अनुवाद**

संस्कृत से अनूदित

स्वप्न वासवदत्ता, गीतामृत, दूत घटोत्कच, प्रतिमा, चारुदत्त आदि.

बंगला से अनूदित

विरहणी ब्रजांगना, प्लासी का युद्ध, वृत्र संहार, वीरांगना, मेघनाद वध आदि.

अन्य अनूदित रचनाएँ

रुबाईयत, उमर खैयाम, गृहस्थ गीता, साधना आदि.

- **अन्य संग्रह**

कविता-कलाप

8.6 गुप्तजी की काव्य - संवेदना

1. भारतीय संस्कृति के आख्याता कवि –

गुप्तजी उस सांस्कृतिक काव्यधारा के कवि हैं जिसके एक तरफ हिन्दू पुनरुत्थानवादी भावना है और दूसरी तरफ विविध धर्मों और संस्कृतियों के समन्वय की अवधारणा. भारतीय एवं पाश्चात्य संस्कृति के समन्वय पर बल देते हुए, वे कहते हैं -

उनकी-सी साधना रहे, अपनी आराधना रहे,
उनका अथक परिश्रम हो, पर उसमें अपना क्रम हो.
उनका प्रेय-श्रेय अपना, उनका ज्ञेय ध्येय अपना,
उनकी जाति, पद्धति अपनी, उनकी उन्नति, मति अपनी.

(वैतालिक)

पुरुषार्थ, कर्मनिष्ठा और परिश्रम पर बल देते हुए कहते हैं –

जाओ अपने राम राज्य की आन बढाओ,
वीर वंश की बान, देश का मान बढाओ.

वे अपने युग और उसकी समस्याओं के प्रति अति संवेदनशील रहे हैं. उन्होंने त्याग, योग, भक्ति, मुक्ति, धर्म, राजनीति, प्रवृत्ति, निवृत्ति, भावुकता, कर्त्तव्य-परायणता, कर्म, तपस्या, राष्ट्रप्रेम, विश्व-बन्धुत्व आदि के समन्वय पर भी बल दिया.

2. राष्ट्रीयता की भावना

गुप्तजी के राष्ट्रवाद सम्बन्धी चिंतन में बौद्धिक ऊहा-पोह और तर्क-वितर्क के लिए अवकाश नहीं हैं. वहाँ राष्ट्रीय उत्थान और लोक कल्याण का सहज भाव है. उनकी राष्ट्रीय भावना विशुद्ध राजनीतिक न होकर संस्कृति पर आधृत हैं. वे कहते हैं -

करते अभिषेक पयोद है, बलिहारी इस देश की,
है मातृभूमि, तू सत्य ही सगुण मूर्ति सर्वेश की.

जन-जन में स्वातन्त्र्य कामना उत्पन्न करने हेतु संदेश देते हुए कहा कि-

शासन किसी परजाति का चाहे विवेक विशिष्ट हो,
सम्भव नहीं है किन्तु जो सर्वांश में वह इष्ट हो.

3. नारी भावना

गुप्तजी की दृष्टि में नारी प्रेम, त्याग, सहिष्णु, धैर्य, उदारता, स्वाभिमान, कर्मण्य, कर्त्तव्यनिष्ठता आदि गुणों के कारण महान तथा पुरुष से अधिक गौरवशाली है. अधिकांश स्थलों पर उन्होंने नारी का करुण दृश्य भी चित्रित किया है-

अबला जीवन, हाय तुम्हारी यही कहानी,
आँचल में है दूध और आँखों में पानी.

नारी के प्रति अनुदार दृष्टि भी गुप्तजी को असह्य है, वे कहते हैं-

नर के बाँटे, क्या नारी की नग्न मूर्ति ही आई,
माँ, बेटी या बहिन हाय, क्या संग नहीं वह लाई.

(द्वापर)

4. भक्ति भावना

कवि की भक्ति का मूल आधार वैष्णव भक्ति हैं. उनको 20 वीं सदी का तुलसी, रामभक्ति का गायक और परम वैष्णव कहा जाता है. नाम स्मरण में भी उनकी अगाध आस्था है-

जो नाम मात्र ही स्मरण महीप करेंगे,
वे भी भवसागर बिना प्रयास तरेंगे .

भक्तिकालीन कवियों की भाँति काम, क्रोध, मद, मोह को भक्ति मार्ग में बाधा का स्वरूप मानते हुए कहते हैं-

क्योंकर हो, मेरे मन मानिक की रक्षा ओह,
मार्ग के लुटेरे- काम, क्रोध, मद, लोभ, मोह.

5. मानवतावादी दृष्टिकोण

गुप्त जी के काव्य पर मानवतावादी विचारधारा का गहरा प्रभाव दिखाई पड़ता है. जिसमें मनुष्य को स्वावलम्बी बनने और विकास मार्ग पर चलने की प्रेरणा देते हुए वे कहते हैं-

यौवन तो ऊष्ण ही हैं, ठंडी मृत्यु ज्यों जरा,
पौरुष लगे तो करे मरु भी हरा-भरा

उसके कुल, वर्ण आदि का परिचय मांगकर अपमानित करने का जब प्रयास किया जाता है, तब कर्ण कहता है-

मैं मनुष्य हूँ और वर्ण सब देख रहे हैं,
पूछो उनसे लोग मुझे क्या लेख रहे हैं.

(जय भारत)

जातिवाद का विरोध करते हुए मनुष्यत्व की श्रेष्ठता को व्यक्त करते हुए कहते हैं-

हिन्दू हो या मुसलमान हो नीच रहेगा फिर भी नीच,
मनुष्यत्व सबसे ऊपर हैं मान्य महीमंडल के बीच.

(गुरुकुल)

8.7 शिल्प विधान

उन्होंने भाषा, रस, छंद, अलंकार, प्रगीत आदि के साथ अनेक काव्य रूपों का प्रयोग किया. जिसकी संक्षिप्त जानकारी निम्नलिखित है-

1. भाषा और शब्द विधान

द्विवेदी युग में काव्य के लिए प्रचलित ब्रज भाषा के स्थान पर खड़ी बोली खुद को स्थापित करने के लिए स्थान तलाश रही थी. स्वयं गुप्तजी ने ब्रज भाषा से ही पद्य रचना की शुरुआत की थी. वे 'रसिकेन्द्र' उपनाम से लिखा करते थे. उस समय द्विवेदीजी ने इस सन्दर्भ में लिखा "अब रसिकेन्द्र बनने का जमाना गया." द्विवेदीजी को गुरु मानकर उन्हें प्रसाद रूप में स्वीकारा और मुक्त कंठ से उनका आभार व्यक्त किया -

करते तुलसीदास भी कैसे मानस का नाद
महावीर का यदि उन्हें मिलता नहीं प्रसाद.

खड़ीबोली में रचित जयद्रथ वध और भारत भारती की लोकप्रियता ने भाषा सौन्दर्य, कोमलता, अभिव्यंजना क्षमता जैसे प्रश्नों के जवाब स्वत: ही दे दिए.

गुप्तजी ने खड़ीबोली को सशक्त बनाने के लिए मुहावरों-लोकोक्तियों, संवाद योजना, तत्सम-तद्‌भव शब्दावली, सामासिक पदों का भी प्रयोग किया है. उनके कुछ उदाहरण अग्र लिखित हैं-

संवाद योजना

सखि, विहग उडा दे, हों सभी मुक्तिमानी,
सुन शठ शुक-वाणी- हाय! रूठो न राणी.

लाक्षणिक और प्रतीकात्मक प्रयोग

जीवन के पहले प्रभात में आँख खुली जब मेरी
हरी भूमि के पात-पात में मैंने हृदयगति फेरी.

यहाँ जीवन के पहले प्रभात का प्रयोग 'बचपन', आँख खुली का प्रयोग 'होश सम्भालने', हरी भूमि के पात पात का प्रयोग 'सृष्टि की वैभव सम्पन्नता' के लिए हुआ है.

चित्रोपमता

ज्यों ही अश्रु चिता पर आया,
उग अंकुर पत्तों से छाया,
फूल वहीं वदनाकृति लाया,
लिपटी लतिका फूली.
लाना-लाना सखि तूली.

यहाँ विरहणी की चिता की भस्म पर विरही प्रेमी के अश्रु का गिरना, अंकुर उठाना, उसमें पत्ते आना और एक फूल का भी निकल आना चित्रित किया है, उस फूल में विरही को अपनी प्रिया झाँकती हुई दर्शाई गयी है.

लोकोक्ति और मुहावरों का प्रयोग

मुहावरों एवं लोकोक्तियों के प्रयोग से गुप्तजी ने भाषा को सजीव, लाक्षणिक और मार्मिक बना दिया है.

1. संकट में अब मुँह फेरूँ.
2. वज्र-सा पहाड़ अचानक टूटा.
3. भय खाऊँ, आँसूं पियूँ, मन मारूँ झख मार.
4. साँच को किस ओर आँच हैं.
5. किसने सोता हुआ यहाँ का सर्प जगाया.
6. ले, तेरे कंटक टले अभी.
7. गुड- गोबर-सा लगे स्वयं ही जी से.

स्वर मैत्री

स्वरों की एकता, समता एवं वर्णन साम्य को स्वर मैत्री कहते हैं.

सखी नील नभस्सर में उतरा,
यह हंस अहा ! तरता-तरता.
अब तारक मौक्तिक शेष नहीं,
निकला उनको चरता-चरता .

काली कोयल बोली-
होली, होली, होली
हँसकर लाल-लाल होठों पर हरियाली हिल डोली.

व्यंजन मैत्री

एक-से व्यंजनों का विधान, व्यंजन मैत्री हैं. यह कविता को कर्ण प्रिय बना देता है —
डलडल- डलडल चंचल-अंचल झलमल झलमल तारा.

संस्कृतनिष्ठ शब्दों का प्रयोग

गुप्त जी संस्कृत के भी ज्ञाता थे. उसका प्रभाव भी उनके साहित्य में देखने को मिलता है-
गात्र, पितुराज्ञा, रघुनन्दनानुज, त्वेष, कीर्ण, जिष्णु, निषादी, उर्वी, मीनक्रम, व्रज्याव्रत आदि.

देशज शब्दों का प्रयोग

मचिया, घाते, घुरक, अवद्यक, चिहुँक, दिठल्ली, निगोड़ी आदि अनेक शब्द गुप्तजी के काव्य में मिलते हैं.

अप्रचलित नवीन शब्दों का प्रयोग

आरून्य, प्रतिपात, उत्कर्णता, अपाप, रीतता, प्रमाणी उत्क्रान्ति जैसे शब्दों का प्रयोग.

रस योजना

हृदय से संवेदनशील होने के कारण उन्होंने जीवन की विभिन्न स्थितियों, परिस्थितियों के मार्मिक प्रसंगों को अपने प्रबंधों में जगह दी. गुप्त जी के श्रृंगार रस चित्रण ने तो रीतिकालीन श्रृंगार रस की अवधारणा को ही बदलकर रख दिया. साकेत के प्रथम सर्ग में लक्ष्मण-उर्मिला और आठवें सर्ग में राम-सीता के मधुर हास्य-विनोद की झलक-

जा, मलयानिल लौट जा, यहाँ अवधि का शाप,
लगे लू होकर कहीं तू अपने को आप.

हास्य की एक रेखा खींचते हुए भाभी सीता लक्ष्मण-शूर्पणखा के लिए कहती हैं कि-

देवर, तुम कैसे निर्दय हो, घर आये जन का अपमान;
किसके पर नर तुम, उसके जो चाहे तुमको प्राण समान.

छंद विधान

गुप्तजी के हृदय में छंद के प्रति अनुराग अपनी काव्य-यात्रा के शुरुआती दौर में ही हो गया था. उनकी छंद योजना विविधता लिए हुए हैं.

'जय भारत' में 25 छंदों का, साकेत के नवम सर्ग में 50 से अधिक छंदों का प्रयोग हुआ है. कुछ उदाहरण दृष्टव्य हैं-

मधुमालती छंद

जय देव मंदिर,देहली
समभाव से जिस पर चढ़ी.
(साकेत)

पीयूषवर्णी छंद

जागरण है स्वप्न से अच्छा कहीं
प्रेम में कुछ भी बुरा होता नहीं
प्रेम की यह रूचि विचित्र सराहिए
योग्यता क्या कुछ न होनी चाहिए
(साकेत)

अहीर छंद

यह कैसा अन्याय
पर है कौन उपाय?
त्यागो बस यह राज्य
सचमुच है यह त्याज्य
(अनघ)

अलंकार योजना

गुप्तजी के काव्य में अलंकारों का भी प्रयोग देखने को मिलता है. काव्य में प्रयुक्त प्रमुख अलंकारों के उदाहरण निम्नवत हैं-

स्वामी सहित सीता ने
नंदन माना सघन-गहन कानन भी.

(अनुप्रास)

चित्र भी था चित्र और विचित्र भी,
रह गये चित्र रूप से सौमित्र भी.

(यमक)

मानस-मंदिर में सती,पति की प्रतिमा थाप.

(रूपक)

उर्मिला के नेत्र खंजन से फँसे.

(उपमा)

तुम्हारे हँसने में है फूल-मोती.

(उत्प्रेक्षा)

ले लेकर यह अन्तरिक्ष सखि, आज बना है दानी.

(मानवीकरण)

प्रगीत तत्व

उनका प्रगीत शिल्प प्रत्यक्ष सौन्दर्य-चित्रण पर आधारित हैं। उनमें कथाश्रित गीत भी हैं तो आत्माभिव्यंजक भी, कहीं वस्तुनिष्ठता का प्राधान्य है तो कहीं भक्ति भावना का. इसके अतिरिक्त उद्बोधनात्मक, आत्मसंलापात्मक शोकगीत आदि गीतों की रचना भी की हैं.

उद्बोधन गीत

फिर अपने को याद करो,
उठो, अलौकिक भाव भरो.
अपना धैर्य्य-धर्म्म पालो
मोहावरण हटा डालो.

(वैतालिक)

आत्माभिव्यक्ति

वह बाल-बोध था मेरा
निराकार निर्लेप भान में भान हुआ जब तेरा.

(झंकार)

काव्य रूप

काव्यरूप की दृष्टी से गुप्तजी की रचनाओं को निम्न प्रकार से वर्गीकृत किया जा सकता हैं-

खण्डकाव्य

महाकाव्य

गीति काव्य

नाट्य कृतियाँ

अनुवाद आदि.

(उदाहरण हेतु कृतियों के नाम के लिए साहित्य-साधना वाला बिंदु देखें)

बोध प्रश्न

निम्नलिखित में से जो सही हैं, उन पर (✓) का निशान लगाइए.

1. चेतना से ओत-प्रोत गुप्त जी का ग्रंथ है-

   I. रंग में भंग
   II. जयद्रथ वध
   III. जय भारत
   IV. भारत भारती

2. **निम्न में से कौन- कौनसे ग्रंथ खण्ड काव्य हैं उन पर (✓) का निशान लगाइए.**

   I. वैतालिक
   II. नहुष
   III. विजय पर्व
   IV. भारत-भारती
   V. कर्बला
   VI. जय भारत
   VII. रंग में भंग
   VIII. किसान

रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिये.

1. स्वरों की एकता, समता एवं वर्णन साम्य को..........कहते हैं.
   (वर्ण मैत्री/ स्वर मैत्री)
2. मानस- मंदिर में सती पति की प्रतिमा थाप में..........अलंकार हैं.
   (रूपक/ उपमा/ उत्प्रेक्षा)
3. गुप्तजी को काव्य लिखने की प्रेरणा..........से मिली.
   (मुंशी अजमेरी/ हाली)
4. डॉ.नगेन्द्र ने..........को जनवादी काव्य कहा है।
   (पंचवटी/साकेत)
5. साकेत में कुल..........सर्ग है.
   (12/17)

निम्न में से जो सही है उसके आगे ✓ का निशान लगाइए.

1. भारत-भारती एक उद्बोधन गीत हैं.
2. गुप्तजी की रचनाओं में रूपगत वैविध्य कहीं नहीं हैं.
3. गुप्तजी ने नारी पात्रों का करूण चित्र चित्रित किया है.
4. गुप्तजी में धार्मिक संकीर्णता की भावना कूट-कूट कर भरी हुई थी.

8.8. नर हो न निराश करो मन को - काव्य पाठ, विश्लेषण

नर हो न निराश करो मन को
कुछ काम करो, कुछ काम करो
जग में रहकर कुछ नाम करो

यह जन्म हुआ किस अर्थ, अहो
समझो जिसमें यह व्यर्थ न हो
कुछ तो उपयुक्त करो तन को
नर हो न निराश करो मन को.

सम्भलो कि सुयोग न जाए चला
कब व्यर्थ हुआ सदुपाय भला
समझो जग को न निरा सपना
पथ आप प्रशस्त करो अपना
अखिलेश्वर है अवलम्बन को
नर हो न निराश करो मन को.

जब प्राप्त तुम्हें सब तत्व यहाँ
फिर जा सकता वह सत्व कहाँ
तुम स्वत्व सुधा रस पान करो
उठके अमरत्व विधान करो
दव रूप रहो भव कानन को
नर हो न निराश करो मन को.

निज गौरव का नित ज्ञान रहे
हम भी कुछ है यह ध्यान रहे
मरणोत्तर गुंजित गान रहे
सब जाये अभी पर मान रहे
कुछ हो न तजो निज साधन को

नर हो न निराश करो मन को.

प्रभु ने तुमको कर दान किये
सब वांछित वस्तु विधान किये
तुम प्राप्त करो उनको न, अहो
फिर है यह किसका दोष कहो
समझो न अलभ्य किसी धन को
नर हो न निराश करो मन को.

किस गौरव के तुम योग्य नहीं
कब कौन तुम्हें सुख भोग्य नहीं
जन हो तुम भी जगदीश्वर के
सब है जिसके अपने घर के
फिर दुर्लभ क्या उसके जन को
नर हो न निराश करो मन को.

करके विधि वाद न खेद करो
निज लक्ष्य निरंतर भेद करो
बनता बस उद्यम ही विधि है
मिलती जिससे सुख की निधि है
समझो धिक् निष्क्रिय जीवन को
नर हो न निराश करो मन को.
कुछ काम करो, कुछ काम करो.

विश्लेषण –

नर हो न निराश करो .... उपयुक्त करो तन को.

प्रसंग : नाकामयाबी, हताशा, क्रोध आदि भाव जब- जब मनुष्य के मन में घर कर जाते हैं तो योग्य से योग्य मनुष्य भी स्वयं को हारा हुआ सा मान लेता है और हताश होकर जीवन से भागने की टोह में लगा रहता है. ऐसे मनुष्य को अपने अंतर्मन में झाँकने तथा अपने स्वबल को पहचानने की बात करते हुए कवि कहता है कि

व्याख्या : हे मनुष्य! तुम अपने मन को निराश मत होने दो क्योंकि अगर तुम अपने मन से हार जाओगे तो संसार में कुछ नहीं कर पाओगे. अतः अपने आत्मबल को पहचान कर अपने आप को कर्म की ओर अग्रसर करो. यह मनुष्य जन्म बार बार नहीं मिलता इसलिए तुम इसे व्यर्थ गँवाने की बजाय दुःख एवं निराशा को त्याग कर दृढ़ संकल्प लेकर निरंतर प्रयास करते रहो. चाहे कैसी भी परिस्थिति क्यों न हो.

विशेष : 1. जीवन की सार्थकता को बताने का प्रयास किया हैं.
2. निराश न होकर स्वबल से आगे बढने की ओर संकेत किया है।

3. सहज, सरल खड़ीबोली भाषा

सम्भलो कि सुयोग.........अखिलेश्वर है अवलंबन को.

प्रसंग : मनुष्य को सचेत एवं अवसर को झडप लेने की बात करते हुए कवि कहना चाहता है कि

व्याख्या : हे मनुष्य! यह संसार केवल सपना नहीं है न ही तुम इसे सपना समझो. यह यथार्थ है यही सत्य हैं. अत: इस अवसर को हाथ से जाने मत देना तुम आगे बढने के लिए जो श्रम कर सकते हो करते रहो, तुम्हारी मेहनत व्यर्थ नहीं जायेगी देर-सवेर उसका सकारात्मक परिणाम मिलेगा ही, इसलिए हमेशा आगे बढ़ने हेतु प्रयत्न करते रहो क्योंकि ईश्वर भी उसी की सहाय करता है जो निरंतर प्रयास करते रहते हों.

विशेष: 1. मेहनत कभी व्यर्थ नहीं जाती तथा ईश्वर भी सदा मेहनत करने वालों का साथ देता है.

2. भाषा सहज, सरल खड़ी बोली.

जब प्राप्त तुम्हें .... भव कानन को.

प्रसंग : निरंतर आगे बढ़ते रहने की प्रेरणा का संदेश देते हुए कवि कहता है कि-

व्याख्या : हे मनुष्य! इस संसार में आगे बढने के लिए हर राह खुली हुई है, इस संसार के मूल का भी तुम्हें ज्ञान हैं, सारे साधन और शक्ति तुम्हारे पास हैं आप उसका उपयोग करना भी जानते हो. इसलिए हे मनुष्य! उठो, तुम अपने आत्मबल से उनका दोहन करो. जंगल रूपी इस संसार में दावाग्नि की तरह बढ़े चलो और सफलता रूपी अमृतरस का पान करो.

विशेष : 1. कवि अपने आत्मबल को पहचानकर लक्ष्य प्राप्ति की ओर बढने का संकेत देते हुए.

2. रूपक अलंकार

3. भाषा सहज सरल खड़ी बोली.

निज गौरव का निज ....निज साधन को.

प्रसंग : प्रस्तुत पद्यांश में कवि मनुष्य को स्वयं के मान- सम्मान की रक्षा करने के प्रति जागरूक करने की बात करते हुए कहते हैं कि-

व्याख्या : मनुष्य को हमेशा अपने कर्त्तव्य को ध्यान में रखना चाहिए. उसे अपने जीवन में ऐसे कर्म करने चाहिए कि मरने के बाद भी उसकी स्मृति बनी रहे. कवि इंगित करते हुए कहते हैं कि चाहे सब कुछ खत्म हो जाए, तुम निराश मत होना; डटकर हर स्थिति का सामना करना और अपने कर्तव्यों, जीवन मूल्यों से किसी भी परिस्थिति में विमुख मत होना. क्योंकि एक बार यदि मान सम्मान खो गया तो जीवित रहने का भी कोई अस्तित्व शेष नहीं रहेगा.

विशेष : 1. मरकर भी अमर हो जाए ऐसे कर्म की ओर संकेत.

2. भाषा में सरलता एवं सहजता

प्रभु ने तुमको कर ....अलभ्य किसी धन को.

प्रसंग : ईश्वर ने जो कुछ इस संसार में निर्मित किया है सब प्राप्त किया जा सकता है परन्तु इसके लिए कवि कहता है कि

व्याख्या : हे मनुष्य! ईश्वर ने सभी मनुष्यों को दो-दो हाथ दिए हैं तथा जीवन को सुचारू रूप से चलाने के लिए सारे वांछित वस्तु विधान प्रदान किये हैं. अब तुम्हीं उन्हें प्राप्त करने के लिए मेहनत न करो तो बताओ इसमें दोष किसका? हे मनुष्य, इस संसार में उचित कर्म एवं श्रम करने वालों के लिए कुछ भी प्राप्त करना असम्भव नहीं हैं.

विशेष : 1. संसार में कुछ भी असम्भव नहीं हैं जरूरत हैं तो मेहनत की इस बात की ओर कवि ध्यान आकृष्ट करते हैं.

2. भाषा सरल सहज खड़ीबोली.

किस गौरव के तुम ....उसके जन को.

प्रसंग : इस संसार में कुछ भी असम्भव नहीं हैं, इस बात को समझाते हुए कवि कहता है कि-

व्याख्या : ऐसा कोई यश या गौरव नहीं हैं जिसे मनुष्य प्राप्त नहीं कर सकता. न ही ऐसा कोई सुख या ऐश्वर्य है जिसका तुम भोग नहीं कर सकते. इस संसार में कुछ भी असम्भव नहीं हैं. तुम भी उस परमसत्ता की सन्तान हो इसलिए तुम्हारे लिए ये सब हासिल करना जरा भी दुर्लभ नहीं हैं बस तुम निराशा और हताशा को छोड़कर कर्तव्य पथ पर आगे बढो.

विशेष : 1. हम सब ईश्वर की संतान हैं. अत: हमारे लिए कुछ भी प्राप्त करना कठिन नहीं हैं.

करके विधि वाद.........कुछ काम करो.

प्रसंग : भाग्य के भरोसे छोड़ने और किस्मत को कोसने से बढ़कर कर्म को महत्व देते हुए कवि कहता है कि

व्याख्या : प्रस्तुत पद्यांश में कवि कहते हैं कि विधि अर्थात् भाग्य को दोष देकर उसे कोसने से अच्छा है अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए निरंतर कोशिश करते रहो. परिश्रम करने वालों को ही सच्चे सुख की प्राप्ति होती हैं, कहते हैं न कि किस्मत भी उसी का साथ देती है जो मेहनत करता है 'कर्म तेरे अच्छे हैं तो किस्मत तेरी दासी हैं.' जो कर्म नहीं करते उनका जीवन किसी काम का नहीं है ऐसे जीवन को कवि धिक्कार के योग्य मानते हैं। अत: अपने मन से निराशा की भावना को त्याग कर दृढ़ निश्चय एवं पूर्ण आत्म विश्वास के साथ कर्म-पथ पर आगे बढ़ो.

विशेष : 1. यहाँ कवि ने कर्म की महत्ता पर बल दिया है.

2. जो कर्म करने में आलस्य या बहाने करते हैं; ऐसे लोगों के जीवन को कवि ने व्यर्थ माना है.

3. भाषा सरल सहज खड़ीबोली.

बोध प्रश्न

1. 'नर हो न निराश करो मन को' कविता के माध्यम से कवि मनुष्य को क्या कहना चाहता है?
2. किस तरह के कर्म की ओर कवि ने संकेत किया है?
3. 'करके विधि वाद न खेद करो' पद्यांश का भावार्थ अपने शब्दों में लिखिए.

8.9 चारु चन्द्र की चंचल किरणें - काव्य पाठ, विश्लेषण

चारू चन्द्र की चंचल किरणें, खेल रही हैं जल-थल नभ में
स्वच्छ चाँदनी बिछी हुई है अवनि और अम्बरतल में
पुलक प्रकट करती है धरती हरित तृणों की नोकों से
मानो झीम रहे हैं तरु भी मंद पवन के झोंको से ॥१॥

पंचवटी की छाया में है सुंदर पर्ण- कुटीर बना
उसके सम्मुख स्वच्छ शिला पर धीर वीर निर्भिकमना
जाग रहा यह कौन धनुर्धर जब कि भुवन भर सोता है

भोगी कुसुमायुध योगी-सा बना दृष्टिगत होता है। ॥२॥

किस व्रत में है व्रती वीर यह निद्रा का यों त्याग किये
राजभोग्य के योग्य विपिन में बैठा आज विराग लिये
बना हुआ है प्रहरी जिसका उस कुटीर में क्या धन हैं
जिसकी रक्षा में रत इसका तन है, मन है, जीवन है। ॥३॥

मर्त्यलोक —मालिन्य मेटने स्वामी संग जो आई हैं।
तीन लोक की लक्ष्मी ने यह कुटी आज अपनाई है।
वीर- वंश की लाज यही हैं, फिर क्यों वीर न हो प्रहरी?
विजन देश है, निशा शेष है, निशाचरी माया ठहरी! ॥४॥

कोई पास न रहने पर भी जन-मन मौन नहीं रहता
आप आपकी सुनता हैं वह आप आपसे हैं कहता.
बीच- बीच में इधर-उधर निज दृष्टि डालकर मोदमयी,
मन ही मन बातें करता है धीर धनुर्धर नई-नई ॥५॥

क्या ही स्वच्छ चाँदनी है यह, है क्या ही निस्तब्ध निशा
है स्वच्छ-सुमंद गन्धवह, निरानंद है कौन दिशा ?
बंद नहीं, अब भी चलते है, नियति-नटी के कार्य-कलाप
पर कितने एकांत भाव से, कितने शांत और चुपचाप.॥६॥

हैं बिखेर देती वसुंधरा मोती, सबके सोने पर,
रवि बटोर लेता है उनको सदा सवेरा होने पर.
और विरामदायिनी अपनी, संध्या को दे जाता है
शून्य श्याम-तनु जिससे उसका, नया रूप झलकता है। ॥७॥

सरल तरल जिन तुहिन कणों से, हँसती हर्षित होती है,
अति आत्मीया प्रकृति हमारे, साथ उन्हीं से रोती है।
अनजानी भूलों पर भी वह, अदय दंड तो देती है,
पर बूढों को भी बच्चों-सा, सदय भाव से सेती है ॥८॥

विश्लेषण -

1. चारु चन्द्र की चंचल ....झोंको से.

प्रसंग : प्रस्तुत पद्यांश गुप्तजी द्वारा रचित 'पंचवटी' नामक खण्ड-काव्य से उद्‌धृत हैं जिसमें वनवास के दौरान प्रभु श्री राम, पत्नी सीता और भाई लक्ष्मण के साथ पंचवटी नामक जगह

पर पर्णकुटी बनाकर रहते हैं और रात्रि के समय पिता तुल्य भ्राता राम व माता सीता के सोने के पश्चात लक्ष्मण सजग प्रहरी की भाँति पहरेदारी करते हैं. उस समय लक्ष्मण की स्थिति और पंचवटी के प्राकृतिक सौन्दर्य का सुंदर सजीव चित्रण करते हुए कवि कहते हैं कि-

व्याख्या : सुंदर चन्द्रमा की किरणें जल और थल में फैली हुई हैं. पृथ्वी और आकाश में स्वच्छ चाँदनी बिछी हुई हैं. हरी-हरी घास की नोकें ऐसी लग रही हैं मानो धरती के सुख से वे रोमांचित हो रही हो. पेड़ भी मंद-मंद हवा के झोंको से झूमते/ लहराते हुए दिखाई पड रहे थे.

विशेष : 1. कवि ने चाँदनी रात का बड़ा ही सुंदर चित्रण किया है.

2. खड़ीबोली भाषा का प्रयोग

3. अनुप्रास, उत्प्रेक्षा एवं मानवीकरण अलंकार

4. माधुर्य गुण

2. पंचवटी की छाया .... दृष्टिगत होता हैं.

प्रसंग : रात्रि के समय प्रहरी के रूप में लक्ष्मण का सुंदर का चित्रण करते हुए कवि कहते हैं कि

व्याख्या : पंचवटी की घनी छाया में बड़ी ही सुंदर पत्तों की कुटिया बनी हुई हैं. उस कुटिया के सामने स्वच्छ एवं विशाल पत्थर पर धैर्य को धारण करने वाला, वीर एवं निडर पुरुष बैठा हुआ है. जब सारा संसार सो रहा है तब यह कौन धनुषधारी है जो इस समय भी जाग रहा है. यह वीर पुरुष ऐसा दिखाई दे रहा है। जैसे भोग करने वाला कामदेव स्वयं योगी बनकर आ बैठा हो.

विशेष : 1. खड़ीबोली भाषा का प्रयोग

2. अनुप्रास और उपमा अलंकार का सुंदर प्रयोग.

3. शांत रस, प्रसाद गुण

3. किस व्रत में ....मन है, जीवन है।

प्रसंग : इस पद्यांश में पंचवटी में राम और सीता की कुटिया पर पहरा दे रहे लक्ष्मण की विशेषताओं का चित्रण करते हुए कवि कहते हैं कि -

व्याख्या : इस वीर पुरुष ने यह कौनसा व्रत धारण कर रखा है, जिसके कारण उसने निंद्रा का इस प्रकार त्याग कर दिया है, यह पुरुष तो राजसुख भोगने योग्य है या राजसुख भोगने का अधिकारी है पर ऐसा कौनसा कारण है जिसके कारण यह इस वन में वैराग्य लेकर बैठा है. न जाने इस कुटिया में ऐसा कौनसा अमूल्य धन है जिसकी रक्षा में इसने अपना तन, मन और जीवन अर्थात सर्वस्व न्यौछावर कर दिया है.

विशेष : 1. निर्भीक और कर्तव्यनिष्ठ प्रहरी के रूप में लक्ष्मण का सजीव चित्रण किया हैं.

2. अनुप्रास अलंकार, अद्‌भुत रस.

4. मर्त्यलोक- मालिन्य ......माया ठहरी.

प्रसंग : लक्ष्मण जिस अमूल्य निधि की उस विजन प्रदेश में रात्रि के समय बड़ी ही सजगता एवं एकाग्र मन के साथ पहरेदारी करते हैं, उस अमूल्य निधि की महानता का वर्णन करते हुए कवि कहते हैं कि

व्याख्या : इस मृत्यु लोक की बुराइयों को दूर करने के लिए वो अपने पति श्री राम के साथ यहाँ आई हैं. तीनों लोक की लक्ष्मी स्वरूपा माता सीता ने यह कुटिया अपनाई है अर्थात् माता सीता अपने पति के साथ पंचवटी की इस कुटिया में विराजमान है वे वीर कुल की प्रतिष्ठा है फिर लक्ष्मण जैसा वीर प्रहरी उनकी पहरेदारी क्यों न करें. यह ऐसा विजन वन है ज हाँ रात्रि के समय राक्षस लोग घुमते रहते हैं अभी तो रात्रि भी काफी शेष है इस निर्जन

वन में राक्षसों की माया से बचने के लिए लक्ष्मण जैसा वीर सजग प्रहरी ही उपयुक्त हैं.

विशेष : 1. अनुप्रास. रूपक अलंकारों का प्रयोग,

5. कोई पास न रहने पर .... नई-नई-.

प्रसंग : उस विजन वन की रात्रि में लक्ष्मण के अतिरिक्त कोई नहीं जाग रहा. लक्ष्मण के मन में चल रहे अनेक विचारों के गुम्फन को कवि उकेरने का सुंदर प्रयास करते हुए कवि कहता है कि-

व्याख्या : मनुष्य के पास चाहे कोई न हो वह तब भी मौन नहीं रहता. अकेला होने पर भी वह मन ही मन अपने आप से बातें करता रहता है, कभी कुछ कहता है कभी कुछ सुनता है. कभी अपनी प्रसन्न दृष्टि से बीच-बीच में इधर उधर देखता है. मन ही मन कितनी ही नई नई बातें करता हुआ यह धीर वीर धनुर्धर विजन वन में पहरेदारी कर रहा है.

विशेष : 1. न केवल लक्ष्मण की अपितु मानव मन की स्थिति का सुंदर चित्रण

2. शांत रस

3. अनुप्रास अलंकार.

6. क्या ही स्वच्छ चाँदनी........और चुपचाप.

प्रसंग : प्रस्तुत पद्यांश में कवि ने विजन वन में रात्रि के समय निरंतर, अथक चलती रहने वाली प्रकृति के क्रियाकलापों का चित्र उकेरने का प्रयास किया है, पंचवटी में दूर तक फैली हुई चाँदनी का वर्णन करते हुए कहते हैं कि-

व्याख्या : सन्नाटे से भरी हुई शांत रात्रि में चाँदनी स्वच्छ एवं निर्मल प्रतीत हो रही हैं, ऐसे नीरव विजन वन में सुगन्धित वायु स्वच्छन्द गति से बड़ी ही धीरे-धीरे प्रवाहित हो रही हैं कवि पूछता है कि ऐसे में सभी दिशाओं में आनंद ही आनंद क्यों न व्याप्त हो. ऐसे समय में भी नियति रूपी नटी अपने सारे कार्य-कलाप बड़ी ही शान्ति से संपन्न कर रही हैं. बिल्कुल एकांत भाव से अर्थात अकेले-अकेले शांत और चुप-चाप अपने कर्तव्यों का निर्वाह किये जा रही हैं.

विशेष : 1. नियति द्वारा निरंतर कार्य करते रहने का वर्णन करते हुए कवि मनुष्य को भी निरंतर कार्य करते रहने का संदेश देता है.

2. अनुप्रास, रूपक अलंकार,

3. शांत रस

7. हैं बिखेर देती .... झलकाता है।

प्रसंग : पंचवटी में माता सीता की रक्षा करते हुए लक्ष्मण रात्रि के समय की प्राकृतिक छटा का वर्णन करते हुए कहते हैं कि-

व्याख्या : प्रकृति सबके सो जाने के बाद आकाश में नक्षत्र (तारों) रूपी मोतियों को बिखेर देती हैं और सवेरा होते ही सूर्य सारे मोतियों को बटोरकर रख लेता है. बटोरे हुए मोतियों को संध्या रूपी सुन्दरी को देकर अपने लोक चला जाता है. इन नक्षत्रों रूपी मोतियों को धारण करके संध्या रूपी सुंदरी का सुंदर शून्य-सा श्यामल नवीन रूप झिलमिला उठता है.

विशेष : 1. प्रकृति का मानवीकरण रूप में चित्रण

2. रूपक अलंकार.

8. सरल तरल जिन ....सदय भाव से सेती हैं.

प्रसंग : पंचवटी में लक्ष्मण शिला पर बैठे-बैठे प्रकृति के मानव के प्रति व्यवहार के बारे में सोचते हुए कहते हुए हैं कि –

व्याख्या : कभी कभी प्रकृति ओस की बूंदों के माध्यम से बड़ी ही सहजता से हँसती हुई और प्रसन्न होती हुई दिखाई पड़ती हैं. कभी कभी उन्हीं ओस की बूंदों से अत्यंत आत्मीय भाव से हमारे दुखों में दुखी होकर रोती हुई प्रतीत होती हैं. कभी कभी वह इतनी निर्दय और निष्ठुर हो जाती है कि वह अनजाने में भी मनुष्य द्वारा की गयी भूलों के कारण कठोर दण्ड तक देती हैं. (भूकम्प, अतिवृष्टि, अनावृष्टि आदि). कभी प्रकृति इतनी दयालु हो जाती हैं कि बूढों की भी बच्चों की तरह दया भाव से सेवा करती प्रतीत होती हैं.

विशेष : 1. प्रकृति के शांत- अशांत दोनों रूपों का वर्णन.

2. प्रकृति का मानवीकरण रूप में चित्रण.

3. अनुप्रास अलंकार.

8.10 सार बिंदु

भारत-भारती के प्रकाशन के साथ ही देश में राष्ट्रीय जागरण की चेतना-प्रवाहित होने लगी, और इसने गुप्तजी की साहित्यिक छवि को स्पष्ट किया. अंग्रेजी गुप्तचर विभाग ने भारत-भारती का अर्थ 'जनाना हिंदुस्तान' समझा, परिणामस्वरूप यह जब्त होने से बच गयी. महावीर प्रसाद द्विवेदी ने भारत-भारती के लिए लिखा है कि ''यह काव्य वर्तमान साहित्य में युगांतर उपस्थित करने वाला है वर्तमान और भावी कवियों के लिए यह आदर्श का काम करेगा.'' उन्होंने साहित्य में मानवतावादी, नैतिक, सांस्कृतिक, राष्ट्रीय चेतना के अंकुर को स्फुरित किया. उनकी जीवन-दृष्टी व्यास, बुद्ध और गाँधी से प्रभावित थी. उनके समन्वयवादी विचारों ने द्विवेदीयुगीन काव्य-संस्कारों एवं छायावादी चिंताओं में सामंज स्यता के सूत्र प्रदान किए. गुप्तजी ने युगों से अभिशप्त नारी मन में स्वत्व (अपने अधिकारों) की भावना जगाने का भागीरथ श्रम किया.

उनकी भाषा-साधना भी सबसे विशिष्ट हैं-'बोलचाल की भाषा भी क्या कविता का कोई माध्यम है?' इस संदेह के उत्तर में अपनी भाषा तपस्या द्वारा खड़ी बोली को समवर्ती-परवर्ती समस्त कविता का एकमात्र माध्यम बना कर खडा कर दिया. भाषा में वर्ण संकरी प्रयोग के विरोधी थे इसलिए उन्होंने हिन्दी लिखी, हिन्दुस्तानी नहीं. कुमुद शर्माजी ने लिखा है कि भारतीयता के सन्देश वाहक, राष्ट्रीय जागरण के गायक, मानवता के उद्घोषक मैथिलीशरण गुप्त हिन्दी के गौरव हैं.

8.11 शब्दार्थ

चारू	-	सुंदर
अवनि	-	धरती
अम्बरतल	-	आकाश के नीचे
पुलक	-	आनंदमय, रोमांच
तृण	-	घास, तिनका
झीम	-	झूमना
पर्ण	-	पेड़ के पत्ते
कुटीर	-	झोंपड़ी
शिला	-	पत्थर
भुवन-भर	-	सारा संसार

कुसुमायुध	-	कामदेव
प्रहरी	-	पहरेदार
विपिन	-	वन
मर्त्य-लोक मालिन्य	-	मृत्यु लोक के पाप
निस्तब्ध	-	सन्नाटे से भरी, शांत
स्वच्छंद	-	स्वतंत्र
गन्धवह	-	सुगन्धित हवा, वायु
निरानंद	-	आनन्दरहित
नियति नटी	-	नियति रूपी नर्तकी
नियति	-	भाग्य
तुहिन	-	ओस, पाला
सेती हैं	-	रक्षा करती हैं
अदय	-	निर्दय.

8.12 परीक्षोपयोगी प्रश्नावली

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. गुप्त जी का जीवन- परिचय बताते हुए उनकी साहित्य-साधना पर प्रकाश डालिए.
2. गुप्त जी की काव्यगत विशेषताओं को सोदाहरण लिखिए.
3. 'चारू चन्द्र की चंचल किरणें' में प्राकृतिक सौन्दर्य का निरूपण कीजिए.

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. गुप्त जी के काव्य में निहित संवेदना को समझाइये.
2. गुप्त जी के काव्य की शिल्पगत विशेषताओं को लिखिए.
3. 'कोई पास न रहने पर भी' पद्यांश का भावार्थ समझाइये.

टिप्पणी लिखिए

1. गुप्त जी की काव्य भाषा और शब्द-विधान
2. 'नर हो न निराश करो मन को' कविता का मूल-भाव

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिये.

1. लक्ष्मण का चित्रण कवि ने ..... के रूप में किया है.
(श्रेष्ठ धनुर्धर/ श्रेष्ठ प्रहरी)
2. सरल तरल जिन <u>तुहिन कणों</u> से हँसती हर्षित होती हैं. रेखांकित शब्द का अर्थ ..... हैं.
(जल की बूँदें/ओस की बूँदें)
3. 'मानो झीम रहे हैं तरु भी' में .....अलंकार है।

(उपमा/ उत्प्रेक्षा)

4. गुप्त जी ब्रज भाषा में .... उपनाम से लिखते थे.

(रसिकेन्द्र/ अब्र)

8.13 संदर्भ सूची

1. हिंदी साहित्य का इतिहास – आचार्य रामचंद्र शुक्ल
2. मैथिलीशरण गुप्त प्रासंगिकता के अन्तः सूत्र – कृष्णदत्त पालीवाल
3. हिंदी के निर्माता – कुमुद शर्मा
4. kavitakosh.org

इकाई 9 : छायावाद : युग परिचय एवं प्रवृत्तियाँ

रूपरेखा

9.1 उद्देश्य

9.2 प्रस्तावना

9.3 छायावाद : युग परिचय

9.4 विभिन्न विद्वानों की परिभाषाएँ

9.5 छायावाद की प्रमुख प्रवृत्तियाँ

9.6 छायावाद के प्रमुख कवि

9.7 सार-बिंदु

9.8 परीक्षोपयोगी प्रश्नावली

9.9 संदर्भ-सूची

9.1 उद्देश्य

विधार्थी मित्रो! इस इकाई को पढ़ने के बाद आप-

- 'छायावाद' नाम से प्रचलित काव्य आंदोलन का परिचय प्राप्त कर सकेंगे.
- छायावादी काव्य का निर्माण करने वाली परिस्थितियों को जान सकेंगे.
- आधुनिक हिन्दी कविता के विकास में छायावाद की भूमिका की सही परख और पहचान प्राप्त कर पाएँगे.
- छायावाद की विषय-वस्तु और उसकी वैचारिक पृष्ठभूमि की समझ प्राप्त कर सकेंगे.
- छायावाद के प्रमुख चार स्तम्भ कवि - जयशंकर प्रसाद, सूर्यकांत त्रिपाठी निराला, सुमित्रानंदन पंत एवं महादेवी वर्मा - का परिचय तथा उनकी कविताओं का परिचय एवं, उनका अर्थबोध जानेंगे.

9.2 प्रस्तावना

आधुनिक हिन्दी कविता का द्वितीय युग द्विवेदीयुगीन कविता के नाम से जाना जाता है. द्विवेदीयुगीन काव्य के अंतिम चरण मे सन् 1916 के आसपास जिस नूतन-काव्यधारा का आविर्भाव हो रहा था उसे ही आगे चलकर 'छायावाद' की संज्ञा से अभिहित किया गया. द्विवेदीयुगीन कविता की वर्णनात्मक एवं उपदेशात्मक पद्धति ने कविता में एकरूपता पैदा कर दी थी. कविता अपने युग की समस्याओं का प्रतिबिंब मात्र बनकर रह गई थी. रचनाधर्मिता का वैशिष्ट्य कवि-कर्म से विलग होता जा रहा था. चिरंतन मानवीय मूल्य, भाषागत बारीक-व्यंजनाएँ तथा तराशे गए शब्दों में अर्थ की नई सभावनाएँ पैदा करने की इस जरूरत को पूरा करने का उद्देश्य 'छायावाद' ने चुना.

छायावादी काव्य ने स्वच्छंद भावनाओं, राष्ट्रीय स्वाधीनता और व्यक्ति-स्वातंत्र्य का स्वर तथा जन जागरण की विश्वव्यापी लहर को संवार कर प्रवाहमान बनाया. विषय, शिल्प आदि की नवीनता के कारण इस कविता की अलग पहचान बनी. इस कविता की सर्वप्रमुख विशिष्टता यह थी कि अधिकांशतः इसमें बाह्य अर्थ से भिन्न एक भीतरी सूक्ष्म-अर्थ की छाया की प्रतीति हो रही थी, इसीलिए इस कविता को 'छायावाद' नाम दिया गया और

यही देखते-देखते एक युग-प्रवृत्ति के रूप में स्थापित हो गया.

9.3 छायावाद : युग परिचय

सन् 1920 ई. के आसपास हिन्दी साहित्य में जिस नयी काव्यधारा का उद्‌भव हुआ, उसे 'छायावाद' के नाम से जाना जाता है. यह काव्यधारा द्विवेदीयुगीन काव्य-प्रवृत्तियों के रीतिवाद के विरुद्ध उठ खड़ी हुई थी. उसके रीतिवाद में नीरस उपदेशात्मकता, इतिवृत्तात्मकता और स्थूल आदर्शात्मकता थी.

आधुनिक हिन्दी-साहित्य में छायावाद का महत्त्वपूर्ण स्थान है. रीतिकालीन श्रृंगारिक, वासनामय एवं स्थूल काव्य की प्रतिक्रियास्वरूप भारतेन्दु एवं द्विवेदी युग में समाज-सुधार, देश-प्रेम, मर्यादित श्रृंगार, अतीत गौरव आदि विषयों का आविर्भाव हुआ. द्विवेदी-युग भाव और शैली दोनों दृष्टियों में सुधारवादी होने के कारण इस काल की कविता में इतिवृत्तात्मकता, नैतिकता एव नीरसता की प्रधानता हो गई. फलत: इस युग की भी प्रतिक्रिया है. छायावाद में सामूहिकता के विरुद्ध वैयक्तिकता, बौद्धिकता के विरुद्ध भावुकता, कल्पनात्मक रूढ़ियों के विरुद्ध स्वच्छन्दता तथा अभिधात्मक भाषा-शैली के विरुद्ध लाक्षणिक एवं व्यंजना-प्रधान, भाषा-शैली प्रतिक्रिया स्वरूप उभरी.

9.4 विभिन्न विद्वानों की परिभाषाएँ :

छायावाद शब्द को विभिन्न विद्वानों ने परिभाषित करने का प्रयास किया है -

आचार्य शुक्ल ने इसका स्पष्टीकरण करते हुए लिखा है - 'छायावाद का प्रयोग दो अर्थों में समझना चाहिए. एक तो रहस्यवाद के अर्थ में, जहाँ उसका सम्बन्ध काव्यवस्तु से होता है अर्थात् जहाँ कवि उस अनन्त और अज्ञात प्रियतम को आलम्बन बनाकर अत्यन्त चित्रमयी भाषा में प्रेम की अनेक प्रकार से व्यंजना करता है. 'छायावाद' शब्द का दूसरा प्रयोग काव्यशैली या पद्धति के व्यापक अर्थ में है.'

श्री गंगाप्रसाद पाण्डेय छायावाद को 'वस्तुवाद व रहस्यवाद के बीच की कड़ी' स्वीकार करते हुए इसकी परिभाषा इस प्रकार करते हैं - 'विश्व की किसी वस्तु में एक अज्ञात सप्राण छाया की झाँकी पाना अथवा उसका आरोप करना ही छायावाद है.'

आचार्य नन्ददुलारे वाजपेयी छायावाद के सम्बन्ध में कहते हैं - 'मानव अथवा प्रकृति के सूक्ष्म, किन्तु व्यक्त सौन्दर्य में आध्यात्मिक छाया का भान मेरे विचार से छायावाद की एक सर्वमान्य व्याख्या हो सकती है.'

डॉ. नगेन्द्र छायावाद को 'स्थूल के प्रति सूक्ष्म का विद्रोह' मानते हैं और साथ ही यह भी स्वीकार करते हैं - छायावाद एक विशेष प्रकार की भाव पद्धति है, जीवन के प्रति एक विशेष भावात्मक दृष्टिकोण है.'

डॉ. देवराज छायावाद की परिभाषा देते हुए कहते हैं. 'छायावाद गीतिकाव्य है, प्रकृतिकाव्य है, प्रेमकाव्य है.'

श्री जयशंकर प्रसाद छायावाद के सम्बन्ध में लिखते हैं - 'छाया भारतीय दृष्टि से अनुभूति और अभिव्यक्ति की भंगिमा पर अधिक निर्भर करती है. ध्वन्यात्मकता, लाक्षणिकता, सौन्दर्यात्मक प्रतीक-विधान तथा उपचार-वक्रता के साथ स्वानुभूति की विवृत्ति छायावाद की विशेषताएँ हैं.

उपर्युक्त परिभाषाओं से छायावाद की अनेक विशेषताएँ तो स्पष्ट हो जाती हैं, किन्तु एक सर्वसम्मत परिभाषा किसी भी विद्वान ने नहीं दी है. उपर्युक्त परिभाषों से यह भी व्यक्त

होता है कि छायावाद स्वच्छन्दतावाद (Romanticism) के काफी समीप है. छायावाद की विशेषताओं को समन्वित करते हुए इसकी परिभाषा निम्नलिखित प्रकार से दी जा सकती है.

'हिन्दी कविता में छायावादी कविता एक आत्मपरक अन्तर्मुखी प्रवृत्ति है जिसमें अपने पूर्ववर्ती युग की प्रतिक्रिया अभिव्यक्त होती है. इसमें प्रकृति का मानवीकरण है, लाक्षणिक, प्रतीकात्मक शैली के साथ-साथ इसमें गीतितत्व की प्रधानता है.'

9.5 छायावाद की प्रमुख प्रवृत्तियाँ

'छायावाद' एक युग प्रवृत्ति है, इसलिए उसका अपना एक विशिष्ट युगबोध भी है. छायावादी काव्य की जिस अन्तर्वस्तु की चर्चा अब हम करने जा रहे हैं वह जितनी समसामयिक परिस्थितियों से प्रभावित है उतनी ही इस युग के कवियों की अंतर्दृष्टि से भी प्रेरित है. 'प्रथम वसंत के अग्रदूत' के रूप में स्वाधीनता की भावना को निमंत्रित करने वाले ये कवि नवजागरण के दूत बनकर हमारे सामने आते हैं इसी कारण छायावादी काव्य को 'शक्ति-काव्य' भी कहा जाता है. हिन्दी साहित्य में आधुनिक कविता का इतिहास देखें तो स्पष्ट हो जाता है कि पहली बार छायावाद को ही विराट मानवीय-वेदना की भावभूमि पर प्रतिष्ठित होने का श्रेय प्राप्त होता है. यद्यपि इस काव्य को उद्दाम-वैयक्तिकता का विस्फोट माना गया है, फिर भी विश्व दृष्टि को आत्मसात् करने में छायावाद ने जो पहल की है, वह किसी अन्य काव्यान्दोलन ने नहीं की. वैज्ञानिक-युग की अतिबौद्धिकता और उससे पैदा होने वाली जीवन की विभीषिकाएँ जब मनुष्य समाज को घेरने लगीं तो जनजीवन को मंगलमय-भविष्य और कल्याणकारी कल के सुनहरे स्वप्न दिखाकार कुंठित-मानसिकता के चंगुल में जाने से बचाने का महत्वपूर्ण कार्य छायावाद ने किया. इस निर्बन्ध, उन्मुक्त तथा स्वच्छन्द जीवन की आकांक्षाओं पर लगाए गए सभी बंधनों को काट-फेंकने का कार्य इस काव्य ने किया.

छायावादी काव्य की विवेचना करने पर इसमें निम्नलिखित मुख्य प्रवृत्तियाँ दृष्टिगोचर होती हैं -

1. व्यक्ति स्वांतत्र्य का स्वर-वैयक्तिकता 2. प्रकृति-सौन्दर्य और प्रेम की व्यंजना 3. श्रृंगारिकता 4. रहस्यात्मकता 5. वेदना एवं करुणा की भावना 6. राष्ट्रीय जागरण का चित्रण 7. छायावादी विचारधारा एवं जीवन-दर्शन 8. अभिव्यंजना में क्रांति.

1. वैयक्तिकता - छायावाद बूँद और समृद्ध, व्यष्टि और समष्टि या मानव और समाज-दोनों का अपूर्व समन्वय अपने भीतर करता चलता है. व्यक्ति स्वातंत्र्य को प्रेरित करते हुए विश्वबोध में उसका विलयन कर देना छायावाद की सफलतम उपलब्धि है. प्रत्येक देशवासी में स्वतंत्रता की भावना, आत्माभिव्यक्ति की स्वतंत्रता और व्यक्तिगत स्वाधीनता की प्रतिष्ठा — यही सब छायावाद के साहित्यिक आन्दोलन को जीवन्त बनाते हैं. छायावादी काव्य में 'स्व' की अभिव्यक्ति अन्य युग के कवियों से अधिक है. कवि अपनी व्यक्तिगत अनुभूतियों (अपने हर्ष-शोक, सुख-दुख) को अभिव्यक्ति प्रदान करता है. विषय-वस्तु की खोज वह बाहर जाकर नहीं, अपने मन के भीतर ही करता है. निराला ने लिखा है —

मैंने, 'मैं' शैली अपनाई / देखा एक दुःखी निज भाई
दुःख की छाया पड़ी हृदय में / झट उमड़ वेदना आई।

2. प्रकृति-सौन्दर्य और प्रेम-व्यंजना — छायावादी कविता का प्रकृति से बडा घनिष्ठ सम्बन्ध रहा है. प्रकृति इन कवियों के देश-प्रेम और व्यक्ति-स्वातंत्र्य की आकांक्षा की पूरक

रही हैं. छायावादी कवियों ने प्रकृति को 'सर्व सुन्दरी' कहा है. पन्त जी के कथनानुसार उन्हें कविता करने की प्रेरणा प्रकृति से मिली है. वास्तव में, ये चारों कवि निसर्ग कवि रहे हैं. प्रसाद जी ने अपने एक निबंध 'प्रकृति सौन्दर्य' में प्रकृति को विलक्षण ईश्वरीय देन कहा है और विश्वात्मा की छाया भी माना है. उनके अनुसार, 'यह प्रकृति परम रमणीय अखिल ऐश्वर्य भरी...' है. यह अनंत वर्ण रंजित मनोहारिणी छटा है, जो मनुष्य को आत्म चैतन्य की और अग्रसर करती है. निराला जी ने भी प्रकृति के अनेक कोमल और रौद्र रूपों को चित्रित किया है और बार-बार उसका मानवीकरण (नारीकरण) किया है. 'तुलसीदास' नामक काव्य में उन्होंने प्रकृति के माध्यम से चित्त का उदात्तीकरण कराया है. तात्पर्य यह है कि प्रकृति छायावादी कविता की सहचरी रही है. प्रकृति-सौंदर्य और प्रेम की व्यंजना छायावादी कविता की एक प्रमुख विशेषता है. छायावादी कवियों ने प्रकृति को काव्य में सजीव बना दिया है. शायद इसीलिए डॉ. देवराज ने छायावादी काव्य को 'प्रकृति-काव्य' कहा है. छायावादी काव्य में प्रकृति-सौन्दर्य चित्रण के अनेक रूप मिलते हैं जैसे - (क) आलम्बन रूप में, (ख) उद्दीपन रूप में (ग) प्रकृति का मानवीकरण रूप (घ) नारी रूप में प्रकृति के सौन्दर्य का वर्णन (ड) आलंकारिक चित्रण (च) प्रकृति का वातावरण और पृष्ठभूमि के रूप में चित्रण तथा (छ) रहस्यात्मक अभिव्यक्ति के साधन के रूप में चित्रण. इस प्रकार छायावादी काव्य में प्रकृति अपनी पूर्ण गरिमा के साथ विराजमान है. पन्त की कविता से प्रकृति-चित्रण का एक उदाहरण प्रस्तुत है -

बाँसो का झुरमुट / संध्या का झुटपुट
हैं चहक रही चिडियाँ / टी वी टी टुट् टुट्।

3. श्रृंगारिकता – छायावादी काव्य में श्रृंगार-भावना की प्रधानता है, परंतु यह श्रृंगार रीतिकालीन स्थूल एवं ऐन्द्रिय श्रृंगार से बिल्कुल भिन्न है. छायावादी श्रृंगार-भावना मानसिक, सूक्ष्म एवं अतीन्द्रिय है. यह श्रृंगार-भावना दो रूपों में व्यक्त हुई है – (क) नारी के अतीन्द्रिय सौन्दर्य-चित्रण द्वारा (ख) प्रकृति पर नारी-भावना के आरोप के द्वारा. पन्त और प्रसाद ने अछूती कल्पनाओं की तूलिका से नारी के सौन्दर्य का चित्रण किया है. एक उदाहरण देखिए –

तुम्हारे छूने में था प्राण / संग में पावन गंगा स्नान,
तुम्हारी वाणी में कल्याणी / त्रिवेणी की लहरों का गान।

निराला की 'जुही की कली' कविता में दूसरे प्रकार की श्रृंगार-भावना का चित्र है. प्रसाद ने कामायनी में सौन्दर्य को 'चेतना का उज्ज्वल वरदान' माना है. इस प्रकार छायावादी श्रृंगार-भावना और उसके सभी उपकरणों (नारी, सौन्दर्य, प्रेम) का चित्रण सूक्ष्म एवं उदात्त है. उसमें वासना की गन्ध बहुत कम है.

4. रहस्यानुभति – छायावादी कवि जीवन और जगत को रहस्यमयी दृष्टि से देखता है. अतएव रहस्यात्मकता छायावाद की एक प्रमुख विशेषता है. छायावादी काव्य में जिज्ञासामूलक रहस्य-भावना है, उसे रहस्यवाद नहीं कहा जा सकता. महादेवी में कुछ अवश्य ही रहस्य-साधना की दृढ़ता है. रहस्यानुभूति का उदाहरण देखिए –

हे अनन्त रमणीय कौन तुम ! / यह मैं कैसे कह सकता !
कैसे हो, क्या हो इसका तो / भार विचार न सह सकता ?

(प्रसाद)

5. वेदना और करुणा की भावना – छायावाद में वेदना और करुणा की अभिव्यक्ति भी एक प्रमुख प्रवृति के रूप में दृष्टिगोचर होती है. दुःखवाद छायावाद का एक प्रमुख तत्व

है, परंतु यह दु:खवाद घोर निराशा से भरा आत्मपीड़क चीत्कार-मात्र नहीं हैं, यह सेवावाद अथवा मानवतावाद पर आधारित है. इसके अतिरिक्त हृदयगत भावों की अभिव्यक्ति की अपूर्णता, अभिलाषाओं की विफलता, सौन्दर्य की नश्वरता, मानवीय दुर्बलताओं के प्रति सहानुभूति इस वेदना के कारण है. पंत ने वेदना को काव्य का शाश्वत तत्व माना है –

वियोगी होगा पहला कवि / आह से उपजा होगा गान।
उमड़कर आँखों से चुपचाप / बही होगी कविता अनजान॥

महादेवी तो 'पीड़ा' में ही अपने प्रिय को ढूँढती है –

तुमको पीड़ा में ढूँढा, तुममें ढूँढुँगी पीड़ा।

6. राष्ट्रीय जागरण का चित्रण – छायावाद राष्ट्रीयता का पोषक रहा है. नवजागरण की उस बेला में अपनी स्वाधीनता के लिए विदेशी शासकों के विरूद्ध सत्याग्रह-पूर्ण संघर्ष करती हुई भारतीय जनता को राष्ट्र के अतीत गौरव, अर्थात् उसकी सांस्कृतिक चेतना से अवगत कराना बहुत आवश्यक था. छायावाद यद्यपि अन्तर्मुखी प्रवृत्ति है और राष्ट्रीय-जागरण का सम्बन्ध बाह्य-जगत से हैं, फिर भी छायावादी कलाकार युग की स्वतंत्रता के आह्वान से अपने को दूर नहीं रख सके. माखनलाल चतुर्वेदी, निराला तथा प्रसाद की रचनाओं में राष्ट्रीय-भावनाओं का सुन्दर निरूपण हुआ. प्रसाद के प्रसिद्ध नाटक 'चन्द्रगुप्त' के अनेक गीत राष्ट्रीय-भावनाओं से ओत-प्रोत हैं. उनके एक प्रसिद्ध गीत की पक्तियाँ देखिए –

अरुण यह मधुमय देश हमारा।
जहाँ पहुँच अनजान क्षितिज को मिलता एक सहारा।

7. अभिव्यंजना शैली में क्रांति – छायावाद में जिस प्रकार द्विवेदीयुगीन स्थूल इतिवृत्तात्मकता के प्रति विद्रोह की भावना है, उसी प्रकार उसकी अभिव्यंजना शैली में क्रांति दिखाई देती है. छायावादी कवियों ने अपनी भावनाओं की अभिव्यक्ति के लिए अभिधात्मक वर्णन-प्रधान अभिव्यंजना-शैली को न अपनाकर लाक्षणिक प्रतीकात्मक शैली को अपनाया है. छायावादी अभिव्यंजना शैली के प्रमुख अंग है – (क) प्रतीकात्मकता (ख) चित्रात्मक भाषा (ग) मुक्तक गीति-शैली (घ) भारतीय एवं पाश्चात्य अलकारों का प्रयोग, जैसे – उपमा, रूपक, उत्पेक्षा, विरोधाभास, मानवीकरण, विशेषण-विपर्यय आदि, (ड) कोमलकान्त पदावली (च) परम्परागत छन्दों का निषेध तथा मुक्त छन्द-विधान इत्यादि.

8. युगीन सत्य और यथार्थ-अभिव्यक्ति – छायावादी काव्य ने यथार्थ का वह अर्थ नहीं लिया, जिससे लघुत्वकामी द्रष्टि अथवा 'अध: प्रेक्षण' का मन्तव्य निकलता है. उनकी दृष्टि मे यथार्थ एक व्यापक सत्य है. इन कवियों ने अपनी समकालीन सामाजिक, आर्थिक तथा राजनीतिक व्यवस्था को खुली दृष्टि से देखा था और भरसक समस्याओं का समाधान भी खोजा था. प्रसाद जी ने 'कामायनी' में विगत तथा वर्तमान के साथ-साथ भावी युग जीवन को भी रूपायित करने की चेष्टा की है. निराला की कई कविताएँ, जैसे 'वह तोडती पत्थर', 'भिक्षुक', 'विधवा' आदि युगीन यथार्थ की उपज हैं. पंत जी ने 'युगान्त', 'युगवाणी' और 'ग्राम्या' में इस युग-यथार्थ को अभिव्यक्ति दी है. जब वे कहते हैं – 'यह तो मानव लोक नहीं रे, यह है नरक अपरिचित' तो वहाँ युग का कटु यथार्थ बोल उठता है. इन कवियों का यथार्थ किसी राजनीतिक मतवाद से ग्रस्त नहीं हैं. वह उनकी व्यापक लोक संवेदना से उत्पन्न है और इनके काव्य के जनाधार का प्रमाण है .

इस प्रकार छायावाद भाव, विचार तथा शैली सभी दृष्टियों से अत्यन्त समृद्ध काव्यधारा है. डॉ. नगेन्द्र के शब्दों में – 'इस कविता का गौरव अक्षय है, समृद्धि की समता केवल भक्ति-काव्य ही कर सकता है'.

कमियाँ :

छायावादी काव्यधारा की भी अपनी कुछ सीमाएँ हैं, जिनके कारण सन् 1935 के बाद यह धीरे धीरे क्षीण होती गई. छायावादी काव्य में कल्पना की अधिकता और पलायनवादी दृष्टि के कारण यह पाठकों कों जीवन संघर्ष से दूर करने लगी साथ ही कल्पना-क्लिष्टता, प्रतीक योजना की अतिशय बौद्धिकता, अशुद्ध प्रयोग एवं उपमानों के अस्वाभाविक प्रयोग भी छायावाद में मिलते हैं. कवि पंत का विचार है कि ''छायावादी काव्य, काव्य न रहकर अलंकृत संगीत बन गया.''

बोध प्रश्न :

1. डॉ. देवराज ने छायावादी काव्य को क्या कहा है?
2. छायावाद की प्रमुख प्रवृतियों के नाम लिखिए.
3. 'स्व' की अभिव्यक्ति किस काव्य में अधिक हुई है?
4. जूही की कली रचना किस कवि की है ?

9.6 प्रमुख छायावादी कवि :

छायावादी कविता के प्रमुख स्तम्भ है — प्रसाद, पन्त, निराला और महादेवी वर्मा. इनके अतिरिक्त रामकुमार वर्मा, माखनलाल चतुर्वेदी, उदयशंकर भट्ट, बालकृष्ण शर्मा 'नवीन', हरिवंशराय बच्चन, भगवतीचरण वर्मा, दिनकर, गिरिजाकुमार माथुर तथा मिलिन्द की कविताओं में यत्र-तत्र रोमांटिक स्वर मिलते हैं. छायावाद के प्रमुख कवियों का परिचय निम्नलिखित हैं -

1. जयशंकर प्रसाद (सन् 1889 से 1937 ई.) :

छायावाद के अग्रदूत या प्रवर्तक के रूप में हमारे सामने केवल जयशंकर प्रसाद का ही नाम उभर कर आता है. केवल भाषा या विषय-वस्तु ही नहीं, प्रसाद ने उसे नवीन दृष्टि से भी देखा. 20 वीं शताब्दी को अपने व्यक्तित्व और कृतित्व से सर्वाधिक प्रभावित और प्रेरित करने वाले इस 'बहुमुखी प्रतिभा सम्पन्न' कलाकार ने कविता के साथ-साथ नाटक, उपन्यास, कहानी, निबन्ध तथा समीक्षा आदि विभिन्न गद्य-पद्य विधाओं में अपनी ऐतिहासिक तथा महत्वपूर्ण भूमिका निभायी है.

महाकवि प्रसाद हिन्दी में छायावादी काव्यधारा के प्रवर्तक हैं. वे सर्वतोन्युमुखी प्रतिभा सम्पन्न कलाकार है. कविता के क्षेत्र में उन्होने गीतिकाव्य, खण्डकाव्य और महाकाव्य सभी काव्य-रूपों में अपने भावों की कलात्मक अभिव्यक्ति की है. उनका क्षेत्र केवल कविता तक ही सीमित नहीं है, हिन्दी की विभिन्न गद्य-विधाओं (नाटक, उपन्यास, कहानी, निबन्ध आदि) में उनकी अनुपम देन है. प्रसाद संस्कृति के कलाकार एवं उदात्त मानवीय अनुभूतियों के गायक है.

प्रसाद जी ने सर्वप्रथम ब्रजभाषा में लिखना आरम्भ किया. उनकी प्रारम्भिक दो रचनाएँ 'चित्रोधार' और 'प्रेमपथिक' ब्रजभाषा में मिलती है, परंतु शीध्र ही वे खड़ीबोली की ओर आकृष्ट हुए. खड़ीबोली में उनकी प्रसिद्ध काव्य-रचनाएँ है — कानन-कुसुम, करुणालय, महाराणा का महत्व, झरना, आँसू, लहर और कामायनी.

प्रसाद जी उच्चकोटि के नाटककार भी है. हिन्दी की ऐतिहासिक नाटक परम्परा के वे अग्रणी है. 'सज्जन', 'प्रायश्चित', 'कल्याणी परिणय' और 'करुणालय' इनके आरम्भिक नाटक हैं. प्रसाद की नाट्यकला का प्रौढ़ रूप 'विशाख', 'जनमेजय का नागयज्ञ', 'अजातशत्रु', 'चन्द्रगुप्त', 'स्कन्दगुप्त' और 'ध्रुवस्वामिनी' में मिलता है. इन ऐतिहासिक नाटकों के

अतिरिक्त 'एक घूँट' और 'कामना' जैसे भावात्मक नाटकों की रचना भी प्रसाद ने की. नाटककार के रूप में प्रसाद की सफलता उनके ऐतिहासिक नाटक है. इनमें अतीत भारत के गौरव, राष्ट्रीय-भावना, इतिहास और कल्पना का सुन्दर समन्वय, वातावरण का सफल अंकन और भावुकता आदि विशेषताएँ देखने को मिलती है.

कथा-साहित्य में भी प्रसाद की देन अत्यंत महत्वपूर्ण है. प्रसाद के पाँच कहानी संग्रह मिलते हैं — छाया, प्रतिध्वनि, आकाशदीप, आँधी और इन्द्रजाल. इनमें अधिकांश कहानियाँ ऐतिहासिक और भावात्मक हैं, जिनमें प्रेम और करुणा के चित्र अंकित है. प्रसादजी के तीन उपन्यास है — कंकाल, तितली और इरावती. कंकाल यथार्थवादी परम्परा का उपन्यास है, तितली आदर्शवादी परम्परा से सम्बन्धित है. इरावती (अधूरा) शुंगवंश से सम्बधित ऐतिहासिक उपन्यास है.

'कामायनी' प्रसाद जी की सर्वोत्कृष्ट रचना है. यह एक सफल महाकाव्य है. इसका काव्य-वैभव, चिंतन की प्रौढ़ता, स्वस्थ-जीवन-दर्शन और भावनाओं का विश्लेषण, ये सभी मिलकर कामायनी को महाकाव्य का रूप देने के लिए पर्याप्त है. कामायनी एक भावात्मक महाकाव्य है. प्रसाद के इस महाकाव्य में मानवता के विकास का रहस्य एवं समरसता को स्वीकार किया गया है.

जयशंकर प्रसाद छायावादी कवियों में अग्रगण्य हैं. वे प्रेम और सौन्दर्य के कवि हैं. प्रकृति-चित्रण उनके काव्य की अन्यतम विशेषता है. प्रसाद के काव्य में वस्तु और शैली की कांति है. उनकी रचनाओं में प्रेम-चित्रण की सूक्ष्मता व अमूर्तता, कल्पना की उदात्तता, प्रकृति का सर्वांगीण चित्रण, विराट सत्ता की अनुभूति, सभी विशेषताएँ सहज ही सुलभ है. साथ ही प्रसाद की कविता छायावादी काव्य-शैली के सभी उपकरणों से सम्पन्न है. लाक्षणिक-प्रयोग, विरोधाभास, विशेषण-विपर्यय, छन्द-वैविध्य, प्रतीक-विधान, कोमल एवं संगीतमयी भाषा प्रसाद की कला की प्रमुख विशेषताएँ हैं.

प्रसाद हिन्दी-साहित्य के समन्वयवादी कवि हैं. तुलसी के बाद अगर कोई सच्चा समन्वयवादी कवि है तो वे प्रसाद ही हैं. उनकी 'कामायनी' 'मानस' की तरह समन्वय की विराट चेष्टा है. 'कामायनी' में व्यष्टि और समष्टि का, प्रकृति और मानव का, श्रद्धा और इड़ा का, सत्य-शिव-सुन्दर का तथा इच्छा, ज्ञान और क्रिया का समन्वय है. कामायनीकार की यह दृढ़ धारणा है -

> ज्ञान दूर कुछ क्रिया भिन्न है / इच्छा क्यों पूरी हो मन की ।
>
> इक दूसरे से न मिल सके / यही विड़म्बना है जीवन की ।

आधुनिक कविता के इतिहास में एक तरफ प्रेम, सौन्दर्य तथा आनन्द और दूसरी तरफ भाव, विचार तथा आनन्द का अद्भुत सामंजस्य देने वाला यह कवि मानव-मूल्यों के बहुत व्यापक फलक का कवि है. केवल 48 वर्ष की अवस्था में यक्षमा से पीड़ित इस महाकवि का 15 नवम्बर सन् 1937 को स्वर्गवास हो गया. किन्तु महाकवि जयशंकर प्रसाद सभी काव्य प्रेमियों और रसिकों को काव्य का ऐसा अद्भुत और अनुपम आस्वाद प्रदान कर गए, जो सदैव ही अतुलनीय तथा अमर बना रहेगा.

2. सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' (सन् 1898 से 1961 ई.) :

छायावाद के प्रवर्तक कवि प्रसाद के बाद महत्वपूर्ण स्थान रखने वाले कवि है महाप्राण 'निराला'. अपने प्रचण्ड विद्रोह, उदग्र सौन्दर्य तथा उदात्त एव आदर्श-जीवन दर्शन के इस कवि को हिन्दी काव्य का श्लाका पुरुष कहा जाता है.

महाकवि निराला के साहित्यिक जीवन का आरम्भ उनकी कविता 'जूही की कली' (1916) से होता है और 1954 तक यह साधना कृती रूप में चलती रही. बाद के वर्षों मे शारीरिक

एवं मानसिक अस्वस्थता के कारण उनका कवि-जीवन विकसित नहीं हो सका. इस काल में निराला ने कविता, कहानी, उपन्यास, अनुवाद आदि के रूप में हिन्दी-साहित्य की अभिवृद्धि की. उनकी मुख्य रचनाएँ इस प्रकार है —

काव्य-ग्रंथ — अनामिका, परिमल, गीतिका, तुलसीदास, कुकुरमुत्ता, अणिमा, नए पत्ते, बेला, अर्चना, आराधना, गीत-गुँज, प्रेयसी, रेखा, सरोज स्मृति, राम की शक्तिपूजा.

उपन्यास — अप्सरा, अलका, निरूपमा, प्रभावती, उच्छृंखल, चोटी की पकड़, काले कारनामे, चमेली आदि.

कहानी-संग्रह — लिली, सखी, चतुरी चमार, सुकुल की बीबी आदि.

रेखाचित्र — कुल्लीभाट, बिल्लेसुर बकरिहा आदि.

निबन्ध — प्रबन्ध-पध्म, प्रबन्ध-प्रतिमा, प्रबन्ध —परिचय, रवीन्द्र-कविता-कानन आदि.

जीवन-चरित्र — राणा प्रताप, भीम, प्रह्लाद, ध्रुव, शकुंतला.

अनूदित ग्रंथ — महाभारत, श्रीरामकृष्ण वचनामृत् स्वामी विवेकानन्द जी के भाषण, दुर्गेशनन्दिनी, तुलसी-रामायण की टीका.

पत्रिकाएँ — 'समन्वय' और 'मतवाला' का सम्पादन.

उपर्युक्त रचनाओं की सूची से स्पष्ट है कि निराला की देन केवल कविता के क्षेत्र में ही नहीं, बल्कि गद्य साहित्य में भी महत्वपूर्ण है.

'अनामिका' और 'परिमल' की रचनाओं में विविध प्रकार की भावनाओं से सम्बन्धित रचनाएँ है. आख्यानात्मक कविताएँ, श्रृंगार प्रधान, प्रकृति-चित्रण सम्बन्धी, राष्ट्रीय-भावना प्रधान, चिंतन प्रधान तथा रहस्यवादी और कहीं-कहीं प्रगतिवादी स्वर भी इन दो संग्रहों की रचनाओं से मिलता है. 'अनामिका', 'अणिमा', 'अर्चना', 'आराधना' तथा 'गीत-गुँज' स्तुतिपरक, नारी-सौन्दर्य सम्बन्धी, प्रकृति सम्बन्धी, विषादपरक तथा विचार-प्रधान गीत है.

'कुकुरमुत्ता' में कवि ने पूँजीपतियों पर तीखा प्रहार किया है. इस रचना की भाषा-शैली अत्यन्त सरल और सीधी-सादी है. 'तुलसीदास', 'राम की शक्ति-पूजा' तथा 'सरोज-स्मृति' निराला की प्रौढ़तर कृतियों में से हैं. 'तुलसीदास' कवि का अन्तर्मुखी प्रबन्ध काव्य है. इसमें कवि तुलसीदास को मुगल भारत में हिन्दु-संस्कृति का संरक्षक और उन्नायक मानकर उनके व्यक्तित्व को प्रस्तुत करता है. इस रचना में भारतीय समाजशास्त्र का विश्लेषण निराला ने बड़ी बारीकी से किया है. 'राम की शक्ति-पूजा' भी एक लघु प्रबन्धात्मक कविता है, जिसमें निराला का ओज अपनी पूर्ण शक्ति के साथ प्रस्फुटित हुआ है. इस कविता से यह स्पष्ट होता है कि 'निराला' केवल श्रृंगार और प्रकृति के कोमल चित्र प्रस्तुत करने में ही सिद्धहस्त नहीं, बल्कि कठोर और प्रचण्ड भावों की अभिव्यक्ति भी वे सहज ही कर सकते हैं. 'सरोज-स्मृति' सरोज की मृत्यु पर लिखा हुआ कवि का शोकगीत है. इसमें वात्सल्य और करुणा का उद्रेक हुआ है.

इस प्रकार निराला की काव्य-रचनाओं के विवेचन के उपरांत हम कह सकते हैं कि उनका व्यक्तित्व निराला ही था. निराला एक ऐसे कवि है जिनके जीवन और काव्य में सम्बन्ध का स्वरूप घनिष्ठ होकर अटूट है, इनके जीवन का एक-एक अनुभूत क्षण इनकी कृतियों में झलकता है.

छायावादी काव्य को निराला की सर्वप्रमुख देन उनका मुक्त छन्द है. निराला का नाम लेते ही मुक्त छन्द और मुक्त छन्द का नाम लेते ही निराला का नाम स्वयमेव जुड़ जाता है. 'परिमल' की भूमिका में निराला कविता की मुक्ति छन्दों के शासन से अलग होने में

स्वीकार करते हैं. 'जूही की कली', 'सन्ध्या-सुन्दरी', 'जागो फिर एक बार' आदि प्रमुख कविताएँ मुक्त छन्द में ही मिलती है. संक्षेप में, हम यह कह सकते हैं कि युग की सभी प्रमुख प्रवृत्तियाँ उनके काव्य में प्रतिबिम्बित हैं. इस दृष्टि से वे अपने आप में पूरा एक युग है.

3 सुमित्रानन्दन पन्त (1900 से 1977 ई.) :

छायावाद के चार आधार स्तम्भों में सुमित्रानन्दन पन्त तीसरे प्रमुख स्तंभ है जिनका नाम सदैव अमर रहेगा. व्यक्तित्व के अनुरूप ही काव्य को कोमलता, सरसता और सुन्दरता प्रदान करने वाले इस प्रकृति-पुत्र का जन्म 20 मई, सन् 1900 ई. मे 'कोसानी' में हुआ था. अनन्य प्रकृति प्रेमी तथा विदग्ध-विचारक कवि पन्त ने बाल्यावस्था से ही काव्य-सृजन प्रारम्भ कर दिया था. कवि रूप में स्थापित इस महान व्यक्तित्व ने काव्य से इतर नाटक, कहानी, उपन्यास, निबन्ध, संस्मरण तथा समीक्षा के क्षेत्र में भी अपनी प्रतिभा का परिचय दिया, किन्तु मूलतः वे कवि ही थे और अपनी विशिष्ट पहचान भी इसी क्षेत्र में बना सके.

पन्त जी का काव्य-व्यक्तित्व परिवर्तनशील एव गत्यात्मक रहा है. उनकी रचनाएँ उनके काव्य-व्यक्तित्व के विकास के विभिन्न सोपानों को प्रस्तुत करती है. काव्य-विकास की दृष्टि से पन्त की रचनाओं को तीन भागों में बाँटा जा सकता है -

(क) सौन्दर्य या छायावादी युग.

(ख) प्रगतिवादी युग.

(ग) अध्यात्म युग.

(क) छायावादी युग :

पन्त जी की रचनाओं का प्रारम्भिक युग उनकी सौन्दर्य-भावना का युग है. इन रचनाओं में प्राचीन शैली के प्रति विद्रोह और नवीन काव्यशैली के निर्माण की सफलता की झलक है. इस युग में पन्त की 'वीणा' से 'युगान्त' तक की रचनाएँ आती है. 'वीणा' में प्रकृति-सम्बन्धी कविताएँ हैं. 'ग्रंथि' वियोग-गीत है, यह रचना युवक — हृदय की सफल कृति है. 'पल्लव' का छायावादी काव्यों में अपना ऐतिहासिक महत्व है. प्रकृति-सौन्दर्य, प्रेम-भावना, भाव-सौन्दर्य तथा कल्पना-वैभव, सभी दृष्टियों से पन्त की यह अन्यतम रचना है. 'गुँजन' में प्रणय सम्बन्धी गीत संकलित हैं. कुछ गीतों में सुख-दुःख के समन्वय रूपी जीवन की पूर्णता कवि ने देखी है. 'ज्योत्सना' एक भाव नाटिका है. कवि मानवतावाद और समाजवाद की समन्वित प्रतिष्ठा में विश्व मंगल की भावना को प्रतिष्ठित करता है. 'युगान्त' में कवि इस सौन्दर्य युग का अन्त कर प्रगतिवादी युग में प्रवेश करता है. यहाँ कवि का कांतिकारी रुप परिलक्षित हुआ है.

(ख) प्रगतिवादी युग :

पन्त जैसे चिंतनशील कवि को छायावाद अपनी मनोहारिता से अधिक दिनों तक न बाँध सका. फलतः पन्त प्रगतिवाद के क्षेत्र में प्रविष्ट हुए. उन्होंने 'युगान्त', 'युगवाणी' तथा 'ग्राम्या' की रचना प्रगतिवादी युग में की. इस में कवि पुरानी रूढियों को नष्ट-भ्रष्ट कर देना चाहता है. 'युगवाणी' में गाँधीवाद और माक्सवाद पर लिखी कविताओं में उस युग की मनोवृत्ति स्पष्ट होती है. 'ग्राम्या' में पन्त भारत के गाँवो में बौद्धिक सहानुभूति के साथ प्रविष्ट होते हैं. इस रचना में कवि ने ग्राम के समस्त रूप को, वहाँ के नित्य प्रति के जीवन को सामूहिक रूप में देखा है.

(ग) अध्यात्म युग :

सन् 1940 के उपरान्त कवि के बौद्धिक जागरण में पुनः परिवर्तन आया. उसका हिंसात्मक

क्रांति के प्रति समस्त उत्साह अथवा मोह विलीन हो गया. उसकी चेतना अन्तर्मुखी हो गई. इस युग की रचनाओं पर अरविन्द-दर्शन का प्रभाव अधिक लक्षित होता है. कवि मानवतावादी बन जाता है और भौतिक प्रगति एव अध्यात्म-विकास के समन्वय के द्वारा एक पूर्ण मानवीय विकास की कल्पना करता है. इस युग की रचनाएँ हैं — स्वर्ण-धूलि, स्वर्ण-किरण, उत्तरा, रजत-शिखर, शिल्पी, सौवर्ण, अतिमा और वाणी.

कविवर पन्त की परवर्ती रचनाओं में 'कला और बूढा चाँद' (1951), 'लोकायतन' (1964), 'पुरूषोत्तम राम', 'किरण वीणा', 'पौ फटने से पहले' तथा 'सत्यकाम' उल्लेखनीय है.

पन्त प्रधान रूप से कलाकार हैं. उनके काव्य में सर्वप्रथम कला का तदनन्तर विचारों और भावों का स्थान है. खड़ीबोली को काव्यानुकूल भाषा बनाने में, उसे कोमलकांत पदावली तथा माधुर्य प्रदान करने में पन्त का योगदान अविस्मरणीय है. अलंकृति, प्रगीत-काव्य, छन्द-विधान सभी दृष्टियों से पन्त की कला अत्यन्त उत्कृष्ट है. अन्त में हम कह सकते हैं कि पन्त अपनी रचनाओं में निरंतर गतिशील और भ्रमणशील रहे हैं. वे किसी एक चरण या बिन्दु पर नहीं ठहरे. सभी विचारों एवं भावों का उन्होंने उन्मुक्त भाव से अवगाहन किया है. यह सब कुछ होते हुए भी पन्त की मूलवर्तिनी चेतना छायावादी है.

4 **महादेवी वर्मा (1907 से 1987 ई.) :**

छायावादी काव्य को संवारने-निखारने वाली गीति-लेखिका महादेवी वर्मा का नाम छायावाद के कवियों में अत्यन्त आदर से लिया जाता है. रहस्य, वेदना और गीतात्मकता की अमर-सृजक महादेवी का जन्म सन् 1907 ई. में फर्रुखाबाद में हुआ था. विधिवत् शिक्षा प्राप्त कर आजीवन प्रयाग-महिला विद्यापीठ की सेवा करने वाली महादेवी हृदय की अनुभूतियों और सूक्ष्मतम भावनाओं को सफलतम अभिव्यक्ति देती हैं यह उनके कृतित्व का बेजोड़ पक्ष है. काव्य ही नहीं, रेखाचित्र, संस्मरण, निबन्ध तथा पत्रकारिता के क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण योगदान देने वाली महादेवी वर्मा के बहुमुखी प्रतिभा-सम्पन्न व्यक्तित्व ने 'वेदना' के मर्म से जो तादाकर किया और कराया है वह निश्चित ही उनका अपना वैशिष्ट्य है.

महादेवी की भाव-चेतना एव सौन्दर्य-दृष्टि छायावादी है, किन्तु अन्य छायावादी कवियों की अपेक्षा उनमें रहस्य भावना अधिक है. महादेवी कवयित्री और गद्य-लेखिका के रूप में हमारे सामने आती है. 'अतीत के चलचित्र', 'स्मृति की रेखाएँ', 'श्रृंखला की कड़ियाँ', 'विवेचनात्मक गद्य', 'मेरा परिवार' उनकी गद्य रचनाएँ हैं तथा 'नीहार', 'रश्मि', 'नीरजा', 'सान्ध्यगीत', 'दीपशिखा' और 'सप्तपर्णा' उनके काव्यग्रंथ हैं. 'रश्मि' से 'दीपशिखा' तक उनके मौलिक गीतों के संकलन हैं. 'सप्तपर्णा' में वैदिक-संस्कृत के काव्य-खण्डों के भावात्मक अनुवाद प्रस्तुत है. पन्त और निराला की तरह महादेवी का काव्य-व्यक्तित्व गतिशील नहीं है, वह आरम्भ से 'दीपशिखा' तक निरंतर एक दिशा में अग्रसर हुआ है. भाव, भाषा, शैली की दृष्टि से वह एक जैसा ही रहा है.

महादेवी में छायावाद की प्राय: सभी विशेषताएं देखने को मिलती हैं. भावमयता, प्रकृति चित्रण, वैयक्तिक अनुभूतियों की प्रधानता, श्रृंगार एव करुणा भावना, कल्पना की उड़ान, रहस्यमयता, मानवीकरण, लाक्षणिक प्रयोग, प्रतीकात्मकता आदि सभी छायावादी प्रवृत्तियाँ 'रश्मि' से 'दीपशिखा' तक सर्वत्र विद्यमान है.

महादेवी की रचनाओं में रहस्यवाद का रंग भी गहरा है. प्रसाद, पन्त, निराला में रहस्यानुभूति की कुछ अवस्थाएँ विशेषकर जिज्ञासा और कुतूहल आदि ही प्राप्त होती है, परंतु महादेवी की समस्त काव्य-चेतना रहस्य-भावना से सराबोर है.

महादेवी के काव्य में रहस्यानुभूति या प्रणय-वेदना के आविर्भाव और विकास की पूरी

कहानी है, जो मुक्तक गीतों में होती हुई भी प्रबन्ध सी लगती है. इस व्यथा से यही आभास होता है कि उसका प्रियतम अलौकिक है, लौकिक नहीं —

इन ललचाई पलकों पर / पहरा था जब व्रीड़ा का।

साम्राज्य मुझे दे डाला / उस चितवन ने पीड़ा का॥

यह चिंतन लौकिक न होकर अलौकिक है और प्रकृति में सर्वत्र उसे इसी अलौकिक प्रिय के संकेत मिलते हैं —

मुस्काता संकेत भरा नभ / अलि क्या प्रिय आने वाले हैं।

महादेवी के काव्य में करुणा-भावना या वेदना की अनुभूति अत्यंत तीव्र है. करुणा की जैसी अजस्रधारा महादेवी वर्मा में मिलती है, वह मीरा को छोड़कर अन्यत्र दुर्लभ है. उस अनंत, अज्ञात प्रियतम के विरह में कवयित्री का अंतर व्याकुल हो रहा है. वह अपनी दिव्य करुणा-वेदना को चिरस्थायी बना लेना चाहती है. इसीलिए वह कहती हैं —

पर शेष नहीं होगी यह, मेरे प्राणो की पीड़ा,

तुमको पीड़ा में ढूँढा, तुम में ढूँढूँगी पीड़ा॥

आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी के शब्दों में — 'व्यक्तिगत अनुभूतियों की तीव्रता और मर्मस्पर्शिता में महादेवी की रचनाएँ अपूर्व हैं. वे पाठक के चित्त में वेदना की अनुभूति भरती हैं.'

9.7 सार बिन्दु :

1. छायावादी काव्य आंदोलन हिन्दी की एक विशिष्ट देन है. आधुनिक हिन्दी साहित्य के इतिहास में एकमात्र यही काव्य आंदोलन ऐसा है जिसे कविता का मौलिक आंदोलन कहा जा सकता है.
2. यह भारतीय संस्कृति के औपनिषदिक तत्वों को नव्यतम आधुनिक धरातल पर जागृत करने का सफल प्रयास करता है.
3. इस काव्यान्दोलन तथा प्रवृत्ति के प्रसाद, निराला, पन्त और महादेवी जैसे प्रतिनिधि कवि अपनी विशिष्ट पहचान रखते हैं.
4. वस्तु वैविध्य से समृद्ध इस छायावादी काव्य की - प्रकृति प्रेम, राष्ट्रीय-सांस्कृतिक चेतना, नारी के प्रति नव्यतम दृष्टिकोण, रूढियों के प्रति मुक्ति का प्रयास, युगीन-सत्य और यथार्थ की सार्थक अभिव्यक्ति, व्यक्तिगत स्वातंत्र्य का स्वर तथा गीतात्मक मधुर वेदना आदि प्रमुख विशेषताएँ हैं.
5. काव्य भाषा में नवीनता और कल्पना का नवोन्मेष से समृद्ध अन्यतम रचना-विधान वाला यह काव्यान्दोलन अपना ऐतिहासिक महत्व रखता है.

9.8 परीक्षोपयोगी प्रश्नावली :

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न :

1. छायावाद के प्रमुख चार कवियों का परिचय लिखिए.
2. छायावादी कविता की प्रमुख प्रवृत्तियों पर प्रकाश डालिए.

लघु उत्तरीय प्रश्न :

1. 'छायावाद' शब्द की विभिन्न विद्वानों द्वारा दी गई परिभाषाओं का उल्लेख कीजिए.
2. काव्य विकास की दृष्टि से पन्त की रचनाओं का परिचय दीजिए.

टिप्पणी लिखो.

1. छायावादी काव्य की सीमाएँ
2. जयशंकर प्रसाद
3. निराला और उनकी रचनाओं का परिचय
4. महादेवी वर्मा के काव्य की विशेषताएँ

वस्तुनिष्ठ प्रश्न :

सही के आगे √ तथा गलत के आगे × का निशान लगाएं.

1. छायावाद व्यष्टि और समष्टि का समन्वय करता चलता है. ( )
2. छायावाद को स्थूल के प्रति सूक्ष्म का विद्रोह डॉ. देवराज ने माना है. ( )
3. छायावादी काव्य में जिज्ञासामूलक रहस्य भावना नहीं हैं. ( )
4. 'ज्योत्सना' एक भाव नाटिका है. ( )
5. मुक्त छन्द कवि पन्त की देन है. ( )

रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए.

1. छायावादी काव्य को .... काव्य भी कहा जाता है.
2. प्रसाद ने कामायनी में सौन्दर्य को .... का उज्ज्वल वरदान माना है.
3. 'ग्राम्या रचना कवि .... की हैं.
4. मतवाला के सम्पादक .... है.
5. राम की शक्ति पूजा .... कविता है.

सही विकल्प चुने.

1. संस्कृति के कलाकार एवं उदात्त मानवीय अनुभूतियों के गायक हैं.

   1. महादेवी वर्मा 2. निराला 3. पन्त 4. प्रसाद ( )

2. ग्रंथि है.

   1. वियोग गीत 2. प्रकृति गीत 3. उद्बोधन गीत 4. प्रणय गीत ( )

3. बिल्लेसुर बकरिहा है.

   1. कविता संग्रह 2. निबन्ध 3. रेखा चित्र 4. जीवन चरित्र ( )

4. निम्न में से अधूरा उपन्यास है

   1. अज्ञातशत्रु 2. स्कन्दगुप्त 3.इरावती 4. ध्रुवस्वामिनी ( )

5. 'अतीत के चलचित्र' कृति है.

   1. निराला 2. पन्त 3. प्रसाद 4. महादेवी वर्मा ( )

9.9 सन्दर्भ सूची :

1. हिन्दी साहित्य : बीसवीं शताब्दी : आचार्य नंद दुलारे वाजपेयी.
2. छायावाद : डॉ. नामवर सिंह : राजकमल प्रकाशन, दिल्ली.

3. हिन्दी साहित्य का इतिहास : डॉ. नगेन्द्र एवं हरदयाल.

इकाई : 10 जयशंकर प्रसाद

रूपरेखा :

10.1 उद्देश्य

10.2 प्रस्तावना

10.3 जयशंकर प्रसाद : व्यक्तित्व और कृतित्व

10.3.1 जीवन परिचय

10.3.2 कृतित्व

10.4 प्रसाद की काव्यगत विशेषताएँ

10.5 'बीती विभावरी जाग री' : काव्यपाठ, विश्लेषण और व्याख्या

10.6 'हिमाद्री तुंग श्रृंग से' : काव्यपाठ, विश्लेषण और व्याख्या

10.7 सार बिन्दु

10.8 परीक्षोपयोगी प्रश्नावली

10.9 संदर्भ सूची

10.1 उद्देश्य :

- छायावाद के महान कवि श्री जयशंकर प्रसाद के जीवन की उन प्रमुख घटनाओं का परिचय पाना जिसने हिन्दी साहित्य जगत को उत्तम साहित्य की भेंट दी.
- प्रसाद जी के साहित्य के विहंगावलोकन और काव्य-रचनाओं के परिचय द्वारा कवि की विचारधारा और काव्य-विकास को देखना.
- प्रसाद जी मूलतः छायावादी कवि हैं, अतः उनकी कविताओं में व्यक्त छायावादी विशेषताओं द्वारा कवि का महत्त्वपूर्ण योगदान जानना.
- पठित कविताओं के माध्यम से कविता में वर्णित कवि के भाव-सौंदर्य और स्वानुभूति से जुड़ना और कविता के कलात्मक सौंदर्य से भी परिचित होना.

10.2 प्रस्तावना :

छायावाद ने आधुनिक हिन्दी-काव्य और भाषा को एक नवीन शक्ति, सजीवता और सौंदर्य-बोध प्रदान किया. छायावाद को किसी ने रहस्यवाद का दूसरा रूप, रहस्यवाद की प्रथम सीढ़ी, स्थूल के प्रति सूक्ष्म का विरोध, यूरोपीय 'रोमांटिसिज्म' का भारतीयकरण तथा लाक्षणिक प्रयोगों, प्रस्तुत विधानों और अमूर्त उपमानों को लेकर चलने वाली एक विशेष शैली कहा, किन्तु ये सभी परिभाषाएँ एकांगी हैं. छायावाद की विशेषताओं पर प्रकाश डालते हुए प्रसाद जी लिखते हैं - 'छायावाद, भारतीय दृष्टि से अनुभूति और अभिव्यक्ति की भंगिमा पर अधिक निर्भर करता है, ध्वन्यात्मकता, लाक्षणिकता, सौन्दर्यमय प्रतीक-विधान तथा उपचार-वक्रता के साथ स्वानुभूति की विवृत्ति छायावाद की विशेषताएँ हैं.'

हिन्दी साहित्य-क्षेत्र में प्रसाद जी अपनी बहुमुखी प्रतिभा लेकर अवतरित हुए. छायावाद का चरमोत्कर्ष उन्हीं की रचनाओं में मिलता है. जयशंकर प्रसाद कवि के साथ-साथ नाटककार, उपन्यासकार, कहानीकार तथा निबंधकार के रूप में भी सफल रहे. प्रसाद जी के साहित्य में जो अनुभूतियाँ मिलती हैं उनका संबंध शाश्वत सत्यों से

हैं. 'प्रसाद' की रचनाओं में हमें अनुभूति की सच्चाई, भावों की गहनता, सांस्कृतिक मोह एवं राष्ट्रप्रेम की भावना लक्षित होती हैं. प्रसाद रवीन्द्र के आदर्श से प्रेरित और जर्मन विद्वान गेटे की विचारधारा से प्रभावित मिलते हैं. भले ही स्वच्छन्दतावादी कविता के तत्व प्रसाद जी की कविता में मिलते हों, किन्तु इनके साहित्य की परंपरा मूलतः भारतीय है. उन्होंने उपनिषद्-दर्शन से रहस्यवाद की प्रेरणा ली थी.

10.3 जयशंकर प्रसाद : व्यक्तित्व और कृतित्व :

10.3.1 जीवन परिचय :

प्रसाद जी का जन्म काशी के एक प्रतिष्ठित घराने में 30 जानवरी सन् 1889 ई. को हुआ था. प्रसाद जी के प्रपिता शिवरत्नप्रसाद 'सुँघनी-साहू' के नाम से विख्यात थे. उनके पिता बाबू देवीप्रसाद साहू के बड़े पुत्र बाबू शम्भुरत्न और छोटे श्री जयशंकर प्रसाद थे.

बालक प्रसाद को बचपन में ही विभिन्न तीर्थ स्थानों तथा प्राकृतिक सौंदर्य से परिपूर्ण स्थलों के भ्रमण का सुयोग मिला. उन्होंने इनकी माता मुन्नी देवी के साथ में 11 वर्ष की आयु में धार क्षेत्र, ओंकारेश्वर, पुष्कर, उज्जैन, जयपुर, ब्रज, अयोध्या की यात्राएँ की. यहाँ के प्राकृतिक दृश्यों ने प्रसाद के कोमल हृदय पर अपना प्रभाव छोड़ा. अमरकंटक पर्वत के बीच नर्मदा की यात्रा से प्रसाद का हृदय मधुरता से भर गया. उन्होंने कलकत्ता पुरी, लखनऊ और प्रयाग की भी यात्राएँ की.

बनारस के क्विंस कॉलेज में उन्होंने कक्षा-7 तक शिक्षा प्राप्त की. इसके बाद घर पर ही संस्कृत और अंग्रेजी का अध्ययन किया. तदनन्तर संस्कृत के महाकाव्य, उपनिषद, दर्शन, पुराण आदि के विधिवत् पारायण में प्रवृत्त हुए. शैव-दर्शन के प्रति गहरी रुचि के कारण आस्तिक-नास्तिक दर्शनों की विचारधारा से साक्षात् परिचय किया. प्रसाद जी के प्रिय विषय पुरातत्व और इतिहास रहे, जिसका परिचय हमें उनके नाटकों में मिलता है. सारनाथ में मूर्ति का निरीक्षण करते हुए घंटों बिता देते थे. वसुधा के अंचल पर स्थित प्रकृति के रमणीय दृश्यों को चित्रित करते हुए कहते हैं -

वसुधा के अंचल पर
यह क्या कन-कन सा गया बिखर ?
जल शिशु की चंचल क्रीडा-सा
जैसे सरसिज दल पर.

-लहर

प्रसाद जी को बाल्यकाल की यात्राओं के कारण प्रकृति के प्रति लगाव हो गया था. इस विषय में आचार्य नन्ददुलारे वाजपेयी लिखते हैं -

'अंग्रेज कवि वड्र्सवर्थ की भाँति प्रकृति के प्रति उनका सिद्ध तादात्म्य नहीं दीख पड़ता. प्रत्येक पुष्प से उन्हें वह प्रीति नहीं, जो वड्र्सवर्थ ने व्यक्त की थी. प्रत्येक पर्वत, प्रत्येक घाटी उनकी आत्मीय नहीं. वह सुन्दरता में रमणीयता देखते हैं. इस सुन्दरता के संबंध में उनकी भावना 'रति' की भी है और 'जिज्ञासा' की भी. 'रति' उनका हृदय पक्ष है और 'जिज्ञासा' उनका मस्तिष्क पक्ष.'

प्रसाद जी को किशोरावस्था में ही संघर्षों ने घेर लिया. 12 वर्ष की आयु में माता तथा 15 की आयु में उन्हें पिता के स्नेह से वंचित होना पड़ा. बड़े भाई भी उन्हें अकेला छोड़कर स्वर्गवासी हो गए. 17 वर्ष की आयु में व्यापार और परिवार का बोझ उन्हें वहन करना

पड़ा. बडे भाई की मृत्योपरांत उनके द्वारा छोड़े गए कर्ज को प्रसाद जी ने चुकता किया. इन विषम परिस्थितियों में भी वे दृढ़ता रखकर साहित्य निर्माण में निरंतर लगे रहे. काव्य-रसिकों का उनके घर जमघट लगा रहता था. व्यापार के साथ-साथ साहित्य-दर्शन और इतिहास का अध्ययन करते रहे. प्रसाद जी की प्रेरणा से उनके भानजे अम्बिकाप्रसाद गुप्त ने 'इन्दु' तथा शिवपूजनसहायजी ने 'जागरण' पत्र निकाला. पत्रिका 'हंस' के नामकरण और उसकी योजना में उनका महत्त्वपूर्ण योगदान था. 'इन्दु' और 'जागरण' की आर्थिक व्यवस्था का भार भी उनके कंधों पर आ पड़ा. साहित्य-साधना के कारण व्यापार की ओर कम ध्यान देने से आय कम हो गयी. पारिवारिक चिंता के साथ इन परिस्थितियों ने प्रसाद जी को 'राजयक्ष्मा' का शिकार बना दिया. सन् 1937 में 48 वर्ष की अल्पायु में प्रसाद जी इस संसार से विदा हो गए.

10.3.2 कृतित्व :

प्रारंभिक कविता के बाद प्रसाद जी ब्रजभाषा के बदले खड़ीबोली में काव्य-रचना करने लगे. उनकी काव्य-साधना का आरंभ ब्रजभाषा में समस्यापूर्ति से हुआ. किशोरावस्था में यात्रा के दौरान प्रकृति का माधुर्य उनके हृदय को छू गया. शैव-दर्शन और उपनिषदों के गहन अध्ययन से उनकी कविता में शिवत्व का भाव और गांभीर्य देखने को मिलता है. बौद्ध-दर्शन के प्रभाव के कारण उनके काव्य में विश्व-कल्याण की व्यापकता भी देखने को मिलती है. इसके अतिरिक्त जीवन की विषमताओं का भी उनकी कविता पर प्रभाव रहा. प्रसाद जी की लेखनी से जो सर्जन हुआ वह निम्नलिखित हैं -

काव्य-कृतियाँ: चित्राधार, कानन-कुसुम, प्रेम-पथिक, महाराणा का महत्व, करूणालय (गीति-नाट्य), आँसू, झरना, लहर, कामायनी.

नाटक : सज्जन, कल्याणी-परिणय, प्रायश्चित, राज्यश्री, विशाख, कामना, अजातशत्रु, जनमेजय का नागयज्ञ, स्कन्दगुप्त, चन्द्रगुप्त, ध्रुवस्वामिनी, एक घूँट.

उपन्यास : कंकाल, तितली और इरावती (अपूर्ण).

कहानी-संग्रह : छाया, प्रतिध्वनि, आकाशदीप, आँधी तथा इन्द्रजाल.

निबंध : काव्य और कला तथा अन्य निबंध.

प्रसाद जी की प्रमुख काव्य-कृतियों का परिचय इस प्रकार हैं —

- **झरना :**

  इसका प्रकाशन सन् 1918 में हुआ था. हिन्दी में छायावादी काव्य का प्रारंभ प्रसाद जी के 'झरना' संग्रह से होता है. अन्य काव्य संग्रह की भाँति इसमें भी प्रकृति का सुंदर वर्णन है. इसकी भाषा खड़ीबोली है, किन्तु कहीं कहीं ब्रजभाषा के शब्दों का प्रयोग भी हुआ है. इसमें कवि की निश्छल आत्माभिव्यक्ति, कोमल-कल्पना-विन्यास, प्रेम एवं सौंदर्य का सजीव अंकन, प्रकृति का मानवीकरण आदि इस संग्रह की कविताओं की प्रमुख विशेषताएँ हैं.

- **आँसू :**

  'आँसू' का पहला संस्करण सन् 1925 में तथा दूसरा संस्करण सन् 1933 में निकला. दूसरे संस्करण में प्रसाद जी ने पर्याप्त परिवर्तन किए हैं. यह विप्रलंभ काव्य है. अतीत की संयोग-स्मृतियों में कवि भी रह-रहकर प्रवाहित हो उठते हैं. कवि दग्ध धरा

को अपनी प्रेम वेदना की कल्याणी शीतल ज्वाला देने को उत्सुक हो उठता है. भावों की मृदुलता, भाषा का माधुर्य, उक्ति-वैचित्र्य, कल्पना की कोमलता तथा सुन्दर उपमाओं की योजना आदि 'आँसू' काव्य की मुख्य विशेषताएँ हैं. कल्पना तथा उपमा के समन्वय का एक दृश्य यहाँ दृष्टव्य है –

'शशि मुख पर घूँघट डाले, अंचल में दीप छिपाए.
जीवन की गोधूलि में, कौतूहल-से तुम आए.'

'आँसू' के सम्बन्ध में शुक्ल जी लिखते हैं ''अभिव्यंजना की प्रगल्भता और विचित्रता के भीतर प्रेम वेदना की दिव्य विभूति का, विश्व में उसके मंगलमय प्रभात का, सुख और दु:ख दोनों को अपनाने की उसकी अपार शक्ति का और उसकी छाया में सौंदर्य और मंगल के संयम का भी आभास मिलता है. 'नियतिवाद' और 'दु:खवाद' का विलक्षण स्वर भी सुनाई पड़ता है.''

- **कामायनी :**

'कामायनी' में प्रसाद जी की काव्य साधना का चरमोत्कर्ष दिखता है. यह उनकी अंतिम कृति है, किन्तु हिन्दी साहित्य में शीर्ष स्थान पर विराजमान इस काव्य ने उन्हें अमरत्व प्रदान किया. 'कामायनी' आधुनिक हिन्दी साहित्य का सर्वश्रेष्ठ महाकाव्य है. इसमें आदि मानव मनु की कथा के माध्यम से मानव मन के विकास का वर्णन है. 'कामायनी' का आरंभ प्रलयकालीन वातावरण से हुआ है –

'हिमगिरि के उत्तुंग शिखर पर, बैठ शिला की शीतल छाँह,
एक पुरूष, भीगे नयनों से, देख रहा था प्रलय-प्रवाह.'

'कामायनी' का नायक मनु है और नायिका श्रद्धा है. इसमें इडा का चरित्र भी महत्त्वपूर्ण है. ये पात्र ऐतिहासिक होने के साथ-साथ सांकेतिक अर्थ की भी अभिव्यक्ति करते हैं. यह एक रूपक काव्य है, जिसमें प्रसाद जी की विराट प्रतिभा का परिचय मिलता है. 'कामायनी' का मूल आधार शैव-दर्शन का आनन्दवाद है. इस कथा में हम पाते हैं कि किस प्रकार मन चिन्ता को छोड़कर श्रद्धा, काम, वासना, धर्म, लज्जा, ईर्ष्या, इडा, स्वप्न, संघर्ष, निर्वेद, दर्शन और रहस्य की भूमिकाओं को पार करता हुआ अंत में आनंद को प्राप्त करता है. यह आनन्द निजानंद है; इच्छा, क्रिया और ज्ञान के सामंजस्य से पूर्ण मन:स्थिति इसकी भूमिका है, यह आनंद समरसता का पर्याय है –

'स्वप्न, स्वाप, जागरण भस्म हो इच्छा क्रिया ज्ञान मिल लय थे,
दिव्य अनाहत पर निनाद में श्रद्धायुत मनु बस तन्मय थे.'

'कामायनी' में समरसता जैसे उदात्त सिद्धान्त की स्थापना के माध्यम से कवि ने समस्त युग को संदेश दिया है.

निष्कर्षत: प्रसाद जी के काव्य-संसार के विहंगावलोकन के पश्चात् हम डॉ. प्रेमशंकर के

इस कथन से सहमत होते हैं –

कवि 'प्रसाद' ने परम्परा का अनुकरण न करते हुए भी उसमें योग दिया. उन्होंने स्वयं प्राचीन का एक नवीन संस्करण ही प्रस्तुत किया. 'कामायनी' विश्व के महाकाव्यों में एक आगामी चरण है. 'आँसू' विरह काव्यों में 'मेघदूत' के समीप रखा जा सकता है. दीर्घ काव्य-परंपरा के होते हुए भी जिस समय कवि ने पदार्पण किया, उसके सम्मुख एक विचित्र समस्या थी. उसने महान कलाकारों की भाँति अपने नवीन पथ का निर्माण किया. 'प्रसाद' प्राचीन परिपाटी और स्वच्छन्दतावाद के संगम रूप में हिन्दी में प्रतिष्ठित हैं. युग-कवि रूप में उन्होंने आस-पास बिखरी हुई सामग्री का उपयोग किया. छायावाद की समस्त विभूति उनके काव्य में प्रस्फुरित हुई है.

10.4 प्रसाद की काव्यगत विशेषताएँ :

छायावादी काव्य आधुनिक हिन्दी कविता की सर्वप्रमुख काव्य-धारा है. छायावादी काव्य में मुख्यतः प्रेम-सौन्दर्य भावना, प्रकृति का मानवीकरण, नारी की महत्ता, श्रृंगारिकता, आध्यात्मिकता, रहस्यवादिता, अनुभूतिपरक सुख दुःख का निरूपण, अभिव्यंजना में प्रतीकात्मकता, लाक्षणिकता, मूर्तिमत्ता, संगीतात्मकता आदि तत्त्व पाए जाते हैं.

प्रसाद के काव्य में छायावाद की सभी विशेषताएँ देखने को मिलती हैं. वे छायावादी काव्य-धारा के प्रतिनिधि कवि हैं.

1 सौन्दर्य दर्शन :

प्रसाद जी ने प्रेम साधना के पथ में प्रकृति को अपना बडा आधार बनाया है. कवि ऐहिक वासना या भौतिकता में मग्न न होकर चराचर जगत के कण-कण में व्याप्त अव्यक्त सत्ता के दर्शन भी करता है. उसकी अलौकिकता को देखकर कवि के मन में यह प्रश्न उठता है कि –

'तृण वीरूध लहलहे हो रहे, किसके रस में खिंचे हुए ?
सिर नीचा कर किसकी सत्ता, सब करते स्वीकार यहाँ ?

2 रहस्यवादिता :

आचार्य रामचंद्र शुक्ल लिखते हैं – 'चिन्तन के क्षेत्र में जो अद्वैतवाद है, भावना के क्षेत्र में वही रहस्यवाद है.'

प्रसाद के काव्य में कई रहस्यवादी अवस्थाओं का वर्णन मिलता है. 'कामायनी' में रहस्यवादी तत्व का आधिक्य है. इसके अतिरिक्त 'झरना', 'लहर' और 'आँसू' में भी रहस्यवादी संकेत मिलते हैं. प्रसाद जी को सृष्टि के कण-कण में उस अनन्त शक्ति का महत्व दीख पड़ता है –

'विश्वदेव सविता या पूषा, सोम, मरूत चंचल पवमान,
वरूण आदि सब घूम रहे हैं, किसके शासन में अम्लान ?'

3 अनुभूत सुख दुःख का निरूपण :

व्यक्ति अपने चेतना के विकास एवं आंतरिक संवेदना की व्यापकता के आधार पर जीवन को अनुभव करता है. छायावादी कवियों की ये अनुभूतियाँ प्रारंभ में वैयक्तिक रही किन्तु उनके परिपक्व समय में वे विस्तृत होकर सृष्टि तक पहुँच जाती हैं. प्रसाद जी की 'कामायनी' में हम कवि के स्वानुभव को सुखात्मक और दुःखात्मक दोनों ही रूप में देखते हैं –

'दुःख की पिछली रजनी बीच, विकसता सुख का नवल प्रभात,
एक यह परदा झीना, छिपाये हैं जिससे सुख गात.'

4 श्रृंगारिकता :

छायावादी काव्य सृजन का आधार है 'रति' भाव. 'कामायनी' के सर्गों तथा 'आँसू' काव्य में कवि का यही भाव मुखरित हुआ है. प्रिय वियोग की पीडा दुर्दिन में आँसू बनकर बरस पडती है. इसमें कवि की छायावादी विचारधारा का मूर्त रूप व्यक्त हुआ है. कवि के संयोग क्षणों की मादकता यहाँ दृष्टव्य है –

कोमल बाँहें फैलाये सी, आलिंगन का जादू पढ़ती.
'उठ–उठ रो लोल लहर. करूणा की नित अँगडाई सी'

प्रसाद जी की छायावादी शैली में भाव–साम्य, आकृति–साम्य, रंग–साम्य आदि के सौंदर्य भी देखने को मिलते हैं –

'उधर गरजती सिन्धु लहरियाँ कुटिल काल जालों सी,
चली आ रही फेन उगलती फन फैलाये व्यालों सी.'

(आकृति–साम्य)

5 नारी की महत्ता :

कवि का नारी के प्रति केवल वासनात्मक दृष्टिकोण न होकर; समर्पण, सेवा, अगाध विश्वास, ममता, बलिदान, दया, माया आदि का स्रोत माना है. नारी के लिए उनका दृष्टिकोण मानवतायुक्त और उदारतावादी है. नारी के लिए 'कामायनी' की ये पंक्तियाँ उसके आत्मिक गौरव को बखूबी प्रस्तुत करती है –

'नारी तुम केवल श्रद्धा हो
विश्वास रजत नग पग तल में.
पीयूष स्रोत सी बहा करो.
जीवन के सुन्दर समतल में.'

6 प्रकृति का मानवीकरण :

प्रसाद जी ने अपनी कविता में प्रकृति के मनोरम दृश्यों का सुंदर चित्रण किया है. प्रकृति

मानव के सुख-दुःख की सहचरी लगती है. वे प्रकृति पर मानवीय भावनाओं का आरोपण करते हुए कहते हैं -

'पगली हाँ सँभाल ले कैसे छूट पड़ा तेरा अंचल ?
देख बिखरती है मणि राजी, अरी उठा बेसुध चंचल.
फटा हुआ था नील वसन क्या, ओ यौवन की मतवाली.
देख अकिंचन जगत लूटता, तेरी छवि भोली भाली.'

- **प्रसाद की शिल्पगत विशेषताएँ :**

1 **प्रतीकात्मकता :**

प्रतीकों का प्रयोग प्राचीन काल से कवि करते आए हैं, किन्तु प्रतीकों का जितना अधिक प्रयोग छायावादी कवियों ने किया उतना अन्य कवियों ने नहीं. प्रसाद ने अपनी कविता में प्रमुखतः प्रतीकों का चयन प्रकृति के विविध उपादानों से किया है, जिसके द्वारा वे अपनी सफल अभिव्यक्ति करते हैं. प्रसाद जी ने कविता में भाव साम्य के लिए चन्द्रमा, क्षितिज, मुक्ता, नीलम की प्याली, कमल आदि प्रतीकों का प्रयोग किया है. मिलन और विरह, सौन्दर्य तथा निर्दयता सभी का अंकन कवि ने प्रतीकों के माध्यम से किया है -

किसलय नव कुसुम बिछाकर आये तुम इस क्यारी में.

यहाँ 'पतझड़' कवि हृदय की शुष्कता एवं अभाव का प्रतीक है, 'सूखी सी फुलवारी' कवि के तत्कालीन 'नीरस हृदय' का प्रतीक है. 'किसलय नव कुसुम' प्रियतम की कोमल-मधुर भावनाओं एवं सहृदयता का प्रतीक है तथा 'क्यारी' कवि का हृदय है, जहाँ प्रियतम ने प्रवेश किया है. यहाँ 'आँसू' काव्य की इन पंक्तियों में ही नहीं किन्तु प्रसाद जी के समग्र काव्य में प्रतीकों का प्रयोग हुआ है.

2 **लाक्षणिकता :**

लाक्षणिकता का संबंध लक्षणा शब्द-शक्ति से हैं मुख्यार्थ से बाधित होने पर मुख्यार्थ से संबद्ध किसी अन्य अर्थ का बोध होता है. अभिधा की अपेक्षा व्यंजना को प्रसाद जी ने अधिक महत्व दिया है, जैसे -

'इस करूणा कलित हृदय में अब विकल रागिनी बजती.
क्या हाहाकार स्वरों में वेदना असीम गरजती ?'

यहाँ 'रागिनी' तथा 'गरजती' शब्द लाक्षणिक हैं. यहाँ लक्षणा से हमें वेदना की तीव्रता का अर्थ ग्रहण करना होगा. प्रसाद जी अनेक स्थानों पर परस्पर विरोधी तत्वों का समन्वय करके अर्थ में चमत्कार उत्पन्न करने में सफल हुए हैं -

'इस जलते हुए हृदय की कल्याणी शीतल ज्वाला.'

3 छंद-वैविध्य :

उनके काव्य की अनुपम विशेषता है छंद-वैविध्य. छन्द कवि के भावों का अनुगमन करते हैं. कवि ने प्राचीन छंदों के साथ-साथ अनेक नवीन छन्दों का भी निर्माण किया है. कहीं-कहीं उन्होंने मुक्त-छन्द का प्रयोग भी किया है, जैसे – 'पेशोला की प्रतिध्वनि'.

4 अलंकार :

कवि ने परंपरागत अलंकारों के साथ-साथ मूर्त के लिए अमूर्त का और अमूर्त के लिए मूर्त का विधान किया है, जिसमें कवि ने पूर्णता का परिचय दिया है. खग कुल के कलरव में उन्हें प्रेम संगीत की अलौकिक ध्वनि सुनाई पडती हैं. प्रकृति उनके लिए सजीव सुन्दरी के समान हैं, प्रसाद जी लिखते हैं –

'उषा सुनहले तीर बरसती जयलक्ष्मी-सी उदित हुई.
उधर पराजित काल रात्रि भी जल में अंतर्निहित हुई.'

5 संगीतात्मकता:

छायावादी काव्य में गीत-काव्य के लगभग सारे तत्व जैसे गेयता, संक्षिप्तता, आत्माभिव्यंजना, भाषा की मसृणता आदि मिलते हैं. प्रसाद की कविता में गेयता, लयात्मकता, ध्वन्यात्मकता, गतिशीलता, संगीतात्मकता के साथ-साथ चित्रात्मकता भी देखने को मिलती है –

'नील परिधान बीच सुकुमार, खुल रहा मृदुल अधखुला अंग.
खिला हो ज्यों बिजली का फूल, मेघ वन बीच गुलाबी रंग.

— 'कामायनी'

प्रसाद जी का काव्य 'आँसू' गीतिकाव्य का अनूठा उदाहरण है. इसके सभी प्रगीतों में संगीत-तत्व प्रचुर मात्रा में विद्यमान है —

'मुरली मुखरित होती थी मुकुलों के अधर विहँसते,
मकरंद भार से दबकर श्रवणों में स्वर जा बसते.'

निष्कर्षत: हम कह सकते हैं कि श्री जयशंकर प्रसाद अपने काव्य में छायावाद की अभिव्यक्ति में पूर्ण सफल हुए हैं. उनकी कविता की उपर्युक्त विशेषताओं से छायावादी कविता और अधिक मुखर हो उठी हैं.

बोध प्रश्न :

(1) हिन्दी में छायावादी काव्य का प्रारंभ प्रसाद के किस संग्रह से माना जाता है?

(2) आधुनिक हिन्दी साहित्य का सर्वश्रेष्ठ महाकाव्य कौनसा है?

(3) 'नियतिवाद और दु:खवाद' का विलक्षण स्वर प्रसाद की किस रचना में सुनाई पडता है?

(4) 'चिन्तन के क्षेत्र में जो अद्वैतवाद हैं, भावना के क्षेत्र में वही रहस्यवाद'- यह कथन किसका है?

(5) 'झरना' का प्रकाशन कब हुआ था?

10.5 बीती विभावरी जाग री : काव्यपाठ, विश्लेषण और व्याख्या

बीती विभावरी जाग री !
अम्बर पनघट में डुबो रही -
तारा-घट ऊषा नागरी.
खग-कुल कुल कुल सा बोल रहा,
किसलय का अंचल डोल रहा,
लो यह लतिका भी भर लाई -
मधु मुकुल नवल रस गागरी.
अधरों में राग अमन्द पिये,
अलकों में मलयज बन्द किये -
तू अब तक सोई है आली !
आँखों में भरे विहागरी !

- **'बीती विभावरी जाग री!' कविता का विश्लेषण :**

  प्रस्तुत कविता में श्री जयशंकर प्रसाद कहते हैं कि -

  हे सखि तू जाग! रात्रि का प्रहर बीत गया है और आकाश रूपी पनघट में ऊषा (सुबह) रूपी नायिका तारों रूपी घडों को डुबो रही है.

  पक्षियों का समूह कल-कल ध्वनि से भोर का गीत गा रहा है, प्रकृति का नये-नये कोमल पत्तों से भरा आँचल लहरा रहा है.

  हे सखि! अब तो यह लतिका (बेला) भी अपने अंदर पराग रूपी शहद से नवीन रस की गगरी भर लायी है.

  होंठों में उग्रता रूपी राग पीकर, बालों में चंदन की सुगंध बांधकर, आँखों में वियोग का गीत भरकर अरी! तू अब तक सोई है री!

- **'बीती विभावरी जाग री !' कविता की व्याख्या :**

  संदर्भ : प्रस्तुत कविता छायावाद के प्रतिनिधि कवि श्री जयशंकर प्रसाद द्वारा रचित प्रसिद्ध काव्य संग्रह 'लहर' से ली गई है. कवि ने इस कविता में प्रकृति के रमणीय पक्ष को लेकर सुंदर मधुर रूपकमय गान प्रस्तुत किया है. यह गान इतना सुंदर और मनोरम है कि प्रकृति हमारे सामने जीवंत हो उठती है. कविता में प्रकृति का मानवीकरण रूप सहजता से उभरकर सामने आया है. यहाँ कवि ने रात्रि की समाप्ति के बाद भोर की बेला में प्रकृति के कार्य-व्यापार का अपनी कल्पना के सहारे शब्दों के माध्यम से सुंदर चित्रण किया है.

  व्याख्या : रात्रि बीत चुकने पर सूर्य की किरणें नभोमंडल और सृष्टि पर धीरे-धीरे अपने उजाले में निराकार जगत को आकार प्रदान करती हैं. धीरे-धीरे आकाश में

चन्द्रमा और तारे छिप जाते हैं. पक्षी प्रातः बेला में चहकने लगते हैं, भँवरे गुँजन करने लगते हैं, पेड़ पर आने वाली कोंपलें हवा में लहराने लगती हैं. फूलों की सुगंध से पूरा वातावरण महक उठता है. कलियाँ पूर्ण रूप से खिलकर मधु से आपूरित हो उठी हैं. ऐसी सुंदर बेला में एक सोयी हुई सखी को देखकर दूसरी सखी कहती हैं –

हे सखि! अब रात्रि बीत चुकी है. तू जाग और देख चारों ओर प्रातः कालीन बेला कितनी सुंदर दिखाई पड़ रही हैं धीरे-धीरे तारे विदा हो रहे हैं और आकाश साफ हो रहा है. पक्षी भी घोंसलो से निकलकर मधुर कलरव कर रहे हैं, कलियाँ खिलकर पुष्प में रूपांतरित होकर शाखाओं पर पत्तों के दलों में झूलकर चारों ओर अपनी सुवास बिखेर रही हैं. साथ-साथ यह लतिका भी अपने भीतर नवीन रस की गगरी भरकर पराग की मीठी सुवास फैला रही हैं. अपने अधरों में तीव्र राग पिये तुम मलयाचल से आने वाली चंदन की सुंगध को अपने बालों में बाँधकर हे सखि! तू अब सोई हुई हैं! और अभी भी तुम्हारी आँखों में खुमारी छाई हुई हैं!

प्रसाद जी ने उषा रूपी नायिका के आगमन से अंधकार की भयावहता की समाप्ति और समस्त चेतन सृष्टि में हो रही हलचल का सुंदर चित्रण किया है. कवि 'कामायनी' में उषा को 'जयलक्ष्मी' कहकर संबोधित करता है, मगर यहाँ उसका रूप सुप्त चेतना को जागृति प्रदान करता है. उषा के स्वागत में पूरी सृष्टि आह्लादित हो उठती है. कवि सोई हुई नायिका को संबोधित करते हुए कहते हैं कि किसी को भी अपने भीतर के दुःख में, प्रमाद में पडे रहने का अधिकार नहीं है, सारी सृष्टि की चेतना जाग गई है और हे सखि तू अब तक सोई हैं! कवि भारतीय जनमानस को गुलामी के अंधकार से बाहर निकालकर स्वतंत्रता के उजाले के स्वागत के लिए जगा रहा है. कवि की स्वानुभूति पूर्ण ऊर्जा से सहृदय पाठक भी अभिभूत हो जाता है.

- **बोध प्रश्न :**

(1) 'बीती विभावरी जाग री!' कविता प्रसाद जी के किस काव्य संग्रह से ली गई है?

(2) प्रसाद ने कामयानी में उषा को .... कहकर संबोधित किया है.

(3) 'बीती विभावरी जाग री!' में किस गुण की प्रधानता है ?

(4) नायिका ने अपने बालों में .... को बाँध लिया है.

(5) लतिका क्या भर लाई है ?

10.6 'हिमाद्री तुंग श्रृंग से' : काव्यपाठ, विश्लेषण और व्याख्या

हिमाद्री तुंग श्रृंग से
प्रबुद्ध शुद्ध भारती –
स्वयं प्रभा समुज्ज्वला
स्वतन्त्रता पुकारती –
अमर्त्य वीर पुत्र हो, दृढ़-प्रतिज्ञ सोच लो,
प्रशस्त पुण्य पंथ है, बढ़े चलो, बढ़े चलो.
असंख्य कीर्ति-रश्मियाँ,
विकीर्ण दिव्य दाह-सी.

सपूत मातृभूमि के –
रूको न शूर साहसी !
अराति सैन्य सिन्धु में – सुवाड़वाग्नि-से जलो,
प्रवीर हो जयी बनो – बढ़े चलो, बढ़े चलो !

- **'हिमाद्री तुंग श्रृंग से' कविता का विश्लेषण :**

  प्रस्तुत कविता में श्री जयशंकर प्रसाद कहते हैं कि हे भारतीयों! हिमालय के उन्नत शिखर से प्रबुद्ध एवं शुद्ध सरस्वती, जो अपने प्रकाश से दीप्त एवं सदैव स्वतंत्र रहने वाली है, वह पुकार-पुकार कर कह रही है कि तुम देवताओं की अमर वीर सन्तान हो. वे यदि दृढ़-प्रतिज्ञ होकर चिंतन करें तो उन्हें विदित होगा कि 'पुण्य-पंथ' कितना प्रशस्त है, अत: उन्हें इस पथ पर अग्रसर रहना चाहिए.

  उनकी यश रूपी असंख्य किरणें दिव्य ज्वाला बनकर इस मार्ग को आलोकित करती रहेगी. अत: हे मातृभूमि के सुपुत्रों! शूरवीर साहसी, तुम्हें रूकना नहीं है.

  शत्रुओं की सेना रूपी सागर में बड़वानल बनकर धधक पडो. हे उत्तम वीर! विजयी बनो और कर्तव्य पथ पर निरंतर बढते चलो.

- **हिमाद्री तुंग श्रृंग से' कविता की व्याख्या :**

  संदर्भ : श्री जयशंकर प्रसाद द्वारा रचित यह प्रसिद्ध गीत 'चंद्रगुप्त' नाटक के चतुर्थ अंक के छठे दृश्य में अलका तथा नागरिकों द्वारा समवेत स्वर में गाया गया है. नाटक की नायिका अलका राजक्रान्ति की ज्वलन्त चिनगारी है. इस गीत द्वारा वह जन-मन में उत्साह जगाती है, उनका नेतृत्व करती है. नाटककार प्रसाद का सामाजिक हृदय इस गीत में मुखरित हो उठा है. भारतीयता की पुकार एवं नवयुग की चेतना गीत का प्राण है.

  व्याख्या : प्रस्तुत कविता में भारतीयों की सुप्त-चेतना को जगाते हुए कवि कहता है कि हिमालय के उन्नत शिखर से प्रबुद्ध तथा शुद्ध सरस्वती, जो स्वयं के प्रकाश से प्रकाशमान एवं सदैव स्वतंत्र रहने वाली है, उन्हें पुकार-पुकार कर यह कह रही है कि हे देवताओं की वीर संतानो! युद्धक्षेत्र में शत्रु से संघर्ष करते-करते अपने प्राणों का विसर्जन कर देना ही आपका कर्तव्य है. आप यदि दृढ़-प्रतिज्ञ होकर चिन्तन करोगे तो विदित होगा कि 'पुण्य-पंथ' (कर्तव्य-पथ) कितना प्रशस्त एवं व्यापक है ! इस मार्ग पर चलने का सौभाग्य सभी को प्राप्त कैसे हो सकता है ? अत: हे वीर ! तुम इस पथ पर निरंतर आगे बढते रहो, यही शोभनीय है. यश रूपी असंख्य किरणें दिव्य ज्वाला बनकर उनके मार्ग को सदैव प्रकाशित करती रहेगी. इसलिए मातृभूमि के इन सुपुत्रों एवं शूरवीरों को अपने कर्तव्य से कदापि विचलित नहीं होना है, अपनी गति एवं ऊर्जा में निरन्तर वृद्धि करते रहना है. यदि शत्रु-सेना सागर की तरह उन्हें बहाने की चेष्टा करें तो भी उन्हें भयभीत नहीं होना चाहिए. उन्हें उस सागर में बड़वानल बनकर धधक पड़ना चाहिए, जिससे शत्रु-सेना भस्मीभूत हो जाय और विजय-श्री उनके चरण-स्पर्श करने को बाध्य हो जाए. कवि का संदेश हैं कि श्रेष्ठ वीर सदैव कर्तव्य की राह में बढ़ते चले जाते हैं और अंतत: विजय को प्राप्त होते हैं.

- **बोध प्रश्न :**

  (1) 'हिमाद्री तुंग श्रृंग से' कविता प्रसाद जी की किस रचना से ली गई है ?

(2) 'हिमाद्री तुंग श्रृंग से' में प्रधानतः किस .... भावना का वर्णन है.

(3) शत्रुओं की सेना रूपी सागर में किस रूप में धधक पड़ने का संदेश 'हिमाद्री तुंग श्रृंग से' कविता में कवि देते हैं ?

(4) 'चंद्रगुप्त' नाटक की नायिका कौन है ?

10.7 सारांश :

- प्रसाद जी की कविता पर अद्वैत वाद, बौद्ध-दर्शन, रविन्द्र विचारधारा, उदात्त भावपूर्ण वेद एवं उपनिषद साहित्य तथा भारतीय संस्कृति चेतना का प्रभाव लक्षित होता है.
- प्रसाद जी ने हिन्दी जगत को कहानी, उपन्यास, नाटक, महाकाव्य, काव्य-संग्रह, निबंध की भेंट देकर प्राणवान और समृद्ध बनाया.
- छायावादी काव्य की सभी विशेषताएँ प्रसाद के काव्य में श्रेष्ठता के साथ पायी जाती है.
- प्रसाद की कविता में भाषा के अनुरूप छंदों का चयन, शैली संबंधी एक विशिष्ट गुण है.
- सोनेट (अंग्रेजी) छंद और 'पयार' (बँगला) छंद, त्रिपदी आदि का सफल प्रयोग हुआ है.
- प्रसाद जी की भाषा में स्निग्धता, कोमलता तथा प्रसाद गुण है. उनका पद्य आनन्ददायी, ओजस्वी और स्फूर्तिदायक है, जो उनकी भाषा का प्रधान गुण है.

10.8 परीक्षोपयोगी प्रश्नावली :

- **दीर्घ उत्तरीय प्रश्न :**

1. प्रसाद का जीवन परिचय और कृतित्व लिखिए.
2. प्रसाद की काव्यगत विशेषताओं को विस्तार से समझाइये.

- **लघु उत्तरीय प्रश्न :**

1. प्रसाद की किन्हीं दो काव्य-कृतियों का सामान्य परिचय लिखिए.
2. 'बीती विभावरी जाग री' कविता का भावार्थ अपने शब्दों में लिखिए.
3. 'हिमाद्री तुंग श्रृंग से' कविता का भावार्थ अपने शब्दों में लिखिए.

- **टिप्पणी लिखिए :**

1. प्रसाद की शिल्पगत विशेषताएँ
2. प्रसाद और उनका काव्य

- **वस्तुनिष्ठ प्रश्न :**

- रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए.

1. प्रसाद के काव्य में विश्व - कल्याण की व्यापकता .... दर्शन के प्रभाव से मिलती है. (बौद्ध / शैव)
2. .... पत्रिका के नामकरण और योजना में प्रसाद जी का महत्वपूर्ण योगदान था. (हंस / इन्दु)

3. कामायनी का आरंभ .... से हुआ है. (प्रलयकारी वातावरण / श्रद्धा-मनु की वार्तालाप)

4. 'सॉनेट' छंद .... का है. (बंगला / अंग्रेजी)

5. प्रसाद का .... उपन्यास अपूर्ण है. (इरावती / तितली)

- सही के सामने ✓ और गलत के सामने ✕ का निशान लगाइए.

1. प्रसाद ने उपनिषद - दर्शन से रहस्यवाद की प्रेरणा ली थी. ( )
2. प्रसाद जी की काव्य - साधना का आरंभ ब्रजभाषा से हुआ. ( )
3. आकाशदीप प्रसाद जी का प्रसिद्ध काव्य-संग्रह है. ( )
4. आँसू एक विरह काव्य है. ( )
5. 'बीती विभावरी जाग री' कविता में राष्ट्रीय जागरण के स्वर दिखाई पडते हैं. ( )

10.9 संदर्भ सूची :

- जयशंकर प्रसाद — नंददुलारे वाजपेयी
- प्रसाद का काव्य — प्रेमशंकर
- https://en.m.wikipedia.org `wiki' Hind-literature
- https://openlibrary.org `subject' Hindi-literature

इकाई 11 : सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'

रूपरेखा

11.1 उद्देश्य

11.2 प्रस्तावना

11.3 निराला का जीवन-परिचय

11.4 निराला का रचना संसार

11.5 निराला की काव्यगत विशेषताएँ

11.6 हिंदी साहित्य में निराला का योगदान

11.7 काव्य पाठ और विश्लेषण

11.7.1 वर दे वीणा वादिनी वर दे

11.7.2 राजे ने अपनी रखवाली की

11.8 सार बिंदु

11.9 परीक्षोपयोगी प्रश्नावली

11.10 संदर्भ सूची

11.1 उद्देश्य

प्रस्तुत इकाई में सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' की कविताओं 'वर दे वीणावादिनी वर दे' तथा 'राजे ने अपनी रखवाली की' पर विचार किया गया है, साथ ही इस इकाई को पढ़ने के बाद आप निरालाजी के –

1. जीवन और साहित्य से परिचित हो सकेंगे, साथ ही उनको मिले पुरस्कार और सम्मान की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे.
2. काव्यगत विशेषताओं को जान सकेंगे.
3. हिंदी साहित्य में उनके योगदान को समझ पाएंगे.
4. छायावादी सौन्दर्य के बारे में जान सकेंगे.
5. निराला की काव्यभाषा के विविध रूपों को देख सकेंगे.

11.2 प्रस्तावना

भारतेंदु युग की कविता ब्रजभाषा के मोह से उबर नहीं पायी थी. लेकिन द्विवेदी युग के पुरोधा महावीरप्रसाद द्विवेदी जी की प्रेरणा से रचनाकार ब्रजभाषा के कलेवर को छोड़कर खड़ीबोली में लिखने लगे थे. छायावादी कवि निराला मूलतः बांगला से हिंदी में आये थे. वे यह भी जानते थे कि समग्र भारतीय भाषाओं का उत्स संस्कृत भाषा ही है. इसलिए वे कविता लिखते समय आभिजात्य, देशज एवं जन सामान्य की काव्यभाषा का प्रसंगोचित उपयोग करते थे. इसीलिए कुछ आलोचक 'वर दे वीणावादिनी वर दे' कविता को छायावादी सौन्दर्य की मानते हैं. 'राजे ने अपनी रखवाली की' कविता में निराला समझ

गये थे की अंग्रेज भारत छोड़कर चले जायेंगे लेकिन अंग्रेजों की मानसिकता वाले लोग यहाँ शासन करेंगे. दोनों कविताएँ क्रमश: 'गीतिका' और 'नये पत्ते' से ली गयी हैं.

11.3 जीवन-परिचय

छायावाद के प्रमुख कवि महाप्राण निराला का जन्म सन् 1896 की बसंत पंचमी को महिषादल (मेदिनीपुर जिला, बंगाल) में हुआ था. उनके पिता का नाम पं. राम सहाय त्रिपाठी था. वे महिषादल में राज कर्मचारी थे. यही कारण था कि बचपन में निराला जी का पालन पोषण, शिक्षा आदि राजपुत्रों के साथ ही सम्पन्न हुई. तीन वर्ष की छोटी उम्र में ही उनकी माँ उन्हें सदा के लिए छोड़कर देवलोक धाम सिधार गई थी. माँ के स्नेह व ममता से वंचित बालक प्रारम्भ से ही कष्टों को झेलने व संघर्ष करने का आदी हो गया था. आत्मनिर्भरता व विपत्तियों का सामना करने की क्षमता का संचार भी इसी का परिणाम है. रामसहाय जी स्वभाव से रुक्ष व कठोर थे. उनकी प्रकृति अधिकार तथा अनुशासन रखने की थी. अत: मातृविहीन पुत्र को अधिकांशत: पिता के क्रोध का सामना करना पड़ता था. स्वयं निरालाजी का कथन हैं कि -''मारते वक्त पिता जी इतने तन्मय हो जाते थे कि भूल जाते थे कि वे दो विवाह के बाद पाए हुए इकलौते पुत्र को मार रहे हैं.'' डॉ. राम विलास शर्मा कहते हैं कि ''निराला के व्यक्तित्व में निर्भीकता और उद्दंडता कूट-कूट कर भरी थी. श्मशान और नगर में वह पूर्ण स्वच्छंदता से विचरते थे.'' उनका जन्म कान्यकुब्ज ब्राह्मणों की एक निम्न जाति में हुआ था, जिसे हीन दृष्टि से देखा जाता था. जातिगत हीनता की भावना भी उनकी विद्रोह वृत्ति को जाग्रत करने में सहायक हुई. 14 वर्ष की आयु में उनका विवाह सुंदर व गुणवती कन्या मनोहरा देवी के साथ संपन्न हुआ.

विवाह के बाद उन्होंने अपनी विदुषी पत्नी और 'सरस्वती' पत्रिका की प्रतियों के द्वारा हिंदी भाषा का ज्ञान प्राप्त किया. मूलत: बंगाली के कवि को हिंदी का कवि बनाने में उनकी पत्नी का महत्वपूर्ण योग रहा है. 21 वर्ष की अल्पायु में ही उनकी पत्नी का देहावसान हो गया. इस घटना ने उनकी लौकिक श्रृंगार की भावना को दिव्य श्रृंगार की ओर प्रेरित किया. 'जूही की कली' रचना इसी का परिणाम है. परिवारजनों की आकस्मिक मृत्यु ने उन्हें आर्थिक संकट की ओर धकेला. पुत्री भी अल्पायु में ही चल बसी. पारिवारिक विपत्तियों के अलावा साहित्यिक क्षेत्र में भी वे आलोचना के शिकार हुए. उनके छन्दों का केंचुआ छंद, रबर छंद आदि कहकर उपहास किया गया. वे आजीवन दुख सहते रहे. निराला के व्यक्तित्व पर सर्वाधिक प्रभाव 'समन्वय' के सम्पादन-काल में स्वामी विवेकानंद व स्वामी रामकृष्ण परमहंस के विचारों का पड़ा. ''इनके व्यक्तित्व में परस्पर विरोधी तत्त्व पाए जाते हैं. इनके काव्य-संगीत में विषम स्वर झंकृत होते हैं. निराला एक साथ आत्मनिष्ठ हैं, वस्तुनिष्ठ हैं, कवि एवं योगी हैं, रहस्यवादी एवं यथार्थवादी हैं, छायावादी एवं प्रगतिवादी हैं, परम्परावादी एवं स्वच्छंदतावादी हैं.'' (सं. इन्द्रनाथ मदान - निराला पृ.11) हिंदी साहित्य के अप्रतिम एवं अद्वितीय साहित्यकार निराला जी का निधन 15 अक्टूबर सन 1971 को प्रयाग में हुआ.

11.4 निराला का रचना संसार

संघर्षशील एवं प्रतिभाशाली कवि निराला जी ने कविता, उपन्यास, कहानी, निबंध, रेखाचित्र, आलोचना आदि विविध विधाओं में अपनी लेखनी चलाई. किन्तु हिंदी साहित्य में उनकी पहचान कवि के रूप में बनी. आइये, हम निराला के रचना संसार पर एक दृष्टि करते हैं -

उपन्यास :-

अप्सरा (1931 ई.), अलका (1933 ई.), निरुपमा (1936 ई.), प्रभावती (1936 ई.), चोटी की पकड़, काले कारनामे (1950 ई.) आदि.

कहानी संग्रह :-

लिली (1934 ई.), देवी (1945 ई.), चतुरी चमार (1945 ई.), सुकुल की बीबी (1947 ई.)

प्रमुख कहानियाँ- चतुरी चमार, भक्त और भगवान, हिरणी, सुकुल की बीबी आदि.

निबन्ध संग्रह :-

प्रबंध पद्म (1934 ई.), प्रबंध प्रतिमा (1940 ई.), चाबुक (1942 ई.), संग्रह (1963 ई.) आदि.

रेखाचित्र :-

देवी, बिल्लेसुर बकरिहा, कुल्ली भाट (ये दो बड़े रेखाचित्र हैं).

आलोचना :-

रवीन्द्र कविता कानन (1929 ई.)

प्रमुख काव्य संग्रह :-

अनामिका (1923 ई.), परिमल (1930 ई.), गीतिका (1936 ई.), तुलसीदास (1939 ई.), कुकुरमुत्ता (1942 ई.), अणिमा (1943 ई.), बेला (1946 ई.), नये पत्ते (1946 ई.), अर्चना (1950 ई.), आराधना (1953 ई.), गीत गूंज (1953 ई.), सांध्य काकली आदि.

पत्र-पत्रिकाएँ :-

समन्वय, मतवाला का सम्पादन कार्य.

11.5 निराला की काव्यगत विशेषताएँ

निराला की काव्यगत विशेषताएँ निम्नवत हैं-

1. देश प्रेम की भावना –

कवि निराला के काव्य में देश प्रेम की भावना का स्वर गूंज उठा है. वह माता सरस्वती की वन्दना करते हुए कहते हैं कि हे माँ! देश को ऐसा वर दे कि चारों ओर स्वतन्त्रता की गूंज सुनाई पड़े. भारत का नव निर्माण हो -

वर दे वीणावादिनी वर दे

प्रिय स्वतंत्र-रव अमृत- मन्त्र नव

भारत में भर दे.

2. प्रकृति चित्रण –

प्रकृति प्रेम तो मानो छायावादी कवियों की पहचान हैं. फिर निराला उससे कैसे अछूते रह जाते. भारत देश का सुंदर चित्र अपनी कविता में प्रकृति के माध्यम से खींचते हुए कहते हैं -

तरु तृण वन लता वसन

अंचल में खचित सुमन

गंगा ज्योतिर्जल कण

धवल धार हार गले.

3. जनजागरण के स्वर –

निराला की कविताओं में जागरण के स्वर भी गुंजित हुए हैं. उन्होंने जनमानस को जगाने और उनमें आत्मविश्वास भरने का कार्य किया. प्रभात बेला के माध्यम से जागरण का आह्वान करते हुए कवि कहते हैं–

जागो फिर एक बार
प्यारे जगाते हुए हारे सब तारे तुम्हें
अरूण पंख तरूण किरण
खड़ी खोलती हैं द्वार.

देशवासियों को अपनी शक्ति का अहसास दिलाते हुए कहते हैं–

शेरों की मांद में
आया है आज स्यार
जागो फिर एक बार.

यहाँ स्यार अंग्रेजी शासन का और शेर भारतीय जन का प्रतीक हैं.

4. प्रगति चेतना –

निराला एक प्रगतिवादी कवि भी हैं. प्रगतिवाद के समस्त तत्त्व उनके साहित्य में समाहित हैं– 1. रूढ़ि–विरोध, 2. क्रांति या विद्रोह की भावना, 3. नारी चेतना, 4. साम्यवाद, 5. शोषितों के प्रति सहानुभूति की भावना, 6. वेदना और निराशा आदि.

वह तोड़ती पत्थर,
देखा मैंने उसे इलाहाबाद के पथ पर
वह तोड़ती पत्थर.

5. विद्रोह की भावना –

भारतीय स्वाधीनता आन्दोलन के दौर में निराला के काव्य में भी विद्रोह के तीव्र स्वर सुनाई पड़ते हैं जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में शोषण और परम्परागत रूढ़ियों का विरोध कवि की कविता का मूल भाव हैं.

अबे, सुन बे, गुलाब
भूल मत जो पायी खुशबू, रंगो आब,
खून चूसा खाद का तूने अशिष्ट
डाल कर इतरा रहा है कैपीटलिस्ट!
कितनो को तूने बनाया गुलाम
माली कर रक्खा, सहाय जाड़ा घाम.

6. काव्य भाषा -

छायावादी युग में भाषा के अंतर्गत कोमलता, नवीन शब्दों की मधुर योजना, प्रकृतिगत प्रतीकों का प्रयोग, लाक्षणिकता, संगीतात्मकता, चित्रात्मकता आदि विशेषताएँ देखने को मिलती हैं. -

१. कोमलता -

सभी छायावादी कवियों की भाषा में कोमलता का गुण विद्यमान हैं. गहन दार्शनिक

दृष्टि के कारण निराला की भाषा में यह गुण कम ही देखने को मिलता है, परन्तु सर्वथा इसका अभाव नहीं हैं–

कहाँ कनक–कोरों के नीरव,
अश्रुओं में भर मुस्कान,
विरह मिलन के एक साथ ही,
खिल पड़ते वे भाव महान.

२. **नवीन शब्दों की मधुर योजना** –

अली अलकों के तरल तिमिर में
किसकी लोल लहर अज्ञात
जिसके गूढ़ मर्म में निश्चल
शशि– सा सुख ज्योत्सना– सी गात?

३. **प्रकृतिगत प्रतीकों का प्रयोग** –

प्रकृति और उसके उपादानों का बड़ी ही कुशलता से प्रयोग निरालाजी ने अपने काव्य में किया हैं.

वहाँ नयनों में केवल प्रात,
चन्द्र– ज्योत्सना ही केवल गात.

यहाँ 'प्रात' शब्द स्फूर्ति का तथा 'चन्द्र ज्योत्सना' शब्द शांति का प्रतीक हैं.

४. **लाक्षणिकता** –

बहती जाती साथ तुम्हारे स्मृतियाँ कितनी
दग्ध चिता के कितने हाहाकार!

दग्ध चिता के हाहाकार और स्मृतियों का बहना में लाक्षणिकता का प्रयोग हुआ हैं.

५. **संगीतात्मकता** –

तुकबन्दी के संगीत को छोड़कर निराला जी ने लय आधारित संगीत को प्राथमिकता दी.

वह चली चतुर्दिक कर्मलीन
तुम भी निज तरुण तरंग खोल
नव– अरुण संग हो लो.

६. **चित्रात्मकता** –

निराला ने शब्दों के बल पर सुंदर भाव चित्र उकेरने का सफल प्रयास किया है.

दिवसावसान का समय
मेघमय आसमान से उतर रही हैं,
वह संध्या सुन्दरी परी–सी
धीरे – धीरे – धीरे.

७. **अलंकार योजना** –

1. शशि–सा मुख ज्योत्सना–सा गात. (उपमा)
2. तू किसी के चित्त की है कलिमा.

या किसी कमनीय की कमनीयता
या किसी दुखहीन की है आह तू. (संदेह)

८. **नाद व्यंजना -**

रखते ही पग, उर घर घर घर
कांप उठा वन में तरु मर्मर.

९. **छंद विधान -**

निराला ने अपने काव्य में मुक्त छंद का सफलतापूर्वक प्रयोग किया, जिसका साहित्य के क्षेत्र में रबर छंद, केंचुआ छंद कह कर विरोध किया गया.

फिर क्या? पवन
उपवन-सन-सरिता गहन गिरी कानन
कुञ्ज लता पुंजो को पार कर
पहुँचा जहाँ उसने की केलि
कली खिली साथ.

१०. **काव्य रूप -**

निराला की बहुआयामिता उनके काव्य रूपों में भी मिलती हैं. निराला ने खण्ड काव्य, गीति काव्य, तुकांत, अतुकांत, गेयात्मक दीर्घ एवं लघु काव्य रूपों का अभिनव प्रयोग किया है.

11.6 हिंदी साहित्य में निराला का योगदान

आधुनिक हिंदी साहित्य में स्वच्छन्द, निडर, विद्रोही और क्रांतिकारी कवि निराला मनुष्य मन की श्रेष्ठ रचना काव्य को मानते थे. वे काव्य में मुक्त छंद के प्रवर्तक हैं. उनका मानना था कि यदि भावों की अभिव्यक्ति सहजता से करनी हैं तो उसको छन्दों के बन्धनों से मुक्त करना होगा. वे खड़ी बोली हिंदी को राष्ट्रभाषा के रूप में मानते हैं. कवि समस्त सृष्टि पर ईश्वर की दृष्टी मानते हैं उनकी यह भावना ईश्वर के प्रति आस्था को मुखरित करने वाले गीतों में झलकती हैं. गीतिका, अनामिका, अणिमा, बेला, अर्चना, आराधना, गीतगूंज आदि में ईश्वरीय आस्तिक चेतना के स्पष्ट दर्शन होते हैं. माँ के लिए समर्पण के भाव भी उनके लघुगीतों में देखने को मिलते हैं. वे जननी को विश्व चेतना का प्रतीक मानते हैं. यह जननी, मातृभाषा हिंदी हैं. **रामविलास शर्मा** इस संदर्भ में कहते हैं- ''हिंदी भाषा निराला के लिए किसी देवी- देवता से अधिक पूज्य हैं...वह जननी है, माता और पिता की ज ननी हैं, अपनी और सब पूर्वजों की जन्मभूमि की वह भाषा हैं. निराला उस मातृभाषा की वन्दना कर रहे हैं''. (रामविलास शर्मा - निराला की साहित्य साधना-२)

उनके साहित्य में सामाजिक यथार्थ, आर्थिक पीड़ा, नारी-चित्रण, राष्ट्रीयता का स्वर आदि एक साथ परिलक्षित होते हैं. उन्होंने कई व्यंग्यात्मक कविताएँ भी लिखीं. इस प्रकार निराला ने भाव एवं शिल्प की दृष्टी से हिंदी साहित्य में अपना अप्रतिम योगदान दिया. हिंदी काव्य को अनेक नये रूप देने का महत्वपूर्ण कार्य किया.

बोध प्रश्न

1. निराला के छन्दों का क्या कहकर उपहास किया गया?
2. निराला के काव्य में प्रगतिवादी चेतना के स्वर को समझाइये.

रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए.

1. निराला मूलतः .... भाषा के कवि थे.
2. निराला की पत्नी का नाम .... था.
3. निराला एक साथ आत्मनिष्ठ है, वस्तुनिष्ठ हैं....... का कथन हैं.
4. निराला का निधन ...... में हुआ था.
5. बिल्लेसुर बकरिहा एक .... हैं.

11.7 काव्य पाठ और विश्लेषण

काव्य पाठ- 1

वर दे, वीणावादिनी वर दे!
प्रिय स्वतंत्र- रव अमृत- मन्त्र नव
भारत में भर दे!
काट अंध-उर के बंधन- स्तर
बहा जननी, ज्योतिर्मय निर्झर;
कलुष भेद तम- हर प्रकाश भर
जगमग जग कर दे!
नवगति, नव लय, ताल छंद नव,
नवल कंठ, नव जलद मंद्र रव,
नव नभ के नव विहग- वृन्द को
नव पर नव स्वर दे.

काव्य पाठ विश्लेषण

'वर दे वीणावादिनी वर दे' कविता निराला की प्रतिनिधि कविताओं में से एक है. यह भक्ति गीतों में भी परिगणित है. प्रस्तुत कविता में वीणावादिनी माता सरस्वती से प्रार्थना करते हुए कवि कहते हैं कि हे माँ! ऐसा वर दे कि मैं राष्ट्रीय जागरण के गीत गा सकूँ. कवि आगे कहते हैं मनुष्य मन को अज्ञानता के अन्धकार से मुक्त करके उसमें ज्ञान का प्रकाश प्रवाहित करो और हृदय में व्याप्त कलुषता के साथ-साथ सम्पूर्ण जगत का अन्धकार दूर करो.

प्रस्तुत कविता उस समय लिखी गयी थी जब सारे देश में आजादी की लहर चल रही थी. ऐसे माहौल में लिखी गयी इस कविता में नवीन गति, लय, ताल, छंद की बात करते हुए कवि सन्देश देता है कि स्वाधीनता का स्वर और अधिक तीव्र हो जाए जिससे कि आकाश रूपी इस राष्ट्र में पक्षी रूपी मनुष्यों को पंख रूपी आजादी मिले और चारों दिशाओं में स्वतंत्रता का नव-उद्घोष हो.

प्रस्तुत कविता ओज, प्रेरणा, राष्ट्रीय जन-जीवन में शक्ति और उमंग का संचार करती हैं. कवि निराला हमारे देश के लिए प्रेम और स्वतंत्रता का अमर वरदान मांगते हैं. वे समस्त विश्व से अज्ञान के अन्धकार को दूर करने की बात करते हैं. अभेद दर्शन एवं भावात्मक एकता के गुंजन से सामाजिक विषमता के भाव समाप्त हो ऐसी प्रार्थना करते हैं.

काव्य पाठ – 2

राजे ने अपनी रखवाली की;
किला बनाकर रहा;
बड़ी-बड़ी फौजें रखीं.
चापलूस कितने सामन्त आए.
मतलब की लकड़ी पकड़े हुए.
कितने ब्राह्मण आए
पोथियों में जनता को बाँधे हुए.
कवियों ने उसकी बहादुरी के गीत गाए,
लेखकों ने लेख लिखे,
ऐतिहासिकों ने इतिहास के पन्ने भरे,
नाट्य- कलाकारों ने कितने नाटक रचे
रंगमंच पर खेले.
जनता पर जादू चला राजे के समाज का.
लोक-नारियों के लिए रानियाँ आदर्श हुईं.
धर्म का बढ़ावा रहा धोखे से भरा हुआ.
लोहा बजा धर्म पर, सभ्यता के नाम पर.
खून की नदी बही.
आँख-कान मूँदकर जनता ने डुबकियाँ लीं.
आँख खुली-राजे ने अपनी रखवाली की.

काव्य पाठ विश्लेषण – 2

राजा की चिंता का मूल कारण हैं उसका शासन कैसे चलाया जाए? अर्थात् एक तरीका तो यह है कि वह जनता को दबाकर, डरा धमकाकर शासन करे, इसके लिए उसे अतिरिक्त फौज की जरूरत पड़ सकती है साथ ही वह लम्बे समय तक टिक नहीं सकता. दूसरा शांति से शासन करना, इसके लिए वह जनता को आकर्षित करने के लिए बड़े-बड़े आयोजन करें जिससे जनता की नजरों में उसकी एक आदर्श छवि बन जाएं. 'राजे ने अपनी रखवाली की' कविता के माध्यम से कवि बताते हुए कहते हैं कि किस प्रकार एक राजा (नेता) जनता का शोषण करता है और जनता चुपचाप सब कुछ आँख कान मूँदकर देखती रहती हैं. राजा अपनी रखवाली के लिए अर्थात अपना शासन सुचारू रूप से चलाने के लिए बड़े बड़े किले बनवाता है, सुरक्षा के लिए बड़ी-बड़ी फौजें रखता है, अपनी राज-व्यवस्था को चलाने के लिए सामंतों को रखता है, कुछ सामंत खुद की स्वार्थ सिद्धि हेतु चापलूसी करने में लगे रहते हैं. धर्म के नाम पर वर्ण-व्यवस्था का चक्कर चलाकर ब्राह्मणों ने भी लोगों को पोथियों एवं कथाओं से आवृत कर रखा है. जनता का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करने के लिए राजाओं ने कवियों से प्रशस्ति गीत गवाए, लेखकों ने लेख लिखे, इतिहासकारों ने राजाओं के मन-मुताबिक इतिहास के पन्ने तैयार किये. नाट्यकारों ने नाटक लिखे और रंगमंच पर प्रस्तुत किये. कुल मिलाकर यूँ कहें कि समस्त कार्य राजा की इच्छानुसार चलता रहा. आम नारियों के लिए रानियाँ आदर्श बनी हुई थीं. राजा (नेता)

अपने स्वार्थ के लिए धर्म के नाम पर दंगे-फसाद करवाता है. आम जनता मारी जाती हैं कुछ नहीं कर पाती, सिवाय आँख-कान मूँदकर चुपचाप उस खून- खराबे को देखने के. वर्तमान परिप्रेक्ष्य में देश की परिस्थितियों पर एक नजर करें तो आज भी ये कविता खरी उतरती है.

11.8 सार बिंदु

- द्विवेदी युग के पुरोधा महावीरप्रसाद द्विवेदी जी की प्रेरणा से रचनाकार ब्रजभाषा के कलेवर को छोड़कर खड़ीबोली में लिखने लगे थे.
- छायावादी कवि निराला मूलतः बांगला से हिंदी में आये थे.
- यूँ तो निराला छायावादी कवि हैं. परन्तु उनकी कुछ रचनाओं में प्रगतिवादी तत्व दिखाई देते हैं जैसे -रूढ़ि-विरोध, क्रांति या विद्रोह की भावना, नारी चेतना, साम्यवाद, शोषितों के प्रति सहानुभूति की भावना, वेदना और निराशा आदि.
- निराला काव्य में मुक्त छंद के प्रवर्तक हैं.
- उनके साहित्य में सामाजिक यथार्थ, आर्थिक पीड़ा, नारी-चित्रण, राष्ट्रीयता का स्वर आदि एक साथ देखने को मिलता है.

11.9 परीक्षोपयोगी प्रश्नावली

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. निराला के व्यक्तित्व और कृतित्व को लिखिए.

प्रश्न 2. निराला की काव्यगत प्रवृत्तियों को समझाइये.

लघुत्तरात्मक प्रश्न

प्रश्न 1. निराला के साहित्यिक योगदान पर प्रकाश डालिए.

प्रश्न 2. 'वर दे वीणावादिनी वर दे' कविता का भावार्थ अपने शब्दों में लिखिए.

प्रश्न 3. 'राजे ने अपनी रखवाली की' कविता का भावार्थ लिखिए.

टिप्पणी लिखिए.

1. निराला की काव्य भाषा
2. निराला का रचना संसार
3. निराला का व्यक्तित्व

निम्नलिखित में से सही विकल्प का चुनाव कीजिए.

1. निराला किस काल के कवि हैं?

अ. नई कविता **ब.** प्रयोगवाद **स.** छायावाद **द.** प्रगतिवाद

2. निराला को हिंदी का कवि बनाने का श्रेय जाता है-

अ. पत्नी को **ब.** बेटी को **स.** महावीर प्रसाद द्विवेदी जी को **द.** गुप्त जी को

3. सरोज स्मृति के रचनाकार हैं-

अ. निराला **ब.** प्रसाद **स.** पन्त **द.** महादेवी वर्मा

4. सांध्य काकली किस विधा की रचना हैं?

अ. कहानी **ब.** उपन्यास **स.** कविता **द.** आलोचना

5. मतवाला के सम्पादक हैं–

अ. निराला **ब.** पन्त **स.** मैथिलीशरण गुप्त **द.** प्रसाद

सही कथन के सामने ✓ और गलत के सामने ✕ का निशान लगाइए.

1. निराला मुक्त छंद के विरोधी हैं.

2. निराला के साहित्य में प्रगतिवादी चेतना के दर्शन होते है.

3. जागरण के स्वर निराला के साहित्य में कहीं नजर नहीं आते.

4. 'बेला' निराला की रचना नहीं हैं.

11.10 सन्दर्भ सूची

1. निराला की साहित्य साधना भाग 1,2,3 – डॉ. रामविलास शर्मा

2. हिंदी साहित्य बीसवीं शताब्दी – नन्ददुलारे वाजपेयी

3. निराला की कविताएँ: मूल्यांकन और मूल्यांकन – सं. परमानंद श्रीवास्तव

4. निराला – इन्द्रनाथ मदान

इकाई : 12 - सुमित्रानंदन पंत

रूपरेखा

12.1 उद्देश्य

12.2 प्रस्तावना

12.3 सुमित्रानंदन पंत : व्यक्तित्व – कृतित्व

12.3.1 सुमित्रानंदन पंत : व्यक्तित्व

12.3.2 सुमित्रानंदन पंत : कृतित्व

12.4 'पर्वत प्रदेश में पावस' : काव्य-पाठ, विश्लेषण व व्याख्या

12.5 'द्रुत झरो जगत के जीर्ण पत्र' : काव्य-पाठ, विश्लेषण व व्याख्या

12.6 सार-बिंदु

12.7 परीक्षोपयोगी प्रश्नावली

12.8 संदर्भ सूची

12.1 उद्देश्य

- हिन्दी साहित्य के महान कवि पंत के जीवन से परिचित होने के साथ-साथ उनकी साहित्य-साधना का विहंगावलोकन कर सकेंगे.
- कविवर सुमित्रानंदन पंत की छायावादी और प्रगतिवादी विचारधाराओं से परिचित हो सकेंगे.
- पठित काव्यों के अध्ययन से काव्य में निरूपित कवि के भाव बोध से और उनमें व्यक्त कला सौन्दर्य से परिचित हो सकेंगे.
- 'पर्वत प्रदेश में पावस' काव्य में अभिव्यंजित प्राकृतिक सौन्दर्य से तथा 'द्रुत झरो जगत के जीर्ण पत्र' कविता में व्यक्त सामाजिक चेतना से अवगत हो सकेंगे.

12.2 प्रस्तावना

आधुनिक हिन्दी काव्यधारा समय के प्रभाव में विविध रूप धारण करती रही हैं. द्विवेदीयुगीन काव्य की एकांगी व इकहरापनयुक्त प्रवृत्तियों के कारण हिन्दी काव्यधारा का छायावाद नामक एक नया मोड़ सामने आया. हिन्दी कवियों ने छायावाद के तहत हिन्दी कविता की दिशा ही बदल दी. जो काव्य आज तक सामूहिक चेतना से बद्ध था, उसमें आज वैयक्तिकता की नई लहर उठने लगी थी. काल्पनिकता, वेदना भाव, प्रकृति प्रेम आदि अनेक नई विशेषताओं ने हिन्दी काव्य में अपनी जगह बनाई. छायावाद प्रारम्भ में अवश्य विवादित रहा किन्तु इस प्रवाह ने हिन्दी काव्य साहित्य को अनेक साहित्यकारों की भेंट दी. नई शैली, नई भाषा, नई अभिव्यक्ति, नये पद-विधान की बदौलत छायावाद की गरिमा बनने लगी थी. अंग्रेजी साहित्य के प्रभाव से इस नई हिन्दी काव्यधारा का पल्लवन हुआ. अंग्रेजी साहित्य की कल्पनाशील प्रवृत्ति, रूमानी भावना ने हिन्दी कवियों को भी प्रभावित किया. जयशंकर प्रसाद, महादेवी वर्मा, निराला और सुमित्रानंदन पंत जैसे प्रभावशाली कविगण इसी युग की धरोहर हैं. हिन्दी काव्य साहित्य को नई दिशा दिखाने वाले इन रचनाकारों में सुमित्रानंदन पंत का अपना एक विशिष्ट स्थान रहा है. हिन्दी काव्यधारा में छायावादी काव्य की एक नई राह प्रस्थापित करने वालों में पंत की भूमिका अहम रही हैं. छायावादी काव्य अपने परवर्ती काव्य समय से भिन्न ही प्रतीत हो रहा है. हृदय की भावानुभूतियों का

ध्वन्यात्मक, सौन्दर्यात्मक, अलंकारात्मक निरूपण आदि छायावाद की अनूठी विशेषताएँ हैं. इन कवियों ने अपने काव्यों में अपनी कल्पना-शक्ति का सफल प्रयोग किया है.

12.3 सुमित्रानंदन पंत : व्यक्तित्व – कृतित्व

कवि पंत का जीवन परिचय :

सुमित्रानंदन पंत का जन्म अल्मोड़ा जिले के कौसानी गाँव में 20 मई, 1900 को हुआ था. उनका मूल नाम गोसाईं दत्त था. उनके पिता का नाम गंगा दत्त और माता का नाम सरस्वती देवी था. जन्म के कुछ ही घंटो में उनकी माता का निधन हो गया था, अतः उनका लालन-पालन दादी के द्वारा हुआ था. प्रारभिक शिक्षा गाँव में हुई उसके बाद वे अल्मोड़ा आगे की पढाई हेतु गए. जहाँ उन्होंने अपना नाम बदलकर सुमित्रानंदन रखा था.

अपने भाई के साथ उन्होंने काशी में शिक्षा प्राप्त की थी. कॉलेज की पढाई हेतु वे इलाहाबाद गए थे. 1921 के असहयोग आन्दोलन में गाँधी की प्रेरणा से महाविद्यालय का बहिष्कार कर, वे अपने गाँव लौट गए थे. घर पर ही स्वतंत्र रूप से संस्कृत, बांग्ला और अंग्रेजी भाषा का अभ्यास किया था. घर के आर्थिक हालात बिगड़ने पर वे मार्क्सवाद की विचारधारा से भी प्रभावित हुए. वे आजीवन अविवाहित रहे थे. कवि पंत पर विभिन्न विचारकों के प्रभाव रहे हैं. वे अरविन्द की विचार धारा से भी प्रभावित रहे थे. पंत 1950 से 1957 तक आकाशवाणी के परामर्शक भी रहे थे. पंत का निधन मधुमेह के कारण 29 दिसम्बर, 1977 को इलाहाबाद में हुआ था.

12.3.1 कवि पंत का व्यक्तित्व :

पंत का जन्म प्रकृति से लबालब भरे गाँव में हुआ था, परिणाम स्वरूप कवि पंत सहज ही प्रकृति प्रेमी थे. गौरवर्ण, सुंदर चेहरा, लम्बे घुँघराले बाल उनकी एक विशिष्ट प्रतिमा बनाते थे. जब वे सात वर्ष के थे और चौथी कक्षा में पढ़ते थे, तब से उन्होंने कविता लिखना प्रारम्भ कर दिया था. पंत का व्यक्तित्व सौम्य, सरल व मृदुता से परिपूर्ण था. उनकी रचनाओं में छायावादी विशेषताओं को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता फिर भी उनका काव्य समाज से जुडा रहा. प्रकृति के सानिध्य ने उन्हें कोमलकांत पदावलियों के कवि की पहचान दी तो गाँधी, मार्क्स जैसे विचारकों के प्रभाव ने प्रगतिवादी कवि के रूप में उन्हें निखारा. अलंकारिक भाषा, प्रकृति व आध्यात्मिकता का कवि यह भी लिखता है-

'' वाणी मेरी चाहिए क्या तुम्हें अलंकार ? यदि वहन कर सको जन मन में मेरे विचार ''

कवि पंत का काव्य सृजन सफर कल्पना के दायरे से वास्तविकता के दायरे का भी अनुभव देता है.

12.3.2 पन्त का कृतित्व :

कवि पंत के प्रमुख काव्य ग्रंथ निम्नलिखित है-

- **काव्य संग्रह :**

  उच्छवास, पल्लव, वीणा, ग्रंथि, गुंजन, स्वर्णकिरण, युगांत, युगवाणी, ग्राम्या, स्वर्णधूलि, उत्तरा, युग–पथ, तारा–पथ, मधुजाल, चित्रांगदा, कला और बूढा चाँद, लोकायतन, सत्यकाम.

- **नाटक :** ज्योत्सना, रजतशिखर, शिल्पी.

- **कहानी संग्रह :** पांच कहानियाँ.
- **निबंध - संग्रह :** गद्य-पद्य.
- **अनुवाद :** उमरखय्याम की रुबाइयों का हिन्दी-रूपान्तरण.

हिन्दी के इस मूर्धन्य साहित्यकार की साहित्य यात्रा बहुमुखी रही है. पंत की साहित्यिक यात्रा को प्रमुख तीन पडावों में देखा जाता है. प्रथम वे छायावादी हैं, दूसरे गाँधी, मार्क्स, एवं फ्रायड की विचारधाराओं से प्रेरित प्रगतिवादी, और तीसरे में अरविन्द दर्शन से अभिभूत अध्यात्मवादी. कवि पंत ने 1938 में 'रूपाभ' पत्रिका का प्रकाशन भी प्रारम्भ किया था. कवि पंत का साहित्य सदा ही प्रभावी रहा है. पंत का साहित्य हिन्दी साहित्य की एक मूल्यवान धरोहर है. पंत सदैव ही अपनी रचनाओं के माध्यम से जीवित रहेंगे. उनकी भाषा कोमल है, कोमलतम भावों को अभिव्यक्त करने में उनकी भाषा सफल रही है. गीति–प्रधान शैली पंत की पहचान है. उन्होंने जीवन की मधुरतम अभिव्यक्ति भी की हैं.

पंत को प्राप्त पुरस्कार और सम्मान :

- 1960 में 'कला और बूढा चाँद' काव्य संग्रह पर साहित्य अकादमी पुरस्कार .
- 1961 में भारत सरकार के द्वारा पद्म भूषण .
- 1968 में 'चिदम्बरा' काव्य संग्रह पर भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार और सोवियत लेंड नहेरु पुरस्कार भी कविवर पंत को प्राप्त हुआ था.

पंत की साहित्य साधना का सम्मान करते हुए कौसानी में उनके घर को 'सुमित्रानंदन पंत विथिका' संग्रहालय में परिवर्तित कर दिया है.

कवि पंत की साहित्य साधना प्रकृति के प्रति जितनी अभिमुख और वैयक्तिक रही उतनी ही समाज के प्रति भी अभिमुख रही है. पंत ने एक सच्चे समाज सेवक की भूमिका निभाते हुए अपनी रचनाओं में सामाजिक विषयों को उजागर किया है. उदाहरण के तौर पर कवि की 'ताज' रचना का उल्लेख किया जा सकता है. समाज की व्याप्त असमानताओं की प्रस्तुति इस कविता का मुख्य विषय रहा है. अर्थात कवि पंत जितने कोमल बने उतने ही कठोर बन कर समाज के मार्गदर्शक की भूमिका भी निभाई.

बोध प्रश्न :

1. कवि पंत की साहित्यक यात्रा को किन तीन पडावों में देखा जा सकता है?
2. पंत जी को ज्ञानपीठ पुरस्कार किस वर्ष प्राप्त हुआ ?

12.4 'पर्वत प्रदेश में पावस' : काव्य-पाठ, विश्लेषण व व्याख्या :

कवि पंत मूलतः प्रकृति के कवि माने जाते हैं. अल्मोड़ा जैसे नैसर्गिक स्थान पर पैदा होने वाले पंत की कविता में कुदरत के अद्‌भुत चित्र प्राप्त होते रहे हैं. 'पर्वत प्रदेश में पावस' काव्य पंत के प्राकृतिक काव्य सौन्दर्य का एक उत्कृष्ट उदाहरण है. बारिश के मौसम में पर्वतीय प्रदेश का सौंदर्य और प्राकृतिक लावण्य का परिचय इस काव्य में देखने को मिलता है.

काव्य पाठ और व्याख्या (विश्लेषण)

पावस ऋतु थी, पर्वत प्रदेश,
पल-पल परिवर्तित प्रकृति-वेश.

कवि पंत इस काव्य में वर्षा ऋतु का प्रभावी वर्णन करते हैं. पर्वतीय प्रदेश में वर्षा

का अद्‌भुत अनुभव यहाँ चित्रित हैं. वर्षा ऋतु के कारण पर्वतीय प्रदेश में पल-पल बदलाव देखा जा रहा है. प्रकृति अपना वेश बदलकर कभी धूप तो कभी छाँव में परिवर्तित होती रहती हैं.

मेखलाकार पर्वत अपार
अपने सहस्त्र दृग - सुमन फाड़,
अवलोक रहा है बार - बार,
नीचे जल में निज महाकार,
जिसके चरणों में पला ताल
दर्पण सा फैला है विशाल !

कवि संकेत करता है कि कई पर्वत श्रृंखलाबद्ध गोल आकार में खड़े हुए हैं. पर्वत अपने पर खिले फूलों रूपी नयनों को पूर्ण रूप से खोल कर बार-बार लगातार नीचे की ओर देख रहा है. कवि ने पर्वत पर खिले फूलों की कल्पना पर्वत की आँखों के रूप में की हैं. यह पर्वत-श्रृंखला अपने नीचे रहे तालाब में अपना विशाल रूप देख रही है. अर्थात कवि को लगता है जैसे तालाब पर्वत के चरणों में पल रहा है और उस तालाब रूपी दर्पण में अपना विशाल स्वरूप देख रहा है.

गिरि का गौरव गाकर झर - झर
मद में नस - नस उत्तेजित कर
मोती की लड़ियों - सी सुन्दर
झरते है झाग भरे निर्झर !
गिरिवर के उर से उठ - उठ कर
उच्चाकांक्षाओं से तरुवर,
हैं झांक रहे नीरव नभ पर
अनिमेष, अटल, कुछ चिंता पर.

कवि कल्पना करता है कि झरने पर्वत की महिमा, उनका गुण-गान गाते हुए कल-कल करते बह रहे हैं. बहते झरनों की ध्वनि कवि की नस-नस में उत्साह का नया संचार कर रही हो. पर्वतों पर बहते झाग भरे झरने मोती की लड़ियों-से नजर आते हैं. वर्षा ऋतु में पर्वत की अतुलनीय सुन्दरता यहाँ निखर आई हैं.

पर्वत पर खड़े वृक्षों को देखकर कवि कल्पना करता है मानो ये पर्वत के ह्रदय की ऊँची आकांक्षाएं लेकर अपलक, स्थिर और कुछ चिंतित मुद्रा के साथ शांत आकाश की ओर देख रहे हैं.

उड़ गया अचानक लो, भूधर
फड़का अपार वारिद के पर !
रव - शेष रह गए हैं निर्झर !
है टूट पड़ा भू पर अम्बर !
धँस गए धरा में सभय शाल
उठ रहा धुवाँ, जल गया ताल
यों जलद - यान में विचर - विचर
था इंद्र खेलता इंद्रजाल !

अचानक मौसम में परिवर्तन आ गया. आसमान बादलों से घिर गया ऐसा लगा मानो पर्वत गायब हो गए ! पर्वत को बादलों ने ढँक लिया था. ऐसा लग रहा था आकाश धरती पर टूट पड़ा हो, अर्थात बहुत जोरों की बारिश होने लगी थी. अब कवि को केवल झरनों का ही शोर सुनाई दे रहा था.

तेज बारिश के कारण कुछ धुंध सी उठने लगी थी जिसे देख कवि कहता है मानो तालाब में आग लगी हो. ऐसा प्रतीत होने लगा था कि बारिश का रौद्र रूप देखकर शाल के वृक्ष धरती में धँस रहे हो. इंद्र ने भी अपने बादल रूपी यान में बैठकर, उसमें सवार होकर इधर-उधर अपने खेल दिखाने प्रारम्भ कर दिए हो.

बोध प्रश्न :

1. कवि को ऐसा क्यों लगता है कि पर्वत गायब हो गए है ?
2. पर्वत की महिमा कौन गा रहा है ?
3. बहते झरनों की ध्वनि से कवि क्या अनुभव करता है ?
4. काव्य में किस ऋतु की बात कही गयी है ?
5. कवि को पर्वत किस आकार में खड़े दिखाई देते हैं ?

कठिन शब्द :

पावस ऋतु = वर्षा ऋतु, मेखलाकार = गोल धेरदार

सहस्त्र = हजारों, दृग सुमन = आँख रूपी फूल, ताल = तालाब

गिरि = पर्वत, निर्झर = झरना, उर = हृदय, तरुवर = वृक्ष

अनिमेष = अपलक, भूधर = पर्वत, वारिद = बादल, रव = शोर, आवाज

सभय = डर के साथ, जलद = बादल रूपी वाहन, विचर–विचर = घूम घूम कर

12.5 'द्रुत झरो जगत के जीर्ण पत्र' : काव्य-पाठ, विश्लेषण व्याख्या.

सुमित्रानंदन पंत की काव्य साधना में कई मोड़ आए हैं. कवि जितना प्रकृति से प्रभावित रहा, उतना अरविंद दर्शन से. गाँधी और मार्क्स जैसे विचारकों ने भी कवि को प्रभावित किया है. परिणामस्वरूप उनकी कविताओं में समाज का सत्य भी उभर कर सामने आया है. 'द्रुत झरो जगत के जीर्ण पत्र' काव्य यथार्थवादी काव्य है. इसमें समाज में हो रहे निरन्तर परिवर्तनों की बात कही गयी हैं.

द्रुत झरो जगत के जीर्ण पत्र !
हे स्रस्त-ध्वस्त ! हे शुष्क शीर्ण !
हिम-ताप-पीत, मधुवात-भीत,
तुम वीत-राग, जड़, पुराचीन !!

कवि पंत की यह एक प्रगतिशील विचारधारायुक्त कविता है. कवि पर्णों को प्रतीक बनाकर समाज की पुरातन विचारधारा और विचारकों के प्रति संकेत करते हैं. वे समाज रूपी वृक्ष के पुराने हो जाने वाले पर्णों का सम्बोधन कर जल्दी अपना स्थान छोड़ने की बात कहते हैं. कवि की दृष्टि से वे नाशवंत, शुष्क और कमजोर हो गए हैं. वे उन पर्णों को कहते हैं कि तुम अब प्रकोप से पीले पड़ गए हो, तुम भयभीत हो गए हो. कवि कहता है कि तुम अब बिता हुआ, समाप्त हो चुकने वाला राग हो, तुम्हारा अस्तित्व अब प्राचीन हो

गया है.

निष्प्राण विगत – युग ! मृतविहंग !
जग – नीड़, शब्द औ' श्वास – हीन,
च्युत, अस्त – व्यस्त पंखों – से तुम
झर – झर अनंत में हो विलीन !!

सुधारात्मक दृष्टिकोणयुक्त इस काव्य में कवि के आक्रोशयुक्त व्यक्तित्व का परिचय प्राप्त हुआ है. कवि कहता है कि बीता हुआ कल अब निष्प्राण हो गया है, वह एक मृतक पंछी की तरह है. जो कभी लौट कर नहीं आ सकता और न कभी कोई गान गा सकता है. जगत रूपी नीड़ अब निःशब्द हो गया है मानो उसमें अब कोई चेतन नहीं रहा है. कवि ऐसे लोगों को प्रतीकात्मक पंछी बताते हुए कहता है कि तुम्हारे पंख भी अब गिर चुके हैं, तुम स्वयं अस्त-व्यस्त हो गए हो ऐसी ही दशा में अब तुम विलीन हो जाओ. कवि ने पुरातन विचारधाराओं से युक्त लोगों एवं समाज से दूर होने की बात कही हैं जो नये समय और नई विचारधारा के साथ नहीं चल सकते.

कंकाल – जाल जग में फैले
फिर नवल रुधिर, पल्लव – लाली !
प्राणों की मर्मर से मुखरित,
जीव की मांसल हरियाली !

कवि का स्पष्ट मानना है कि ऐसे लोगों की वजह से जगत कंकाल जैसा बन गया है. यदि ऐसे लोग या ऐसी विचारधाराएँ अपना स्थान छोड़ देंगी तो अवश्य ही समाज में नवचेतना का संचार होगा. समाज पुनः पल्लवित होगा, नवीन विचारों रूपी प्राणों की ध्वनि से समाज को फिर नवजीवन प्राप्त होगा.

मंजरित विश्व में यौवन के
जग कर जग का पिक, मतवाली
निज अमर प्रणय-स्वर मदिरा से
भर दे फिर नव-युग की प्याली

कवि का मानना है कि यदि ऐसा हुआ तो समाज पल्लवित होगा, पुष्पित होगा और यौवन रूपी उमंग और उत्साह से खुश हो उठेगा तथा चारों ओर ख़ुशी का राग सुनाई दे पड़ेगा. नये युग की शुरुआत होगी. प्राचीन व जड़ विचारधाराओं से हमें मुक्ति मिल जाएगी.

बोध प्रश्न :

1. कवि समाज में कैसे परिवर्तन की बात करता है?
2. कवि ने कंकाल शब्द किसके लिए प्रयुक्त किया है ?
3. कवि बीते हुए कल के बारे में क्या कहते हैं ?
4. कवि के मत में जगत कैसा हो गया है ?
5. पंत का यह काव्य कैसी विचारधारा से युक्त हैं ?
6. कवि पर्णों के माध्यम से किसकी ओर संकेत करते हैं ?

कठिन शब्द :

झरो	–	गिरना,
जीर्ण	–	पुराना, फटा हुआ
शुष्क-शीर्ण	–	सूखा और दुबला पतला
पुराचीन	–	प्राचीन,
जग-नीड़	–	जगत रूपी घोंसला
कंकाल	–	अस्थि-पिंजर,
मर्मर मुखरित	–	खडखड़ाहटयुक्त ध्वनि,
मंजरित	–	पुष्पित

12.6 सार- बिंदु

- कविवर सुमित्रानंदन पंत बहुमुखी प्रतिभाशाली साहित्यकार रहे हैं. हिन्दी साहित्य में उन्हें प्रकृति का गायक भी कहा गया है.
- वे गाँधी, मार्क्स, फ्रायड और अरविंद जैसे विचारकों से प्रभावित रहे.
- 'पर्वत प्रदेश में पावस' रचना प्रकृति के अद्‌भुत सौन्दर्य का वर्णन करने में सफल रही.
- 'द्रुत झरो जगत के जीर्ण पत्र' काव्य में कवि का बदला हुआ सुर सुनाई देता है. इस काव्य में प्रगतिशील विचारों के साथ कवि समाज के रूढ़ और प्राचीन विचारकों के प्रति आक्रोश व्यक्त करता है. समाजिक परिवर्तन की मांग इस काव्य में नजर आती है. कवि पंत पर पड़ने वाले गाँधी, मार्क्स जैसे विचारकों के प्रभाव को यहाँ प्रत्यक्ष देखा जाता है.
- भाषा सौन्दर्य भी अद्‌भुत है. भिन्न भिन्न प्रतीकों के प्रयोग से कवि अपने विचार प्रस्तुत करने में सफल रहा है.

12.7 परीक्षोपयोगी प्रश्नावली

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. पन्त के व्यक्तित्व-कृतित्व पर प्रकाश डालिए.
2. प्रस्तुत कविताओं के आधार पर पन्त की काव्यगत विशेषताओं को लिखिए.

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. कवि पन्त का संक्षिप्त में जीवन परिचय लिखिए
2. 'द्रुत झरो जगत के जीर्ण पत्र' कविता का मूल भाव लिखिए.
3. 'पर्वत प्रदेश में पावस' कविता में प्राकृतिक सौन्दर्य का चित्रण कीजिये.

टिप्पणी लिखिए

1. पंत का कृतित्व
2. 'पर्वत प्रदेश में पावस' कविता का मूल भाव

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

(1) रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिये.

1. छायावादी कवियों ने अपने काव्यों में.......शक्ति का प्रयोग किया. (कल्पना/आध्यात्मिक)
2. पन्त के काव्य में.......साफ नजर आता है. (प्रकृति प्रेम/ व्यक्ति प्रेम)

3. पंत जी को 'कला और बूढा चाँद' पर........पुरस्कार मिला. (ज्ञानपीठ/ साहित्य अकादमी)

4. '<u>पावस</u>-ऋतु थी, पर्वत प्रदेश' में रेखाकित शब्द का अर्थ........है. (वर्षा/शीत)

5. 'द्रुत झरो जगत के जीर्ण पत्र' कविता........विचारधारा से प्रभावित है. (प्रगतिवादी/छायावादी)

(2) निम्नलिखित कथन में सही के आगे ✓ और गलत के आगे ✕ का निशान लगाएँ.

1. पन्त में अरविन्द दर्शन की झलक दिखाई पड़ती है.
2. 'चिदम्बरा' काव्य संग्रह के लिए पन्त को ज्ञानपीठ पुरस्कार से नवाजा गया.
3. 'द्रुत झरो जगत के जीर्ण पत्र' काव्य यथार्थवादी काव्य है.
4. कवि पन्त ने 1938 में 'रूपाभ' पत्रिका का प्रारम्भ किया था.
5. पन्त के घर को 'सुमित्रानंदन पंत विथिका' संग्रहालय में परिवर्तित कर दिया है.

12.8 संदर्भ सूची

- हमारे कवि और लेखक : डॉ.राजेन्द्र सिंह गौड़.
- कविवर सुमित्रानंदन पंत : डॉ. सुरेशचन्द्र गुप्त.
- आधुनिक कवि : विश्वम्भर मानव.
- www.kavitakosh.org
- www.hindi-kavita.com
- hi.m.wikipedia.org

इकाई 13 : महादेवी वर्मा

रूपरेखा

13.1 उद्देश्य

13.2 प्रस्तावना

13.3 महादेवी वर्मा का व्यक्तित्व

13.4 महादेवी वर्मा का कृतित्व

13.5 महादेवी वर्मा के काव्य में छायावादी प्रवृत्तियाँ

13.6 'मैं नीर भरी दुख की बदली' : कविता पाठ, विश्लेषण और व्याख्या

13.7 'जाग तुझको दूर जाना' : कविता पाठ, विश्लेषण और व्याख्या

13.8 सार बिंदु

13.9 परीक्षोपयोगी प्रश्नावली

13.10 संदर्भ सूची

13.1 उद्देश्य :

प्रस्तुत इकाई के अध्ययन के बाद आप –

- छायावाद की प्रमुख कवयित्री, आधुनिक युग की मीरा कही जाने वाली, महादेवी वर्मा के जीवन-परिचय एवं उनकी काव्य रचनाओं का परिचय प्राप्त कर सकेंगे.
- महादेवी वर्मा की कविताओं में वर्णित छायावादी प्रवृत्तियों का अवलोकन कर सकेंगे.
- पठित कविताओं के द्वारा उनकी कविताओं में वर्णित भाव सौंदर्य तथा कलात्मक सौंदर्य से परिचित हो सकेंगे.
- 'मैं नीर भरी दुख की बदली' काव्य में अभिव्यंजित करूणा, वेदना की भावना से परिचित हो सकेंगे.
- 'चिर सजग आँखें उनींदी' काव्य में अभिव्यंजित देशभक्ति की भावना से परिचित हो सकेंगे.

13.2 प्रस्तावना :

सन् 1920 के आसपास हिन्दी साहित्य जगत में जिस नयी काव्यधारा का उदय हुआ जिसे 'छायावाद' कहा गया. छायावादी कविता भाव, भाषा, छंद इन सब में नवीनता लेकर प्रस्तुत हुई. इसमें व्यक्तिगत मौलिकता पर विशेष बल दिया गया.

छायावादी काव्य के चार स्तम्भों में महादेवी वर्मा, अंतिम परंतु सशक्त स्तम्भ हैं. उन्होंने ही छायावाद की आधार भूमि का लम्बे समय तक साथ निभाया. आधुनिक युग की मीरा कही जाने वाली महादेवी जी ने अपने काव्य में छायावाद की प्रमुख विशेषताओं की श्रेष्ठतम अभिव्यक्ति की.

जयशंकर प्रसाद, निराला, पंत और महादेवी की कविताओं ने द्विवेदी युग से अलग नवीन विषय, नवीन भाषा शैली के साथ-साथ स्वच्छंद प्रवाह में एक नये स्वरूप में कविता लिखना प्रारंभ किया. जिसका पहले विरोध हुआ परंतु इन चारों कवियों के

सानिध्य में कविता का यह प्रवाह आगे बढता गया, जिसे छायावाद नाम दिया गया. कभी इसे रहस्यवाद भी कहा.

13.3 महादेवी वर्मा का व्यक्तित्व :

महादेवी का जन्म फरूखाबाद (उत्तर प्रदेश) में 24 मार्च सन् 1907 को प्रात: आठ बजे हुआ था. उस दिन होली का पुण्य त्यौहार मनाया जा रहा था. इनका पारिवारिक वातावरण सभी दृष्टियों से समृद्ध था- पिता श्री गोविन्दप्रसाद वर्मा; जो कि प्राध्यापक थे, सम्माननीय एवं प्रतिष्ठित व्यक्ति माने जाते थे. इनकी माता श्रीमती हेमरानी देवी एक विदुषी, कला-प्रिय एवं धर्मपरायण स्त्री थी तथा इनके नाना भी ब्रज भाषा के कवि होने के साथ ही भक्ति भावना से ओतप्रोत सज्जन व्यक्ति थे. इस प्रकार महादेवी का जन्म एक ऐसे परिवार में हुआ जिसमें भारतीयता सच्चे अर्थों में जीवन्त थी. पारिवारिक वातावरण साहित्यिक होने के साथ ही सात्विक एवं धार्मिक था. यही कारण हैं कि महादेवी की रचनाओं पर पाश्चात्य संस्कृति एवं सभ्यता का प्रभाव किंचित् भी नहीं पडा. वे जन्मजात भारतीय हैं, इसी वातावरण में इनका विकास हुआ तथा इसी का प्रतिष्ठापन इन्होंने अपनी रचनाओं में भी किया है. डॉ. कामिल बुल्के का कथन है- ''भारतीय स्वाभिमान जितना सच्चा और स्वाभाविक है, उतना ही विवेकपूर्ण और प्रगतिशील भी हैं. नवीन विचारों को अपनी प्रखर बुद्धि की कसौटी पर कसकर, खरे उतरने पर उन्हें प्राचीन भारतीय साँचे में ढालना तथा निर्भीकतापूर्वक अपनाना, यह क्षमता मैं महादेवी जी के शक्तिशाली व्यक्तित्व का अनिवार्य गुण मानता हूँ.''

- **शिक्षा :**

महादेवी की शिक्षा का आरम्भ मिशन स्कूल, इन्दौर में सन् 1912 ई. में हुआ. साथ ही संगीत की शिक्षा और अलग अलग भाषाओं की शिक्षा के लिए घर पर ही कई शिक्षक आते थे. सन् 1916 ई. में विवाह हो जाने से अध्ययन क्रम में एक बार व्यवधान आ गया. किंतु यह बाल विवाह टिका नहीं. मात्र एक दिन बाद ही महादेवी जी ससुराल से लौट आई और दृढ़ संकल्प के साथ इस बाल विवाह को अस्वीकार कर दिया. अध्ययन क्रम पुन: शुरू हुआ और महादेवी जी ने मिडिल से लेकर बी.ए. तक की परिक्षाएँ प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की. सन् 1932 ई. में इन्होंने प्रयाग विश्वविद्यालय से एम.ए. संस्कृत की उपाधि प्राप्त की.

- **कार्यक्षेत्र :**

शिक्षा प्राप्त करने के उपरान्त महादेवी ने अध्यापन कार्य आरम्भ कर दिया. सन् 1932 में ही इनकी नियुक्ति प्रयाग महिला विद्यापीठ की प्रधानाचार्या के रूप में हो गई. 'चाँद' पत्रिका का इन्होंने अवैतनिक सम्पादन भी किया. इसी बीच इनका साहित्यिक प्रकाशन तीव्र गति से चल रहा था. इनकी साहित्यिक प्रतिभा से विद्वान विशेष रूप से प्रभावित थे. वस्तुत: महादेवी का कार्य साहित्य साधना के साथ ही एक सच्ची अध्यापिका के रूप में चिरस्मरणीय रहेगा. वे जहाँ निष्काम भाव से सरस्वती की आराधना में संलग्न रहीं, वहीं अपने वात्सल्य पूर्ण कोमल एवं उदार हृदय से जन-सामान्य के कष्टों-पीडाओं का निवारण भी करती रहीं.

- **पुरस्कार :**

महादेवी जी को उनकी काव्य कृति 'नीरजा' पर 'सेकसरिया पुरस्कार' मिला. 'यामा' पर उन्हें 'मंगला प्रसाद पारितोषिक' से सम्मानित किया गया. भारत सरकार ने उन्हें 'पद्मभूषण' से सम्मानित किया. उसके दो वर्षो बाद ही उनकी रचना 'यामा' के लिए उन्हें ज्ञानपीठ पुरस्कार तथा उत्तर प्रदेश शासन संस्थान पुरस्कार से सम्मानित किया गया. हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग ने उन्हें भारतेन्दु पुरस्कार से सम्मानित किया.

13.4 महादेवी वर्मा का कृतित्व :

महादेवी वर्मा की अब तक प्रकाशित रचनाएँ इस प्रकार हैं –

- काव्य कृतियाँ –

(1) नीहार (सन् 1930)

(2) रश्मि (सन् 1932)

(3) नीरजा (सन् 1934)

(4) सांध्यगीत (सन् 1936)

(5) दीपशिखा (सन् 1942)

(6) सप्तपर्णा (अनूदित 1959)

(7) प्रथम आयाम (1974)

(8) अग्निरेखा (1990–मृत्यूपरांत प्रकाशित)

उपर्युक्त रचनाएँ महादेवी की कविताओं के संकलन हैं जिनसे इनके काव्य–विकास का परिचय मिलता हैं. इनके अतिरिक्त, अनेक सम्पादित रचनाऐं भी हैं, जिनमें से 'यामा' में नीहार, रश्मि तथा सांध्यगीत की कविताओं को पुनः मुद्रित किया गया है. 'आधुनिक कवि' (भाग–१) में नीहार, रश्मि, नीरजा व सांध्यगीत इत्यादि काव्य–कृतियों में से महत्वपूर्ण 74 कविताओं को संकलित किया गया हैं. 'सप्तवर्ण' 20 मई 1970 को पंत की षष्ठि पूर्ति पर उन्हें समर्पित रूपान्तरित काव्य–कृति है. इसमें 60 पृष्ठ की भूमिका है तथा ऋग्वेद, अथर्ववेद, सामवेद आदि वैदिक साहित्य के साथ–साथ वाल्मीकि, अश्वघोष, कालिदास, भवभूति तथा जयदेव की उक्तियों का काव्यमय हिन्दी रूपान्तर भी हैं. 'हिमालय' सम्पादित काव्य–संकलन हैं. इसका प्रकाशन सन् 1963 में हुआ था. चीनी आक्रमण के समय की परिस्थितियों एवं भारतीयों को जागृत करने हेतु लिखित अनेक कवियों की रचनाओं का संकलन इसमें किया गया है. इससे पूर्व 'बंग–दर्शन' का सम्पादन सन् 1944 में हुआ था. इसमें बंगाल के अकाल से सम्बन्धित विभिन्न कविताएँ संकलित हैं.

महादेवी के संस्मरणात्मक एवं आलोचनात्मक कुछ संग्रह भी प्रकाशित हुए हैं. 'अतीत के चलचित्र' (1941), 'श्रृंखला की कडियाँ' (1942), 'स्मृति की रेखाएँ' (1943), 'पथ के साथी' (1956), 'क्षणदा' (1956), 'साहित्यकार की आस्था तथा अन्य निबन्ध' (1962) उल्लेखनीय संकलित गद्य रचनाएँ हैं.

- **बोध प्रश्न :**

(1) महादेवी वर्मा के अलावा छायावाद के मुख्य कवि कौन कौन हैं ?

(2) महादेवी जी के काव्य में किन भावों की प्रमुखता हैं ?

(3) महादेवी वर्मा को किन किन पुरस्कारों से नवाजा गया ?

(4) महादेवी जी ने किस पत्रिका का संपादन किया ?

(5) महादेवी जी ने गद्य की किस विधा में अपनी लेखनी चलाई ?

(6) महादेवी जी के काव्य संग्रहों के नाम बताऐं.

13.5 महादेवी के काव्य में छायावादी प्रवृत्तियाँ :

1. स्वच्छंदता :

यह छायावाद की मूल प्रवृत्ति हैं. महादेवी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व दोनों में इसे

देखा जा सकता है. वे अपने प्रिय के प्रति आत्म-समर्पित हैं. तभी वह कहती हैं -

'जो तुम आ जाते एक बार।
कितनी करूणा कितने संदेश
पथ में बिछ जाते वन पराग
गाता प्राणों का तार-तार
अनुराग भरा उन्माद राग
आँसू लेते वे पद पखार।' (सन्धिनी, पृष्ठ 47)

2. वैयक्तिक अथवा आत्मानुभूति की व्यापकता :

कवयित्री कभी प्रिय से मिलन चाहती हैं, कभी पीडा में रहकर उसे उसी में ढूँढ लेना चाहती हैं, तो कभी उसकी निर्ममता एवं निष्ठुरता पर व्यंग्य प्रहार (उपालम्भ) भी करती हैं. कवयित्री समर्थ हैं, उसे आत्म-बद्ध करने में. इसीलिए वे कहती हैं -

'अलि कैसे उनको पाऊँ।
वे आँसू बन कर मेरे,
इस कारण ढुल-ढुल जाते,
इन पलकों के बंधन में,
मैं बाँध-बाँध पछताऊँ।' (आधुनिक कवि, पृष्ठ 46)

तथा 'पथ रहने दो अपरिचित प्राण रहने दो अकेला' गीत में भी कवयित्री की वैयक्तिक आत्मानुभूति का परिचय मिलता है.

3. रहस्य-भावना :

महादेवी की रचनाओं में अज्ञात प्रियतम (ईश्वर) के प्रति पूर्ण समर्पण की भावना देखने को मिलती हैं. उस अज्ञात प्रियतम के सौन्दर्य की अनुभूति, कल्पना और आध्यात्मिक स्वरूप की अनुभूति ही रहस्यानुभूति हैं. रहस्यानुभूति की यह भावना कवयित्री की अनूठी पहचान हैं -

'प्राणों का दीप जलाकर करती रहती दीवाली।'

4. रागात्मकता :

छायावाद एक विशिष्ट प्रवृत्ति हैं. प्रत्येक छायावादी कवि में यह अपने-अपने ढंग से व्यक्त हुई है. महादेवी में भावों की तीव्रता सर्वत्र हैं - लेकिन इसमें इनका प्रिय लौकिक न होकर अलौकिक हैं - इसी कारण अद्वैतता अथवा अभेदता के फलस्वरूप रहस्यानुभूति अधिक सशक्त रूप में व्यक्त हुई है. महादेवी का प्रेम अतीन्द्रिय हैं जिसमें तीव्रता के साथ-साथ त्याग एवं आत्म-समर्पण का भाव भी हैं. तभी वे कहती हैं -

'मेरी आहें सोती हैं
इन ओठों की ओटों में,
मेरा सर्वस्व छिपा है
इन दीवानी चोटों में।'

प्रेम की वास्तविकता उसके (प्रेयसी के) तपने, जलने तथा उत्सर्ग करने में हैं. महादेवी

स्वयं को दीप के समान जलाकर प्रिय पथ को नित आलोकित करना चाहती हैं – इनके जीवन में वेदना या पीड़ा का मानो साम्राज्य ही बस चुका हो. विरहानुभूति इतनी तीव्र हैं कि कवयित्री को स्वयं की सूझ-बूझ ही नहीं रहती. तभी वे पीड़ा में प्रिय को तथा प्रिय में पीडा को ढूँढने का उपक्रम करती रहती हैं. वे लिखना कुछ चाहती हैं पर लिखा कुछ ओर ही जाता हैं – यही हैं प्रेम एवं प्रिय में अनन्य आस्था, एकनिष्ठ भाव. महादेवी स्वयं को 'बदली' सम्बोधित करती हुई कहती हैं –

'मैं नीर भरी दु:ख की बदली।
स्पन्दन में चिर निस्पन्द बसा,
क्रन्दन में आहत विश्व हँसा,
नयनों में दीपक से जलते,
पलकों में निर्झरिणी मचली।' (सन्धिनी, पृष्ठ 108)

4. **प्रकृति-चित्रण :**

प्रकृति का मनुष्य की तरह प्रस्तुतीकरण छायावाद की प्रमुख विशेषता है. प्रत्येक छायावादी कवि ने प्रकृति में चेतनता का आरोपण किया है – इसके माध्यम से उन्होंने कभी सूक्ष्म अलौकिक सत्ता के दर्शन किए हैं, तो कभी नारी का सौन्दर्य देखा है. महादेवी के काव्य में प्रकृति विभिन्न रूपों में चित्रित हुई हैं. प्रकृति का सुन्दर, सहज एवं स्वाभाविक चित्रण उनके अनेक गीतों में हुआ है. यथा –

'धीरे-धीरे उतर क्षितिज से
आ बसन्त-रजनी।
तारकमय नव वेणी बंधन,
शीश-फूल कर शशि का नूतन,
रश्मि-वलय सित धन-अवगुण्ठन' (सन्धिनी, पृष्ठ 73)

महादेवी के काव्य में छायावादी भाव पक्ष की सभी प्रवृत्तियाँ देखी जा सकती हैं.

समर्थ भावों को व्यक्त करने के लिए सशक्त भाषा, लाक्षणिकता का प्रयोग अपेक्षित हैं. महादेवी सिद्धहस्त कवियित्री हैं – इनकी लेखनी में भावाभिव्यक्ति की शक्ति हैं. गीत लिखने में इन्हें अद्वितीय सफलता मिली हैं. उनकी रचनाओं में प्रतीक तथा बिम्ब भी अनेक रूपों में प्रस्तुत हुए हैं. इनकी शिल्प-साधना का उत्कर्ष निम्न पंक्तियों में देखा जा सकता है –

'कैसे प्रिय सन्देश पहुँचाती।
दृगजल की सित मसि है अक्षय,
मसि प्याली झरते तारक द्वय,
पल-पल के उड़ते पृष्ठों पर,
सुधि से लिख श्वासों के अक्षर –
मैं अपने ही बेसुधपन में,
लिखती हूँ कुछ, कुछ लिख जाती।' (आधुनिक कवि, पृष्ठ 61)

अत: कहा जा सकता है कि छायावादी कवियों में महादेवी का स्थान सदैव सुरक्षित रहेगा.

13.6 'मैं नीर भरी दुख की बदली' कविता-पाठ, विश्लेषण और व्याख्या :

मैं नीर भरी दुख की बदली ।
स्पंदन में चिर निस्पन्द बसा,
क्रन्दन में आहत विश्व हँसा,
नयनों में दीपक से जलते,
पलकों में निर्झरिणी मचली ।
मेरा पग-पग संगीत भरा,
श्वासों से स्वप्न-पराग झरा,
नभ के नवरंग बुनते दुकूल,
छाया में मलय-बयार पली ।

मैं क्षितिज-भृकुटि पर घिर धूमिल,
चिंता का भार बनी अविरल,
रज-कण पर जल-कण हो बरसी,
नवजीवन अंकुर बन निकली ।
पथ को न मलिन करता आना,
पदचिन्ह न दे जाता जाना,
सुधि मेरे आगम की जग में,
सुख की सिहरन हो अन्त खिली ।

विस्तृत नभ का कोई कोना,
मेरा न कभी अपना होना,
परिचय इतना, इतिहास यही,
उमड़ी कल थी, मिट आज चली ।

1. मैं नीर भरी --------------- मलय-बयार पली ।

मैं नीर भरी दुख की बदली कविता में भारतीय नारी की व्यथा को बादल के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है. उनकी कविताओं में भारतीय नारी की व्यथा, मानसिक प्रताड़ना से उपजी मर्मान्तक पीडा, सहिष्णुता की मूर्ति होने पर भी पग-पग पर मिली अवहेलना, माँ, बहन, बेटी, जीवन-संगिनी के विभिन्न नारी रूपों की कुशल संवाहिका होते हुए भी पुरूष प्रधान समाज द्वारा उसका आत्म सम्मान बार बार आहत होने के ज्वलंत साक्ष्य, प्रबल बिम्बात्मकता एवं चित्रात्मकता से सम्पृक्त, पाषाण-हृदयों को भी द्रवित करने की काव्यात्मक क्षमता से परिपूर्ण संवेदनात्मक शब्द चित्र सहजता से मिल जाते हैं. उनकी यह कविता किसी को भी सोचने को मजबूर कर देती हैं.

वे अपना परिचय देते हुए कहती हैं, मेरा जीवन एक नीर (पानी) से भरी छोटी सी बदली के समान हैं. जिसके स्पंदन में चिर निस्पंद बसा है, जिसका क्रंदन विश्व को हास्यास्पद लगता हैं. परंतु मेरा अस्तित्व इस धरा पर अतृप्त विश्व को तृप्त करने के लिए

ही हैं. मेरे पग पग में जीवन का मधुर संगीत भरा हुआ हैं. मेरे श्वासों में स्वप्नों की सुगंध हैं. मेरी छाया में मन को शांति देने वाली मंद मंद हवा जैसी शीतलता हैं.

2. मैं क्षितिज-भृकुटि ----------- अन्त खिली।

कवयित्री का कहना है कि मेरे स्पंदन में चिर निस्पंद बसा है जो अपने आप को मिटा कर दूसरों को नवजीवन देता हैं. बदली क्षितिज से जलकण होकर बरसती है, अपना अस्तित्व समाप्त कर के धरा को नवजीवन देती हैं. बदली जब बरसकर अपने अस्तित्व को समाप्त कर देती है तब धरती पर नवजीवन अंकुरित होता है. उनका कहना है कि इस बदली के आगमन से, उसके पदचिन्हों से सुख की अनुभूति होती हैं. बदली जलकण के रूप में धरती पर बरसती हैं और समाप्त हो जाती है. उसका आगमन सुख की अनुभूति देता हैं. बदली बरसकर, समाप्त होकर भी अपने पैरों के निशान छोड़ जाती है. उसके आने से संसार सुखी होता है.

3. विस्तृत नभ ------------- मिट आज चली।

अपने अस्तित्व को ऐसी नीर भरी बदली के रूप में देखते हुए वे कहती हैं कि मैं एक नीर भरी बदली के समान हूँ, मैं इस विस्तृत आकाश में होते हुए भी उसका कोई कोना मेरा अपना नहीं हैं. मेरा परिचय, मेरा इतिहास यही है कि मैं कल उमडी थी आज मिट गयी. उनकी इस कविता की अंतिम पंक्तियों में रीस, पीडा अंतर्मन की मार्मिक स्थिति, विवशता प्रस्तुत हुई हैं. वास्तव में कवयित्री अपनी इस कविता में जीवन के सत्य को प्रस्तुत करते हुए कहती हैं कि इस विस्तृत संसार में मनुष्य आता है और अपनी भूमिका निभाते हुए चला जाता हैं. मनुष्य का जीवन क्षणभंगुर हैं. जीवन का यही मर्म इस कविता में प्रस्तुत हुआ है.

- **वस्तुनिष्ठ प्रश्न :**

(1) 'मैं नीर भरी दुख की बदली' कविता में किसकी व्यथा प्रस्तुत हुई है ?

(2) कवयित्री स्वयं की तुलना किससे कर रही हैं ?

(3) बदली किस रूप में बरसती हैं ?

(4) बदली के बरसने पर धरती पर क्या अंकुरित होता है ?

13.7 'जाग तुझको दूर जाना': कविता-पाठ, विश्लेषण और व्याख्या :

चिर सजग आँखे उनींदी आज कैसा व्यस्त बाना।
जाग तुझको दूर जाना।
अचल हिमगिरि के हृदय में आज चाहें कम्प हो ले,
या प्रलय के आँसूओं में मौन अलसित व्योम रो ले।
आज पी आलोक को डोले तिमिर की घोर छाया,
जाग या विद्युत-शिखाओं में निठुर तूफान बोले।
पर तुझे है नाश-पथ पर चिन्ह अपने छोड आना।
जाग तुझको दूर जाना।

बाँध लेंगे क्या तुझे यह मोम के बन्धन सजीले ?
पन्थ की बाधा बनेंगे तितलियों के पर रँगीले ?
विश्व का क्रन्दन भुला देगी मधुप की मधुर-गुनगुन ?
क्या डुबा देंगे तुझे यह फूल के दल ओस-गीले ?
तू न अपनी छाँह को अपने लिए कारा बनाना ।
जाग तुझको दूर जाना ।
वज्र का उर एक छोटे अश्रुकण में धो गलाया,
दे किसे जीवन-सुधा दो घूँट मदिरा माँग लाया ?
सो गई आँधी मलय की वात का उपधान ले क्या ?
विश्व का अभिशाप क्या नींद बनकर पास आया ?
अमरता-सुत चाहता क्यों मृत्यु को उर में बसाना ?
जाग तुझको दूर जाना ।
कह न ठंडी साँस में अब भूल वह जलती कहानी,
आग हो उर में तभी दृग में सजेगा आज पानी ।
हार भी तेरी बनेगी मानिनी जय की पताका,
राख क्षणिक पतंग की है अमर दीपक की निशानी ।
है तुझे अंगार-शय्या पर मृदुल कलियाँ बिछाना ।
जाग तुझको दूर जाना ।

छायावाद की प्रमुख कवयित्री महादेवी वर्मा द्वारा लिखी गई प्रस्तुत कविता 'जाग तुझको दूर जाना' देशभक्ति कविता है. इस कविता में देशभक्ति का स्वर मुख्य है. इसमें कवयित्री ने देश को स्वतंत्र करवाने के लिए संघर्षरत देशवासियों को जागरण का संदेश दिया है. वे देशभक्तों को जागृत करते हुए आजादी के रास्ते में आने वाली कठिनाईयों से भयभीत न होने की सलाह देती हैं. वे उन्हें जागरण का संदेश देती हैं ताकि वे मार्ग के व्यवधानों पर विजय प्राप्त कर, देश को परतंत्रता की जंजीरों से मुक्त करवाने में सफल हो सकें. कठिन परिस्थितियाँ उनके मार्ग में बाधा न बनें. वे कहती हैं चाहे आसमान में काले बादल छा जायें, प्रलय, तूफान, झंझावत आ जाये, चाहे हिमालय में भूकंप आ जाए, चाहे चारों ओर भयंकर अंधकार छा जाए, ऐसे कठिन समय में भी तुम्हारे कदमों के निशान राह पर पडने चाहिए अर्थात् तुम्हें कठिनाई भरी राहों पर भी चलते रहना चाहिए. किसी भी प्रकार की बाधाएँ तुम्हारे कदमों की गति को शिथिल न कर सकें. कवयित्री ने देशभक्तों को कहा है कि मार्ग की कठिनाइयों से न डरकर निरन्तर प्रयत्न करते रहना चाहिए.

1. बाँध लेंगे --------------- कारा बनाना ।

कवयित्री का कहना है कि मनुष्य का जीवन अनमोल है. हमें अपने जीवन के लक्ष्य को पहचानकर निरंतर प्रयत्नशील रहना चाहिए. जीवन के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए मार्ग की बाधाओं को अपने पुरूषार्थ के द्वारा दूर करना हमारा कर्तव्य हैं. इसमें मानवीय रिश्ते-नाते, मोहमाया के बंधन बाधा नहीं बनने चाहिए. बल्कि वह साधक बनने

चाहिए. अपनी भारत माता को गुलामी की जंजीर से मुक्त करवाना ही हमारा एक मात्र लक्ष्य होना चाहिए. सांसारिक मोह-माया के बंधन मनुष्य को अपने पथ पर आगे बढने से रोकते हैं. तितलियों के रंगीले पंखों की तरह वे बंधन उसे अपनी ओर आकर्षित करते हैं और वह विचलित होता हैं. जिस प्रकार ओस की बूँदे जिन फूलों पर पडती हैं, वे फूल आकर्षक और सुन्दर लगते हैं. हमारा ध्यान आर्कषित करते हैं. भौंरों की गुनगुनाहट हमारा ध्यान खिंचती हैं. सृष्टि की यही सुन्दरता, गुनगुनाहट विश्व का क्रन्दन भुला देगी? अर्थात् कवयित्री देशवासियों को संबोधित करते हुए कहती हैं कि जब पूरा देश अन्याय, शोषण और गुलामी की जंजीरों में बंधा हुआ हो, अनेक विपत्तियों का सामना कर रहा हो, ऐसे समय में हम क्षणभंगुर भोग-विलास में खोये रहें वह हमें शोभा देगा क्या? जैसे हमारी छाया का कोई अस्तित्व नहीं है, वह हमारे पीछे चलती है, वैसे ही मोह-माया का आकर्षण भी क्षणिक है, वह हमारा बंधन नहीं बनना चाहिए. अर्थात् मोहक आकर्षणों से आकर्षित न होकर देश के प्रति अपने कर्तव्यों के लिए हमेशा जागृत रहना चाहिए.

2. वज्र का ---------- उर में बसाना ?

महादेवी जी कहती हैं कि देशवासियों का हृदय वज्र की तरह कठोर हैं, उनमें हर प्रकार की सहनशक्ति हैं. ऐसा हृदय किसी भी स्थिति में कमजोर नहीं पडना चाहिए. कवयित्री भारतवासियों से कहती हैं कि जीवन सुधा का पान करने वाले तुम दो घूँट मदिरा का पान करके बेहोश क्यों हो जाना चाहते हो. हमारे भीतर का जोश, उमंग और उत्साह रूपी आँधी-तूफान आजादी रूपी अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में सहायक हैं. लेकिन वह जोश, उत्साह रूपी आँधी यदि शांत होकर मलयाचल से आने वाली शीतल हवा का तकिया बनाकर सो जायेगी तब हम भारतीय अपने लक्ष्य को कैसे प्राप्त कर सकेंगें. ये आँधी हमारी शक्ति का प्रतीक हैं, यह समय आलस का नहीं है, आलस्य हमारे लिए अभिशाप हैं. कवयित्री कहती हैं कि भारतीयों की आत्मा अमर हैं अतः देश की आजादी के लिए लडने वाला हर देशभक्त अमरता का पुत्र है फिर वह अपने हृदय में मृत्यु का डर लिए क्यों बैठा रहे? ये प्रमाद, आलस्य अभिशाप के समान हैं, जिसके कारण व्यक्ति सक्रिय जीवनरूपी अमृत से वंचित हो जाता है. अतः तुझे आलस्य त्यागकर जागरूक होना चाहिए.

3. कह न ठंडी साँस ----------- कलियाँ बिछाना।

महादेवी जी कहती हैं कि सफलता-असफलता, हार-जीत मनुष्य जीवन के दो पहलू है. असफलता में ही सफलता छिपी होती है अतः असफल होने पर निराश नहीं होना चाहिए. असफलता ही सफलता का सोपान है. देश को आजाद कराने के लिए, परतंत्रता से मुक्ति के लिए उमंग, उत्साह जोश बनाए रखने की आवश्यकता हैं. असफलता मिलने पर ठंडी साँस भरकर यह मत कहो कि जलती हुई संघर्ष की कहानी को भूल जाओ. संघर्ष जारी रखना है, निराश नहीं होना है. कवयित्री निराश देशभक्तों में आशा का संचार करना चाहती हैं. वे उन्हें प्रेरित करते हुए कहती हैं कि हार के बाद उस पर सोचना चाहिए कि कहाँ हमारे प्रयत्नों में कमी रह गई. हम से कहाँ चूक हुई. आँखों में आँसू तभी अच्छे लगते हैं जब हृदय में आग हो अर्थात् लक्ष्य सामने हो, उसे प्राप्त करने की दृढ़ इच्छाशक्ति हो. असफलता पर आँसू बहाना अच्छा है उससे असफलता का मैल धुल जायेगा. कवयित्री को विश्वास है कि इच्छा शक्ति प्रबल होगी तो वह दिन दूर नहीं जब हम सफल होंगें, हमारे प्रयत्नों में हमें सफलता मिलेगी. जिस प्रकार पतंगा दीपक पर मंडराते हुए क्षणभर में जलकर राख हो जाता है पर दीपक अमर रहता है उसी तरह देशभक्ति का बलिदान ही आजादी के दीपक की अमर कहानी रचेगा. तुम्हारे मन में जो देशभक्ति की आग है वही

भारतवासियों के जीवन पथ में कोमल कलियाँ बिछा देगी. अतः तुम्हे अपने प्रयत्नों से स्वयं आग पर चलते हुए देशवासियों के लिए मृदुल कलियाँ बिछानी हैं.

निष्कर्षत : प्रस्तुत कविता में देशभक्ति की भावना जगाने का प्रयास किया गया है और आत्म बल से समस्याओं से जूझते हुए उन्हें दूर करने का संदेश दिया है. देशवासियों को जागरण का संदेश देते हुए सतर्क एवं सदैव सावधान रहने को प्रेरित किया है.

- **बोध प्रश्न :**

(1) 'जाग तुझको दूर जाना' कविता का मूल स्वर कौन सा है ?

(2) इस कविता में किसे जागने को कहा गया है ?

(3) आगे बढ़ते हुए किससे नहीं डरना है ?

(4) जीवन लक्ष्य प्राप्त करने में कौन से बंधन बाधा नहीं बनने चाहिए ?

13.8 सार-बिंदु :

- छायावाद की अंतिम परंतु सशक्त स्तंभ महादेवी वर्मा के काव्य में प्रेम, वेदना, करूणा, सौंदर्यानुभूति का चित्रण मिलता है.
- 'चिर सजग आँखें उनींदी' कविता में देश को स्वतंत्र करवाने में संघर्षरत देशवासियों को जागरण का संदेश दिया गया है.
- 'मैं नीर भरी दुख की बदली' में भारतीय नारी की व्यथा को बादल के माध्यम से व्यक्त किया है. इस कविता में अपना परिचय देते हुए कवयित्री जीवन की सत्यता का परिचय देती हैं. इसमें दुख और वेदना के भाव व्यक्त हुए हैं.
- उनकी कविताओं में गहरी करूणा और वेदना है. यह वेदना और करूणा समस्त विश्व को एकसूत्र में बाँधे रखने की क्षमता रखती हैं.

13.9 परीक्षोपयोगी प्रश्नावली :

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

(1) महादेवी वर्मा का व्यक्तित्व एवं कृतित्व लिखिए.

(2) महादेवी जी के काव्य में कौन सी छायावादी काव्य प्रवृत्तियाँ चित्रित हुई हैं ?

लघु उत्तरीय प्रश्न

(1) महादेवी जी के काव्य में प्रकृति चित्रण किस प्रकास से हुआ हैं ?

(2) महादेवी जी के काव्य में वेदना और करूणा की अभिव्यक्ति किस प्रकार हुई हैं ?

(3) महादेवी जी के सर्जक व्यक्तित्व का संक्षिप्त परिचय दीजिए.

टिप्पणी लिखिए

(1) 'जाग तुझे दूर जाना' कविता के भाव स्पष्ट कीजिए.

(2) 'मैं नीर भरी दुख की बदली' कविता के भाव स्पष्ट कीजिए.

(3) महादेवी जी के काव्य की भाषा शैली का परिचय दीजिए.

वस्तुनिष्ठ प्रश्न :

सही के सामने ✓ गलत के सामने ✗ का निशान लगाएं

(1)'नीहार', 'रश्मि' तथा 'सांध्यगीत' की कविताओं को 'यामा में संकलित किया गया हैं.

(2) 'दीपशिखा' के लिए महादेवी को ज्ञानपीठ पुरस्कार मिला.

(3) 'मैं नीर भरी दु:ख की बदली' देशभक्ति की कविता हैं.

(4) महादेवी की रचनाओं पर पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव देखने को मिलता है.

(5) 'चिर सजग आँखे उनींदी वेदना की भावना से ओत-प्रोत कविता है.

13.10 संदर्भ सूची :

(1) महादेवी - सम्पादक : डॉ. परमानंद श्रीवास्तव, लोकभारती, प्रकाशन.

(2) महादेवी वर्मा के काव्य में सौंदर्य भावना - डॉ. गोविंद पाल सिंह, लोकभारती प्रकशन.

(3) महादेवी का काव्य सौंदर्य - डॉ. हुकुमचंद राजपाल

(4) www.kavitakosh.org

(5) www.hindi-kavita.com

(6) hi.wikipedia.org/wiki/ महादेवी_वर्मा

(7) old.nios.ac.in/srsec30/new/301-lesson-14.pdf

(8) hindianswersonline.blogspot.com/2017/10/blog-pst_88.html

इकाई 14 छायावादोत्तर काल : युग परिचय और प्रवृत्तियाँ

रूपरेखा

14.1 उद्देश्य

14.2 प्रस्तावना

14.3 प्रगतिवाद

14.4 प्रयोगवाद एवं नई कविता

14.5 समकालीन हिन्दी कविता

14.6 इक्कीसवीं सदी की हिन्दी कविता

14.7 सार-बिंदु

14.8 शब्दावली

14.9 परीक्षोपयोगी प्रश्नावली

14.10 संदर्भ सूची

14.1 उद्देश्य :

छायावादोत्तर काल से संबंधित खंड की यह पहली इकाई हैं. इसमें आप छायावादोत्तर काव्यधारा का अध्ययन करेंगे. इस इकाई को पढने के बाद आप :

- प्रगतिवाद की पृष्ठभूमि और उसकी प्रवृत्तियों को स्पष्ट कर सकेंगे.
- प्रगतिवाद के प्रमुख कवियों के बारे में जान पाएंगे.
- प्रयोगवाद एवं नई कविता की पृष्ठभूमि और उसकी प्रवृत्तियों का उल्लेख कर सकेंगे.
- प्रयोगवाद के प्रमुख कवियों के बारे में बता पाएंगे.
- समकालीन हिन्दी कविता की पृष्ठभूमि और प्रवृत्तियों के बारे में जान पाएंगे.
- समकालीन हिन्दी कविता के प्रमुख कवियों के बारे में जान पाएंगे.

14.2 प्रस्तावना :

छायावाद का समय सन् 1918 ई. से 1936 ई. तक माना जाता है. छायावादोत्तर हिन्दी कविता से अभिप्राय छायावाद के बाद की कविता से है. जिसके प्रगतिवादी कविता, प्रयोगवादी कविता, नई कविता और समकालीन कविता नाम से विभाजन किए गये हैं. समय-सूचक रूप में प्रगतिवाद का समय सन् 1936-1943 ई. तक, प्रयोगवाद का समय सन् 1943-1953 ई. तक, नई कविता का समय सन् 1953-1970 ई. तक और समकालीन हिन्दी कविता का समय सन् 1970-2000 ई. तक माना जाता है. सन् 2000 के बाद की कविताओं पर अभी तक किसी निश्चित नामकरण पर स्वीकृति नहीं हुई है, इसलिए उन्हें इक्कीसवीं सदी की हिन्दी कविता के नाम से अभिहित किया जाता है.

14.3 प्रगतिवाद

प्रगतिवादी कविता की पृष्ठभूमि :

प्रगतिवादी कविता का समय सन् 1936 ई. से सन् 1943 ई. तक माना जाता है.

20 वीं सदी के प्रारंभिक दौर में वैश्विक स्तर पर साम्यवादी-मार्क्सवादी विचारधारा लोकप्रिय हुई. सन् 1935 में मुल्कराज आनंद, सज्जाद जहीर और अन्य कुछ छात्रों के सहयोग से लन्दन में 'प्रगतिशील संघ' की स्थापना हुई. प्रसिद्ध उपन्यासकार ई.एम. फार्स्टर की अध्यक्षता में प्रथम अधिवेशन हुआ. भारत में 'प्रगतिशील लेखक संघ' का पहला अधिवेशन लखनऊ (सन् 1936 ई.) में मुंशी प्रेमचंद की अध्यक्षता में हुआ. जिसमें 'साहित्य का उद्देश्य' विषय पर मुंशी प्रेमचंद ने ऐतिहासिक भाषण दिया. इस अधिवेशन में प्रगतिशील लेखक संघ का घोषणा पत्र भी रखा गया. हिन्दी की प्रगतिवादी कविता पूरी तरह से इस घोषणा पत्र पर आधारित नहीं हैं, किन्तु इससे प्रभावित अवश्य है.

प्रगतिवादी कविता से अभिप्राय :

प्रगति का शाब्दिक अर्थ होता है- आगे बढ़ना, अग्रसर होना. हिन्दी में प्रगतिवादी शब्द का प्रयोग सिर्फ इस अर्थ में ही नहीं हैं. कई विद्वानों का मानना है कि जो विचारधारा राजनीतिक क्षेत्र में साम्यवाद और मार्क्सवाद है, वही हिन्दी साहित्यिक क्षेत्र में प्रगतिवाद है. साम्यवाद-मार्क्सवाद से प्रगतिवाद प्रभावित रहा है. यह प्रगतिवाद, प्रगतिशीलता के अर्थ में भी लिया जाता है. मार्क्सवादी विचारधारा के आधार पर समाज को दो वर्गों में बाँटा जाता है- एक पूँजीपति वर्ग अथवा शोषक वर्ग और दूसरा सर्वहारा वर्ग अथवा शोषित वर्ग. शोषक वर्ग में पूँजीपति, कारखानों के मालिक, उद्योगपति, जमींदार और महाजन आदि रखे जाते हैं, जो सामान्यत: गरीबों, मजदूरों और आमजन का शोषण करते हैं. शोषित वर्ग में गरीब, मजदूर, किसान और श्रमिक आदि हैं, जिनका सामान्यत: शोषण होता है. प्रगतिवादी कविता समाज के सभी वर्गों के लिए समान अवसरों की बात करती हैं. यह कविता जाति, वर्ग, वर्ण और लिंग के आधार पर किए जाने वाले भेदभावों को अस्वीकार करती हैं. प्रगतिवादी कविता सामाजिक विसंगतियों और विकृतियों का विरोध करती हैं. प्रगतिवादी कविता में कल्पनाशीलता, अलंकारिकता एवं अन्य कला पक्ष के आग्रह कम हैं. यह काव्य श्रम की महत्ता को स्वीकार करता है. इस काव्य में धर्म, ईश्वर, पाप-पुण्य की परिकल्पनाओं का कोई स्थान नहीं हैं. प्रगतिवादी कविता की दृष्टि यथार्थवादी है.

प्रगतिवाद के प्रमुख कवि :

प्रगतिवाद के प्रमुख कवियों में सूर्यकांत त्रिपाठी निराला, नागार्जुन, केदारनाथ अग्रवाल, शमशेर बहादुर सिंह, रामविलास शर्मा, मन्नू लाल शर्मा 'शील', शिवमंगल सिंह 'सुमन' और त्रिलोचन शास्त्री आदि का नाम लिया जा सकता है. कुछ अन्य कवियों सुमित्रानंदन पन्त, निराला, रामधारीसिंह दिनकर और नरेन्द्र शर्मा आदि की कविताओं में भी प्रगतिवादी कविता के तत्व देखे जा सकते हैं. प्रमुख कवियों का परिचयात्मक विवरण निम्नवत हैं-

नागार्जुन (1911-1998): इनका मूल नाम वैद्यनाथ मिश्र था, किन्तु हिंदी साहित्य में आप नागार्जुन नाम से प्रसिद्ध हैं. मैथिली में वह 'यात्री' उपनाम से लिखते थे. नागार्जुन प्रगतिवादी विचारधारा के प्रमुख कवि हैं. उनके प्रमुख काव्य संग्रहों में युगधारा, सतरंगे पंखों वाली, प्यासी पथराई आँखें, तालाब की मछलियाँ, हजार-हजार बाँहों वाली और तुमने कहा था आदि के नाम लिए जा सकते हैं. उनकी कविताओं में लोक जीवन और जनपदीय संस्कृति का चित्रण देखा जा सकता है. उनकी कविताएँ शोषण, अन्याय एवं अत्याचार का विरोध करती हैं और आम जनजीवन के सवालों पर विचार करती हैं. उन्होंने राजनीतिक संदर्भों से युक्त कविताएँ भी पर्याप्त मात्रा में लिखी. नागार्जुन के फक्कड़ और क्रान्तिकारी व्यक्तित्व को देखते हुए कई विद्वान उन्हें आधुनिक युग का कबीर भी कहते हैं.

केदारनाथ अग्रवाल (1911-2000): केदारनाथ अग्रवाल प्रगतिवाद के प्रतिनिधि कवि हैं. इनकी साम्यवाद में गहरी आस्था थी. इनके प्रमुख कविता संकलनों में युग की गंगा, नींद के बादल, फूल नहीं रंग बोलते हैं, आग का आईना, अपूर्वा, कंकरीला मैदान, ज नहारी हरियाली तथा गुल मेहंदी आदि हैं. प्रेम, प्रकृति और सौंदर्य पर उन्होंने कई सुन्दर कविताएँ लिखी हैं. आमजन के संघर्षशील, कठोर और कठिन जीवन का चित्रण उनके काव्य की विशिष्टताएँ हैं.

शमशेर बहादुर सिंह (1911-1994): शमशेर बहादुर सिंह दूसरा सप्तक के कवि हैं. वह वैचारिक दृष्टि से मार्क्सवाद से प्रभावित रहे हैं. कुछ कविताएँ, कुछ और कविताएँ, चुका भी हूँ मैं नहीं, इतने पास अपने, उदिता, बात बोलेगी, काल तुझसे होड़ है मेरी और टूटी हुई बिखरी हुई आदि उनके कविता संकलन हैं. उनकी कविताओं में प्रेम और सौन्दर्य की अभिव्यक्ति प्रमुखता से हुई हैं. चित्रकला के प्रति उनकी विशेष रुचि रही है. शमशेर ने अपनी कविताओं में चित्रात्मक बिम्ब प्रस्तुत किए हैं.

शिवमंगल सिंह 'सुमन' (1915-2002): शिवमंगल सिंह सुमन मार्क्सवाद के प्रबल समर्थक हैं. सुमन की प्रमुख रचनाओं में हिल्लोल, जीवन के गान, प्रलय सृजन, विश्वास बढ़ता ही गया, पर आँखें नहीं भरी, विंध्य हिमालय, मिट्टी की बारात और वाणी की व्यथा आदि के नाम लिए जा सकते हैं. उनकी रचनाओं में शोषण और अन्याय का विरोध है. इनकी कविताओं में भाव, विचार और शिल्प का सुन्दर समन्वय देखने को मिलता है.

त्रिलोचन शास्त्री (1917-2007): त्रिलोचन शास्त्री के प्रसिद्ध कविता संग्रह- धरती, गुलाब और बुलबुल, दिगंत, गीत गंगा, ताप के ताये हुए दिन, तुम्हे सौंपता हूँ, सबका अपना आकाश, मैं उस जनपद का कवि हूँ और मिट्टी की बारात आदि प्रमुख हैं. गाँव की आम जनता और उनके सामाजिक सरोकार इनकी कविताओं में अभिव्यक्त हुए हैं. उनकी कविताओं में वैश्विक चेतना भी पाई जाती है. काव्य भाषा को जनभाषा के निकट लाने का प्रयास उन्होंने किया है. त्रिलोचन शास्त्री 'सॉनेट्स' के लिए विशेष प्रसिद्ध हैं.

प्रगतिवादी कविता की प्रमुख प्रवृत्तियाँ

1. **सामाजिक यथार्थ दृष्टि:** प्रगतिवादी कविता का प्रेरक कथ्य मार्क्सवादी चिंतन हैं. वह यथार्थ पर बल देता है. प्रगतिवादी कवियों ने भी यथार्थवादी दृष्टि से कविताएँ लिखीं. प्रगतिवादी कवि सामाजिक यथार्थ को प्रस्तुत करने में विश्वास करते हैं, चाहे वह कितना ही वीभत्स क्यों न हो. यथा

सड़े घूर की गोबर की बदबू से दबकर
महक जिन्दगी के गुलाब की मर जाती है (केदारनाथ अग्रवाल)

घुन खाए शहतीरों पर की, बारहखड़ी विधाता बांचे
फटी भीत है, छत चूती है, आले पर बिसतुइया नाचे
बरसा कर बेबस बच्चों पर मिनट-मिनट में पांच तमाचे
इसी तरह से दुखरन मास्टर गढ़ता है आदम के सांचे (नागार्जुन)

2. आर्थिक विषमता का विरोध: प्रगतिवादी कवि वर्गहीन समाज चाहता है, इसलिए प्रगतिवादी काव्य की मुख्य विषयवस्तु शोषक-शोषित वर्ग से संबंधित है. वर्गभेद से ही आर्थिक विषमता व्याप्त होती है. जब तक समाज में आर्थिक विषमता है तब तक वर्गहीन समतामूलक समाज की स्थापना नहीं हो सकती. उनकी कविताओं में आर्थिक विषमता और पूँजीवादी व्यवस्था का विरोध हैं.

अबे सुन बे गुलाब
भूल मत जो पाई खुशबू रंगों आब
खून चूसा खाद का तूने अशिष्ट
डाल पर इतरा रहा कैपीटलिस्ट (निराला)

3. ईश्वर और धर्म के प्रति अनास्था : ईश्वर और धर्म के भय से मुक्त होने के लिए शोषित वर्ग में चेतना देने का प्रयास प्रगतिवादी कवियों ने किया है. प्रगतिवादी कवि ईश्वर और धर्म के पाखण्ड में विश्वास नहीं करता है. यदि ईश्वर है तो समानता क्यों नहीं है ? ईश्वर और धर्म के प्रति अनास्था प्रगतिवादी कवियों ने व्यक्त की हैं.

भाग्यवाद आवरण पाप का और शास्त्र शोषण का
जिससे रखता दबा एक जन भाग दूसरे जन का (दिनकर- कुरुक्षेत्र)

4. सौंदर्य के प्रति नवीन दृष्टि : प्रगतिवादी कविता की सौंदर्य दृष्टि परम्परागत रूप से अलग थी. प्रगतिवादी कवियों ने आमजन की सुन्दरता को प्रकट किया है. वे चाहते थे कि विशिष्टजन की जगह जनसाधारण और उसकी समस्याएं प्रगतिवादी काव्य का विषय बने. उनका मानना था कि किसान, मजदूर, गरीब और सामान्य स्त्री में भी सौन्दर्य है. यथा-

वह तोडती पत्थर;
देखा मैंने उसे इलाहाबाद के पथ पर
वह तोडती पत्थर

कोई न छायादार
पेड़ वह जिसके तले बैठी हुई स्वीकार
श्याम तन, भर बँधा यौवन,
नत नयन, प्रिय-कर्म-रत मन।
गुरु हथौड़ा हाथ,
करती बार-बार प्रहार-
सामने तरु-मालिका अट्टालिका, प्राकार (निराला)

5. प्रकृति चित्रण : प्रगतिवादी कवियों ने प्रकृति का सुन्दर चित्रण किया है. उनकी कविताओं में ग्रामीण परिवेश के साथ खेत-खलिहान, पेड़-पौधे और नदी-पहाड़ सब कुछ हैं. इन कवियों का प्रकृति निरूपण रोमानी नहीं यथार्थवादी है. यथा-

एक बीते के बराबर
यह हरा ठिगना चना.

बाँधे मुरेठा शीश पर
छोटे गुलाबी फूल का.
सज कर खड़ा है.
पास ही मिलकर उगी है
बीच में अलसी हठीली
देह की पतली, कमर की है लचीली. (केदारनाथ अग्रवाल)

6. शिल्पगत विशेषताएँ : प्रगतिवादी कवियों ने आम बोलचाल के शब्दों के साथ लोक धुनों का भरपूर इस्तेमाल किया है. आंचलिकता का प्रभाव भी कहीं-कहीं देखा जा सकता है. चमत्कारिकता, अलंकारिकता, काल्पनिकता और कृत्रिमता को प्रगतिवादी कवियों ने विशेष महत्व नहीं दिया. प्रगतिवादी कवियों ने स्पष्टता, प्रभावशीलता और संप्रेषणीयता पर विशेष बल दिया. उनकी कविताओं में अलंकार, बिम्ब, प्रतीक और छंद आदि सहज सरल रूप में प्रयुक्त हुए हैं. छंदों के सुन्दर प्रयोग प्रगतिवादी कवियों ने किए हैं. लोक छंदों का भी उन्होंने भरपूर इस्तेमाल किया है. यथा

मांझी! न बजाओ बंशी मेरा मन डोलता
मेरा मन डोलता है जैसे जल डोलता
जल का जहाज जैसे पल-पल डोलता
मांझी! न बजाओ बंशी मेरा प्रन टूटता (केदारनाथ अग्रवाल)

इस युग की कविताओं में दोहा, बरवै, गजल और लावणी आदि छंदों को भी देख सकते हैं.. मुक्त छंद भी इस समय लोकप्रिय रहा है. प्रगतिवादी कवियों की कविताओं में कला पक्ष की तुलना में भाव पक्ष पर अधिक बल देखने को मिलता है.

बोध प्रश्न

1. कोष्ठकों में दिए गये शब्दों में से उपयुक्त शब्द चुनकर वाक्य पूरा करें.

क) भारत में 'प्रगतिशील लेखक संघ' का पहला अधिवेशन 1936 में .... में मुंशी प्रेमचंद की अध्यक्षता में हुआ था.
(लखनऊ /दिल्ली)

ख) प्रगतिवादी कविता की दृष्टि ....है.
(आदर्शवादी/यथार्थवादी)

ग) .... के फक्कड़ और क्रान्तिकारी व्यक्तित्व को देखते हुए कई विद्वान उन्हें आधुनिक युग का कबीर भी कहते हैं.
(केदारनाथ अग्रवाल/नागार्जुन)

घ) .... काव्य की मुख्य विषयवस्तु शोषक-शोषित वर्ग से सम्बंधित है.
(प्रगतिवादी/प्रयोगवाद)

अति लघु उत्तरात्मक प्रश्न

1. भारत में प्रगतिशील लेखक संघ का पहला अधिवेशन कब, कहाँ और किसकी अध्यक्षता में हुआ था?
2. प्रमुख प्रगतिवादी कवियों के नाम लिखिए.
3. 'सतरंगे पंखों वाली' किसकी कृति हैं?

14.4 प्रयोगवाद एवं नई कविता:

प्रयोगवाद एवं नई कविता की पृष्ठभूमि:

प्रयोगवादी कविता का समय सन् 1943 ई. से सन् 1953 ई. तक का माना जाता है. अज्ञेय के संपादन में सन् 1943 ई. में 'तार सप्तक' प्रकाशित हुआ. इस तार सप्तक में सात कवियों को शामिल किया गया. तार सप्तक में जिन सात कवियों की कविताएँ संकलित थीं, उनके नाम हैं- नेमिचंद्र जैन, गजानन माधव मुक्तिबोध, भारत भूषण अग्रवाल, प्रभाकर माचवे, गिरिजाकुमार माथुर, रामविलास शर्मा और सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय'. अज्ञेय ने तार सप्तक की भूमिका में इस नई काव्यधारा के सम्बन्ध में अपने विचार प्रस्तुत किए. साथ ही सप्तक के सभी कवियों ने काव्य विषयक मान्यताओं पर अपने-अपने विचार व्यक्त किए. तार सप्तक की कविताओं और भूमिका में प्रयोगशीलता का विशेष आग्रह देखा गया. इस तरह हिन्दी कविता में प्रयोगवाद का प्रारंभ तार सप्तक के प्रकाशन से माना जाता है.

कालांतर में प्रयोगवाद का विकास नई कविता के रूप में होता है. जो तर्क पहले प्रयोग की तरफ थे, वह अब नयेपन से जुड़ गए. रामस्वरूप चतुर्वेदी लिखते हैं कि "प्रगतिवाद, प्रयोगवाद और नई कविता के दौर ऐसे घुले-मिले हैं कि इनके सहयोगी कवि इनमें से एक से अधिक को छूते-काटते चलते हैं." नई कविता के अधिकांश कवि वही प्रयोगवादी हैं. इस तरह नई कविता की पृष्ठभूमि प्रयोगवाद से प्रभावित रही हैं. हिन्दी की नई कविता का कथ्य परम्परागत कथ्य से अलग और नया है. ऐसा कई विद्वानों का मानना है. इस कविता में भाव एवं कला पक्ष की दृष्टि से नवीनता पर विशेष बल है.

प्रयोगवादी एवं नई कविता से अभिप्राय :

काव्य में प्रयोग हमेशा से होते रहे हैं. लेकिन काव्य प्रयोगों को प्राथमिकता के साथ अभिव्यक्ति प्रयोगवादी कविता में मिलती है. प्रयोगवादी कवि 'प्रयोग' करने में विश्वास करते हैं. भाषा, उपमान, शिल्प, बिम्ब, प्रतीक और काव्य वस्तु की दृष्टि से अनेक नवीन प्रयोग हिन्दी प्रयोगवादी कवियों ने किए हैं. इन्हीं विशिष्टताओं को ध्यान में रखते हुए कई विद्वानों ने इन कवियों को प्रयोगवादी और युग को प्रयोगवाद कहा है. तार सप्तक के प्रकाशन के बाद तार सप्तक पर नंददुलारे वाजपेयी ने 'प्रयोगवादी रचनाएँ' नामक समीक्षा लेख लिखा. इस लेख में पहली बार प्रयोगवाद शब्द इस्तेमाल किया गया. कई सवालों पर इस लेख में विचार किया गया. दूसरा सप्तक 1951 में अज्ञेय के संपादन में प्रकाशित हुआ. अज्ञेय ने नंददुलारे वाजपेयी के सवालों का उत्तर देते हुए कहा कि- 'प्रयोग कोई वाद नहीं है, हम वादी नहीं रहे, न ही हैं; न प्रयोग अपने आप में कोई इष्ट अथवा साध्य है, ठीक इसी तरह कविता का कोई वाद नहीं हैं, अतः हमें प्रयोगवादी कहना उतना ही सार्थक अथवा निरर्थक है जितना कवितावादी कहना.' अज्ञेय का यह कथन प्रयोगवादी कवियों का नई कविता के कवियों में तब्दील हो जाना सिद्ध करता है.

नई कविता का प्रारंभ कब हुआ, इस सम्बन्ध में नई कविता के कवि और आलोचकों के अपने-अपने विचार हैं. डॉ. शिवकुमार के अनुसार -"ये दोनों एक ही धारा के विकास की दो अवस्थाएं हैं. सन् 1943 ई. से सन् 1953 ई. तक कविता में जो नवीन प्रयोग हुए, नई कविता उन्हीं का परिणाम है. प्रयोगवाद उस काव्यधारा की आरंभिक अवस्था है और नई कविता उसकी विकसित अवस्था." नई कविता का प्रारंभ कई विद्वान् 'नयी कविता' पत्रिका से मानते हैं. नयी सर्जनात्मकता से जुड़े इलाहाबाद के रचनाकारों-आलोचकों ने 'नयी कविता' (सन् 1954 ई.) पत्रिका का प्रकाशन प्रारम्भ किया. संपादन कार्य रामस्वरूप चतुर्वेदी और जगदीश गुप्त ने किया. सन् 1954 ई. से सन् 1967 ई. तक कुल आठ अंक

प्रकाशित हुए. इस पत्रिका ने कई युवा कवियों अथवा नयी प्रतिभाओं को पाठकों के सामने रखा. काव्य का एक नया तेवर सामने आया. तीसरा सप्तक (1959) की भूमिका में अज्ञेय, प्रयोगवाद या प्रयोगशीलता शब्दों की अपेक्षा नई कविता शब्द का प्रयोग करने पर बल देते हैं. वस्तुत: प्रयोगवाद और नई कविता में कोई विभाजक रेखा नहीं है. बहुत से कवि ऐसे थे जो पहले प्रयोगवादी रहे, लेकिन बाद में नई कविता के प्रमुख हस्ताक्षर बन गए. समय सूचक रूप में अधिकांश कवि-आलोचक 1943 से 1953 तक की कविता को प्रयोगवाद एवं 1953 के बाद की कविता को नयी कविता की संज्ञा देते हैं.

नकेनवाद: सन् 1956 ई. में नकेन नाम से पटना से प्रपद्यवादी कवियों (नलिन विलोचन शर्मा, केसरी कुमार और नरेश कुमार) का एक काव्य संग्रह प्रकाशित हुआ. यह एक नये वाद का आग्रह था. आचार्य नन्द दुलारे वाजपेयी जी ने इस सन्दर्भ में लिखा है कि ''नकेन वाद जिसे उसके हिमायतियों ने प्रपद्यवाद भी कहा है, वास्तव में, प्रयोगशीलता का एक अतिवाद था. प्रयोगवाद के प्रवक्ताओं ने जो कुछ नया कहा था, उससे संतुष्ट न होकर उसे एक तार्किक सीमा तक पहुँचाने का कार्य नकेन-1, नकेन-2 नामक संग्रह की भूमिकाओं में दिखाई पड़ा है.''

विविध काव्यान्दोलन :

नई कविता के बाद विविध काव्यान्दोलन का दौर शुरू होता है. सन् 1960 ई. के बाद हिन्दी कविता के 50 से अधिक अलग-अलग नामकरण हमारे सामने आते हैं. जिनमें हालावाद, अकविता, भूखी पीढ़ी कविता, सहज कविता, सनातन सूर्योदयी कविता, विचार कविता, ठोस कविता, नवप्रगतिशील कविता, पोस्टर कविता, ताजी कविता, युयुत्सावादी कविता और अस्वीकृत कविता आदि के नाम लिए जा सकते हैं. इन कविता आन्दोलनों के घोषणा पत्र भी प्रकाशित होते रहे. इसलिए इस दौर को विविध काव्यान्दोलनों का दौर कहा जा सकता है. नई कविता एक ऐसा नामकरण है जो विविध काव्यान्दोलनों को अपने अन्दर समाहित कर लेता है. इतने वर्षों बाद जब हम मुडक़र देखते हैं तो उन काव्यान्दोलनों का विशेष महत्व नहीं है. वस्तुत: किसी भी काव्यान्दोलन को एक निश्चित प्रवृत्ति के साथ अनेक पक्षधर कवियों की उपस्थिति से ही मान्यता मिलती है. मात्र एक-दो गोष्ठियों में चर्चाओं और घोषणाओं अथवा दो-चार मित्रों के एक साथ एक पत्रिका में प्रकाशित हो जाने से किसी आन्दोलन की शुरुआत भले कर दी जाए, लेकिन उसे मान्यता नहीं मिल जाती है. नई कविता के बाद के अधिकांश काव्यान्दोलनों की यही स्थिति बनी. ये काव्यान्दोलन जल्दी ही काल कवलित हो गए.

प्रयोगवाद एवं नई कविता के प्रमुख कवि :

प्रयोगवाद एवं नई कविता के प्रमुख कवियों में अज्ञेय, शमशेर बहादुर सिंह, मुक्तिबोध, गिरिजाकुमार माथुर, भारतभूषण अग्रवाल, नरेश मेहता, विजयदेव नारायण साही, धर्मवीर भारती, सर्वेश्वरदयाल सक्सेना, कुंवर नारायण, दुष्यंत कुमार, प्रभाकर माचवे, कीर्ति चौधरी, लक्ष्मीकांत वर्मा और केदारनाथ सिंह आदि के नाम लिए जा सकते हैं.

अज्ञेय (1911-1987): इनका पूरा नाम सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन अज्ञेय हैं. अज्ञेय को प्रयोगवाद का प्रवर्तक कहा जाता है. प्रयोगवाद और नई कविता की आधारभूत विशेषताएं उनके काव्य में देखी जा सकती हैं. अज्ञेय प्रयोगधर्मी कवि है. उन्होंने प्रतीकों और शब्दों के प्रयोग पर विशेष बल दिया. बौद्धिकता, युग चिंतन, प्रकृति सौन्दर्य और बिम्ब सृष्टि आदि उनकी काव्यगत विशेषताएं हैं. अज्ञेय की लगभग डेढ़ दर्जन काव्य

रचनाएँ प्रकाशित हुई हैं. उनका पहला काव्य संग्रह 'भग्नदूत' सन् 1933 ई. में प्रकाशित हुआ. उनके प्रमुख काव्य संग्रहों में चिंता, इत्यलम्, हरी घास पर क्षण भर, बावरा अहेरी, इंद्रधनुष रौंदे हुए ये, आँगन के पार द्वार, कितनी नावों में कितनी बार और पहले मैं सन्नाटा बुनता हूँ आदि के नाम लिए जा सकते हैं. अज्ञेय ने तार सप्तक, दूसरा सप्तक, तीसरा सप्तक और चौथा सप्तक काव्य संग्रहों का संपादन किया. अज्ञेय को 1978 में '**कितनी नावों में कितनी बार**' काव्य संकलन पर ज्ञानपीठ पुरस्कार से पुरस्कृत किया गया.

मुक्तिबोध (1917-1964): इनका पूरा नाम गजानन माधव मुक्तिबोध है. मुक्तिबोध तार सप्तक के कवि हैं. उन्हें प्रगतिवादी कविता और नई कविता का सेतु माना जाता है. इनकी कविताओं में मानवीय अस्मिताओं, चिंताओं, संघर्षों और तनावों को अभिव्यक्ति मिली है. मुक्तिबोध को आत्मसंघर्ष का कवि कहा जाता है. सामाजिक संघर्ष ही उनका आत्मसंघर्ष है. सामाजिक यथार्थ इनकी कविताओं में जीवन्तता के साथ अभिव्यक्त होता है. विजयेन्द्र स्नातक के शब्दों में ''प्रखर राजनीतिक समझ, नया काव्य मुहावरा तथा फैंटेसी की तकनीक को अपनाकर हिंदी की नई कविता को एक नवीन सर्जनात्मक दिशा एवं राह दी.'' अँधेरे में और ब्रह्मराक्षस का शिष्य उनकी प्रसिद्ध लम्बी कविताएँ हैं. चाँद का मुँह टेढ़ा है और भूरी-भूरी खाक धूल उनके प्रमुख काव्य संग्रह हैं.

गिरिजाकुमार माथुर (1918-1994): गिरिजाकुमार माथुर तार सप्तक के कवियों में शामिल हैं. इनका पहला कविता संग्रह 'मंजीर' नाम से सन् 1941 ई. में प्रकाशित हुआ. इनके अन्य संकलन नाश और निर्माण, धूप के धान, शिलाखंड चमकीले, असिद्ध की व्यथा, मैं वक्त के सामने हूँ, पृथ्वी कल्प और कल्पान्तर हैं. स्त्री, प्रेम और प्रकृति सौंदर्य उनके काव्य के मुख्य विषय रहे हैं. रूमानी भावबोध के साथ नाद सौंदर्य, गीतात्मकता और प्रयोगशीलता आदि उनके काव्य की मुख्य विशेषताएँ हैं.

भारत भूषण अग्रवाल (1919-1975): भारत भूषण अग्रवाल तार सप्तक के कवियों में से एक हैं. प्रारंभ में छायावाद, प्रगतिवाद और बाद में प्रयोगवाद से प्रभावित रहे. प्रयोगवाद एवं नई कविता के कवि के रूप में इनकी गणना की जाती है. इनकी कविताएँ वक्तव्य प्रधान और व्यंग्यात्मक हैं. इनका पहला कविता संग्रह सन् 1941 ई. में 'छवि के बंधन' नाम से प्रकाशित हुआ. इनके अन्य कविता संकलन जागते रहो, मुक्ति मार्ग, ओ अप्रस्तुत मन, अनुपस्थित लोग और एक उठा हुआ हाथ आदि हैं.

नरेश मेहता (1922-2000): नरेश मेहता दूसरा सप्तक के कवि हैं. उनके काव्य में मनुष्य और प्रकृति का सुन्दर चित्रण हुआ है. प्रकृति के असंख्य चित्र उनकी कविताओं में देखे जा सकते हैं. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी के अनुसार ''नरेश जी की कविता में असंख्य प्रकृति चित्रों को देखकर लगता है जैसे कवि मन पर प्रकृति का जादू हो. जहाँ भी प्राकृतिक दृश्य आते हैं उनका वर्णन कवि बड़े उल्लास के साथ करता है.'' नरेश मेहता के प्रसिद्ध काव्य संकलन- बोलने दो चीड़ को, महाप्रस्थान, संशय की एक रात, वनपाखी ! सुनो, मेरा समर्पित एकांत, उत्सवा, तुम मेरा मौन हो, अरण्या, पिछले दिनों, नंगे पैर, आखिर समुद्र से तात्पर्य और देखना एक दिन आदि हैं. नरेश मेहता को ज्ञानपीठ पुरस्कार (1992) प्राप्त हो चुका है.

विजयदेव नारायण साही (1924-1982): विजयदेव नारायण साही तीसरा सप्तक के कवि हैं. इनके मछलीघर, साखी और संवाद तुमसे है नामक महत्वपूर्ण काव्य संग्रह हैं. इन्होंने अपनी कविताओं में फैंटेसी का प्रयोग किया है. साही ने कम कविताएँ लिखी किन्तु जितनी लिखी हैं, वह नये रास्ते तैयार करती हैं.

धर्मवीर भारती (1926-1997): दूसरा सप्तक के कवि रहे हैं. उनकी काव्य कृतियों में अंधायुग, कनुप्रिया, सपना अभी भी, सात गीत वर्ष और ठंडा लोहा हैं. अंधायुग (काव्य

नाटक) और कनुप्रिया नई कविता की महत्वपूर्ण उपलब्धियों में गिने जाते हैं. आधुनिक जीवन की विसंगतियों और संवेदनाओं का सुन्दर चित्रण इनकी कविताओं में देखा जा सकता है.

सर्वेश्वरदयाल सक्सेना (1927-1983): सर्वेश्वरदयाल सक्सेना तीसरा सप्तक के कवि हैं. काठ की घंटियाँ, बाँस का पुल, एक सूनी नाव, गर्म हवाएं, कुआनो नदी और जंगल का दर्द आदि सर्वेश्वरदयाल सक्सेना के काव्य संग्रह है. समसामयिक जीवन मूल्यों की खोज इनकी कविताओं में देखी जा सकती है.

कुंवर नारायण (1927-2017) : कुंवर नारायण ने अपनी रचनाओं के माध्यम से इतिहास और मिथक को समकालीन परिप्रेक्ष्य में देखने का प्रयास किया है. उनके प्रमुख कविता संग्रहों में चक्रव्यूह, आत्मजयी, अपने सामने, कोई दूसरा नहीं तथा वाजश्रवा के बहाने आदि हैं. उन्हें सन् 2005 ई. के ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित किया गया है.

केदारनाथ सिंह (1932-2018) : केदारनाथ सिंह की कविताएँ तीसरे सप्तक में शामिल हैं. अभी बिलकुल अभी, जमीन पक रही है, यहाँ से देखो और अकाल में सारस उनके प्रमुख काव्य संग्रह हैं. उनकी कविताओं में जनपक्षधरता देखी जा सकती है. समाज के प्रति गहरी संवेदना उनके काव्य की मुख्य विशेषता है. उनके काव्य में बिम्बों का सुन्दर चित्रण हुआ है. केदारनाथ सिंह को 2013 के ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित किया गया है.

प्रयोगवादी एवं नयी कविता की प्रमुख प्रवृत्तियाँ

1. **विचारधारा से मुक्ति :** प्रगतिवादी कविता में विचारधारा का आग्रह अधिक रहा, किन्तु प्रयोगवाद एवं नई कविता में नहीं. प्रयोगवादी एवं नई कविता के कवि विचारधारा का विरोध करते हैं. उनका मानना था कि किसी विचारधारा को मानने से व्यक्तिगत और स्वतन्त्र विचारों में बाधा पड़ती है. डॉ. नामवर सिंह लिखते हैं ''प्रयोग के दौरान जिन्हें मार्क्सवाद और प्रयोगशीलता में विरोध दिखाई पड़ा उन्होंने दो में से एक को छोड़ दिया- अधिकांश ने प्रयोग के लिए मार्क्सवाद को छोड़ दिया.''

2. **बौद्धिकता :** प्रयोगवाद एवं नई कविता में बौद्धिकता की प्रवृत्ति दिखाई देती है. जिससे कविता में रागात्मकता का ह्रास हुआ और कई बार शुष्कता आ गई है. इस कविता में विचारात्मकता की वृद्धि हुई. डॉ. धर्मवीर भारती के शब्दों में ''प्रयोगवादी कविता में भावना है, किन्तु हर भावना के सामने एक प्रश्नचिह्न लगा हुआ है. इसी प्रश्नचिह्न को आप बौद्धिकता कह सकते हैं.'' यथा:

मेरी विशाल बुद्धि
सूर्य चन्द्र तारों के
ताप वेग नाप रही
मेरी अतर्क्य शक्ति, जल-थल समीर व्योम
विद्युत को चाप रही. (डॉ. देवराज)

3. **सत्य के लिए निरंतर अन्वेषण :** प्रयोगवाद एवं नई कविता में सत्य के लिए निरंतर अन्वेषण देखा जा सकता है. प्रयोगशीलता और नयापन अन्वेषण की ही वस्तु है. कुंवर नारायण के 'आत्मजयी' का पात्र नचिकेता जीवन मूल्यों के अन्वेषण में लगा हुआ है. इन कवियों का अन्वेषण ऐसा है कि सत्य के प्रति भी संदेह होता है.

सत्य जिसे हम सब इतनी आसानी से,

अपनी-अपनी तरफ मान लेते हैं; सदैव
विद्रोही-सा रहा है. (कुंवर नारायण)

4. क्षणवाद और भोगवाद में आस्था : प्रयोगवाद और नई कविता की एक विशिष्ट प्रवृत्ति क्षणवाद और भोगवाद में आस्था है. इस कविता में क्षण की महत्ता तथा भोगवादी दृष्टिकोण का स्वर विद्यमान है. क्षणों और क्षणानुभूति के प्रति आसक्ति को हम इन पंक्तियों में देख सकते हैं-

हमें किसी अजरता का मोह नहीं
आज से विविक्त अद्वितीय इस क्षण को
पूरा हम जी लें, पी लें, आत्मसात कर लें,
उसकी विविक्त अद्वितीया. (अज्ञेय)

5. नवमानव का लघु मानववाद : डॉ. रवीन्द्र भ्रमर के शब्दों में ''नई कविता जिस नये व्यक्तित्व की प्रतिष्ठा के लिए संकल्पबद्ध है, वह आधुनिकता, सामाजिक दायित्व, स्वाभिमान और विश्वबंधुत्व की प्राप्ति से आलोकित है.'' नई कविता के कवियों ने लघुमानव को सूक्ष्मता के साथ अंकित किया है.

है मुझे स्वीकार
मेरे वन, अकेलेपन, परिस्थिति के सभी कांटे.
ये दधिची हड्डियाँ हर दाह में तप ले
न जाने कौन देवी आसुरी संघर्ष बाकी हो अभी,
जिसमें तपायी हड्डियाँ मेरी यशस्वी हो,
करोड़ों त्याग के आदर्श विजय हो,
जिसमें मैं आज सह लूँ
कल वही देवत्व हो जाएं
न जाने कौनसा उत्सर्ग
बढ़ अमरत्व हो जाये. (कुंवर नारायण)

6. प्रेम और यौन भावनाओं की अकुंठ अभिव्यक्ति : नई कविता में बौद्धिक जटिलता वाले विशुद्ध मानव का यौनाकर्षण है. यह यौनाकर्षण कहीं-कहीं अश्लील भी हो गया है. भोग एक सहज प्रवृत्ति है, जो तन और मन दोनों को प्रभावित करती है. इसकी अभिव्यक्ति इस दौर की कविता में हुई है.

आज मुख्य मेहमान तुम
रात के इस फ्लोर शो में
एक बार बस एक बार
अपने तन की छाप छोड़ जाओ मुझ पर. (शान्ति सिन्हा)

7. शिल्पगत विशेषताएँ : प्रयोगवाद एवं नई कविता में संवेदना और शिल्प के धरातल पर प्रयोग और नयेपन को प्रमुखता दी गई है. अलंकारों की दृष्टि से नए प्रयोग किये गए. प्रयोगवाद एवं नई कविता में छंदों के बंधन नहीं हैं. अधिकांशतः मुक्त छंद में कविताएँ लिखी गई हैं. भाषा के स्तर पर भी नयापन लाने के लिए प्रयोग के प्रयास किए हैं. नए प्रतीक ''प्यार का बल्ब फ्यूज हो गया'' जैसे प्रयोग भी देखे जा सकते हैं. उपमानों में नवीनता के प्रयोग भी देखने को मिलते हैं जैसे- ''मेरे सपने इस तरह टूट गये जैसे

भूंजा हुआ पापड." इन कवियों ने भाषा, लय, शब्द, बिम्ब तथा छंद विधान सम्बन्धी नये प्रयोग पर विशेष बल दिया. लोकगीत शैली को भी इन कवियों ने अपनाया है.

मेरा जिया हरसा
जो पिया, पानी बरसा
खड़-खड़ कर उठे पात
फड़क उठे गात (अज्ञेय)

तुमने जहाँ लिखा है 'प्यार'
वहां लिख दो 'सड़क'
फर्क नहीं पड़ता.
मेरे युग का मुहावरा है
फर्क नहीं पड़ता.
और भाषा जो मैं बोलना चाहता हूँ मेरी जिह्वा पर नहीं
बल्कि दांतों के बीच की जगह में
सटी हुई है. (केदारनाथ सिंह)

बोध प्रश्न

7. उपयुक्त विकल्प का चुनाव करें.

क) अज्ञेय के संपादन में सन् 1943 ई. में ....प्रकाशित हुआ.
(तार सप्तक/दूसरा सप्तक)

ख) बौद्धिकता और सत्य के लिए निरंतर अन्वेषण .... की प्रवृत्तियाँ हैं.
(प्रगतिवाद/प्रयोगवाद)

ग) अज्ञेय को .... काव्य संकलन पर ज्ञानपीठ पुरस्कार से पुरस्कृत किया गया.
(कितनी नावों में कितनी बार /आँगन के पार द्वार)

घ) सन् 1953 ई. के बाद की हिन्दी कविता को .... की संज्ञा दी जाती है.
(नई कविता/प्रयोगवाद)

अति लघु उत्तरात्मक प्रश्न

1. 'तार-सप्तक का सम्पादन कब व किसने किया?
2. तार सप्तक में किन कवियों को शामिल किया गया? नाम लिखिए.
3. 'नई कविता' पत्रिका का प्रकाशन वर्ष लिखिए.
4. 'नकेनवाद' के कवियों के नाम लिखिए.
5. नरेश मेहता किस सप्तक के कवि हैं?

14.5 समकालीन हिन्दी कविता

समकालीन हिन्दी कविता की पृष्ठभूमि :

समकालीन हिन्दी कविता की सामाजिक-राजनीतिक पृष्ठभूमि महत्वपूर्ण है. इस

दौर में सामाजिक मूल्यों का पतन, पारिवारिक विघटन, जर्जर होती पारम्परिक सामाजिक व्यवस्था, गरीबी, बेरोजगारी और भ्रष्टाचार जैसे मुद्दों से साहित्यकार उद्वेलित हुआ. राजनीतिक रूप से 1962 में चीन आक्रमण, 1965 और 1971 का पाकिस्तान से युद्ध, नक्सलवादी आन्दोलन, आपातकाल, सिख और रामजन्मभूमि विवाद जैसे सवालों ने साहित्यकारों को कथ्य दिया. आर्थिक रूप से पिछड़ापन और उसके कारणों पर कवियों ने कविताएँ लिखी. प्रयोगवाद एवं नई कविता ने समकालीन हिंदी कविता को संभावनाशील एवं विस्तृत पृष्ठभूमि प्रदान की. जिससे यह कविता यथार्थ के धरातल पर लिखी जाने लगी.

समकालीन हिन्दी कविता से अभिप्राय :

कुछ विद्वान सन् 1960 ई. से तो कुछ विद्वान सन् 1970 ई. से तो कुछ विद्वान सन् 1980 ई. से समकालीन हिन्दी कविता का प्रारम्भ मानते हैं. इसकी व्याप्ति कुछ विद्वान सन् 2000 ई. तक तो कुछ विद्वान अब तक की कविता को मानते हैं. सामान्यत: कालवाचक रूप में समकालीन हिन्दी कविता का समय सन् 1970 ई. से सन् 2000 ई. तक माना जाता है. समकालीन हिन्दी कविता, नई कविता और विविध काव्यान्दोलन के बाद की कविता है. जिसमें हम नई कविता के बाद के विस्तार को देख सकते हैं. समकालीन कविता में अनेक ऐसे काव्य-व्यक्तित्व हमारे सामने आए, जिन्होंने न केवल अपनी एक खास पहचान बनाई बल्कि उन्होंने काव्य रचना की नई संभावनाओं को भी उजागर किया. कथ्य और शिल्प की विशिष्टताएं हमें इन कवियों में नजर आती हैं. इस दौर में कई प्रवृत्तियाँ एक साथ विद्यमान रही हैं समकालीन कविता के अधिकांश कवियों में जनवाद की पहचान होती है.

समकालीन हिन्दी कविता के प्रमुख कवि :

समकालीन कविता में नई कविता के स्थापित कवियों के साथ एक नई पीढ़ी आती है. जिसमें राजकमल चौधरी, धूमिल, चंद्रकांत देवताले, विनोदकुमार शुक्ल, विष्णु खरे, वेणुगोपाल, भगवत रावत, अशोक वाजपेयी, लीलाधर जगूड़ी, उदय प्रकाश, अरुण कमल, ऋतुराज, मलय, ज्ञानेन्द्रपति, नन्द चतुर्वेदी, आलोक धन्वा, मंगलेश डबराल, वीरेन डंगवाल, लाल्टू, सुल्तान अहमद, देवीप्रसाद मिश्र, अनामिका, एकांत श्रीवास्तव और पवन करण आदि के नाम लिए जा सकते हैं. केवल यही प्रतिनिधि कवि हैं ऐसा नहीं है. ऐसे और भी कितने नाम हैं जो यहाँ परिगणित नहीं हैं.

राजकमल चौधरी : (1929-1967) राजकमल चौधरी के कंकावती, मुक्ति प्रसंग, स्वरगंधा, इस अकाल वेला में और ऑडिट रिपोर्ट आदि कविता संग्रह प्रकाशित हुए हैं. राजकमल चौधरी ने अपनी कविताओं में सामाजिक और राजनीतिक यथार्थ का भयावह और वीभत्स चित्रण किया है. देवशंकर नवीन ऑडिट रिपोर्ट की भूमिका में लिखते हैं "उन्होंने अपने लेखन का वास्तविक लक्ष्य जनता के दु:ख दर्दों का सहभागी होना और उसके बुनियादी स्वरूप से जनमानस को परिचित करना समझा." राजकमल ने व्यक्ति, समाज और उससे जुड़े अनेक मुद्दों पर गहराई से विचार किया है. उनकी कविताओं में मुख्य स्वर व्यवस्था विरोध, भारतीय परम्परा के अन्तर्विरोध और स्त्री पुरुष संबंधों के विविध रूप का हैं.

धूमिल (1936-1975): इनका पूरा नाम सुदामा पाण्डेय था. सुदामा पाण्डेय धूमिल के

तीन कविता संग्रह संसद से सड़क तक, सुदामा पाण्डेय का प्रजातंत्र और कल सुनना मुझे हैं. उनकी कविता सामाजिक और राजनीतिक सन्दर्भों से युक्त है. डॉ. कुमार कृष्ण लिखते हैं "वे सही अर्थों में सामाजिक-राजनीतिक चेतना के कवि हैं." धूमिल ग्रामीण परिवेश से सम्बद्ध रहे हैं. गाँव की भुखमरी, अकाल, जमींदारी झगड़े, किसान-मजदूरों की समस्याएं और जात-पात की समस्या आदि की अभिव्यक्ति उनकी कविताओं में देखी जा सकती हैं. धूमिल की सामाजिक दृष्टि में केवल ग्रामीण ही नहीं, कस्बाई और शहरी समाज भी शामिल है. राज-नीतिक विसंगतियों पर उन्होंने कई महत्वपूर्ण कविताएँ लिखी हैं. धूमिल ने अपनी कविताओं में संसद, जनतंत्र, संविधान, आजादी, सत्ता और पूँजीवादी व्यवस्था आदि के प्रति आक्रोश और निराशा व्यक्त की है.

चंद्रकांत देवताले (1936-2017): इनके प्रमुख कविता संग्रहों में दीवारों पर खून से, लकड़बग्घा हँस रहा है, भुखंड तप रहा है, आग हर चीज में बताई गई थी और पत्थर की बैंच आदि है. चन्द्रकान्त देवताले ने अपनी कविताओं में वंचित वर्ग के सन्दर्भों को प्रस्तुत किया है. उनकी कविताओं में सामाजिक-सांस्कृतिक संवेदना भी गहराई से अभिव्यक्त हुई है.

विनोदकुमार शुक्ल (1937): प्रगतिशीलता से प्रेरित विनोदकुमार शुक्ल की कविताएँ विशिष्ट हैं. लगभग जयहिन्द, सब कुछ होना बचा रहेगा और कविता से लम्बी कविता नामक काव्य संग्रह उनके प्रकाशित हो चुके हैं. विलक्षणता, सांकेतिकता, सूत्रात्मकता, दार्शनिकता और काव्यात्मकता उनके काव्य की विशिष्टताएं हैं, जो उनकी कृतियों को दूसरों से अलग बनाती हैं.

विष्णु खरे (1940-2018): विष्णु खरे कवि के साथ ही चिन्तक और विचारक भी हैं. उन्होंने गहरी विचारपरक कविताएँ लिखी हैं. काल और अवधि के दरमियान, खुद अपनी आँख से, पिछला बाकी, लालटेन जलाना और हर शहर में एक बदनाम औरत होती है आदि उनके काव्य संकलन हैं.

लीलाधर जगूड़ी (1944) : इनके प्रमुख कविता संग्रहों में नाटक जारी है, रात अब भी मौजूद है, बची हुई पृथ्वी, घबराए हुए शब्द, भय भी शक्ति देता है और अनुभव के आकाश में चाँद आदि है. लीलाधर जगूड़ी ने आक्रामक भाषा में राजनीतिक-सामाजिक सन्दर्भ युक्त कविताएँ लिखी. राजनीतिक विसंगतियों पर सपाट अभिव्यक्ति इनके काव्य में देखी जा सकती है.

राजेश जोशी (1946): एक दिन पेड़ बोलेंगे, मिट्टी का चेहरा और नेपथ्य में हँसी आदि राजेश जोशी के प्रमुख काव्य संग्रह है. राजेश जोशी की कविताएँ गहरे सामाजिक अभिप्राय वाली होती हैं. उनकी कविताओं में स्थानीयता का पुट देखा जा सकता है. उनके काव्यलोक में आत्मीयता, लयात्मकता के साथ मनुष्यता को बचाए रखने का निरंतर संघर्ष भी है.

वीरेन डंगवाल (1947-2015): इसी दुनिया में और दुश्चक्र में सृष्टा नाम से वीरेन डंगवाल के काव्य संकलन प्रकाशित हो चुके हैं. वीरेन डंगवाल नागार्जुन-त्रिलोचन-मुक्तिबोध की श्रेणी के कवि हैं. उनकी कविताओं में मार्क्सवादी पृष्ठभूमि को देखा जा सकता है.

आलोक धन्वा (1948): समकालीन कविता में नक्सलवादी आन्दोलन के समय के चर्चित कवियों में आलोक धन्वा का नाम प्रमुखता से लिया जाता है. जनता का आदमी, भागी हुई लडकियाँ, बूनों की बेटियां, गोली दागो पोस्टर और दुनिया रोज बनती है आदि उनकी प्रसिद्ध कविताएँ हैं. नक्सलवाद के उस दौर के बेहद सपाट किन्तु प्रभावशाली कवि हैं. उनकी कविताएँ ऊ परी तौर पर बेहद उग्र और भीतर से सुचिंतित नजर आती हैं.

ज्ञानेन्द्रपति (1950): ज्ञानेन्द्रपति के आँख हाथ बनते हुए, गंगातट, संशयात्मा और भिनसार आदि काव्य संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं. ज्ञानेन्द्रपति की कविताएँ छोटी से छोटी तथा हलकी से हलकी अनुभूति को सहेजने का जतन करती हैं. प्राणी मात्र के प्रति हर्ष-विषाद को धारण करती हैं. साथ ही जन-मन भूमि पर दृढ़ता से अपनी बात रखती हैं. सत्ता और साम्राज्यवाद के पैंतरों का बखूबी चित्रण इनकी कविताओं में मिलता है.

अरुण कमल (1954): अरुण कमल की कविताओं में प्रगतिशील विचारधारा देखी जा सकती है. लोक जीवन के सन्दर्भों के साथ आमजन के शोषण और समस्याओं की अभिव्यक्ति अरुण कमल की कविताओं में देखी जा सकती है. अपनी केवल धार, सबूत, नए इलाके में, पुतली में संसार और मैं वो शंख महाशंख इनके काव्य संकलन हैं.

समकालीन हिन्दी कविता की प्रमुख प्रवृत्तियाँ:

1. **पूँजीवादी व्यवस्था के प्रति आक्रोश :** पूँजीवादी व्यवस्था की प्रतिक्रियास्वरूप विरोध और आक्रोश के स्वर हम समकालीन हिन्दी कविता में देख सकते हैं. पूँजीवाद के विकास ने सामाजिक जीवन में विषमता स्थापित कर दी है. एक तरफ पूँजीपतियों के गोदामों में अनाज सड़ रहा है तो दूसरी तरफ सर्वहारा वर्ग, जो उत्पादनकर्ता है, उसे भरपेट अनाज भी नहीं मिलता. इस व्यवस्था का विरोध हम समकालीन हिन्दी कविता में देख सकते हैं-

सचमुच कहीं फुटपाथ पर
लोग भूखों मरते हैं
यहाँ गोदामों में
अनाज सड़ता है. (चंद्रकांत
देवताले)

पैदा चाहे तुम कहीं भी होओ
बिकना तो तुम्हे अमेरिका में है. (लीलाधर जगूड़ी)

2. **सामाजिक मान्यताओं और परम्पराओं का विरोध:** समकालीन हिन्दी कविता में सामाजिक मान्यताओं और जर्जर परम्पराओं का विरोध देखा जा सकता है. नकार अथवा निषेध के भाव इस कविता में हैं. धूमिल, राजकमल चौधरी और जगदीश चतुर्वेदी आदि की कविताओं में ऐसे तीव्र भाव देखे जा सकते हैं.

एक न एक दिन तोड़ना ही है
नकली मुखौटा या नकली सिद्धांत

या नकली मर्यादा अथवा
गलत भूख-आकांक्षाएं गलत मूर्तियाँ
इस नखदंत गलित कुष्ठ रोगी सोमनाथ को हम लोग
जिसके पेट में सोना और अनाज है सारे देश का
क्यों नहीं तोड़ डालें हमारे हथौड़ों की चोट. (राजकमल चौधरी)

3. **सामाजिक मूल्यों का पतन :** सामाजिक मूल्यों के पतन पर समकालीन हिन्दी कवि चिंतित नजर आते हैं. मूल्यों को निरर्थक कहकर उपेक्षित किया जाता रहा है. इस निरर्थकता के पीछे का मूल कारण विघटन की प्रवृत्ति है. समकालीन कवि इन मूल्यों को नकारते हैं-

जहाँ धूर्त होना
अतिरिक्त गुण और बेईमानी
प्रामाणिक हो चुकी है.
दोहरा व्यक्तित्व, पाखंड, चाटुकारिता
प्रचार, पक्षपात और उलझन
जहाँ के सर्वमान्य मूल्य है. (कैलाश वाजपेयी)

4. **आम जनजीवन का चित्रण :** आम आदमी के सामने कई समस्याएं हैं. समकालीन हिन्दी कविता में किसान-मजदूर जैसे आम जन की अभिव्यक्ति हुई है. आम आदमी जिसका जीवन समस्याओं से भरा हुआ है, उसकी समस्याओं का समकालीन कविता के कई कवियों ने चित्रण किया है. भूख के दिल दहला देने वाले चित्रण भी देखने को मिलते हैं-

वह आदमी
बीच सड़क पर
औधें मुँह पड़ा था
और गुबड़ियों में
अटके जल को
अपनी रुखड़ी सफेद जीभ से
चाट रहा था.
मैंने इसके पहले कभी नहीं देखा था
किसी को भूख से मरते. (अरुण कमल)

5. **राजनीतिक अव्यवस्था के प्रति आक्रोश :** राजनीति के प्रति समकालीन कवियों का दृष्टिकोण विरोधी और नकारवादी रहा है. राजनीतिक प्रतिबद्धता, राजनीति से मोहभंग, राजनीतिक मूल्यहीनता, वोट और चुनाव की राजनीति, आपातकालीन राजनीतिक सन्दर्भ और अन्तर्राष्ट्रीय राजनीतिक संदर्भों की अभिव्यक्ति समकालीन हिन्दी कविता में हुई है.

हे भाई ! अगर चाहते हो
कि हवा का रूख बदले

तो एक काम करो–

हे भाई हे !!

संसद जाम करने से बेहतर है

सड़क जाम करो (धूमिल)

6. **स्त्री सन्दर्भ :** प्रयोगवादी कविता और नई कविता की तुलना में समकालीन कविता में स्त्री का यथार्थ चित्रण हुआ है. स्त्री का जीवन, शोषण और समस्याएं आदि कविता का विषय बने हैं. स्त्री सन्दर्भों की वस्तुनिष्ठ अभिव्यक्ति समकालीन हिंदी कविता में हुई है.

अकेली औरत शादी के तीस वर्ष बाद भी

पूछती है सड़क पार कर लूँ

वह मर्द को अगुआ करती है

डग भरती है

जैसे एक जम़ाना पार कर रही हो

वह दिखती है एक खोये हुए

साहस की तरह (लीलाधर जगूड़ी)

इस समाज में है औरत की विडम्बना

हर बार उसे मारना होता है

टूटा हुआ बचाती है

वह अपने भीतर टूटफूट के

बदले नया रचाती है. (रघुवीर सहाय)

7. **शिल्पगत विशेषताएँ :** समकालीन हिन्दी कविता का शिल्प कई मायनों में विशिष्ट रहा है. इस युग में लम्बी और व्यक्तिपरक कविताएँ कवियों ने लिखी. भाषा, बिम्ब, प्रतीक और छंद में नयापन है. समकालीन हिन्दी कवियों के अपने–अपने बिम्ब, प्रतीक और छंद हैं. समकालीन हिन्दी कविता के प्रारम्भिक दौर में कवियों ने बिम्बेतर सपाटबयानी को अपनाया. वस्तुतः सपाटबयानी कथ्य को संप्रेषित करने की आक्रमकता तो थी लेकिन रचनात्मक संभावनाएं अधिक नहीं थी, इसीलिए दीर्घकाल तक कवियों ने उसे नहीं अपनाया. समकालीन हिन्दी कविता की भाषा जन साधारण की है. इस भाषा का एक मुख्य कारण जन संवेदना है. अभिजात्य भाषा का अस्वीकार समकालीन कविता में देखा जा सकता है. भाषा में सर्जनात्मकता है. यथा–

फौजी दस्ते की तरह अँधेरे में

एक भाषा खाइयां बदल रही है

चीजों की व्यवस्था में

तुम्हारा इस तरह गायब हो जाना

मेरे लिखने की भाषा है

अब निरंतर सुन रहा हूँ अपने भीतर खुर–खुर

भाषा को जो आघात पहुँच रहा है

मेरी मरम्मत के बहाने. (लीलाधर जगूड़ी)

14.6 इक्कीसवीं सदी की हिन्दी कविता का परिदृश्य :

इक्कीसवीं सदी की हिन्दी कविता में हमें कई नयी प्रवृत्तियां देखने को मिलती हैं. यह प्रवृत्तियां नए परिवेश के फलस्वरूप उभरी. इस दौर में विशेषकर स्त्री, दलित, आदिवासी एवं अन्य विमर्शों पर संवाद होने लगा. जिसका प्रभाव हिन्दी कविताओं पर भी पडा. वैश्वीकरण और बाजारवाद का प्रभाव भी हिन्दी कविताओं पर देखा जा सकता है. इक्कीसवीं सदी की हिन्दी कविताओं की विषय-वस्तु में विविधता रही हैं. इस कविता में स्त्री, दलित, आदिवासी, बाजारवाद, भूमंडलीकरण, राजनीति, साम्प्रदायिकता, पर्यावरण, गाँव, शहर, किसान और लोक जीवन जैसे संदर्भों को सहज अभिव्यक्ति मिली है. इस दौर में समकालीन कविता के कई कवि लिखते रहे हैं जिनमें चंद्रकांत देवताले, लीलाधर जगूड़ी, ज्ञानेन्द्रपति, विनोदकुमार शुक्ल, अरुण कमल, केदारनाथ सिंह, मंगलेश डबराल, वीरेन डंगवाल, उदय प्रकाश और विष्णु खरे आदि के नाम लिए जा सकते हैं. इक्कीसवीं सदी के नए कवियों में पवन करण, हरिश्चंद्र पाण्डेय, जितेन्द्र श्रीवास्तव, श्रीप्रकाश शुक्ल, अनामिका, कात्यायनी, बोधिसत्व, मदन कश्यप, अनीता वर्मा, नीलेश रघुवंशी, अष्टभुजा शुक्ल, ए. अरविंदाक्षन, एकांत श्रीवास्तव, प्रेमचंद गाँधी, निर्मला पुतुल, सुशीला टाकभौरे, ओमप्रकाश वाल्मीकि और हरिराम मीणा आदि के नाम लिए जा सकते हैं.

14.7 सार-बिंदु:

- छायावादोत्तर हिन्दी कविता के विकास का प्रथम चरण प्रगतिवाद है.
- हिन्दी में प्रगतिवादी कविता का समय सन् 1936 ई. से सन् 1943 ई. तक का माना जाता है.
- प्रगतिवादी कविता वैश्विक स्तर पर चर्चित साम्यवादी और मार्क्सवादी विचारधारा से प्रभावित रही. यह कविता पूँजीवादी संस्कृति के विरोध में खड़ी होती है और सर्वहारा वर्ग के प्रति संवेदना रखती है. यथार्थ चित्रण इस कविता की मुख्य विशेषता है.
- छायावादोत्तर हिन्दी कविता के विकास का दूसरा चरण प्रयोगवाद एवं नई कविता है.
- प्रयोगवादी कविता का प्रारम्भ सन् 1943 ई. में प्रकाशित तार सप्तक से माना जाता है. इस दौर की हिन्दी कविता में प्रयोगशीलता और नवीनता को देखा जा सकता है.
- छायावादोत्तर हिन्दी कविता के विकास का तीसरा चरण समकालीन हिंदी कविता है.
- समकालीन कविता नाम सन् 1970 ई. के बाद की हिंदी कविता के लिए दिया जाता है. इस कविता में जन सामान्य के संदर्भ केंद्र में रहे हैं. प्रवृत्तियों के स्तर पर विविधता रही हैं. कला पक्ष की तुलना में भाव पक्ष को प्राथमिकता मिली है.

14.8 शब्दावली :

मार्क्सवाद : यह सामाजिक संरचना की आर्थिक व्याख्या करने वाला सिद्धांत है. उन्नीसवीं-बीसवीं सदी में कार्ल मार्क्स, फ्रेडरिक एंगेल्स और लेनिन आदि ने समाजवादी व्यवस्था के वैज्ञानिक आधार के रूप में विचार दिया.

सॉनेट : चौदह पंक्तियों की कविता है, जो एक विशेष तुक-लय के साथ गाई जाती है.

फैंटेसी : एक तरह की कल्पना है. कई विद्वान् दिवास्वप्न मानते हैं. हिन्दी में मुक्तिबोध, विजयदेवनारायण साही और विनोदकुमार शुक्ल आदि की कविताओं में फैंटेसी देख सकते हैं.

विचारधारा : विचारधारा विचारों का समुच्चय है. जो सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक अथवा किसी भी क्षेत्र विशेष से सबंधित हो सकता है. इसमें निश्चित विचारों के आधार पर मूल्यांकन किया जाता है.

नकेनवाद : इसे प्रपद्यवाद भी कहा जाता है. बिहार के तीन कवियों के नाम के प्रथम अक्षर को (नलिनविलोचन शर्मा, केसरीकुमार, नरेश) आधार मानकर नकेनवाद नाम रखा गया है.

भूमंडलीकरण : वास्तव में इसका सम्बन्ध अर्थ-तंत्र से है, आर्थिक सम्बन्ध के कारण ही पूरा विश्व एक बाजार बन गया है. लेकिन भूमंडलीकरण ने बाजार के साथ-साथ सभ्यता-संस्कृति, भाषा, साहित्य को भी प्रभावित किया है. प्रौद्योगिकी के कारण भाषा में परिवर्तन साफ दिखाई पड़ता है.

सर्वहारा प्रवृत्तियाँ : इसमें बहु संख्यक शोषित वर्ग के द्वारा अपने हितों के लिए सचेत और स्वतंत्रता की बात की जाती हैं.

लघु मानव : 1948 से 1956 के बीच जयशंकर प्रसाद से यह पद उधार लेकर विजय देवनारायण साही ने लघुमानव की धारणा का विकास किया. जिसका अर्थ छोटा आदमी से न लेकर व्यर्थ का वाग्जाल खड़ा करने से है, जिस पर कोई भी समझदार आदमी आग्रह नहीं करता. यह यूरोपीय पूँजीवादी, व्यक्तिवादी समाज का कोई पात्र रहा होगा जो भारतीय समाज में एकाध प्रतिशत हो सकता है.

14.9 परीक्षोपयोगी प्रश्नावली

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. प्रगतिवादी कविता की पृष्ठभूमि को स्पष्ट कीजिए .
2. समकालीन हिन्दी कविता की पृष्ठभूमि को स्पष्ट कीजिए .
3. समकालीन हिन्दी कविता की प्रवृत्तियों पर प्रकाश डालिए
4. प्रगतिवाद के प्रमुख कवियों का परिचय दीजिए .
5. प्रगतिवादी काव्य की प्रवृत्तियों का परिचय दीजिए .
6. प्रयोगवाद एवं नई कविता की काव्यगत विशिष्टताओं का परिचय दीजिए.
7. प्रयोगवाद एवं नई कविता की पृष्ठभूमि को स्पष्ट कीजिए .

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. प्रगतिशील लेखक संघ का परिचय दीजिये.
2. प्रगतिवादी कवियों की शिल्पगत विशेषताएं लिखिए.
3. प्रगतिवादी कविता से क्या अभिप्राय है ?
4. समकालीन हिन्दी कविता से क्या अभिप्राय है ?
5. समकालीन हिन्दी कविता के किन्हीं चार कवियों का परिचय दीजिए .

टिप्पणी लिखिए

1. विविध काव्यान्दोलन
2. इक्कीसवीं सदी की हिंदी कविता का परिदृश्य
3. नकेनवाद
4. नई कविता

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए.

1. समकालीन हिंदी कविता की भाषा.................................. की है.

   (जन सामान्य/विशिष्ट जन)

2. सामाजिक मान्यताओं और परम्पराओं का अस्वीकार .... की प्रवृत्ति है.

   (समकालीन कविता/नई कविता)

3. .... ने अपनी कविताओं में संसद, जनतंत्र, संविधान, आजादी, सत्ता और पूँजीवादी व्यवस्था आदि के प्रति आक्रोश और निराशा व्यक्त की है.

   (धूमिल/ज्ञानेन्द्रपति)

4. समकालीन हिन्दी कविता नई कविता और उसके विविध काव्यान्दोलन के .... की कविता है.

   (बाद/पहले)

5. भारत में 'प्रगतिशील लेखक संघ' का पहला अधिवेशन १९३६ में .... में मुंशी प्रेमचंद की अध्यक्षता में हुआ था .

   (लखनऊ /दिल्ली)

6. प्रगतिवादी कविता की दृष्टि ....है .

   (आदर्शवादी/यथार्थवादी)

7. .... के फक्कड़ और क्रान्तिकारी व्यक्तित्व को देखते हुए कई विद्वान् उन्हें आधुनिक युग का कबीर भी कहते हैं .

   (केदारनाथ अग्रवाल/नागार्जुन)

8. .... काव्य की मुख्य विषयवस्तु शोषक–शोषित वर्ग से सम्बंधित है.

   (प्रगतिवादी/प्रयोगवाद)

सही की जगह ✓ गलत की जगह ✕ का निशान लगाए

1. अज्ञेय के संपादन में सन् 1943 ई. में दूसरा सप्तक प्रकाशित हुआ.
2. बौद्धिकता और सत्य के लिए निरंतर अन्वेषण प्रगतिवाद की प्रवृत्तियाँ हैं.
3. अज्ञेय को कितनी नावों में कितनी बार काव्य संकलन पर ज्ञानपीठ पुरस्कार से पुरस्कृत किया गया.
4. सन् 1953 ई. के बाद की हिन्दी कविता को नई कविता की संज्ञा दी जाती है.
5. समकालीन कविता के अधिकांश कवियों में जनवाद की पहचान होती है.

14.10 संदर्भ सूची

- हिंदी साहित्य का इतिहास – सं. डॉ. नगेंद्र एवम् डॉ हरदयाल, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नयी दिल्ली
- आधुनिक साहित्य की प्रवृत्तियाँ – डॉ. नामवर सिंह, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
- आधुनिक हिंदी कविता – विश्वनाथ प्रसाद तिवारी, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
- समकालीन हिन्दी कविता – विश्वनाथ प्रसाद तिवारी, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
- Hindikaitihaas.blogspot.com
- youtube.com/watch?v=clxwn3Qtvsw[NCERT Official]
- epgp.inflibnet.ac.in/home/viewSubject?eatid=18

इकाई 15 नागार्जुन

रूपरेखा

15.1 उद्देश्य
15.2 प्रस्तावना
15.3 नागार्जुन : व्यक्तित्व और कृतित्व
    15.3.1 जीवन परिचय
    15.3.2 कृतित्व
    15.3.3 पुरस्कार और सम्मान
15.4 नागार्जुन : काव्यगत प्रवृत्तियाँ
15.5 हिंदी साहित्य में नागार्जुन का योगदान
15.6 अकाल और उसके बाद : काव्य पाठ, व्याख्या और विश्लेषण
15.7 खुरदुरे पैर : काव्य पाठ, व्याख्या और विश्लेषण
15.8 सार बिंदु
15.9 परीक्षोपयोगी प्रश्नावली
15.10 संदर्भ सूची

15.1 उद्देश्य

प्रस्तुत इकाई को पढ़ने के बाद आप

- नागार्जुन के युग की पृष्ठभूमि एवं उनके जीवन और कृतित्व के बारे में जान सकेंगे.
- नागार्जुन की काव्य विशेषताओं के बारे में बता सकेंगे.
- नागार्जुन की कविता की व्याख्या कर सकेंगे.
- उनकी कविताओं की शिल्पगत विशेषताओं को जान सकेंगे.
- हिंदी साहित्य में उनके योगदान से परिचित हो सकेंगे.

15.2 प्रस्तावना

बाबा नागार्जुन आजादी के पूर्व से लेकर आजादी के बाद वर्षों तक आजीवन रचना कर्म में संलग्न रहे. नागार्जुन का जीवन वैविध्यपूर्ण रहा है. यायावरी और फक्कड़पन उनके जीवन और व्यक्तित्व की प्रमुख विशेषताएँ हैं. अपने घुमक्कड़ी स्वभाव की वजह से उन्होंने पूरे देश और उसकी परिस्थितियों को नजदीक से जाना है. गरीब परिवार में पैदा होने के कारण नागार्जुन ने गरीबी को, अभावों को, जीवन की कठिनाइयों को स्वयं झेला है.

नागार्जुन छायावादोत्तर काल के अकेले ऐसे कवि हैं जिनकी कविता चौपालों से विद्वानों तक, छंदबद्ध और छंद मुक्त, धारदार और तीखी-चटपटी, संस्कृत प्रधान और जनपदीय भाषी, जीवंत और जोश-होश भरी है. रवानगी ऐसी कि दिलो-दिमाग की गहराइयों में सीधे समा जाए. इसीलिए डॉ. नामवर सिंह ने उन्हें प्रयोगधर्मा कवि माना है. उन्हें जन-मन की गहरी समझ थी. उनकी प्रतिबद्धता केवल जन-मन और उसके उपेक्षित सरोकारों से थी. नामवर सिंह कहते हैं- **''तुलसीदास के बाद नागार्जुन अकेले ऐसे**

कवि हैं, जिनकी कविता की पहुँच किसानों की चौपालों से लेकर काव्यरसिकों की गोष्ठी तक है.''

15.3 नागार्जुन : व्यक्तित्व एवं कृतित्व

15.3.1 जीवन परिचय

हिंदी और मैथिली के यशस्वी एवं महान कवि नागार्जुन का जन्म 30 जून,1911 को वर्तमान मधुबनी जिले के सतलखा में हुआ था. उनका पैतृक गाँव तरौनी (दरभंगा जिला) था. इनकी माता का नाम उमा देवी तथा पिता का नाम गोकुल मिश्र था. नागार्जुन को बचपन में सब ठक्कन मिसर कहकर पुकारते थे. लम्बे अरसे बाद बाबा वैद्यनाथ की कृपा मानकर उनका नाम वैद्यनाथ मिश्र रखा गया. 6 वर्ष की अल्पायु में ही उनकी माता का देहावसान हो गया. अब परिवार की आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं रह गयी थी. उनके पिता गोकुल मिश्र कुछ काम धाम नहीं करते थे. अपनी सारी जमीन बटाई पर दे रखी थी. बिना माँ के अपने बेटे को वे कंधे पर बैठाकर सगे- सम्बन्धियों के यहाँ इस गाँव- उस गाँव आया-जाया करते थे. इस तरह बचपन में ही वैद्यनाथ की घूमने की आदत पड़ गयी थी और घूमना उनके जीवन का अहम अंग बन गया. 'घुमक्कड़ी का अणु जो बाल्यकाल में ही शरीर के अंदर प्रवेश पा गया, वह रचना धर्म की तरह ही विकसित और पुष्ट होता गया. (नागार्जुन मेरे बाबूजी, शोभाकांत पृ.13)

उनकी प्रारम्भिक शिक्षा लघु सिद्धांत कौमुदी और अमरकोश के सहारे ही आरम्भ हुई. बाद में विधिवत रूप से बनारस जाकर संस्कृत की पढ़ाई शुरू की. वहीं पर आर्य समाज और बाद में बौद्ध दर्शन की तरफ उनका रुझान बढ़ा. घुमक्कड़ प्रवृत्ति के कारण 1930 से लेकर 1940 तक अधिकतर समय विदेश की यात्राएँ की. अध्यापक की स्थायी नौकरी उत्तरप्रदेश के सराहनपुर शहर में की. बौद्धधर्म के प्रति रुझान के कारण श्रीलंका में बौद्धधर्म के ग्रंथों का अध्ययन किया. श्रीलंका के 'विद्यालंकार परिवेण' में जाकर बौद्ध धर्म की दीक्षा ली. यहीं पर उन्होंने अपना नागार्जुन नाम धारण किया. राहुल सांकृत्यायन से भी ये प्रभावित थे. उन्होंने लेनिन और मार्क्सवाद की दार्शनिक विचारधारा को बड़ी शिद्दत से पढ़ा. सन् 1938 में भारत वापस आये और किसान नेता सहजानंद सरस्वती द्वारा संचालित किसान आंदोलन के साथ सक्रिय रूप से जुड़ गये. सन् 1940 और 1942 में बिहार के किसान आंदोलनों में भाग लेने के कारण ब्रिटिश हुकूमत ने उन्हें जेल भेजा. सन् 1975-77 में जयप्रकाश नारायण के आंदोलन से जुड़ने के कारण इमरजेंसी के समय ग्यारह महीने तक जेल में रहे. 1948 में पहली बार दमा का हमला हुआ और इलाज न कराने के कारण आजीवन इससे पीड़ित रहे.

हिंदी साहित्य में वे नागार्जुन और यात्री उपनाम से रचनाएँ लिखते थे. काशी में रहकर वैदेह उपनाम से भी कई कवितायें लिखीं. आरम्भ में उनकी रचनाएँ यात्री उपनाम से ही छपी थीं. 1941 में अपने मित्रों के आग्रह पर नागार्जुन नाम से ही लिखने का निर्णय लिया. नागार्जुन हिंदी के अतिरिक्त संस्कृत, मैथिली, बांग्ला आदि भाषाओं के जानकार भी थे. जनकवि के रूप में प्रख्यात कवि नागार्जुन का देहावसान 5 नवम्बर, 1998 को हुआ था.

15.3.2 कृतित्व

नागार्जुन ने मैथिली, संस्कृत और हिन्दी भाषा में काव्य-रचना के अलावा उपन्यास, कहानी, निबंध, अनुवाद आदि विधाओं में भी अपनी लेखनी चलाई.

उनकी प्रमुख रचनाएँ निम्नलिखित हैं -

कविता-संग्रह :

- युगधारा -1953
- सतरंगे पंखों वाली -1959
- प्यासी पथराई आँखें - 1962
- तालाब की मछलियाँ -1974
- तुमने कहा था - 1980
- खिचड़ी विप्लव देखा हमने - 1980
- हजार-हजार बाँहों वाली - 1981
- पुरानी जूतियों का कोरस - 1983
- रत्नगर्भ - 1984
- ऐसे भी हम क्या! ऐसे भी तुम क्या!! - 1985
- आखिर ऐसा क्या कह दिया मैंने - 1986
- इस गुब्बारे की छाया में - 1990
- भूल जाओ पुराने सपने - 1994
- अपने खेत में - 1997

प्रबंध काव्य :

- भस्मांकुर - 1970
- भूमिजा

उपन्यास :

- रतिनाथ की चाची - 1948
- बलचनमा - 1952
- नयी पौध -1953
- बाबा बटेसरनाथ -1954
- वरुण के बेटे -1956-57
- दुखमोचन -1956-57
- कुंभीपाक -1960 (1972 में 'चम्पा' नाम से भी प्रकाशित)
- हीरक जयन्ती -1962 (1979 में 'अभिनन्दन' नाम से भी प्रकाशित)
- उग्रतारा -1963
- जमनिया का बाबा -1968 (इसी वर्ष 'इमरतिया' नाम से भी प्रकाशित)
- गरीबदास -1990 (1979 में लिखित)

संस्मरण :

- एक व्यक्तिः एक युग -1963

कहानी संग्रह :

- आसमान में चंदा तेरे - 1982

आलेख संग्रह :

- अन्नहीनम् क्रियाहीनम् - 1983

- बम्भोलेनाथ - 1987

बाल-साहित्य :

- कथा मंजरी भाग-1- 1958
- कथा मंजरी भाग-2
- मर्यादा पुरुषोत्तम राम -1955 (बाद में 'भगवान राम' के नाम से तथा अब 'मर्यादा पुरुषोत्तम' के नाम से प्रकाशित)
- विद्यापति की कहानियाँ -1964

मैथिली रचनाएँ :

- चित्रा (कविता-संग्रह) -1949
- पत्रहीन नग्न गाछ (कविता-संग्रह) -1967
- पका है यह कटहल (कविता-संग्रह) -1995 ('चित्रा' एवं 'पत्रहीन नग्न गाछ' की सभी कविताओं के साथ 52 असंकलित मैथिली कविताएँ हिंदी पद्यानुवाद सहित)
- पारो (उपन्यास) -1946
- नवतुरिया (उपन्यास) -1954

बाङ्ला रचनाएँ :

- मैं मिलिट्री का बूढ़ा घोड़ा -1997 (देवनागरी लिप्यंतर के साथ हिंदी पद्यानुवाद)

15.3.3 पुरस्कार और सम्मान

- मैथिली रचना 'पत्रहीन नग्न गाछ' के लिए सन् 1968 - साहित्य अकादमी पुरस्कार से नवाजा गया.
- सन् 1994 - साहित्य अकादमी फेलो के रूप में नामांकित कर सम्मानित किया.
- उत्तर प्रदेश सरकार ने भारत भारती पुरस्कार से अलंकृत किया.
- मध्य प्रदेश से मैथिली प्रसाद पुरस्कार प्राप्त हुआ.
- बिहार सरकार से राजेन्द्र प्रसाद पुरस्कार
- दिल्ली की हिन्दी साहित्य अकादमी ने शिखर सम्मान से विभूषित किया.

15.4 नागार्जुन : काव्यगत प्रवृत्तियाँ

नागार्जुन सही अर्थों में भारतीय मिट्टी से बने जन कवि हैं. उन्होंने भारतीय जन-जीवन में आजादी से पहले से लेकर बाद तक जो कुछ भी घटा, वो सब कुछ अपनी कविताओं में कैद किया है. दूसरी तरफ राजनीतिक, आर्थिक एवं सामाजिक आदि तमाम पहलुओं को भी अपनी रचनाओं में शामिल किया है. नागार्जुन का काव्य-फलक अत्यंत विस्तृत है. आइये, हम यहाँ नागार्जुन के काव्य की विशेषताओं का अध्ययन करते हैं –

1. **यथार्थवादी जनकवि –** नागार्जुन ने समाज के सबसे निम्न वर्ग की दीन-हीन दशा का चित्रण अपनी कविताओं में किया है. इसके पीछे उनका भोगा हुआ यथार्थ छिपा हुआ है. वे साम्राज्यवाद, सामन्तवाद, पूँजीवाद और राजनीतिवाद के कुचक्र में पिसती आ रही शोषित, पीड़ित, दलित, सर्व साधारण जनता की आवाज बने.

प्रतिबद्ध हूँ,

सम्बद्ध हूँ,

आबद्ध हूँ

प्रतिबद्ध हूँ, जी हाँ, प्रतिबद्ध हूँ-

बहुजन समाज की अनुपल प्रगति के निमित्त-

संकुचित 'स्व' की आपाधापी के निषेधार्थ

अविवेकी भीड़ की भेड़िया- धसान के खिलाफ

अंध- बधिर व्यक्तियों को

सही राह बतलाने के लिए..

अपनी एक दूसरी कविता में वे स्वयं को जनता का कवि घोषित करते हुए लिखते हैं-

''जनता मुझसे पूछ रही है, क्या बतलाऊँ?

जनकवि हूँ मैं साफ कहूँगा, क्यों हकलाऊँ ?''

2. मार्क्सवादी विचारधारा का प्रभाव-

नागार्जुन पर मार्क्सवादी विचारों की स्पष्ट झलक देखने को मिलती है. कार्ल मार्क्स की तरह सामाजिक शोषण और अनाचार के विरूद्ध पीड़ित मानवता के प्रतिरोधक कवि ने अपनी रचनाओं के माध्यम से पूँजीपति वर्ग, सामन्तवाद, महाजनी व्यवस्था, भू-स्वामी आदि सभी शोषक वर्ग पर करारा प्रहार किया है –

''नव- दुर्वासा, शबर- पुत्र मैं, शबर पितामह

सभी रसों को गला-गलाकर

अभिनव द्रव तैयार करूंगा

महासिद्ध मैं, मैं नागार्जुन

देखोगे, सौ बार मरूंगा

देखोगे, सौ बार जिऊँगा

हिंसा मुझसे थर्राएगी

मैं तो उसका खून पीऊँगा

प्रतिहिंसा ही स्थायी भाव है मेरे कवि का

जन-जन में जो ऊर्जा भर दे

मैं उद्गाता हूँ उस रवि का.''

3. शोषितों के जीवनोद्धारक के रूप में –

नागार्जुन सम्पूर्ण जीवन शोषितों के लिए संघर्षशील रहे. उन्होंने सामान्य से सामान्य जन के यथार्थ जीवन के चित्र को अपने में उकेरा है. उनके व्यक्तित्व में कबीर और गांधी की एक साथ झलक दिखाई देती हैं. वे सीधी-सपाट वाणी में लिखते हैं –

''जीवन में इस धरा-धाम का क्या महत्व है.

कैसे कहलाता कोई धरती का बेटा

आसमान में सतरंगी बादल पर चढ़कर
कैसे जनकवि धान रोपता
समझ गया हूँ."

4. **जीवन के सम्पूर्ण रागों का समावेश –**

नागार्जुन ने अपने काव्यों में जीवन के सभी रागों का समावेश किया है. जिसमें कभी मन रमता है, कभी बँधता है, कभी विक्षुब्ध होता है तो कभी परेशान होता है. सुख-दुःख, हर्ष-विषाद, आशा, आकांक्षा, स्वप्न तथा संघर्ष आदि सभी विषयों को उकेरने का प्रयास कवि ने किया है-

"नफरत की अपनी भट्ठी में
तुम्हें गलाने की कोशिश ही
मेरे अंदर बार-बार ताकत भरती है
प्रतिहिंसा ही स्थायी भाव है अपने ऋषि का."

5. **व्यंग्यधर्मिता –**

व्यंग्य ही नागार्जुन की मूल शक्ति या प्रमुख हथियार है. वे व्यंग्य से भाषा को मारक, पैना और सर्जनात्मक बना देते हैं. व्यंग्य के सहारे नागार्जुन कम से कम शब्दों में शोषकों या अत्याचारी वर्गों का सम्पूर्ण ढोंग और आडम्बर छिन्न- भिन्न कर डालते हैं.

"स्वेत-स्याम-रतनार अँखियाँ निहार के
सिंडिकेटी प्रभुओं की पग-धरि झार के
लौटे हैं दिल्ली से कल टिकट मार के
खिले हैं दांत ज्यों दाने अनार के
आये दिन बहार के!"

6. **गहरी राजनैतिक चेतना के कवि –**

नागार्जुन तत्कालीन राजनैतिक व्यवस्था से असंतुष्ट थे. उनका मानना था कि राज नीति में विचारधारा और संस्कृति का अभाव है. स्वाधीन भारत के राजनेताओं के नापाक इरादों को व्यंग्य का विषय बनाते हुए सन् 1968 में अपनी कविता 'हाय रे ओ आला कमान' में लिखते हैं-

"कानों में डालकर तेल
  देखता रहा खेल
चापलूस स्वार्थी गुटबाजों का ...
हाय रे, ओ आला कमान !
हाय रे , ओ भारत- भाग्य विधाता
हाय रे, ओ भगवान!
हाय रे, ओ कांग्रेसी आला कमान!"

7. भारतीय- संस्कृति के पोषक –

नागार्जुन सदैव पाश्चात्य-संस्कृति के रंग में रंगे लोगों के विरोधी रहे हैं. कवि को अपने देश की भाषा, बोली, पहनावा तथा पर्वों से अत्यंत लगाव था. वे पाश्चात्य संस्कृति का अनुकरण करने वाली सुन्दरियों पर व्यंग्य करते हुए लिखते हैं कि -

"कौन ले बैलेट पेपर, मतदान कौन करे!...
क्षण-भर ठिठककर
नई दिल्ली की तीनों परियाँ
मुड़ गई सहसा वापस
स्टार्ट हुई कार, लोग लगे हँसने
बात थी ज़रा-सी बस काले निशान की,
तीन वोट रह गये फैशन के नाम पर!"

8. धार्मिक चेतना –

नागार्जुन धार्मिक चेतना के भी पोषक कवि रहे हैं. कवि को धर्मान्धता जरा भी सहनीय नहीं थी एक उदाहरण दृष्टव्य है –

"भगवान अमिताभ
देखती हूँ अपने को तभी से विहार में
हुई जब सचेतन
हुई जब सममुदार
भगवान अमिताभ!
तुम्हारे इन चरणों में कब कैसे सौंप गये
मेरे मूर्ख माँ-बाप
यह नहीं जानती."

9. प्रकृति- चित्रण –

नागार्जुन की कविताओं में प्रकृति अपने सम्पूर्ण रंग- रूप, मुद्राओं के साथ नजर आती हैं. प्रकृति के प्रति आत्मीय भाव के साथ-साथ आकाश और धरती से जुड़े वैभव पर भी कवि की सूक्ष्म और गहरी पकड़ थी –

"मैंने तो भीषण जाड़ों में
नभ-चुम्बी कैलाश शीर्ष पर
महामेघ को झंझानिल से
गरज-गरज भिड़ते देखा है,
बादल को घिरते देखा है."

10. नगरीय और ग्राम्य जीवन का चित्रण –

यूँ तो बाबा नागार्जुन ने ग्रामीण जन-जीवन को अपनी अधिकाँश कविताओं का विषय बनाया. ग्रामीण परिवेश के अतिरिक्त उन्होंने नगरीय, महानगरीय, संत्रस्त जन-

जीवन को भी चित्रित किया है.

कुली मजदूर है,
बोझा ढोते हैं, खींचते हैं ठेला
थके- मांदे जहाँ-तहाँ हो जाते हैं ढेर
सपने में भी सुनते हैं धरती की धड़कन.

11. काव्य भाषा –

नागार्जुन की भाषा सामान्य-जन के बोलचाल की भाषा है. लोक-जीवन की शब्दावली के साथ संस्कृत, बंगला, उर्दू, अंग्रेजी, मैथिली, अवधी आदि भाषाओं के शब्द भी नागार्जुन की कविताओं में देखने को मिलते हैं.

"अमल धवलगिरी के शिखरों पर
बादल को घिरते देखा है.
छोटे-छोटे मोती जैसे
उसके शीतल तुहिन कणों को,
मानसरोवर के उन स्वर्णिम
कमलों पर गिरते देखा है,
बादल को घिरते देखा है."

नागार्जुन की काव्यभाषा में विस्फोटक शब्दावली के साथ-साथ नाटकीयता, संगीतात्मकता, ध्वनि-रमणीयता और चित्रात्मकता आदि के गुण भी देखे जा सकते है जैसे-

"खड़ खड़ खड़ खड़ हड हड हड हड
कांपा कुछ हाड़ों का मानवीय ढाँचा
नचाकर लम्बी चमचों-सा पंचगुरा हाथ
रुखी पतली किट-किट आवाज में
प्रेत ने जवाब दिया :
महाराज !
सच-सच कहूँगा
झूठ नहीं बोलूँगा
अब हम गुलाम नहीं
नागरिक हैं हम स्वाधीन भारत के"   (नाटकीयता)

लाक्षणिक शक्ति का भी भरपूर प्रयोग कवि ने अपनी कविताओं में किया है-

- गिरगिट के अंडे सेता हूँ मैं देख रहा.
- महलों की महंगी बिजली से डरती संध्या, डरता प्रभात.

12. छंद विधान –

छंद का सम्बन्ध कविता के शिल्प विधान से होता है. निराला की तरह नागार्जुन भी

परम्परागत शिल्प विधान को तोड़ते हुए दिखाई देते हैं-

"लेखनी ही है हमारा फार
धरा है पट, सिन्धु है मसिपात्र
तुच्छ से अति तुच्छ जन की
जीवनी पर हम लिखा करते-
कहानी, काव्य, रूपक, गीत"

नागार्जुन ने मुक्त छंद को सहज और अनिवार्य काव्य पद्धति के रूप में स्वीकार करते हुए भी तुक-लय समन्वित शैली को अपनी कविताओं में स्थान दिया है. नागार्जुन ने राजनीतिक विषय पर दोहों का प्रयोग किया है.

खड़ी हो गयी चांपकर, कंकालों की हूक,
नभ में विपुल विराट- सी, शासन की बंदूक.

नागार्जुन की कविताएँ गीत तथा छंदों में लिखी गयी है जिनमें विभिन्न शैलियों के अनेक प्रयोग किये गये हैं. इनकी कविताओं का कोई एक रूप नहीं हैं. कुल मिलाकर बाबा नागार्जुन की काव्यभाषा सरल और सहज है जो आम जन तक आसानी से सम्प्रेषित हो सके. उनके साहित्य में जनचेतना का स्वर मुखर हुआ है.

15.5 हिंदी साहित्य में नागार्जुन का योगदान

हिंदी के आधुनिक कबीर माने जाने वाले बाबा नागार्जुन ने 'इतर साधारण जन से अलहदा होकर रहो मत' की सीख देकर आधुनिक हिंदी कविता से बड़ा गहरा रिश्ता आम जन के साथ जोड़ा. उनकी रचनाओं का मकसद प्रगतिवादी रचनाओं की तरह मात्र सत्य को सामने लाकर खड़ा करना ही नहीं था, अपितु उनमें सबसे अलग रागात्मकता के तरल छोर भी उन्होंने अंकित किए हैं. बाबा ने कवि और कथाकार दोनों रूपों में साहित्य की तथा आम जन की सेवा की. अपनी रचनाओं के माध्यम से वे परपीड़ा को उजागर करके मानवता के सच्चे पक्षधारी बने. उनका मानना था कि "सामयिक तथ्यों की अवहेलना करके कोई शाश्वत का सीमांत नहीं छू सकता". शायद यही वजह है कि उनकी रचनाधर्मिता का स्वर रोमानी कम यथार्थवादी ज्यादा है. उनके साहित्य में जीवन और स्वानुभव स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है. वे व्यापक जीवनबोध- आक्रोश, विसंगतियों, जटिलताओं, अन्तर्विरोधों और अनेक विकृतियों आदि के बीच जनसामान्य के दुःख दर्द को तलाशते फिरते हैं. उनकी कविताएँ अखबार की तरह हैं जो दिन-प्रतिदिन पल-पल बदलती परिस्थितियों पर अपनी बेबाक टिप्पणियाँ लिख डालती हैं. प्रणय व्यंजना से लेकर नारी चिन्तन को वे बखूबी समझते हैं. उनकी रचनाएँ ग्रामीण संस्कृति का आईना हैं. तीखी धार-से उनके व्यंग्य सामाजिक असमानता, धार्मिक रूढ़ियों, फैशनपरस्ती, राजनीतिक भ्रष्टाचार आदि पर करारा प्रहार करते हैं. एक -एक शब्द को दुधारू गाय मानने वाले नागार्जुन भाषा और रूप विधान के प्रति तटस्थ है. न तो वे भाषा को सजाने में विश्वास करते हैं न रूप को संवारने में. उनकी भाषा का लहेजा सहज, सरल है. संस्कृत, अंग्रेजी, उर्दू, देशज, आदि सभी भाषाओं से मिलीजुली उनकी अपनी भाषा-शैली है जिनमें आंचलिकता, मुहावरे-लोकोक्तियाँ, उपमा आदि भाषाई सौन्दर्य-वर्धक तत्व शामिल है.

आधुनिक हिंदी में व्यंग्य की परम्परा को स्थापित करने और जनसामान्य के सच्चे सेवक नागार्जुन जी का हिंदी साहित्य में अक्षुण्ण योगदान रहा है.

बोध प्रश्न :

1. नागार्जुन की काव्य कृतियों के नाम लिखिए.
2. नागार्जुन के काव्य में धार्मिक, राजनैतिक चेतना को दर्शाइये.

सही के आगे ✓ तथा गलत के आगे ✗ का निशान लगाइए.

1. सामयिक तथ्यों की अवहेलना करके कोई शाश्वत का सीमांत नहीं छू सकता.
2. नागार्जुन के साहित्य में जनचेतना के स्वर मुखरित हुए है.
3. नागार्जुन के काव्य में प्रकृति-चित्रण देखने को नहीं मिलता.
4. नागार्जुन के साहित्य में व्यंग्य के लिए कोई स्थान नहीं है.
5. नागार्जुन पाश्चात्य संस्कृति के हिमायती रहे हैं.

15.6 अकाल और उसके बाद : काव्य पाठ, व्याख्या और विश्लेषण

अकाल और उसके बाद

कई दिनों तक चूल्हा रोया चक्की रही उदास्
कई दिनों तक कानी कुतिया सोई उसके पास
कई दिनों तक लगी भीत पर छिपकलियों की गश्त्
कई दिनों तक चूहों की भी हालत रही शिकस्त.
दाने आये घर के अंदर बहुत दिनों के बाद्
धुंआँ उठा आंगन से ऊपर बहुत दिनों के बाद्
चमक उठीं घर भर की आँखें बहुत दिनों के बाद्
कौए ने खुजलाई पांखें बहुत दिनों के बाद.

विश्लेषण-

'अकाल और उसके बाद' कविता सिर्फ आठ पंक्तियों की हैं. इस कविता में कवि ने गरीब, बेबस व्यक्तियों के जीवन में व्याप्त भुखमरी और उससे उबरने का चित्र अंकित किया है. चूल्हे, चक्की, छिपकली, चूहे जैसे निर्जीव पदार्थ और मानवेतर प्राणियों द्वारा चार पंक्तियों में अकाल की स्थितियों को उभारा गया है और अंतिम चार पंक्तियों में अकाल के बाद परिवार में आने वाली खुशी को बारीकी से चित्रित किया है. पूरी कविता में दो विरोधी स्थितियों और संवेदनाओं की टकराहट है. प्रथम चार पंक्तियों करुणापरक संवेदना उभारती हैं, बाकी पंक्तियों में उस करुणा के ऊपर खुशी बनकर छा जाती है. यहाँ भारतीय राजनीति और अर्थव्यवस्था दोनों की विफलता का मूर्त चित्रण हुआ है.

उद्धरण-१

कई दिनों तक चूल्हा रोया चक्की रही उदास,
कई दिनों तक कानी कुतिया सोई उसके पास
कई दिनों तक लगी भीत पर छिपकलियों की गश्त,
कई दिनों तक चूहों की भी हालत रही शिकस्त.

संदर्भ : प्रस्तुत पंक्तियाँ कवि नागार्जुन रचित 'अकाल और उसके बाद' कविता से ली गई है. सन् 1951–1952 में बिहार में अकाल पड़ा था, उस पर आधारित यह कविता लिखी गई हैं. इसमें गरीब, बेबस व्यक्तियों के जीवन में व्याप्त भुखमरी और उससे उबरने का चित्र अंकित किया गया है.

व्याख्या: कवि कहता है कि अकाल पड़ने पर कई दिनों तक चूल्हा रोया, चक्की उदास रही, अर्थात् फसलें नष्ट हो गयीं, घरों में कई दिनों तक न तो अनाज पाया गया और न ही चूल्हा जला. अर्थात् घर के सारे लोग भूखे रहे. अगली पंक्ति में कवि कहता है कई दिनों तक कानी कुतिया सोई उनके पास. अर्थात् चक्की और चूल्हा इन्सानों के काम की वस्तु नहीं रह गयीं. खाना न मिलने से घर के सारे काम ठप्प पड़ गये. दीवारों पर छिपकलियाँ घूमने लगी और चूहों को भी खाने के लिए अनाज का एक दाना नहीं मिला.

विशेष: चारों पंक्तियों में शाब्दिक लय है और चूल्हे के रोने और चक्की के उदास होने में अर्थ छिपा है.

उद्धरण-२

दाने आये घर के अंदर बहुत दिनों के बाद,
धुआँ उठा आंगन से ऊपर बहुत दिनों के बाद,
चमक उठीं घर भर की आंखें बहुत दिनों के बाद,
कौए नें खुजलाई पांखें बहुत दिनों के बाद.

प्रसंग: ये पंक्तियाँ नागार्जुन द्वारा लिखित कविता 'अकाल और उसके बाद' नामक कविता से ली गयी हैं. जब अकाल का असर दूर हुआ, तब घरों में जीवन शुरू हुआ.

व्याख्या:

बहुत दिनों के बाद घर में अनाज के आ जाने से घर पुनः जीवंत हो उठा है. चूल्हे की आग जल उठी है, आँगन से आकाश की ओर धुआँ उठ रहा है. घर के सदस्यों को खाना मिलने की उम्मीद से ही खुशी प्राप्त हो गई है. उनकी आँखों में पुनः चमक आ गई है. घर की मुंडेर पर बैठा कौवा भी आनंद से, खाने की आशा में पंख फड़फड़ाने लगा है.

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. प्रस्तुत कविता कितनी पंक्तियों में हैं?
2. प्रस्तुत कविता में कवि ने किस से उबरने का चित्र प्रस्तुत किया है?
3. प्रस्तुत कविता में व्यक्त निर्जीव पदार्थ का नाम बताइए?
4. प्रस्तुत कविता में किस की टकराहट है?
5. प्रस्तुत कविता में प्रथम चार पंक्तियाँ क्या उभारती हैं?

15.7 खुरदुरे पैर : काव्य पाठ, व्याख्या और विश्लेषण

खुरदरे पैर

खुब गए
दूधिया निगाहों में

फटी बिवाइयों वाले खुरदुरे पैर

धँस गए
कुसुम-कोमल मन में
गुट्ठल घट्ठों वाले कुलिश-कठोर पैर

दे रहे थे गति
रबड़-विहीन ठूँठ पैडलों को
चला रहे थे
एक नहीं, दो नहीं, तीन-तीन चक्र
कर रहे थे मात त्रिविक्रम वामन के पुराने पैरों को
नाप रहे थे धरती का अनहद फासला
घण्टों के हिसाब से ढोये जा रहे थे !

देर तक टकराए
उस दिन इन आँखों से वे पैर
भूल नहीं पाऊँगा फटी बिवाइयाँ
खुब गई दूधिया निगाहों में
धँस गई कुसुम-कोमल मन में

विश्लेषण-

1961 में लिखी गई इस कविता में कवि ने किसान-मजदूर जनता के पैरों की बिवाइयों का वर्णन किया है जिसने उनके ह्दय को बहुत ही प्रभावित किया था. नागार्जुन उनके कठोर जीवनशैली से बहुत ही द्रवित हो जाते है.

एक ही बिंब से अभिव्यक्त यह कविता, कवि के मन की संवेदनशीलता को उच्च शिखर पर ले जाती है. कविता पढ़ने से प्रतीत होता है कि कवि को समाज के निम्न वर्ग से अत्यंत लगाव था. क्योंकि यह कविता एक रिक्शे वाले की हैं जो अपनी रोजी रोटी के लिए चला जा रहा है.

प्रस्तुत कविता में 'खुब गये' शब्द (खुबना क्रिया) यहाँ एसे अर्थ को समाहित करने के लिए प्रयुक्त किया गया है जो अत्यन्त मार्मिक है. खुबना भी कहाँ दूधिया निगाहों में (दूधिया निगाह यहाँ आत्मीयता दर्शाने के रूप में लिया गया है.) फटी बिवाइयों (पैर फटने का एक रोग) वाले खुरदुरे पैर. अर्थात मजदूर वर्ग. शोषित वर्ग जो दिन-रात मेहनत करते है की पीड़ा/कष्टों का वर्णन यहाँ कवि करते हैं. उनकी पीड़ा कवि को झकझोरती है अथक परिश्रम से खुरदुरे और व्रज के समान कठोर हो चुके उनकें पाँव में गांठनुमा घट्ठे बन गये है जो कि कवि के कुसुम कोमल मन में धँस गए हैं.(यहा धँसना शब्द कवि के संवेदनशील ह्दय की और संकेत देता है.) ये कठोर पैर (अर्थात मजदूर वर्ग) अपने जीवन को सुचारु रूप से चलाने के लिए, गति देने के लिए रबड़ विहीन ठूँठे पैडलो को चला रहे थे. वहीं फटी बिवाइयों वाले पैर अर्थात मजदूर वर्ग एक नहीं, दो नहीं , तीन-

तीन चक्र से वामन के पुराने पैरों को मात दे रहे थे वामन जिन्होंने अपने तीन पैरों से तीनों लोकों को नाप लिया था. वामन के रूप में रिक्शावाले के तीन-तीन चक्रों का वर्णन चित्रित किया है कि किस प्रकार एक रिक्शा चलाने वाला घण्टों तक धरती के अनहद फासलों को नापने का प्रयास करता है अर्थात वे दिन रात अपने जीवन को सुचारू रुप से चलाने के लिए फटी बिवाइयों वाले पैरों के माध्यम से चलते ही जाते हैं. यह आम बात है जिसे हम रोज देखते तो हैं पर इस पर ध्यान नहीं देते- बाबा की निगाहें जब उन पैरों से टकराती है तो वे उन फटी बिवाइयों वाले पैरों को अपनी संवेदनशील दूधिया निगाहों से देखते ही रहते हैं और कहते है में इस दृश्य को अर्थात शोषित वर्ग की पीड़ा को कभी भूला नहीं पाऊंगा क्योंकि नागार्जुन सच्चे अर्थों में जन चेतना की वह आवाज है जो हमेशा संघर्ष के लिए तत्पर रहती है.

बोध प्रश्न

1. प्रस्तुत कविता किस साल में लिखी गई है?
2. प्रस्तुत कविता में कवि किसकी जीवन शैली देखकर कठोर हो जाते हैं?
3. प्रस्तुत कविता में कवि को किस समाज से लगाव है?
4. प्रस्तत कविता में कवि ने किसका चित्र खींचा है?
5. रिक्शेवाला क्या कमाने चला जा रहा है?

15.8 सार बिंदु :

प्रगतिशील कवि नागार्जुन का लेखन कार्य आजादी से लेकर मृत्यु-पर्यंत चलता रहा. उन्होंने काव्य-रचना के साथ-साथ उपन्यास भी लिखे हैं. घुमक्कड़ प्रकृति के होने के कारण उन्होंने लगभग सारे देश का भ्रमण किया. उन्होंने प्रारम्भ में मैथिली में लिखना शुरू किया था, बाद में हिन्दी में लिखने लगे. नागार्जुन ने मेहनतकश जनता के संघर्षों के बारे में बड़ी मात्रा में कविताएँ लिखी हैं. इतना ही नहीं अपनी राजनीतिक कविताओं में सत्ताधारी नेता और उनके खोखले विचारों तथा निम्न वर्ग के लोगों को तथा शोषण करने वाले नेताओं को व्यंग्य का निशाना बनाया है. चरमराती सामंती व्यवस्था के अवशेष - जमींदार, सामंत, बड़े-बड़े ताल्लुकदार एवं नवाब भी उनके व्यंग्य का निशाना बने हैं. उनकी कविताओं में साधारण जन की अभिव्यक्ति विशेषतः देखने को मिलती हैं. वे किसानों, मजदूरों, उपेक्षित, शोषित, दलितों के हमेशा पक्षधर रहे हैं. राग या प्रेम, दाम्पत्य, वात्सल्य, राष्ट्रप्रेम, प्रकृति-प्रेम आदि को उन्होंने खासतौर पर अपने काव्य का विषय बनाया है.

उनकी कविता में मुक्त छंद के अलावा अनुप्रासों के प्रयोग भी मिलते हैं. उनकी कविताओं में साधारण बोलचाल के तद्‌भव और लोकभाषा का ही नहीं, अंग्रेजी एवं अवधी भाषा के शब्दों का प्रयोग भी देखने को मिलता है. बातचीत की शैली भी मिलती है. इसीलिए रामविलास शर्मा उनकी भाषा के बारे कहते हैं – ''वह संस्कृत का पंडित है, लेकिन वह अपनी भाषा का जातीय रूप पहचानता है.''(नयी कविता और अस्तित्ववाद, पृ.151) अतः नागार्जुन सही अर्थों में जनकवि हैं.

15.9 परीक्षोपयोगी प्रश्नावली

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. नागार्जुन का जीवन एवं साहित्यिक परिचय बताइए.
2. नागार्जुन की कविताओं में सामाजिक चेतना व्यक्त कीजिए.

3. नागार्जुन की काव्यगत-प्रवृत्तियों का उल्लेख कीजिए.

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. 'अकाल और उसके बाद' का भावार्थ अपने शब्दों में लिखिए.
2. 'खुरदुरे पैर' काव्य की विशेषताएँ बताइए.
3. हिंदी साहित्य में नागार्जुन का योगदान अपने शब्दों में लिखिए.

टिप्पणी लिखिए

1. नागार्जुन की भाषा और छंद विधान
2. नागार्जुन के काव्य में यथार्थवादी और मार्क्सवादी विचार
3. नागार्जुन के काव्य में व्यंग्य-विषय

रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिये.

1. वह संस्कृत का पंडित हैं, लेकिन वह अपनी भाषा का .... रूप पहचानता है.
2. खुरदुरे पैर कविता में .... की पीड़ा वर्णित है.
3. नागार्जुन की कविताएँ .... की तरह है.
4. नागार्जुन की कविता का स्वर .... है.
5. नागार्जुन को आधुनिक हिंदी जगत का .... माना जाता है.

सही की जगह ✓ और गलत की जगह ✗ का निशान लगाइये.

1. नागार्जुन की कविताएँ गीत तथा छन्दों में लिखी हैं जिनमें विभिन्न शैलियों के अनेक प्रयोग किये गये हैं.
2. नागार्जुन की कविताओं में केवल ग्रामीण जीवन का चित्रण मिलता है.
3. 'हाय ओ आला कमान' कविता सन 1968 में लिखी गयी कविता है.
4. अपने व्यंग्य के माध्यम से उन्होंने शोषित वर्ग पर करारा प्रहार किया है.
5. नागार्जुन स्वयं को जनता का कवि स्वीकारते है.

15.10 संदर्भ सूची

- नागार्जुन का रचना – संसार, डॉ. विजय बहादुर सिंह, संभावना प्रकाशन, हापुड़, प्र.सं. 1982
- नागार्जुन की काव्य – यात्रा, डॉ. रतनकुमार पांडेय, वि.वि. प्रकाशन, वाराणसी, 1986
- www.amarujala.com. – विद्रोही तेवर और जन-सरोकारों के कवि बाबा नागार्जुन.
- www.bbc.com. – कालजयी है नागार्जुन. (गिरधर राठी).

इकाई 16 : सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय'

रूपरेखा

16.1 उद्देश्य

16.2 प्रस्तावना

16.3 अज्ञेय : व्यक्तित्व एवं कृतित्व

16.3.1 जीवन परिचय

16.3.2 कृतित्व

16.3.3 सम्मान और पुरस्कार

16.4 अज्ञेय की काव्यगत प्रवृतियाँ

16.5 आधुनिक साहित्य और अज्ञेय का योगदान

16.6 कलगी बाजरे की : काव्य पाठ, व्याख्या और विश्लेषण

16.7 साँप : काव्य पाठ, व्याख्या और विश्लेषण

16.8 सार-बिंदु

16.9 शब्दार्थ

16.10 परीक्षोपयोगी प्रश्नावली

16.11 संदर्भ-सूची

16.1 उद्देश्य

विद्यार्थी मित्रो! कविता, हमारा भावनात्मक एवं वैचारिक विकास करती है. यह सरस और सहज ढंग से प्रकृति और जीवन से हमारा परिचय कराती है. प्रस्तुत इकाई में हम

- अज्ञेय के जीवन परिचय एवं रचना संसार के बारे में जानकारी प्राप्त कर सकेंगे.
- छायावादोत्तर काव्य में अज्ञेय की उपस्थिति के विषय में जान सकेंगे.
- अज्ञेय की काव्यगत विशेषताओं को पहचान सकेंगे.
- हिंदी साहित्य में अज्ञेय के योगदान की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे.
- अज्ञेय की 'कलगी बाजरे की' और 'साँप' कविता का पाठ और विश्लेषण पढ़-समझ सकेंगे.

16.2 प्रस्तावना

छायावादी काल से ही अज्ञेय ने लेखन कार्य आरम्भ किया अतः उनकी रचनाओं में छायावादी प्रभाव का होना स्वाभाविक ही है. उनकी इन रचनाओं में रूमानी भावनाओं का आधिक्य था. सन् 1933-40 के समय कवि अज्ञेय रोमांटिकता की सीमा से निकलकर बौद्धिकता का आग्रह करते दिखाई देते हैं. इस समय मार्क्स और फ्रायड की विचारधारा हिंदी साहित्य को प्रभावित कर रही थी. सन् 1943 के बाद कवि की रचनाओं के मूल्यबोध में भी परिवर्तन होता गया तथा आधुनिकता के चिह्न भी उनके काव्य में परिलक्षित होने लगे. उनके आधुनिकता बोध के केंद्र में व्यक्ति चेतना है जिसके कारण उन्हें अहंवादी मान लिया गया है. इसके बाद उनकी कविताओं का झुकाव आध्यात्मिकता एवं नव रहस्यवाद

की ओर रहा. विज्ञान के इस आधुनिक दौर में कवि वैज्ञानिक संस्कृति में मनश्चेतना को महत्वपूर्ण मानते हैं और मूल्यों की समस्या को भी. अज्ञेय के काव्य में मध्यमवर्गीय संवेदना भी साफ दिखाई पड़ती हैं. वे समाज में व्यक्ति की स्थिति, उसके सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, धार्मिक आदि सभी पहलुओं पर चिंतन- मनन करते हैं तथा उसे ही अपने काव्य का विषय बनाते हैं.

16.3 अज्ञेय : व्यक्तित्व एवं कृतित्व

16.3.1 जीवन परिचय

सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय' जी का जन्म 7 अप्रैल, 1911ई. को उत्तरप्रदेश के देवरिया जनपद के कसया नामक स्थान में एक पुरातत्व खुदाई शिविर में हुआ था. उनके पिता भारत सरकार के पुरातत्व विभाग में एक उच्च अधिकारी थे. उनका नाम पं. हीरानंद शास्त्री था. 'अज्ञेय' को बचपन में 'सच्चा' नाम से पुकारा जाता था. उनकी प्रारम्भिक शिक्षा घर पर ही हुई थी. वे संस्कृत, हिंदी, अंग्रेजी, फारसी भाषा भी अच्छे से जानते थे. सन् 1921 से 1925 तक द. भारत में अपने पिताजी के संग रहे. इस दौरान उन्होंने अपने पिता के समृद्ध पुस्तकालय का खूब उपयोग किया. बचपन में ये टेनीसन के काव्य से बहुत प्रभावित हुए. बी. एस.सी. की पढ़ाई के दौरान अज्ञेय नवजवान भारत सभा के सम्पर्क में आये और एक गुप्त क्रांतिकारी दल का गठन किया. बी. एस.सी पूर्ण करके एम.ए. में प्रवेश लिया परंतु वे अपनी पढ़ाई पूरी नहीं कर पाए, क्योंकि उसी समय उनके क्रांतिकारी जीवन का प्रारम्भ हो गया था. सन् 1930 में उन्हें कारावास में बंद कर दिया गया. वहाँ घोर यन्त्रणा और आत्मसंघर्ष के बीच 'चिंता' की सारी कविताएँ लिखी गयीं. उनकी रचनाएँ जब प्रेमचन्द जी की पत्रिका में छपने पहुँची तब वे स्वाधीनता की लड़ाई में व्यस्त थे इसलिए वे अपना नाम नहीं बता सकते थे तो प्रेमचन्द जी ने उनका नाम अज्ञेय रख दिया था. अज्ञेय हिंदी साहित्य में प्रयोगवाद के प्रवर्तक और तार सप्तक के सम्पादक के रूप में जाने जाते हैं. इन्होंने 'दिनमान', 'प्रतीक' जैसी महत्वपूर्ण पत्रिकाओं का सम्पादन भी किया. आपने अनेक देशों की यात्रा भी की थी. बहुमुखी प्रतिभा के धनी अज्ञेय जी ने साहित्य की लगभग सभी विधाओं में अपनी लेखनी चलाई. वे तरह-तरह के काम करना जानते थे - सिलाई, बाल काटना, मिट्टी के बर्तन बनाना, फोटो खींचना और उसे डेवलप करना, बम बनाना, खेती करना जैसे 70 काम वे करते थे. ये सारे काम वे शौक से नहीं, आजीविका के लिए करते थे. उन्होंने विज्ञान और सेना के क्षेत्र को छोड़कर साहित्य का क्षेत्र चुना. नये प्रयोग, नये प्रतीक, और नवीन बिम्बों के माध्यम से इनकी प्रयोगशीलता प्रभावी रूप में सामने आई. सन् 4 अप्रैल, 1987 में अज्ञेय का देहावसान हो गया.

16.3.2 कृतित्व

व्यक्तिवादी, रोमांटिक तथा अस्तित्ववाद में आस्था रखने वाले अज्ञेय जी की प्रमुख रचनाओं का विवरण निम्नवत है-

प्रमुख काव्य रचनाएँ

1. भग्नदूत (1933 ई.) - पहला कविता संग्रह, इसमें ईश्वर के प्रति प्रेम और प्रकृति के अतिरिक्त दीप, घट, झांकी, सैनिक इत्यादि को काव्य का विषय बनाया है.

2. चिंता (1942 ई.) - प्रेम विषयक भावनाओं को काव्य और गद्य गीत के माध्यम से प्रस्तुत किया है. तारा, फूल, धूलिकण, दीप, विद्युत इत्यादि को प्रतीकों के रूप में स्थान दिया है.

3. इत्यलम् (1946 ई.) – इसमें मात्रिक, मुक्त छंद के साथ साथ गद्य गीत भी हैं. इसमें विद्रोह, राष्ट्रीयता एवं स्वाधीनता का स्वर मुखरित हुआ है. यह चार खंडों में विभक्त रचना है.

4. प्रिजन डेज एंड अदर पोएम्स(अंग्रेजी में, 1946 ई.)

5. हरी घास पर क्षण भर(1954 ई.) – यह अज्ञेय की प्रौढ़ कृति मानी जाती है. दुख का महत्व, व्यक्ति चेतना और समष्टिवाद को भी यहाँ वाणी मिली है.

6. बावरा अहेरी(1954 ई.) – इसमें 'अहेरी' शब्द आलोक का प्रतीक है. इस रचना पर उमर खैयाम की रूबाइयों का असर साफ दृष्टिगोचर होता है.

7. इन्द्रधनुष रौंदे हुए (1957 ई.) – इसकी मूल सम्वेदना चिंतन है.

8. अरी ओ करुणा प्रभामय (1959 ई.)

9. आँगन के पार-द्वार (1962 ई.)

10. कितनी नावों में कितनी बार (1967 ई.)

11. क्योंकि मैं उसे जानता हूँ (1969 ई.)

12. सागर मुद्रा (1970 ई.)

13. पहले मैं सन्नाटा बुनता हूँ (1973 ई.)

15. महावृक्ष के नीचे (1977 ई.)

16. नदी की बाँक छाया पर (1981 ई.),

17. ऐसा कोई घर आपने देखा है (1986 ई.) आदि.

अन्य काव्य रचनाएँ – पूर्वा (1965 ई.), सुनहले शैवाल (1966 ई.), सदानीरा, सर्जना के क्षण (संकलन 1979 ई.).

प्रमुख उपन्यास

शेखर एक जीवनी- प्रथम भाग (1941 ई.), शेखर एक जीवनी- द्वितीय भाग (1944 ई.), नदी के द्वीप (1951 ई.), अपने अपने अजनबी (1961 ई.).

प्रमुख कहानी संग्रह

विपथगा (1937 ई.), परम्परा (1944 ई.), कोठरी की बात (1945 ई.), शरणार्थी (1948 ई.), जयदोल (1951 ई.), अमरवल्लरी (1954 ई.), ये तेरे प्रति रूप (1961 ई.), कड़ियाँ (1971 ई.).

अन्य कहानी संग्रह

छोड़ा हुआ रास्ता (सम्पूर्ण कहानियाँ भाग-1)

यात्रा- संस्मरण

अरे यायावर! रहेगा याद (1953 ई.), एक बूँद सहसा उछली (1960 ई.).

काव्य- नाटक

उत्तर प्रियदर्शी (1967 ई.)

ललित निबन्ध

सबरंग (कुट्टीचातन नाम से, 1956 ई.), सबरंग और कुछ राग (1982 ई.), कहाँ है द्वारका (1982 ई.), छाया का जंगल (1984 ई.).

आलोचना और चिंतन

त्रिशंकु (1945 ई.), आत्मनेपद (1960 ई.), आत्मपरक (1983 ई.), कवि दृष्टि (भूमिका 1983 ई.), भवन्ति (1972 ई.), अन्तरा (1975 ई.), शाश्वती (1979 ई.), अद्यतन (1977 ई.), जोग लिखी (1977 ई.), संवत्सर (1978 ई.), स्रोत और सेतु (1978 ई.).

सम्पादन

1. आधुनिक हिंदी साहित्य

2. तारसप्तक (1943 ई.), दूसरा सप्तक (1951 ई.), तीसरा सप्तक (1959 ई.), चौथा सप्तक (1978 ई.).

★ अज्ञेय ने तारसप्तक की भूमिका में प्रयोगवाद की अवधारणा को स्पष्ट किया था.

3. पुष्करिणी (1959 ई.)

4. नये एकांकी (1952 ई.)

5. नेहरू अभिनन्दन-ग्रन्थ (संयुक्त रूप से, 1949 ई.)

6. रूपाम्बरा (हिंदी प्रकृति का संकलन, 1960). इसके सहायक सम्पादक सर्वेश्वर दयाल सक्सेना थे.

7. सर्जन और सम्प्रेषण (वत्सल निधि लेखक शिविर)

8. साहित्य का प्रवेश (वत्सल निधि लेखक शिविर)

9. साहित्य और समाज परिवर्तन, सामाजिक यथार्थ और कथा भाषा, समकालीन कविता में छन्द (वत्सल निधि लेखक शिविर)

10. स्मृति के परिदृश्य (1987 ई.)

11. भविष्य और साहित्य (1989 ई.)

12. सम्पादन (पत्र - पत्रिकाएँ)- 1.सैनिक (1936 ई.), 2.विशाल भारत (1938 ई.), 3.प्रतीक (1947 ई. प्रयाग से), 4.थाट पत्रिका मार्टिन रसेल के साथ 5.दिनमान (1964 ई.), 6.नया प्रतीक (1952 ई.) 7.नवभारत टाइम्स (1977 ई.).

अनुवाद

1. विवेकानन्द (रोमाँरोला द्वारा लिखित) का फ्रेंच से हिंदी में अनुवाद

2. सूरज का सातवाँ घोड़ा (धर्मवीर भारती) का अंग्रेजी में अनुवाद

3. श्रीकान्त (शरतचन्द्र का उपन्यास) का अंग्रेजी में अनुवाद

4. त्यागपत्र (जैनेन्द्र) का 'द रेजिग्नेशन' शीर्षक से अंग्रेजी में अनुवाद

5. गोरा और राजा टैगोर के उपन्यासों का अनुवाद बांगला से हिंदी

6. नदी के द्वीप एवं अपने अपने अजनबी का अनुवाद (क्रमशः आइसलेंडस इन द स्ट्रीम एवं टु ईच हिज स्ट्रेंजर)

16.3.3 सम्मान और पुरस्कार

1. आँगन के पार द्वार - साहित्य अकादमी पुरस्कार, 1962 ई.

2. कितनी नावों में कितनी बार - ज्ञानपीठ पुरस्कार, 1979 ई.

16.4 अज्ञेय की काव्यगत प्रवृत्तियाँ

काव्य और शिल्प दोनों ही स्तर पर अज्ञेय प्रयोगधर्मी है. मूलतः प्रेमानुभूति के कवि होते हुए भी मौलिकता इनके काव्य के मूल में विद्यमान है. व्यक्ति स्वतंत्रता की खोज इनके काव्य का महत्वपूर्ण अंश है. कला और शिल्प के क्षेत्र में कवि आगे के लिए नवीन संभावनाओं को इंगित करने में पूरी तरह से सफल रहे हैं. प्रतीक, बिम्ब, अलंकार, मुक्त छन्दों आदि के प्रयोगों से अज्ञेय ने अपने शिल्प पक्ष को विकसित किया. अज्ञेय का व्यक्तित्व साधारण से असाधारण तक की यात्रा है. युगदर्शी कवि ने अपने अनुभवों को प्रयोग का रूप दिया और उन्हें समाज के समक्ष रखा. उनकी काव्य संवेदना नये आयामों को परिलक्षित करती हैं. आइये, हम ऐसे युगपुरुष की काव्यगत प्रवृत्तियों का अध्ययन करते हैं -

1. **रूढ़िवादिता का विरोध और नवीनता का आग्रह** - कवि ने रूढ़ि और परम्परा का विरोध करते हुए कविता में नवीन रूपों की ओर ध्यान आकृष्ट किया. 'चिंता' कविता से कविता के नये रूप की ओर कवि का ध्यान जाना शुरू हो गया. उन्होंने हिंदी कविता को अपनी रचनाओं के माध्यम से एक नवीन दिशा दी. भाषा, काव्य-वस्तु और काव्य-शिल्प, सभी स्तरों पर उन्होंने सर्वथा नए प्रयोग किये.

   जैसे- दो छन्द मिलाकर एक नया छंद बना लेना

   "सुनो कवि! भावनाएँ नहीं हैं सोता,
   भावनाएँ खाद हैं केवल !
   जरा उसको दबा रखो
   ज़रा-सा और पकने दो, ताने और तपने दो
   अँधेरी तहों की पुट में पिघलने और पकने दो, रिसने और रचने दो-
   कि उनका सार बनकर चेतना की धरा को कुछ उर्वरा कर दे."

2. **प्रयोगधर्मिता का प्रभाव** -

   अज्ञेय काव्य के लिए प्रयोग को आवश्यक मानते हैं क्योंकि प्रयोग निरंतर होते आये हैं और प्रयोगों से ही कविता या कोई भी कला आगे बढ़ सकती है. अज्ञेय ने भाषा, शब्द, अलंकार, प्रतीक, बिम्ब आदि में नये-नये प्रयोग किये हैं. शब्द का सही स्थान पर सही प्रयोग भाषा को जीवित बनाता है. अज्ञेय शब्द-शिल्पी की इस पहचान को स्वयं में बिठाते चलते हैं -

   "मन्दिर तुम्हारा है
   देवता हैं किसके?
   प्रणति तुम्हारी है
   फूल झरे किसके?
   नहीं, नहीं, मैं झरा, मैं झुका,
   मैं ही तो मंदिर हूँ
   ओ देवता! तुम्हारा!

3. **पाश्चात्य विचारों का प्रभाव** -

अज्ञेय के काव्य में अनेक भारतीय एवं पाश्चात्य विचारों का प्रभाव दिखाई देता है. जापानी कवि यीट्स के हायकू से प्रभावित होकर कवि ने 'अरी ओ करूणा प्रभामय', 'महावृक्ष की छाया में', 'आँगन के पार द्वार' आदि लिखे.

4. **प्रकृति चित्रण** -

अज्ञेय के काव्य में प्रकृति के प्रति सहज आकर्षण और उसका जीवंत चित्रण दिखाई पड़ता है. उनके प्रकृति चित्रण में स्वाभाविकता, ध्वन्यात्मकता, गत्यात्मकता स्पष्ट परिलक्षित होती है. साथ ही हरी घास, सागर तट, नदी तट, रेत, पत्ती, छाया, लहर आदि अनेक चित्रों का पूर्ण सुन्दरता के साथ चित्रण किया है जैसे -

" हाँ, शरद आया
ऊपर
खुली नीली झील -
तिरते बादलों के पाल.
हरे हरसिंगार."

5. **भाषा का प्रभाव** -

भाषा के प्रति जितनी सजगता अज्ञेय में थी उतनी शायद ही किसी कवि में रही होगी. अज्ञेय शब्द के सार्थक प्रयोग को अपने-आप में एक सिद्धि मानते हैं - "शब्द शक्ति का रूप है, कि शब्द का सार्थक प्रयोग सिद्धि है." भाषा के सन्दर्भ में सम्प्रेषण की प्रयोजनीयता पर विचार अज्ञेय की महत्वपूर्ण देन है-

"मैं कवि हूँ
दृष्टा, उन्मेष्टा,
संधाता,
अर्थवाद
मैं सच लिखता हूँ
लिख-लिख कर सब
झूठा करता जाता हूँ."

6. **बिम्ब** -

बिम्ब मनुष्य की कल्पना शक्ति की उपज होते हैं. ऐन्द्रिय, वस्तुपरक, भाव और आध्यात्मिक सभी प्रकार के बिम्बों के प्रयोग से अज्ञेय का काव्य भरा पड़ा है. उन्होंने दृश्य बिम्ब, श्रव्य, स्पृश्य बिम्ब और आस्वाद्य बिम्बों का संश्लिष्ट चित्र हमारे मानव पटल पर अंकित किया है -

मेरे घोड़े की टाप
चौखटा जड़ती जाती है.
आगे के नदी-व्योम, घाटी- पर्वत के आस-पास

मैं एक चित्र में
लिखा गया- सा आगे बढ़ता जाता हूँ.

7. प्रतीक -

अज्ञेय ने प्रतीक को सत्यान्वेषण का साधन माना है. समय के अनुसार प्रतीकों के भी अर्थ बदल जाते हैं. पुराने प्रतीक, प्रतिमान सब व्यर्थ हो जाते हैं. इसीलिए अज्ञेय नवीन काव्य प्रतीकों की खोज पर अधिक बल देते हैं-

भोर का बावरा अहेरी
पहले बिछाता है आलोक की
लाल लाल कनियाँ
पर जब खींचता है जाल को
बाँध लेता है सभी को साथ
छोटी- छोटी चिड़ियाँ
मंझोले परेवे
बड़े- बड़े पंखी....

8. मिथकीयता -

मिथकीयता वह भाषा- प्रक्रिया है जिसमें 'काल' का अनुभव 'दिक्' और 'दिक्' का अनुभव 'काल' में बदलता है. मिथकीय बिम्ब, मिथकीय प्रतीक इस प्रकार की कोटियाँ (categories) भी बनी हुई हैं -

केश कम्बली गुफागेह ने खोला कम्बल
धरती पर चुपचाप बिछाया
वीणा उस पर रख, पलक मूँदकर प्राण खींच,
करके प्रणाम
अस्पर्श छुअन से छुए तार

9. नया सादृश्य विधान -

नया सादृश्य विधान काव्यभाषा को सर्जनात्मक वैशिष्ट्य प्रदान करता है. अज्ञेय 'कलगी बाजरे की' कविता में घिसे-पिटे परम्परागत उपमानों की हँसी उड़ाते हैं. इस कविता में कवि ने चेहरा चाँद सा, गर्दन सुराही सी, आंखे हिरनी सी जैसे पुराने रूढ़ उपमानों को छोड़कर नये उपमानों की ओर ध्यान आकृष्ट किया है.

तुम हो, निकट हो, इसी जादू के-
निजी किसी सहज, गहरे बोध से,
किस प्यार से मैं कह रहा हूँ-
अगर मैं यह कहूँ-
बिछली घास हो तुम
लहलहाती हवा में कलगी छरहरी बाजरे की ?

10. प्रगीतात्मकता -

अज्ञेय के काव्य में गीत के ढाँचे के बिना भी लय या संगीत का रचाव है और तो और 'असाध्य वीणा' जैसी लम्बी कविताओं में भी गीतात्मकता का प्रयोग किया गया है-

तू उतर बीन के तारों में
अपने से गा
अपने को गा
तू गा, तू गा
तू सन्निधि पा- तू खो.

उपर्युक्त काव्यगत विशेषताओं के अतिरिक्त लम्बी कविता (जिसे दीर्घ कविता भी कहते हैं.) नाटकीयता, चित्रात्मकता, कोमल आत्मीय संवाद, संक्षिप्तता, संगठनात्मकता जैसे प्रयोग भी उनकी कविताओं में देखने को मिलते हैं.

16.5 आधुनिक साहित्य और अज्ञेय का योगदान

अज्ञेय ने एक कवि और गद्यकार दोनों ही रूपों में हिंदी साहित्य को नवीन दिशा प्रदान की. उन्होंने कविता को छायावाद की अतिशय भावुकता तथा प्रगतिवाद की एकांगी मानसिकता की प्रवृत्ति से अलग ले जाकर समकालीन साहित्यिक चेतना से नई सक्रियता दी. स्वभाव से विद्रोही होने के कारण उनकी ये भावना साहित्य में भी स्थान-स्थान पर प्रतिफलित हुई है. परम्परा विद्रोह, अंग्रेजी शासन का विरोध और क्रांतिकारी योजनाएं आदि उनकी विद्रोही भावना का ही परिणाम है. साहित्य के क्षेत्र में अज्ञेय ने कवि, कथाकार, आलोचक, सम्पादक आदि विविध रूपों में अपनी लेखनी चलाई है. इन सभी विधाओं में उन्होंने अपनी अद्‌भुत प्रयोगात्मक प्रगति का परिचय कराया है. साहित्य में उनका महत्वपूर्ण योगदान यह है कि उन्होंने तत्कालीन परिवेश के अनुकूल कविता को ढालकर नवीन चेतना के लिए नवीन वातावरण का निर्माण किया. उन्होंने 'तार सप्तक' का सम्पादन किया. तार सप्तक आधुनिक भावबोध का प्रथम स्फुरण था. इसमें सम्पादित कवियों को 'राहों का अन्वेषी' कहा गया. 'दूसरा सप्तक' के कवि राहों के अन्वेषण से बढ़कर आत्मान्वेषण पर आ गये. इस दूसरा सप्तक के साथ-साथ नई कविता ने जन्म लिया और इस तरह कविता के लिए सर्वथा नवीन वातावरण रचकर अज्ञेय ने कविता को नया मुहावरा दिया. काव्य विषयक नयी मान्यताओं, चिंतन-मनन को काव्य का रूप देकर पूर्ण रूप से काव्य के धरातल पर स्थापित करने का कार्य अज्ञेय जी ने किया. अज्ञेय ने पहली बार भाषा को मुख्य रूप में देखा. नई कविता के कवियों में अज्ञेय पहले ऐसे कवि हैं. जो अपने समूचे लेखन कर्म के दौरान किसी वाद से नहीं जुड़े. उन्होंने वाद से बढ़कर प्रयोग को महत्व दिया. वे परम्परा और आधुनिकता की बात करते हैं. व्यक्ति-चेतना उनके केंद्र में हैं, जिसे लक्ष्य करके उन्हें अहंवादी और असामाजिक कहा गया. उन्होंने सम्प्रेषण की समस्या और मौलिक चिन्तन को महत्व दिया. अज्ञेय का व्यक्ति मुक्त, मूल्य सर्जक और जिम्मेदारी की भावना से भरा हुआ व्यक्ति है. यही समाज के प्रति कर्तव्यनिष्ठता की उनकी पहचान है.

इसके अतिरिक्त पत्रकारिता के क्षेत्र में भी नये मानदंड स्थापित किये. सैनिक, विशाल भारत, प्रतीक, दिनमान, नवभारत टाइम्स आदि अनेक पत्र- पत्रिकाओं का सम्पादन भी उन्होंने किया.

● **बोध प्रश्न**

संक्षेप में उत्तर दीजिये.

प्रश्न 1. अज्ञेय की चार काव्य रचनाओं के नाम लिखिए.

प्रश्न 2. अज्ञेय ने किन- किन पत्रिकाओं का सम्पादन कार्य सम्भाला था.

सही के सामने ✓ और गलत के सामने ✗ का चिह्न लगाएं.

1. अज्ञेय के काव्य में रोमांटिकता की प्रधानता है. ( )
2. अज्ञेय के आधुनिकता बोध के केंद्र में व्यक्ति-चेतना है. ( )
3. 'छोड़ा हुआ रास्ता' अज्ञेय का यात्रा- संस्मरण है. ( )
4. दूसरा सप्तक के कवि राहों के अन्वेषण से बढ़कर आत्मान्वेषण पर आ गये. ( )
5. भाषा के सन्दर्भ में सम्प्रेषण की प्रयोजनीयता पर विचार अज्ञेय की महत्वपूर्ण देन है.( )

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिये.

1. 'आंगन के पार द्वार' को साहित्य अकादमी पुरस्कार सन्______ में मिला था. (1979/1970)
2. अज्ञेय ने प्रतीक को______का साधन माना है. (आत्मान्वेषण/सत्यान्वेषण)
3. राहों का अन्वेषी______ के संपादित कवियों को कहा गया है. (तार सप्तक/दूसरा सप्तक)
4. 'अरी ओ करुणा प्रभामय' कविता पर______का प्रभाव था.(यीट्स/रोमांरोला)
5. अज्ञेय ने रोमांरोला द्वारा लिखित_____का_____भाषा में अनुवाद किया. (विवेकानंद, फ्रेंच/गोरा,बांग्ला)

16.6 'कलगी बाजरे की' : काव्य पाठ, व्याख्या और विश्लेषण

कलगी बाजरे की

हरी बिछली घास.
दोलती कलगी छरहरी बाजरे की.
अगर मैं तुम को
ललाती साँझ के नभ की अकेली तारिका
अब नहीं कहता,
या शरद के भोर की नीहार - न्हायी कुँई
टटकी कली चम्पे की वगैरह, तो
नहीं कारण कि मेरा हृदय उथला या कि सूना है
या कि मेरा प्यार मैला है.

बल्कि केवल यही :
ये उपमान मैले हो गये हैं.
देवता इन प्रतीकों के कर गये हैं कूच.
कभी बासन अधिक घिसने से मुलम्मा छूट जाता है.
मगर क्या तुम
नहीं पहचान पाओगी :

तुम्हारे रूप के-
तुम हो, निकट हो, इसी जादू के-
निजी किसी सहज, गहरे बोध से,
किस प्यार से मैं कह रहा हूँ-
अगर मैं यह कहूँ-
बिछली घास हो तुम
लहलहाती हवा में कलगी छरहरी बाजरे की ?

आज हम शहरातियों को
पालतू मालंच पर सँवरी जुही के फूल से
सृष्टि के विस्तार का... ऐश्वर्य का...
औदार्य का...
कहीं सच्चा, कहीं प्यारा
एक प्रतीक
बिछली घास है,
या शरद की साँझ के सूने गगन की पीठिका पर
दोलती कलगी अकेली
बाजरे की.
और सचमुच, इन्हें जब-जब देखता हूँ
यह खुला वीरान संसृति का घना हो सिमट आता है-
और मैं एकान्त होता हूँ
समर्पित.
शब्द जादू हैं-
मगर क्या समर्पण कुछ नहीं है?

काव्य विश्लेषण

कविता के प्रगतिवादी दौर के बाद अज्ञेय सन् 1943 में तार सप्तक का संपादन करते हैं और उसमें संकलित कवियों को 'राहों का अन्वेषी' घोषित करते हुए प्रयोग पर बल देते हैं. यह कविता प्रयोगवादी दौर की प्रतिनिधि कविता मानी जाती है. इस कविता में अज्ञेय ने नए बिंबो-प्रतीकों की आवश्यकता पर बल दिया और बताया कि नयी कविता के लिए नये बोध के साथ-साथ नये उपमानों की भी जरूरत पड़ती है. अतः इस कविता में अज्ञेय परंपरागत प्रतीकों की बजाय नये तरह का प्रतीक लेकर आते हैं जिससे वस्तु (कंटेंट), भाषा तथा रूप में भी नवीनता आए. साहित्य में पुराने समय से स्त्रियों के रूप का वर्णन किया जाता रहा है. संस्कृत साहित्य के अलावा पृथ्वीराज रासो, पद्मावत आदि में भी नायिकाओं के सौन्दर्य का नख-शिख वर्णन किया जाता रहा है. किसी भी चीज की तुलना करने के लिए उसके जैसी किसी वस्तु का वर्णन किया जाता है. रीतिकाल में जो नख-शिख वर्णन होता था उसमें प्रत्येक अंग का उपमान स्थिर हो चुका था. चेहरा चाँद या कमल जैसा, आँखें मछली या हिरनी जैसी, गर्दन सुराही जैसी आदि वर्णन होते थे. अज्ञेय ने अपनी इस

कविता में रूढ़ उपमानों को छोड़ने की बात कही है.

अज्ञेय कविता की शुरुआत ही घास और बाजरे के वर्णन से करते हैं. चिकनी, चमकीली हरी घास जिसकी अक्सर उपेक्षा की जाती है, सामान्यत: कवि उसे वर्णन के योग्य नहीं समझते और पतली छरहरी बाजरे की कलगी जो हवा के झोंकों से डोल रही है. बाजरा आमतौर पर खाने के लिए उपयोग में लाया जाता है परंतु उससे किसी युवती की तुलना भी की जा सकती है, ऐसा नहीं माना जाता. कविता की शुरुआत में ही अज्ञेय पाठकों को एक नये भाव-बोध से जोड़ने का काम करते हैं. घास और बाजरे का जिक्र करने के बाद मूल बात पर आते हैं कि अगर मैं तुमको 'ललाती साँझ के नभ की अकेली तारिका' या 'शरद के भोर की नीहार न्हायी कुँई' या 'टटकी कली चम्पे की' नहीं कहता तो इसका मतलब यह नहीं कि मेरे हृदय में तुम्हारे प्रति प्रेम नहीं है. यहाँ तीन उपमानों का प्रयोग हुआ है. पहला, 'ललाती यानी शर्म से खुद में सिमटकर लाल होती (ढलते शाम की लालिमा की तरह) सांझ के समय आकाश में दिखने वाला एकमात्र तारा. अर्थात् (इकलौती चमकती चीज) उसके जैसा दूसरा कोई नहीं. दूसरा, 'शरद के भोर की नीहार न्हायी कुँई'. ठंड के मौसम से ठीक पहले के मौसम शरद ऋतु के भोर के कुहरे में नहायी (भीगी) हुई कुँई अर्थात् (कमल का फूल). तीसरा, चम्पे की एकदम ताजा कली. ये तीनों ही रूढ़ प्रतीक हैं जिनका साहित्य में अनेक बार प्रयोग हो चुका है. नायिका के लिए इन प्रतीकों के प्रयोग की बात न करते हुए कवि कहता है कि मैं जानबूझकर इनका इस्तेमाल नहीं कर रहा हूँ. इसका मतलब यह मत समझना कि तुम्हारे लिए मेरे हृदय में प्रेम नहीं है या कि उसमें हलचल नहीं है या कि मेरा प्यार सच्चा नहीं है. बल्कि सच्चाई यह है कि मेरी नजर में 'ये उपमान मैले हो गए हैं'. इनका उपयोग इतने लोगों द्वारा इतनी बार हो चुका है कि अब ये अपना प्रभाव छोड़ चुके हैं. इन 'प्रतीकों के देवता कूच कर गए हैं' अर्थात् इनमें अब वह प्रभाव नहीं रह गया है जो कभी रहता रहा होगा. इन प्रतीकों को नये अर्थ देने वाले देवता (शक्ति) इसे छोड़कर चले गए हैं. जिस प्रकार किसी बर्तन को बार बार घिसने से उसकी चमक फिकी पड़ जाती है उसी प्रकार इन प्रतीकों की चमक भी अब समाप्त हो गयी है.

इसके बाद कवि अपनी नायिका से प्रश्न करता है कि क्या तुम इस बात को नहीं समझ सकोगी. तुम्हारे रूप को तुमसे अधिक कौन जानता है. मैं किस सहजता और किस गहरे बोध से, कितने लगाव से तुम्हें चिकनी घास और हवा में झूलती बाजरे की कलगी कह रहा हूँ, इसे तुम्हारे अलावा और कौन समझ सकता है. अज्ञेय घास और बाजरे को शहरी सभ्यता और पूरी सृष्टि से जोड़ते हुए लिखते हैं कि हम शहरी लोगों को घर के बागिचे में कृत्रिम ढंग से खिले हुए जुही के सजे संवरे फूलों से संतोष हो जाता है. जबकि इस संसार के विस्तार का, उसकी समृद्धि का और उदारता का कहीं बेहतर, सच्चा और प्यारा प्रतीक चिकनी घास और शरद ऋतु के सूने आकाश के कैनवास पर अकेली डोलती बाजरे की कलगी है. कवि कह रहा है कि जब भी मैं इन्हें देखता हूँ यह खुला वीरान संसार सघन होकर मेरे पास सिमट आता है और मैं अकेले इसके प्रति समर्पित हो जाता हूं, इसके सौंदर्य और इसकी उदारता के प्रति झुक जाता हूँ.

आखिरी की दो पंक्तियाँ अत्यंत महत्वपूर्ण है जिनमें शब्दों की सीमा को बताया गया है. जो भी वर्णन हो रहा है वह शब्दों में, भाषा में हो रहा है. ये शब्द किसी जादू की तरह हैं परंतु अगर किसी के पास ये न हों तो क्या वह अपने भावों को व्यक्त नहीं कर सकता. न कह कर भी कवि कह रहा है कि शब्द से भी बड़ा समर्पण, खुद को दे देना है. अगर कोई व्यक्ति स्वयं को भाषा में व्यक्त नहीं भी कर सकता तब भी उसका सच्चा होना और संबंधों के प्रति ईमानदार होना मायने रखता है. इस प्रकार इस कविता में कवि ने नये भावबोध से नये और सहज उपमानों के माध्यम से नारी के उस रूप को व्यक्त किया है जिसके प्रति

वह निवेदित, समर्पित है.

घास और बाजरा शुद्ध प्राकृतिक ग्रामीण सौंदर्य का प्रतीक है. ये दोनों एक प्रकार की निश्छलता और अकृत्रिमता से जुड़ते हैं.

तद्भव और देशज शब्दों का भरपूर प्रयोग हुआ है. बिछली, दोलती, छरहरी, सांझ, न्हायी, कुँईं, टटकी, बासन, शहराती आदि शब्दों के द्वारा नये भाव बोध को व्यक्त किया गया है. मालंच बांग्ला भाषा का शब्द है जो बगीचे के लिए प्रयुक्त होता है. अंत में कवि शब्दों और भाषा से अधिक समर्पण और भावों की सच्चाई को महत्व देता है.

बोध प्रश्न

1. ''प्रतीकों के देवता कूच कर गए हैं'' क्या तात्पर्य है?
2. कवि शब्द से अधिक महत्व समर्पण को क्यों देता है?
3. कवि ने बाजरे की कलगी का प्रतीक क्यों चुना है?
4. कलगी बाजरे की कविता में किन प्रतीकों का प्रयोग कवि ने किया?
5. कविता में आए तद्भव रूपों की सूची बनाकर उनका अर्थ बताएं?

16.7 साँप : काव्य पाठ, व्याख्या और विश्लेषण

साँप

साँप !
तुम सभ्य तो हुए नहीं
नगर में बसना
भी तुम्हें नहीं आया.
एक बात पूछूँ--(उत्तर दोगे?)
तब कैसे सीखा डसना--
विष कहाँ पाया?

काव्य विश्लेषण

यह एक व्यंग्य कविता है. अक्सर 'सभ्य' होना शिक्षित और समझदार होने का सूचक माना जाता है परंतु आज के दौर में सभ्यता के नाम पर तमाम प्रकार की अनैतिकता और भ्रष्ट आचरण देखने को मिलता है.

कवि सांप से पूछता है तुम तो कभी सभ्य हुए ही नहीं. यानी तुमने न तो पढ़ाई-लिखाई की और न ही सूट-बूट, कोट-टाई पहन कर आभिजात्य लोगों के बीच आए. तुम तो किसी निर्जन जगह पर अपने बिल में पड़े रहते हो, नगर में बसना तो तुम्हें आया ही नहीं. ऐसी स्थिति में मेरे मन में एक प्रश्न उठ रहा है, तुम उसका उत्तर दोगे? प्रश्न यह है कि तुमने डसना कैसे सीख लिया यह तो केवल सभ्य और शहरी लोगों को आता है. और चलो, डसना सीख भी लिया तो यह बताओ कि जहर कहाँ से पाया. तुम्हारे भीतर जहर कैसे आ गया. यहाँ जहर सिर्फ विष का सूचक नहीं है. यह मनुष्यों के आपसी रिश्तों में स्वार्थ और लोभ के जहर के आने का सूचक है.

इस छोटी कविता में व्यंजना है.

(काव्यशास्त्र में तीन तरह की शब्द शक्तियाँ मानी गयीं हैं. अभिधा, लक्षणा और व्यंजना. जब कही जा रही बात का मुख्य अर्थ भी वही हो तो वह अभिधा कहलाती है. जैसे-

मैं किताब पढ़ता हूँ. जब मुख्य अर्थ में बाधा उत्पन्न हो और कोई अन्य- अर्थ (लक्ष्या अर्थ) प्रमुख हो तो वह लक्षणा कहलाती है. जैसे- किसी मूर्ख के लिए यह कहना कि 'वह बैल है.' जब मुख्य अर्थ में बिना बाधा के एक अन्य (लक्ष्यक) अर्थ (व्यंजित) व्यक्त किया जाए और दोनों अर्थ प्रमुखता लिए हुए हों तो वहाँ व्यंजना शक्ति होती हैं. जैसा कि इस कविता में हुआ है.)

सांप में भी विष है और शहर के सभ्य लोगों में भी जहर है, यहाँ दोनों अर्थ प्रमुख हैं परंतु लक्ष्य शहरी लोग हैं. वास्तव में यह प्रश्न सांप से नहीं शहरी और तथाकथित सभ्य लोगों से पूछा जा रहा है. कवि भी यह बात जानता है कि कुछ सांपों के पास प्राकृतिक रूप से विष होता है और वे अपनी सुरक्षा हेतु डसते हैं. परंतु उसके बहाने कवि ने उन मनुष्यों से सवाल किया है कि आप लोग जो खुद को सभ्य और शहरी कहते हैं आपके भीतर डसने की आदत और इतना जहर कहाँ से आ गया है?

व्यंग्य की गहरी धार इस कविता की विशेषता रही है. आधुनिक जीवन की विसंगतियों पर, छोटे-छोटे स्वार्थों के लिए लोगों के बदलते हुए रूपों पर, विकास और सभ्यता के नाम पर फैले शोषण पर, तमाम प्रकार की कुटिल चालों पर और सबसे अधिक समाज में व्याप्त हो रही अमानवीयता पर यह कविता गहरा व्यंग्य करती है. आज के जीवन का खोखलापन, सामाजिक स्वार्थपरकता से कवि गुस्से में है और वह सांप का प्रतीक के रूप में सहारा लेकर आक्रमण करता है.

समष्टि की भावना, व्यंग्य आदि अज्ञेय के काव्य में सहज प्राप्त है. कवि में बौद्धिक पक्ष की प्रधानता है जो आधुनिक कविता में सर्वत्र दिखाई पड़ती है. नई कविता के शिल्प पक्ष को कवि ने नए उपमानों, बिंबों, प्रतीकों एवं शब्दों से विकसित किया है .

बोध प्रश्न

1. सांप कविता में किस पर व्यंग्य किया गया है?
2. सांप कविता में वास्तव में किससे सवाल पूछा जा रहा है?
3. सांप कविता में व्यंजना शक्ति का वर्णन करें?
4. विष किस बात का प्रतीक है?
5. शहरी लोगों पर क्यों व्यंग्य किया गया है?

16.8 सार-बिंदु

प्रयोगवादी कवि अज्ञेय नए और टटके के प्रति विशेष संवेदनशील थे. उन्होंने तारसप्तक की भूमिका में इस बात को स्वीकार करते हुए अपने को 'राहों का अन्वेषी' कहा है. वे लगातार नए की खोज करते हैं और रूढ़ियों से दूर हटते हैं. इसलिए इनकी रचनाओं में वस्तु की नवीनता के साथ-साथ शिल्प की नवीनता भी देखने को मिलती है. अज्ञेय ने भाषा, बिंब, प्रतीक और अलंकार आदि सभी क्षेत्रों में प्रयोग किये. इसका जीवंत प्रमाण उनकी 'कलगी बाजरे की' नामक कविता है. इस कविता में पुराने प्रतीकों और उपमानों के प्रति कवि की अरुचि दिखती है और नये उपमानों के लिए विशेष आकर्षण नजर आता है. वह सहज उपलब्ध चीजों और प्राकृतिक परिवेश को अधिक महत्व देता है.

अज्ञेय मानवीय व्यक्तित्व और उसकी सर्जनात्मकता को लेकर बहुत सचेत हैं, वे किसी के जैसा यानी 'टाइप' नहीं बनना चाहते. वे नहीं चाहते कि कोई गांधी या आइंस्टाइन या तेंदुलकर जैसा बने, वह चाहे भी तो नहीं बन सकता. सबको 'अपने जैसा' बनना चाहिए. अज्ञेय व्यक्तित्व की निजता को बहुत महत्व देते हैं, और मानते हैं कि सर्जनात्मकता, स्वाधीनता के बगैर नहीं आ सकती; गुलाम मानसिकता का व्यक्ति चाहे जो हो

जाए अच्छा रचनाकार नहीं बन सकता. इसीलिए अज्ञेय स्वतंत्रता और रचनात्मकता को बहुत महत्व देते हैं. जहाँ कहीं इस स्वाधीनता पर रोक लगाने या रूढ़ ढांचे में बांधने की कोशिश होती है, रचनाकार उससे विद्रोह कर बैठता है. वह विद्रोह उनके उपन्यास 'शेखर एक जीवनी' के शेखर के रूप में हो या चर्चित कविता 'कलगी बाजरे की' के रूप में. वे अपनी प्रेमिका के सौंदर्य का वर्णन उधार के प्रतीकों से नहीं करना चाहते.

दूसरी कविता 'सांप' में सांप के माध्यम से शहरी और सभ्य लोगों पर व्यंग्य किया गया है. सभ्यता और विकास के नाम पर आधुनिक समाज बर्बर और जंगली होता जा रहा है. अज्ञेय के समय की ही नहीं हाल की अनेक घटनाएं (स्त्रियों से दुराचार से लेकर भीड़ द्वारा हत्या तक) इस बात का प्रमाण प्रस्तुत करती हैं. अज्ञेय इस हालात पर व्यंग्य करते हैं और सांप के बहाने सभ्य और शहरी लोगों से सवाल पूछते हैं कि आपने डसना कहाँ से सीखा और आपके भीतर इतना जहर कहाँ से आ गया कि आप इंसान नहीं रह गए. आपके भीतर की मनुष्यता क्यों मर गयी.

16.9 शब्दार्थ

तार सप्तक	–	एक काव्य संग्रह, जिसका सम्पादन 1943 ई. में अज्ञेय ने किया था. जिसमें नयी कविता के प्रणयन हेतु सात कवियों का एक मण्डल था. इसी के संकलन के साथ हिंदी काव्य साहित्य में प्रयोगवाद का आरम्भ माना जाता है.
प्रतीक	–	इसका सामान्य अर्थ चिह्न या प्रतिरुप है साहित्य में प्रतीक हमारी भाव सत्ता को प्रकट करने का माध्यम है. इसमें सूक्ष्म अर्थ निहित होता है.
बिम्ब	–	कविता की उपादान है, इसका अर्थ है छाया, प्रतिच्छाया, अनुकृति या शब्दों के द्वारा भावांकन है. बिम्ब अंग्रेजी के इमेज का हिंदी रूपांतरण हैं. काव्यात्मक बिम्ब एक सम्वेदनात्मक चित्र है.
मिथक	–	परम्परागत पौराणिक कथा जो किसी अतिमानवीय तथाकथित प्राणी या घटना से सम्बन्ध रखती है. साहित्य में मिथक चले आ रहे विश्वासों को नया रूप प्रदान करता है.

16.10 बोध प्रश्न

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. अज्ञेय का व्यक्तित्व एवं कृतित्व लिखिए.

2. अज्ञेय की काव्यगत प्रवृत्तियाँ लिखिए.

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. किन उपमानों के मैले होने की बात कवि ने की है?

2. कलगी बाजरे की कविता का भावार्थ अपने शब्दों में लिखिए.

3. सांप कविता का भावार्थ लिखिए.

टिप्पणी लिखिए

1. साहित्य में अज्ञेय का योगदान

2. अज्ञेय और तार सप्तक

3. अज्ञेय में प्रयोगधर्मिता

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिये.

1. कारावास के दौरान अज्ञेय ने ______काव्य संग्रह की सारी कविताएँ लिखी. (चिंता/ भग्नदूत)
2. ______ ने सच्चा को 'अज्ञेय' नाम दिया. (प्रेमचन्द/निराला)
3. अज्ञेय ______के प्रवर्तक के रूप में जाने जाते है. (प्रयोगवाद/ प्रगतिवाद)
4. तार सप्तक के सम्पादक ______थे. (अज्ञेय/प्रेमचन्द)
5. बावरा अहेरी कविता में 'अहेरी' शब्द ______ का प्रतीक है. (आलोक/क्रांति)
6. उमर खैयाम की रूबाई का असर ______ पर दिखाई पड़ता है. (बावरा अहेरी/हरी घास पर क्षण भर)

सही की जगह ✓ तथा गलत की जगह ✗ का चिह्न लगाएं.

1. अपने-अपने अजनबी एक कहानी संग्रह है. ( )
2. तार सप्तक की भूमिका में अज्ञेय ने प्रगतिवाद की अवधारणा को स्पष्ट किया. ( )
3. आधुनिक भावबोध का प्रथम स्फुरण तार सप्तक को माना जाता है. ( )
4. 'कलगी बाजरे की' कविता में कवि ने शहरी सभ्यता पर तीखा व्यंग्य किया है. ( )
5. 'कलगी बाजरे की' कविता में पुराने प्रतीकों व उपमानों के प्रति कवि की अरूचि दिखाई देती है. ( )

16.11 संदर्भ-सूची

हिंदी साहित्य का इतिहास – डॉ हरदयाल नगेन्द्र

समकालीन हिंदी कविता अज्ञेय और मुक्तिबोध – डॉ. शशि शर्मा

Bharatdarshan.co.nz

http://hindijivanparichya.blogspot.com

kavitakosh.org

इकाई-17 : हरिवंशराय बच्चन

रूपरेखा:

17.1 उद्देश्य

17.2 प्रस्तावना

17.3 हरिवंशराय बच्चन : कवि परिचय, व्यक्तित्व एवं कृतित्व

17.3.1 बच्चन जी का व्यक्तित्व

17.3.2 बच्चन जी का कृतित्व

17.4 'अग्निपथ' : काव्य-पाठ, विश्लेषण व व्याख्या

17.5 'रीढ़ की हड्डी' : काव्य-पाठ, विश्लेषण व व्याख्या

17.6 सार-बिंदु

17.7 परीक्षोपयोगी प्रश्नावली

17.8 संदर्भ-सूची

17.1 उद्देश्य :

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप –

1. छायावादोत्तर कवि हरिवंशराय बच्चन के जीवन-परिचय एवं कृतित्व की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे.
2. बच्चन जी के काव्य की विशेषताओं के बारे में जानकारी प्राप्त कर सकेंगे साथ ही उनके काव्य के भाव एवं शिल्प विधान को जान सकेंगे.
3. 'अग्निपथ' कविता द्वारा संघर्षरत भारतीयों को दी गई प्रेरणा से परिचित हो सकेंगे.
4. 'रीढ़ की हड्डी' कविता में व्यक्त मूल संवेदना को जान सकेंगे.

17.2 प्रस्तावना :

छायावाद एक साहित्यिक प्रवृत्ति के रूप में अपने विकास के बाद उतार पर था. 'हालावाद' के प्रवर्तक बच्चन जी हिंदी के उत्तर छायावाद काल के प्रमुख कवियों में से एक हैं. वे आस्थावादी कवि हैं. उनकी कविताओं में आस्था, स्वप्न, विद्रोह और निर्माण की गूंज एक साथ सुनाई पडती है. उनकी रचनाएँ उनके जीवन के दृष्टिकोण का स्पष्ट परिचय हैं. वे वेदना, विद्रोह, आक्रोश, प्रेरणा, उत्साह, त्याग, समर्पण, नूतनता आदि का सतरंगी इन्द्रधनुष हैं जो समाज की सड़ी गली रूढ़ियों को तोड़कर, एकत्व की निष्ठा से परिपूरित करता है. इन सबसे ऊपर है उनका मानवीय रूप जो न देवता बनना चाहता है, न पशुता का किनारा छूना चाहता है, वह तो सत्व एवं तम के संयुक्त रूप का स्वरूप रजोगुण प्रधान मनुष्य बना रहा है.

हरिवंशराय बच्चन कविता को लिखने वाले व्यक्ति नहीं, कविता को जीने वाले तथा कविता के लिए पूरी तरह समर्पित होने वाले कवि हैं.

17.3 हरिवंशराय बच्चन : कवि परिचय, व्यक्तित्व एवं कृतित्व :

17.3.1 बच्चन जी का व्यक्तित्व :

- **जीवन-परिचय :**

  बच्चन जी का जन्म 27 नवम्बर, 1907 को प्रयाग के चक्क मोहल्ले में कायस्थ परिवार में हुआ था. इनके पिता प्रताप नारायण सीधे-सादे, निष्कपट और निष्कलुष स्वभाव वाले थे. संस्कारों के प्रति निष्ठावान एवं नियमबद्ध. माता सुरसती, हिंदी पढ़ी-लिखी, उर्दू की वर्णमाला का ज्ञान रखने वाली पतिनिष्ठ भारतीय नारी थी.

  कवि बच्चन पिता की छठी संतान थे. इनकी आरम्भिक शिक्षा उर्दू में हुई, लेकिन स्वामी सत्यदेव परिव्राजक के एक व्याख्यान से प्रभावित होकर इन्होंने उर्दू के स्थान पर हिंदी ले ली. सन् 1924 में कायस्थ पाठशाला इलाहाबाद से हाई स्कूल पास किया. सन् 1927 में गवर्नमेन्ट इन्टर कॉलेज से इन्टर एवं 1929 में बी.ए. की परीक्षा उत्तीर्ण की. सन् 1930 में असहयोग आंदोलन के उत्साह में आकर एम.ए. प्रथम वर्ष की पढ़ाई छोड़ दी. यह उनकी शिक्षा का एक चरण था. शिक्षा का दूसरा चरण पत्नी श्यामा की मृत्यु के बाद सन् 1937 में आरम्भ हुआ. फलतः 1938 में एम.ए. तथा 1939 में काशी विश्वविद्यालय से बी.टी. की. इसके बाद दो वर्ष शोध छात्र रहे, ग्यारह वर्ष अध्यापन कार्य किया. सन् 1942 में दो वर्ष के लिए इंग्लैंड गए. केम्ब्रिज विश्वविद्यालय से विलियम बटलर ईट्स के काव्य पर डाक्टरेट प्राप्त कर स्वदेश लौट आए.

- **विवाह :**

  बच्चन जी का पहला विवाह सन् 1926 में रूपनारायणपुर गाँव के निवासी तथा हाईकोर्ट के अनुवादक बाबू रामकिशोर की बड़ी पुत्री श्यामा के साथ हुआ. श्यामा उस समय मात्र चौदह वर्षीया नवल कलिका थी. यक्ष्मा से पीडित, श्यामा 1936 में संसार को अलविदा कह गई.

  31 दिसम्बर सन् 1941 की सुबह, अपने मित्र ज्ञानप्रकाश जौहरी के घर, पहली बार तेजी सूरी से मुलाकात हुई. दूसरे दिन, नव-वर्ष के नवप्रभात में उन दोनों के बीच जीवन भर साथ निभाने का निर्णय अपना रंग बिखेर गया. 24 जनवरी, 1942 के दिन वे विवाह-सूत्र मे बंध गए. इस प्रकार कवि बच्चन के उजड़े नीड़ का पुनर्निर्माण हो गया.

  कवि के जीवन से निराशा, घुटन, पीड़ा और वेदना का तिमिर छंटने लगा. प्रथम पत्नी के शोक की क्षति-पूर्ति के साथ पत्नी तेजी ने उन्हें माँ, बहन, सहचरी, प्रेयसी, पत्नी सभी का प्यार एक साथ दिया.

- **व्यवसाय :**

  सन् 1920 से 1931 तक के दस वर्ष, कवि-जीवन के घोर संघर्ष और चिंता के वर्ष थे. एम.ए. के बाद उन्हें अवकाशीय स्थिति में अंग्रेजी विभाग में नौकरी मिली, उन्होंने अग्रवाल विश्वविद्यालय की हिंदी अध्यापकी को छोड़ दिया. बाद में इसी अंग्रेजी विभाग में स्थायी पद पर पहुँच गए. झा साहब की मेहरबानी से और उन्हीं के निर्देशन से पीएच. डी. भी केम्ब्रिज जाकर कर ली. कुल मिलाकर ग्यारह साल तक अध्यापन का काम किया. कुछ मास इलाहाबाद के आकाशवाणी में कार्यरत रहे. सितम्बर 1955 से 1966 तक भारत सरकार के विदेश मंत्रालय में हिन्दी-विशेषज्ञ के रूप में काम करने के बाद उन्हें अप्रैल 1966 में राज्यसभा का सदस्य मनोनीत किया गया. पुनः 1972 में राज्यसभा का सदस्य मनोनीत किया गया.

- **विदेश यात्रा तथा पुरस्कार :**

  दिल्ली में विदेश मंत्रालय में हिंदी विशेषज्ञ के पद पर नियुक्त होने के बाद बच्चन जी ने अगस्त 1951 में, पोयट्री बाडनियल में भाग लेने के लिए भारतीय शिष्टमण्डल के सदस्य के रूप में बेल्जियम की यात्रा की. व्यक्तिगत रूप से इसी समय उन्होंने फ्रांस, इटली, हालैण्ड की यात्रा भी की. सन् 1967 में शिक्षा मंत्रालय की ओर से रूस, मंगोलिया, जर्मनी, चेकोस्लोवाकिया की सद्भावना यात्रा की. सन् 1968 में भारतीय शिष्टमण्डल के नेता के रूप में अफ्रो-एशिया-राइटर्स कॉन्फ्रेंस, बेरूत में भाग लिया. इसी वर्ष सोवियत लैण्ड नेहरू पुरस्कार विजेता के रूप में एक पखवाडे की रूस यात्रा गोर्की नगर में गोर्की जन्म शताब्दी समारोह में भाग लिया.

- **पुरस्कार :**
  - सन् 1967 में 'दो चट्टानें' (काव्य संग्रह) पर साहित्य अकादमी पुरस्कार.
  - सन् 1969 में दिल्ली प्रशासन साहित्य कला परिषद द्वारा सम्मानित और पुरस्कृत.
  - हिंदी साहित्य सम्मेलन द्वारा 'साहित्य वाचस्पति' की उपाधि से सम्मानित हुए.
  - सन् 1976 में राष्ट्रपति द्वारा पद्मभूषण से अलंकृत किये गए.

  पुरस्कारों की संख्या कम और अधिक होने से किसी कवि की महानता में कोई अंतर नहीं आता. देखना यह है कि कवि ने जो भी साहित्य-सेवा की, उससे समाज और मानवता ने क्या पाया है, अपने कृतित्व में कवि समाज का प्रतिनिधि बनकर कहाँ तक सफल हुआ है.

17.3.2 बच्चन जी का कृतित्व :

'बच्चन' जी के प्रकाशित ग्रन्थों को चार श्रेणियों में रखा जा सकता है : (1) मौलिक, (2) अनुदित, (3) गद्य-साहित्य, (4) विविध.

मौलिक रचनाओं के प्रथम संस्करण के प्रकाशन का क्रम इस प्रकार है : तेरा हार (1932), मधुशाला (1935), मधुबाला (1936), मधुकलश (1937), निशा-निमंत्रण (1938), एकान्त संगीत (1939), आकुल-अंतर (1943), प्रारम्भिक रचनाएँ (कविताएँ) भाग-1, 2 (1943), सतरंगिनी (1945), हलाहल (1946), बंगाल का काल (1946), खादी के फूल (सह-लेखक सुमित्रानंदन पंत) (1948), सूत की माला (1948), मिलन-यामिनी (1950), प्रणय-पत्रिका (1955), धार के इधर-उधर (1957), आरती और अंगारे (1958), बुद्ध और नाचघर (1958), त्रिभंगिमा (1961), चार खेमे चौंसठ खूंटे (1962), दो चट्टानें (1965), बहुत दिन बीते (1967), कटती प्रतिमाओं की आवाज (1968), उभरते प्रतिमानों के रूप (1969), जाल समेटा (1973), असंकलित कविताएँ (1983) तथा अतीत की प्रतिध्वनियाँ (1983) अनुदित रचनाएँ - ये रचनाएँ दो प्रकार की हैं. प्रथम के अंतर्गत काव्यानुवाद आते हैं और द्वितीय में शेक्सपीयर के नाटकों का अनुवाद है.

(1) काव्यानुवाद क्रमशः इस प्रकार है :

खैयाम की मधुशाला (1935), जनगीता (1958), उमर-खैयाम की रूबाईयाँ (1959), चौंसठ रूसी कविताएँ (1964), मरकत दीप का स्वर (1965), नागर गीता (1966), भाषा अपनी भाव पराये (1970) एवं असंकलित काव्यानुवाद.

(2) शेक्सपीयर का अनुवाद :

मैकवैथ (1957), ओथेलो (1959), हैमलेट (1069), किंग-लियर (1972).

गद्य साहित्य : इसके अंतर्गत आलोचना, निबन्ध, आत्मकथा और डायरी भी रखी गई हैं. **आलोचना और निबंध** शीर्षक में आने वाली पुस्तकें हैं - कवियों में सौम्य सन्त : पन्त (1960), नये-पुराने झरोखे (निबन्ध संग्रह) (1962), टूटी-छूटी कडियाँ (निबंध-संग्रह) (1973) तथा स्फुट निबंध.

आत्म-कथा तथा डायरी - 'क्या भूलूँ क्या याद करूँ (आत्मकथा-1, 1969), नीड़ का निर्माण फिर (आत्मकथा-2, 1970), बसेरे से दूर (आत्मकथा-3, 1977), 'दशद्वार' से 'सोपान' तक (आत्मकथा-4, 1985), एवं प्रवास की डायरी (1971).

विविध रचनाओं के अन्तर्गत उनकी वार्ताएँ, साक्षात्कार, पुस्तक-समीक्षाएँ, कहानियाँ, बच्चों की कविताएँ एवं पत्र आदि आते हैं.

बच्चन का काव्य-संसार :

उत्तर-छायावाद के मूर्धन्य कवि :

बच्चन उत्तर छायावाद के मूर्धन्य कवि हैं. वे अपने अन्य समकालीन कवियों से इस अर्थ में भिन्न हैं कि इन्होंने सहज आवेगपूर्ण कथन मात्र को काव्य की संज्ञा नहीं दी. काव्यशास्त्र की भाषा में इनकी दृष्टि 'भाव' की अपेक्षा 'विभावन व्यापार' पर अधिक रही है. अत: अपने काव्य को संप्रेषित करने के लिए इन्होंने बाह्यजगत की जानी-पहचानी वस्तुओं का सहारा अधिक लिया है. बच्चन प्रत्यक्ष और अकृत्रिम अनुभूतियों के कवि हैं. उनकी रचनाएँ उनके जीवन के दृष्टिकोण का स्पष्ट परिचय है. उनका संपूर्ण काव्य पाँच वर्गों में विभाजित किया जा सकता है -

(1) अल्हड़ता और मस्ती का युग - (प्रारंभिक रचनाएँ, मधुशाला, मधुबाला, मधुकलश)

(2) संघर्ष और विषाद का युग - (निशा निमंत्रण, एकांत संगीत, आकुल अंतर, हलाहल)

(3) मिलनोल्लास का युग - (सतरंगिनी, मिलन यामिनी, प्रणय पत्रिका, आरती और अंगारे)

(4) लोक के साथ रागात्मक सामंजस्य का युग - (बंगाल का काल, सूत की माला, खादी के फूल, धार के इधर-उधर)

(5) बौद्धिक प्रौढ़ता का युग - (बुद्ध और नाच घर, त्रिभंगिमा, चार खेमे चौंसठ खूँटे, दो चट्टानें, बहुत दिन बीते, उभरते प्रतिमानों के रूप)

उपर्युक्त वर्गीकरण बच्चन के काव्य की बदलती हुई ध्वनि के आधार पर किया गया है. वादों के आधार पर बच्चन के काव्य का वर्गीकरण इसलिए नहीं किया जा सकता कि उनका काव्य अनुभूति में डूबी हुई आत्माभिव्यक्ति का काव्य है. उनकी अनुभूति की मूल प्रेरणा है - कवि का अपना जीवन. बच्चन का काव्य ही उनका जीवन है और जीवन ही काव्य. तात्पर्य यह कि इनका जीवन और काव्य एक दूसरे का पूरक है. जीवन एक बहती धारा के समान है इसलिए उसे खंड-खंड करके वर्गों में नहीं देखा जा सकता, तथापि उपर्युक्त वर्गीकरण के माध्यम से बच्चन के काव्य-बिंब के विकास और छायावादी बिंब से उनके अलगाव के कारण सरलतापूर्वक खोजे जा सकते हैं.

बच्चन के काव्य के प्रथम वर्ग की रचनाओं को मधु-युग के नाम से भी पुकारा जाता है. इस युग की रचनाओं की केन्द्रीय वृत्ति प्रेम है, जो छायावादी प्रेम से पृथक लौकिक प्रेम है और लौकिक रूप में ही अभिव्यक्त होता है. वह न आदर्श का छल ओढ़ता है और न धरती-आकाश के बीच झूलता है बल्कि शुद्ध धरती पर यात्रा करता है. उसके अनुभव-बिंब उधड़े रूप में उभर कर सहज प्रवाह का सुख देते हैं. मधुशालाकालीन काव्य में युवक मन

के शतशः स्वप्न-बिंब अंकित हुए हैं, जिनमें कवि के जीवन-स्वप्नों की मदिरा, भविष्य की सुनहली आशा संभावना के साथ छलक उठी है -

(1) 'कभी न कण भर खाली होगा लाख पिएँ दो लाख पिएँ.'

(2) 'राह पकड़ तू एक चलाचल पा जायेगा मधुशाला.'

आशा, उमंग और जीवन चेतना की अमूर्त उपर्युक्त पंक्तियाँ स्वप्न-बिंब के साथ साकार हो उठी है. मधुशाला और मधुकलश में यह जीवन-चेतना इसी रूप में मुखरित हुई है.

निशा निमंत्रण, एकांत संगीत और आकुल अंतर में बच्चन की सृजन-चेतना की दूसरी सीढ़ी आरंभ होती है. दुख ने कवि को गायक बना दिया. निराशा, वेदना, पूर्वस्मृति, अंतर्दाह, हीन भाग्य की भावना, गहरा अवसाद और अकेलापन इन्हीं भावों को एन्द्रिय-बिंब के रूप में उपर्युक्त कृतियों में प्रस्तुत किया गया है. भाव-चित्रों की दृष्टि से इस काल के गीत अत्यधिक संवेद्य तथा रस से भीगे हुए हैं -

'सुन रहा हूँ शांति इतनी है
टपकती बूँद जितनी
ओस की, जिनसे द्रुमों का गात
रात भिगो गई है ?'

- निशा निमंत्रण

उच्छ्वास, आँसू, आग, धुँए, कीचड़ और कंटकों की इस विषम भूमि के बाद कवि अपना नया चरण सतरंगिनी, मिलन यामिनी और प्रणय-पत्रिका की शोभा से रचित तीसरे सोपान पर रखता है. वह आश्वस्त होकर एक ओर कहता है -

'है अँधेरी रात पर दिया जलाना कब मना है.'

- सतरंगिनी

और दूसरी ओर यह कह कर समझौता कर लेता है -

'जो बीत गई सो बात गई.'

- सतरंगिनी

फिर तो भविष्य से आँख-मिचौली खेलता वह धीरे-धीरे सोचने लगता है -

'नीड़ का निर्माण फिर-फिर, नेह का आह्वान फिर-फिर.'

- सतरंगिनी

इस प्रकार सतरंगिनी में कवि जीवन की पीड़ा, चिंता से मुक्त होकर मिलन यामिनी के स्वप्नों पर तिरने लगती है. इस सोपान के बिंब मांसल, जीवंत और गतिशील है, किंतु वे कल्पित कम, यथार्थ और इंद्रिय-बोधजन्य अधिक है.

चतुर्थ सोपान में कवि ने युगीन जीवन के संघर्षों को वाणी दी हैं. बंगाल का काल, सूत की माला और खादी के फूल में लोक पुरुष की राष्ट्रीय प्रेम दीप से आरती उतारने का आयोजन किया गया है. यथा-

'भूख धरा पर जब चलती है
डगमग-डगमग वह हिलती है.'

- बंगाल का काल

इसमें विद्रोह का स्वर मुखर हुआ है, वह आगे और दृढ़ता से कहता है -

'उसको लेने

उसे छीनने
और अपनाने
को जो कुछ भी तुम करते हो
सब कुछ जायज.'

– बंगाल का काल

किंतु यहाँ कवि की अनुभूति कुछ ठिठुर सी गई है. वस्तुत: यह व्यक्तिनिष्ठ कवि की असमर्थता है. मिलन यामिनी के बाद कवि का मानस-क्षितिज अत्यंत व्यापक हो गया है, उसके जीवन-परिवेश वास्तविक परिस्थितियों एवं चिंतन का धरातल भी अधिक विस्तृत तथा विचार संकुल हो गया है. बंगाल का काल में विद्रोह का स्वर बुलंद है यहाँ वह क्रांति के लिए आह्वान करता दिखता है.

'खादी के फूल' में बापू के कार्यों, महत्वों एवं प्रभावों का अंकन है, जिसमें श्रद्धा तथा आस्था के भाव बिंब उभरे हैं, किंतु लोक-पुरुष की आरती में कवि की अंत:चेतना के जो भावदीप सजे, वे अधिक ज्योतित नहीं हो सके. क्योंकि इन रचनाओं में कवि को अपनी वैयक्तिकता से कुछ हटना पड़ा है. 'बुद्ध और नाचघर', त्रिभंगिमा', 'चार खेमे चौंसठ खूँटे', 'बहुत दिन बिते' तथा 'उभरते प्रतिमानों के रूप में' कवि ने नई कविता के अनेक अनगढ़ स्तरों को छूकर उन्हें भाव-वैभव, विचार गौरव, शिल्प-संयम तथा अभिव्यंजना का सुथरापन प्रदान किया है. इनमें सामाजिक महाप्राणता, व्यंग्य-दंश, वैचारिक क्रांति तथा व्यापक मानवीय संवेदना को कवि ने आधुनिक काल के सुस्पर्श से सबल अभिव्यक्ति दी है.

'त्रिभंगिमा' और 'चार खेमे चौंसठ खूँटे' में बच्चन मुख्यत: एक जीवंत रचनाकार के रूप में उपस्थित हुए हैं. इन रचनाओं में उनका समर्थ व्यक्तित्व, सुव्यवस्थित दृष्टि और जीवंत लेखन का मर्म उद्घाटित हुआ है. इन रचनाओं का भाव बोध आधुनिक , यथार्थ के नए धरातलों तथा परिवेश की पूर्णता को सँजोए हुए मर्मांतक है. इसके साथ ही इन रचनाओं में कवि ने लोकधुनों पर आधारित जिन गीतों की रचना की है उनकी भी उपेक्षा नहीं की जा सकती. लोकगीतों के द्वारा उन्होंने साहित्य में नया ही वातावरण प्रस्तुत किया है. लगता है कि वे आधुनिक नगर और ग्राम की दूरी को गीतों का पुल बाँध कर समीपता में परिणत कर रहे हैं. लोकजीवन के सरस उपकरणों, मार्मिक संवेदनाओं, गुह्य विश्वासों तथा रसमय स्वरों से गीले यह लोक गीत बड़े सजीव हैं. पागल-मल्लाह, सोनमछरी, खोई गुजरिया, नीलपरी, महुआ के नीचे, आँगन का बिरवा आदि लोकगीत अपने जादू भरे सम्मोहन के द्वारा रससिक्त वातावरण पैदा कर देते हैं. स्पष्ट है कि बच्चन के काव्य में चाहे प्रकृति हो या मन, यथातथ्यता को सुरक्षित रखने की प्रवृत्ति बहुत अधिक है. वे प्राय: जानी-पहचानी वस्तुओं को एक नया क्रम देकर इस प्रकार उपस्थित करते हैं कि उनके आनुषंगिक आघात से हमारी आँखों के आगे एक सर्वथा अछूते बिंब का आकार खडा हो जाता है. इनके बिंबों के दो ही मुख्य स्रोत हैं - कवि के प्रत्यक्ष अनुभव और शैशव की सुदूर स्मृतियाँ. छोटी से छोटी वस्तु को भी उन्होंने अपनी कलात्मक अनुभूति का अंग बनाकर छायावाद के काल्पनिक बिंब-विधान को यथार्थ की परिचित भूमि पर उतारने का प्रयास किया है. इस प्रकार सहज संवेद्य और अकृत्रिम बिंब-योजना के द्वारा उनकी पीढ़ी के कवियों में आधुनिक हिंदी कविता के भीतर एक नूतन रचनात्मक संभावना के द्वार उन्मुक्त किए.

- **बोध प्रश्न :**

(1) हरिवंशराय बच्चन का जन्म कब हुआ था ?

(2) हरिवंशराय बच्चन किस युग के कवि हैं ?

(3) बच्चन जी को किस सर्वोच्च पुरस्कार से अलंकृत किया गया ?

(4) बच्चन जी की तीन काव्य कृतियों के नाम लिखिए.

(5) कविता के अलावा अन्य किन विधाओं में कवि ने अपनी लेखनी चलाई ?

(6) गांधी जी से प्रभावित होकर बच्चन जी ने किन कविताओं की रचना की ?

17.4 अग्निपथ : काव्य-पाठ, विश्लेषण और व्याख्या

वृक्ष हों भले खड़े,
हों घने हों बड़े,
एक पत्र छाँह भी,
माँग मत, माँग मत, माँग मत,
अग्निपथ, अग्निपथ, अग्निपथ.

तू न थकेगा कभी,
तू न रुकेगा कभी,
तू न मुडेगा कभी,
कर शपथ, कर शपथ, कर शपथ,
अग्निपथ, अग्निपथ, अग्निपथ

यह महान दृश्य है,
चल रहा मनुष्य है,
अश्रु श्वेत रक्त से
लथपथ, लथपथ, लथपथ,
अग्निपथ, अग्निपथ, अग्निपथ.

विश्लेषण और व्याख्या

यह कविता उस जमाने में लिखी गई जब भारत स्वतंत्रता की लड़ाई लड़ रहा था. विदेशी ताकतों को देश से बाहर करने की कोशिशें की जा रही थी. भारतीयों को प्रेरित करने के लिए उस समय लिखी गई यह कविता कवि की ख्याति, उसका बड़प्पन, उसकी सोच उस युग तक ही सीमित नहीं रहती, बल्कि आने वाले युग में भी उसका उपयोग होता है.

इस कविता में कवि ने कहा है कि जीवन एक संघर्ष है, जिसे कवि ने 'अग्निपथ' कहा है. इस मार्ग पर व्यक्ति को आत्मविश्वास के साथ स्वयं ही आगे बढ़ना है. किसी के सहारे की इच्छा नहीं रखनी है.

वृक्ष हों भले खड़े,
हों घने, हों बड़े,
एक पत्र छाँह भी,

माँग मत, माँग मत, माँग मत,
अग्निपथ, अग्निपथ, अग्निपथ.

चलते हुए तुम्हें छाँह देने के लिए चाहे रास्ते में घने वृक्ष ही क्यों न खड़े हों तब भी तुम्हें उनसे एक पत्ते की छाँह भी नहीं माँगनी है अर्थात् किसी से मदद न माँगते हुए अपने दम पर आगे बढ़ता जा. कठिनाईयों भरे रास्ते पर निरंतर संघर्ष करते हुए तू आगे बढ़ते चल क्योंकि यह जीवन अग्निपथ के समान है.

तू न थकेगा कभी,
तू न रुकेगा कभी,
तू न मुड़ेगा कभी,
कर शपथ, कर शपथ, कर शपथ,
अग्निपथ, अग्निपथ, अग्निपथ

इस मार्ग पर चलते हुए तुझे कदम-कदम पर कष्ट सहने होंगे, चुनौतियों का सामना करना पड़ेगा. तब भी तुझे बिना विचलित हुए अपने पुरुषार्थ के बल पर अपने लक्ष्य की ओर आगे बढ़ते जाना है.

मार्ग पर आगे बढते हुए तू थकेगा नहीं, न ही कभी रुकेगा, तुझे पीछे मुड़कर भी नहीं देखना है, निरन्तर आगे बढ़ते जाना है. कवि मनुष्य से कहता है - तेरे सामने कठिनाईयों से भरा हुआ संसार है. परंतु तू इससे घबराना मत. तू शपथ ले कि इस मार्ग पर निरंतर चलता रहेगा, घबराकर रुकेगा नहीं और पीछे मुड़कर कभी नहीं भागेगा. चाहे कितनी ही कठिनाईयों का सामना क्यों न करना पड़े.

यह महान दृश्य है,
चल रहा मनुष्य है,
अश्रु श्वेत रक्त से
लथपथ, लथपथ, लथपथ,
अग्निपथ, अग्निपथ, अग्निपथ.

इस रास्ते पर चलते हुए तेरे अश्रु बहेंगें, पसीना बहेगा, खून से लथपथ होकर भी तुझे निरंतर चलना है. संघर्ष करते हुए सफलता प्राप्त करनी है. यह संघर्षमय जीवन अग्निपथ के समान है. यह संसार अग्नि से भरे रास्ते के समान कठिन है. कठिन मार्ग पर सुंदर दृश्य नहीं हो सकता. कठिनाईयों को झेलते-झेलते मनुष्य के आँसू बह रहे हैं, पसीना बह रहा है, तन से रक्त बह रहा है फिर भी वह इन सब की परवाह किए बिना निरंतर संघर्ष पथ पर आगे बढता जा रहा है. यह जीवन अग्निपथ के समान है.

17.5 'रीढ़ की हड्डी' : काव्य-पाठ, विश्लेषण और व्याख्या :

मैं हूँ उनके साथ, खड़ी जो सीधी रखते अपनी रीढ़.
कभी नहीं जो तज सकते हैं, अपना न्यायोचित अधिकार
कभी नहीं जो सह सकते हैं, शीश नवाकर अत्याचार
एक अकेले हो या उनके साथ खड़ी हो भारी भीड़.
मैं हूँ उनके साथ, खड़ी जो सीधी रखते अपनी रीढ़.
निर्भय होकर घोषित करते, जो अपने उद्गार विचार

जिनकी जिह्वा पर होता है, उनके अंतर का अंगार.
नहीं जिन्हें, चुप कर सकती है, आतताईयों की शमशीर,
मैं हूँ उनके साथ, खडी जो सीधी रखते अपनी रीढ़.

नहीं झुका करते जो दुनिया से करने को समझौता
ऊँचे से ऊँचे सपनों को देते रहते जो न्यौता
दूर देखती जिनकी पैनी आँख, भविष्यत का तम चीर
मैं हूँ उनके साथ, खड़ी जो सीधी रखते अपनी रीढ़.

जो अपने कन्धों से पर्वत से बढ़ टक्कर लेते हैं
पथ की बाधाओं को जिनके पाँव चुनौती देते हैं.
जिनको बाँध नहीं सकती है लोहे की बेड़ी जंजीर
मैं हूँ उनके साथ, खड़ी जो सीधी रखते अपनी रीढ़.

जो चलते हैं अपने छप्पर के ऊपर लूका धर कर
हार जीत का सौदा करते जो प्राणों की बाजी पर
कूद उदधि में नहीं पलट कर जो फिर ताका करते तीर
मैं हूँ उनके साथ, खड़ी जो सीधी रखते अपनी रीढ़.

जिनको यह अवकाश नहीं है, देखें कब तारे अनुकूल
जिनको यह परवाह नहीं है कब तक भद्रा, कब दिक्शूल
जिनके हाथों की चाबुक से चलती हैं उनकी तकदीर
मैं हूँ उनके साथ, खड़ी जो सीधी रखते अपनी रीढ़.

तुम हो कौन, कहो जो मुझसे सही गलत पथ तो लो जान
सोच सोच कर, पूछ पूछ कर बोलो, कब चलता तूफ़ान
सत्पथ वह है, जिस पर अपनी छाती ताने जाते वीर
मैं हूँ उनके साथ, खड़ी जो सीधी रखते अपनी रीढ़.

हरिवंशराय बच्चन उत्तर छायावाद के प्रमुख कवियों में से एक हैं. जो कि आस्थावादी कवि हैं. इनकी रचनाओं में आस्था, स्वप्न, विद्रोह और निर्माण की गूंज स्पष्ट सुनाई पडती है. आज के दौर में जहाँ इन्सान मान, सम्मान, प्रतिष्ठा और पद की महत्वाकांक्षा में किसी के भी सामने झुकने को तैयार बैठा हो वहाँ अपनी रीढ़ सीधी रखने वालों की कमी को महसूस किया जाना स्वाभाविक है.

'मैं हूँ उनके साथ, खडी जो सीधी रखते अपनी रीढ़' कविता में कवि उनके साथ खडा रहना चाहता है जिसने अपनी रीढ़ की हड्डी को सीधा रखा है और वह हर तरह के अन्याय शोषण और हिंसा के खिलाफ तनकर खड़ा है. कवि का मानना है कि जो इन्सान हर तरह

के अभाव, अज्ञान और संताप से लड़ने की हिम्मत रखता है, सफलता भी उसी को प्राप्त होती है. ऐसे लोग अपनी रीढ़ को सीधी रखते हैं अर्थात् वे हमेशा तनकर चलते हैं और जीवन में आने वाली कठिनाईयों से हार नहीं मानते हैं. वे कभी भी अपने न्यायसम्मत अधिकारों को नहीं त्यागते हैं. वे कभी भी अत्याचारी के सामने सिर झुकाकर नहीं खड़े होते और न ही जीवन में किसी भी तरह के अत्याचार को सह लेते हैं. ऐसे लोग चाहे अकेले हों या फिर उनके साथ जन सैलाब, कभी भी हार नहीं मानते, सफलता उन्हीं को प्राप्त होती है.

कवि के अनुसार संघर्ष करने वाला व्यक्ति अपने विचारों और मन के भावों को बिना किसी भय के व्यक्त करता है. उसे किसी भी आततायी की तलवार नहीं रोक सकती. वह किसी भी परिस्थिति में थककर थमता नहीं, बल्कि सदैव आगे बढ़ता रहता है.

जिनकी जिह्वा पर होता है, उनके अंतर का अंगार.
नहीं जिन्हें, चुप कर सकती है, आतताईयों की शमशीर.

जिस व्यक्ति में आगे बढ़कर पर्वत रूपी कठिनाईयों का सामना करने का साहस होता है, जो मार्ग में आने वाली हर बाधाओं को अपने पाँव की ठोकर से उड़ा देता है, ऐसे लोगों को कोई बंधन बाँध नहीं सकता. जीवन में सफलता उन्हीं को प्राप्त होती हैं, जो प्रत्येक कठिनाई का डट कर सामना करते हैं.

जो अपने कन्धों से पर्वत से बढ़ टक्कर लेते हैं
पथ की बाधाओं को जिनके पाँव चुनौती देते हैं.

कवि कहता है कि जीवन में सफलता उन्हीं को प्राप्त होती है जो मानव जाति के कल्याण के लिए अपने घर-बार की चिंता नहीं करते अर्थात् उनके लिए समस्त समाज ही उनका परिवार होता है. वे सबकी भलाई में ही अपनी भलाई देखते हैं. ऐसे लोग एक बार कठिनाई रूपी समुद्र में कूद पड़े तो रक्षा के लिए किनारे की ओर नहीं देखा करते.

जो चलते हैं अपने छप्पर के ऊपर लूका धर कर
हार जीत का सौदा करते जो प्राणों की बाजी पर
कूद उदधि में नहीं पलट कर जो फिर ताका करते तीर.

कवि कहता है अपने हाथों से अपनी तकदीर, किस्मत लिखने वालों को इस बात का अवकाश नहीं होता कि कब ग्रह, नक्षत्र अनुकूल होंगें, कब कार्य की शुरुआत की जाय? वे किसी अनुकूल परिस्थिति का इंतजार न करते हुए अपनी तकदीर आप लिखते हैं. वे चाबुक अपने हाथ में रखते हैं अर्थात् वे स्व-बल से अपना जीवन मोड़ लेते हैं. कवि के अनुसार वे ही जीवन पथ पर आगे बढते हैं.

जिनको यह अवकाश नहीं है, देंखें कब तारे अनुकूल
जिनको यह परवाह नहीं है कब तक भद्रा, कब दिक्शूल
जिनके हाथों की चाबुक से चलती है उनकी तकदीर.

कवि के अनुसार संघर्षशील मनुष्य सोच-सोच कर कदम नहीं बढ़ाता. तूफान कभी कहकर नहीं आता. जो वीर मनुष्य सीना ताने सत्य-पथ पर गतिशील रहते हैं, कवि ऐसे ही संघर्षशील लोगों के साथ खड़ा है. कवि के अनुसार आज के दौर में अपने ऊसुलों पर डटकर चलने वालों को ही सफलता मिलती है.

17.6 सार-बिंदु :

(1) उत्तर छायावाद युग के सशक्त कवि हरिवंशराय बच्चन के जीवन के बारे में जानकारी प्राप्त

की.

(2) हरिवंशराय बच्चन के साहित्यिक व्यक्तित्व से परिचित हुए.

(3) उनके काव्य में मानव जीवन का यथार्थ चित्र निहित है. उन्होंने छोटी से छोटी वस्तु को भी अपनी कलात्मक अनुभूति का अंग बनाकर छायावाद के काल्पनिक बिंब विधान की यथार्थ भूमि पर उतारने का प्रयत्न किया है.

(4) 'अग्निपथ' कविता में मनुष्य को जीवन के कठिन पथ पर मुड़े बिना, रुके बिना, थके बिना निरंतर आगे बढ़ते हुए मंजिल तक पहुँचने की प्रेरणा दी है.

(5) 'रीढ़ की हड्डी' कविता में वर्तमान समय में आत्म-सम्मान से जीने की, अन्याय न सहन करने की, अत्याचार के विरुद्ध आवाज उठाने की, स्वयं पर भरोसा रख अपनी तकदीर आप बनाने की ओर प्रेरित किया है. उनका मानना है कि सफलता उन्हीं को प्राप्त होती है, जिसे स्वयं पर विश्वास है.

(6) बच्चन की कविताओं का स्वर आस्थावादी है.

17.7 परीक्षोपयोगी प्रश्नावली :

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. हरिवंशराय बच्चन के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का परिचय अपने शब्दों में लिखिए.
2. 'रीढ़ की हड्डी' की कविता में व्यक्त संदेश को अपने शब्दों में लिखिए.

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. बच्चन जी के काव्य की विशेषताएँ बताइए.
2. 'अग्निपथ' कविता का मूल-भाव क्या है?

टिप्पणी लिखो

1. रीढ़ की हड्डी कविता का सार लिखिए.
2. अग्निपथ कविता का सार लिखिए.
3. बच्चन के काव्य संसार पर टिप्पणी लिखिए.

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

सही के सामने ✓ गलत के सामने ✗ का निशान लगाएँ

1. बच्चन आस्थावादी कवि हैं. ( )
2. निशा-निमंत्रण बच्चन की रचना नहीं हैं. ( )
3. 'खादी के फूल' नेहरू जी से संबंधित रचना है. ( )
4. मधुशाला अल्हड़ता और मस्ती का काव्य है. ( )
5. बच्चन प्रत्यक्ष और अकृत्रिम अनुभूतियों के कवि है. ( )

रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए

1. मधुशाला की रुबाइयाँ _____ पत्रिका में छपी थीं. (चाँद / सरस्वती)
2. बच्चन को पद्मभूषण से सन् _____ में सम्मानित किया गया. (1976 / 1978)
3. _____ संघर्ष और विषाद की रचना है. (निशा निमंत्रण / त्रिभंगिमा)
4. सोन मछरी _____ है. (लोकगीत/नाटक)
5. क्या भूलूँ क्या याद करूँ _____ हैं. (आत्मकथा / उपन्यास)

17.8 संदर्भ सूची :

- बच्चन एक अध्ययन : डॉ. ललिता अरोरा
- www.kavitakosh.org
- www.hindi-kavita.com